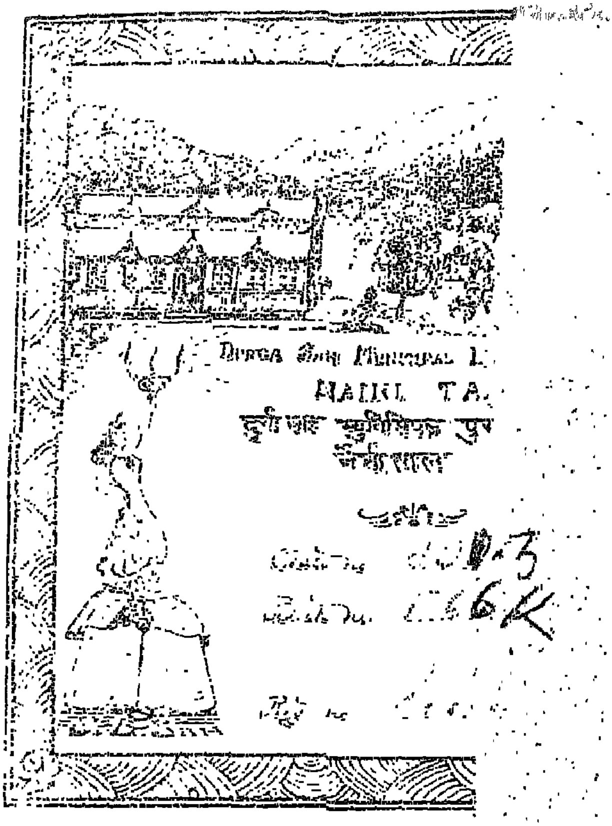
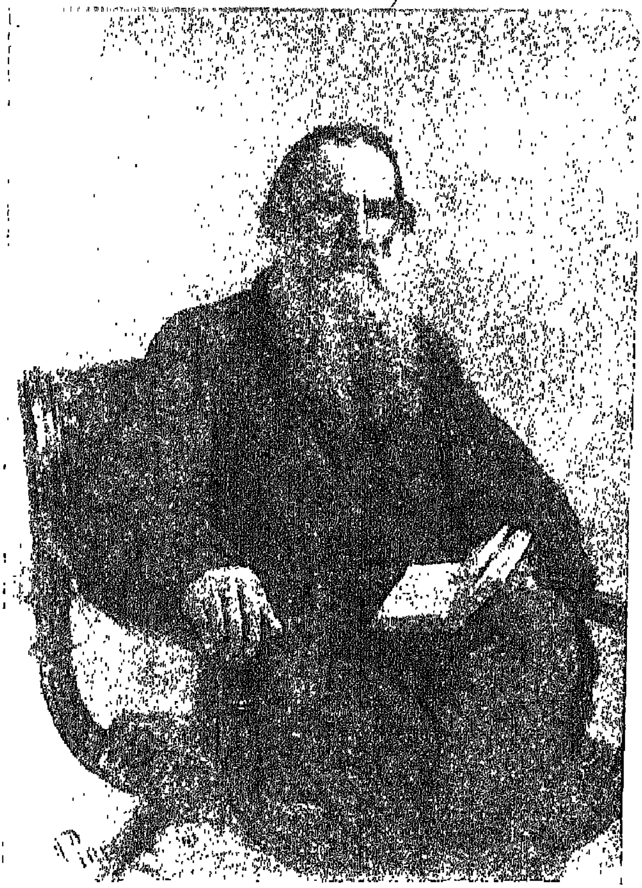


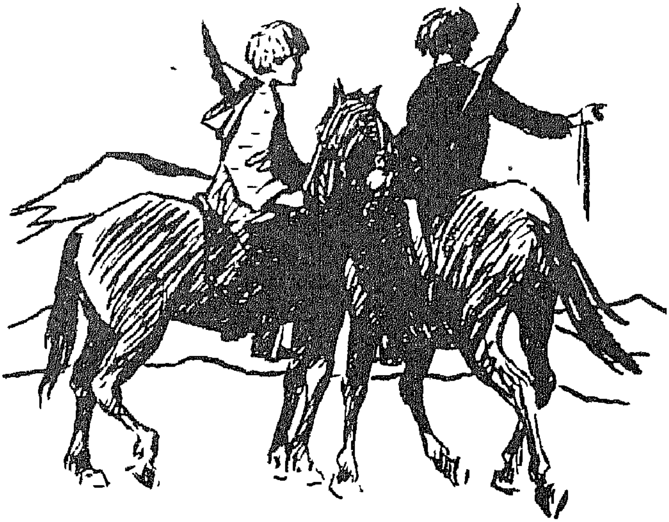
DURGA SAH MUNICIPAL L
NAINI TA
दुर्गासाह म्युनिसिपल पु
नैनीताल

सर्वोत्तम
रूसी साहित्य
पुस्तकमाला

ow good faith is this man
means
Tolstoy



Левъ Толстой



Л. ТОЛСТОЙ

КАЗАКИ

Кавказская повесть

ИЗДАТЕЛЬСТВО ЛИТЕРАТУРЫ НА ИНОСТРАННЫХ ЯЗЫКАХ

Москва

लेव तोल्स्तोय

काकेशस का उपन्यास



विदेशी भाषा प्रकाशन गृह

सुनाई पड

मास्को

अनुवादक : डॉ० नारायणदास खन्ना

चित्रकार : द० बिस्ती

पाठकों से

विदेशी भाषा प्रकाशन गृह इस पुस्तक की विषय-वस्तु, अनुवाद और डिज़ाइन सम्बन्धी आपके विचारों के लिए आपका अनुगृहीत होगा। आपके अन्य सुझाव प्राप्त कर भी हमें बड़ी प्रसन्नता होगी। हमारा पता है :

२१, ज़ूबोव्स्की बुलवार,
मास्को, सोवियत संघ।



१

मास्को का वातावरण शान्त हो गया है। हाँ, सर्दी से ठंढी पड़ती हुई सड़कों पर कभी कभी पहियों की चरमराहट ज़रूर सुनाई दे जाती है। खिड़कियों में से प्रकाश की ताक-झाँक बन्द हो गई है और सड़कों की बत्तियाँ बुझ गई हैं। गिरजे की मीनारों से घण्टों की आवाजें सुनाई पड़

रही है जो सारे नगर में व्याप्त होकर सुबह हो जाने की घोषणा कर रही हैं। सड़कों पर कोई आता-जाता नहीं दिखाई पड़ता। यदा-कदा बर्फ़ और बालू में से गुज़रती हुई स्लेज-गाड़ी की खड़खड़ाहट कानों में पड़ जाती है, और कोचवान सड़क के नुक्कड़ तक पहुँचते पहुँचते ऊँघ जाता है। उसकी गाड़ी सवारी का इन्तजार करने लगती है। एक वृद्धा गिरजे की ओर बढ़ रही है जहाँ इधर-उधर रखी हुई कुछ मोमबत्तियाँ झिलमिला रही हैं। ईसा मसीह की सुनहरी प्रतिमा पर लाल रोशनी पड़ रही है। जाड़े की लम्बी लम्बी रातों में करवटें बदल लेने के बाद अब मजदूर बिस्तर छोड़ चुके हैं और अपने अपने कामों पर चल पड़े हैं।

परन्तु भले आदमियों के लिए अभी शाम है।

शेवल्ये रेस्टराँ के झरोखों से झाँकता हुआ बिजली का प्रकाश दीख रहा है। लोग जानते हैं कि इस समय तक बत्तियाँ जलते रहना ग़ैर-क़ानूनी है। प्रवेश द्वार पर एक गाड़ी और कई स्लेजें पास पास खड़ी हैं। इन्हीं में तीन घोड़ोंवाली एक स्लेज भी है। अपने में ही सिकुड़ा और सर्दी से ठिठुरता हुआ दरबान ऐसे दुबका बैठा है मानो मकान के किसी कोने में छिपा हो।

"यहाँ बैठे बैठे बातें बघारने से क्या फ़ायदा?" हाल में बैठा हुआ बैरा सोच रहा है। उसके कुरूप चेहरे पर रूखापन झलकने लगता है, "जब कभी मैं ड्यूटी पर होता हूँ हमेशा यही होता है।"

पास के छोटे कमरे से तीन नवयुवकों की आवाज़ें सुनाई पड़ रही हैं। कमरा प्रकाश से जगमगा रहा है। कमरे की मेज़ पर शाम का खाया हुआ खाना और शराब इधर-उधर बिखरी पड़ी है। सुन्दर वेशभूषा में एक सीधा-सादा, दुबला-पतला नाटा-सा व्यक्ति कुर्सी पर बैठा, थकी-माँदी किन्तु कोमल दृष्टि से अपने उस मित्र को देख रहा है जो शीघ्र ही उससे विदा लेगा। दूसरा एक लमतड़ंग, उंगली पर चाभी का गुच्छा नचाता हुआ खाली

बोतलोंवाली मेज़ के पास एक सोफ़े पर लुढ़का पड़ा है। यहाँ एक तीसरा व्यक्ति भी है जो भेड़ की खाल का नया कोट पहने कमरे में चहलक़दमी कर रहा है। कभी कभी वह एक क्षण के लिए रुक जाता है और उंगलियों से बादाम तोड़ने लगता है। उसकी उंगलियाँ मज़बूत हैं, मोटी हैं और नाखून बड़ी होशियारी से साफ़ किये गये हैं। वह किसी बात पर देर से मुस्करा रहा है। उसकी आँखों तथा चेहरे पर चमक है। जब वह बोलता है तो उसके शब्दों में उत्साह और शरीर के अंग-प्रत्यंग से हाव-भाव प्रकट होते हैं। ऐसा लगता है कि जो कुछ वह कहना चाहता है उसके लिए उसे उपयुक्त शब्द नहीं मिल पाते और यदि कुछ उसके ओठों तक आते भी हैं तो वे उसके अन्तर के उद्गारों को व्यक्त करने में असमर्थ हैं।

"अब मैं आप से सारी बातें कह सकता हूँ," यात्री कह उठा, "मैं अपनी सफ़ाई नहीं दे रहा हूँ, मैं तो केवल यही चाहता हूँ कि आप मुझे वैसा ही समझें जैसा कि मैं अपने आप को समझता हूँ और इस विषय पर आप सामान्य अथवा कोई हल्का दृष्टिकोण न रखें। आप कहते है कि मैंने उसके साथ बुरा बर्ताव किया है?" वह उस व्यक्ति को सम्बोधित करते हुए कहता जा रहा था जो उसे कोमल दृष्टि से देख रहा था।

"हाँ, दोष तुम्हारा ही है," सम्बोधित व्यक्ति कहने लगा। उसकी आँखों से ऐसा लग रहा था जैसे उनकी कोमलता तथा थकावट और भी बढ़ गई है।

"मैं जानता हूँ आप ऐसा क्यों कह रहे हैं," यात्री कहता जा रहा था, "आप समझते हैं कि प्यार पाने में उतनी ही प्रसन्नता होती है जितनी प्यार करने में, और अगर एक बार भी आपको किसी ने प्यार कर लिया, तो वह ज़िन्दगी भर के लिए काफ़ी है।"

"हाँ, मेरे दोस्त, बिल्कुल काफ़ी है बल्कि उससे भी कुछ अधिक," आँख मारते हुए उस छोटे, दुबले-पतले आदमी ने जवाब दिया।

"परन्तु ख़ुद इन्सान भी प्यार क्यों न करे?" यात्री अपने मित्र को दया-भाव से देखते हुए गम्भीरतापूर्वक बोला, "आख़िर कोई प्रेम क्यों न करे? प्रेम यों ही नहीं आता... नहीं, वह प्यार पाना ही मुसीबत है जब आप अपने को अपराधी समझने लगें क्योंकि जो कुछ आपको मिल रहा है आप उसे वापस नहीं करते और कर भी नहीं सकते। हे भगवान!" और उसके हाथ झूल गये, "यदि केवल यही बातें क़ायदे से होतीं! परन्तु ये सब उल्टी-सीधी हैं और हमारे बस की नहीं। जो होना होता है वही होता है। क्यों? ऐसा लगता है कि मैंने किसी का प्यार चुरा लिया है। आप भी यही समझते हैं न। देखिए, इनकार न कीजिएगा—आपको इसी प्रकार सोचना चाहिए। परन्तु क्या आप विश्वास करेंगे कि जीवन में मैंने जितने नीच और घृणित कर्म किये हैं उनमें केवल यही एक ऐसा काम है जिसके लिए मुझे कोई पछतावा नहीं और मैं पछता भी नहीं सकता। मैंने न तो प्रेम के उषाकाल में, और न उसके बाद ही, जानबूझ कर, न स्वयं को धोखे में रखा और न उसी को। मुझे कुछ ऐसा लगा था कि स्वयं मैं भी प्रेम करने लगा हूँ। परन्तु बाद में मैंने समझा कि मैं अज्ञात रूप से अपने को ही धोखा दे रहा हूँ—इस प्रकार प्रेम करना असम्भव है—और मैं आगे नहीं बढ़ सका। परन्तु वह बढ़ती ही गई। तो क्या यह मेरा दोष है कि मैं नहीं बढ़ा? मैं करता ही क्या?"

"ख़ैर जो हुआ, हो चुका," जगते रहने के उद्देश्य से सिगार जलाते हुए उसके दोस्त ने कहा, "बात सिर्फ़ यह है कि न तुमने कभी किसी से प्यार किया और न तुम जानते ही हो कि प्यार है किस चिड़िया का नाम!"

जो व्यक्ति भेड़ की खाल पहने था, वह फिर कुछ कहना चाहता था और इसीलिए उसने अपना हाथ माथे पर रखा भी था, परन्तु वह क्या कहना चाहता था इसे व्यक्त न कर सका।

"प्यार नहीं किया... हाँ बिल्कुल ठीक। मैंने कभी नहीं किया। लेकिन मेरे हृदय में प्यार करने की आकांक्षा तो है और उस आकांक्षा से बढ़कर कुछ नहीं हो सकता। परन्तु क्या ऐसे प्यार का अस्तित्व भी है? अपूर्णता सदैव कहीं न कहीं तो होती ही है। होगा! कोरी बातों से क्या फ़ायदा? मैंने ज़िन्दगी को गोरखधन्धा बना दिया है! परन्तु कुछ भी हो अब सब ख़त्म हो गया। आप ठीक कहते हैं। और, मुझे ऐसा लगता है कि मैं एक नई ज़िन्दगी शुरू कर रहा हूँ।"

"जिसे तुम फिर गोरखधन्धा बना दोगे," सोफ़े पर पड़े तथा चाभियों से खेलते हुए व्यक्ति ने कहा। परन्तु यात्री ने नहीं सुना।

"मैं उदास हूँ, फिर भी मुझे जाने की खुशी है," उसने कहा, "मैं उदास क्यों हूँ, मैं नहीं जानता।"

और यात्री अपने बारे में बातें करता रहा। उसने इस बात पर ध्यान नहीं दिया कि अपनी बातों में जितनी दिलचस्पी उसे है उतनी दूसरों को नहीं। आध्यात्मिक उन्मेष के क्षणों में मनुष्य जितना आत्मश्लाघी बन जाता है उतना अन्य किसी अवसर पर नहीं रहता। उस समय उसे ऐसा लगने लगता है मानों दुनिया में उसे छोड़कर और कोई शानदार और दिलचस्प चीज़ है ही नहीं।

"दिमीत्री अन्द्रेयेविच! कोचवान अब अधिक इन्तज़ार न करेगा," एक नववयस्क भूदास ने कमरे में प्रवेश करते करते कहा। वह भेड़ की खाल का कोट पहने था और उसके सिर के चारों ओर एक गुलूबन्द लिपटा था। "घोड़े रात के ग्यारह बजे से खड़े खड़े हिनहिना रहे हैं और इस समय सुबह के चार बज रहे हैं।"

दिमीत्री अन्द्रेयेविच ने अपने दास वन्यूशा की ओर देखा। उसके सिर पर बंधा हुआ गुलूबन्द, उसका फ़ेल्ट बूट, और उसका ऊँघता-सा चेहरा मानो अपने स्वामी को ऐसे नये जीवन की ओर आमंत्रित कर रहा था जिसमें परिश्रम है, कठिनाई है और है जीवन की हलचल।

"ठीक है! नमस्ते!" उसने अपने कोट का खुला हुआ हुक खोजते हुए कहा।

बख़्शीश देकर कोचवान को शान्त करने के लिए कहने के बजाय उसने अपनी टोपी पहनी और कमरे के बीच आकर खड़ा हो गया। मित्रों ने एक बार, दो बार, फिर कुछ रुककर तीसरी बार उसे चूमा। यात्री मेज़ के पास आया और उसने एक जाम ख़ाली कर दिया। अब उसने उस छोटे-से आदमी का हाथ प्यार से अपने हाथ में लिया और सलज्ज भाव से कहने लगा—

"ख़ैर, मैं तो कहूँगा ही... मुझे आपसे साफ़ साफ़ कहना चाहिए और मैं वैसा कहूँगा भी क्योंकि आप मुझे बहुत अच्छे लगते हैं... आप उसे प्रेम करते हैं। मैंने हमेशा यही समझा—है न यही बात?"

"हाँ," मुस्कान में और अधिक कोमलता लाते हुए उसके दोस्त ने सिर हिलाया।

"और शायद ..."

"हुज़ूर, मुझे बत्तियाँ बुझा देने का हुक्म हुआ है," ऊँघते हुए बैरे ने कहा। वह बातचीत का अंतिम अंश सुनता जा रहा था और आश्चर्य कर रहा था कि ये भले मानस एक ही बात को बार बार दुहराते क्यों हैं।

"बिल किसे दूँ? हुज़ूर, आपको?" उसने लम्बे व्यक्ति को संबोधित करते हुए कहा। वह जानता था कि इस सम्बन्ध में किससे बात करनी चाहिए।

"मुझे," उस लम्बे व्यक्ति ने कहा, "कितना हुआ?"

"छब्बीस रूबल।"

लम्बे व्यक्ति ने एक क्षण सोचा और बिना कुछ कहे-सुने बिल जेब में रख लिया।

बाक़ी दोनों बातें करते रहे।

"नमस्ते! कितने लाजवाब तुम हो!" सीधे-सादे छोटे आदमी ने मृदुता से कहा।

दोनों की आँखों में आँसू छलछला आये। वे चलते चलने बरामदे में आ चुके थे।

"हाँ, बहरहाल क्या आप शेवल्ये का बिल अदा कर देंगे और फिर मुझे लिखकर उसकी सूचना देंगे?" यात्री ने लम्बे व्यक्ति की ओर मुड़ते हुए सहज भाव से कहा।

"ठीक है, ठीक है," दस्ताने उतारते हुए लम्बा व्यक्ति बोला। "मैं तुमसे कितनी ईर्ष्या करता हूँ!" अप्रत्याशित उसके मुँह से निकला। अब दोनों बरामदे में पहुँच चुके थे।

यात्री अपनी स्लेज में बैठ गया। उसने भेड़ की खाल अपने चारों ओर लपेट ली और कहा, "हाँ, आ जाओ!" और उस व्यक्ति के लिए, जिसने कहा था कि मैं तुमसे ईर्ष्या करता हूँ, जगह करने की ग़रज़ से वह एक ओर खिसक गया। उसकी आवाज लड़खड़ा रही थी।

"नमस्कार, मित्या! मुझे आशा है कि ईश्वर की कृपा से तुम..." लम्बे व्यक्ति ने कहा। परन्तु उसकी एक ही इच्छा थी कि दूसरा शीघ्र ही वहाँ से चला जाय और इसीलिए वह अपनी बात पूरी न कर सका।

एक क्षण के लिए वे मौन हो गये। तब एक ने फिर कहा "नमस्ते" और एक आवाज़ सुनाई दी "हाँ, ठीक है।" और, कोचवान ने घोड़े को चाबुक लगाया।

"येलिज़ार, चले आओ!" एक दोस्त ने आवाज़ लगाई। टिक टिक करते तथा लगाम खींचते हुए कोचवान और स्लेज चलानेवाले हवा से बातें करने लगे। पहिये बर्फ़ पर चर्र-मर्र करते लुढ़क रहे थे।

"वह ओलेनिन... कितना अच्छा है वह," एक दोस्त ने कहा।

"हुँह ... क्या बेहूदी बात! काकेशिया जाना वह भी कैडेट बनकर! मैं तो किराये पर भी न जाऊँ!.. क्या कल तुम क्लब में खाना खाओगे?"

"हाँ।"

और वे अपने अपने रास्ते चल दिये।

यात्री को गर्मी लग रही थी। उसके फ़र अन्दर से गरमा रहे थे। वह स्लेज पर नीचे उतरकर बैठ गया। उसने अपना कोट खोल दिया। तीनों घोड़े तेज़ी से बढ़ रहे थे, कभी एक अंधेरी गली से निकलकर दूसरी में घुस जाते और कभी मकानों को पार करते हुए सर्र से आगे निकल जाते। ओलेनिन को ऐसा लगा कि लम्बी यात्रा को जानेवाले यात्री ही इन गलियों से होकर जाते हैं। उसके चारों ओर सब कुछ धूमिल, नीरस और निर्जीव था, परन्तु उसकी आत्मा स्मृतियों, प्रेमाख्यानों, पश्चात्तापों और रोके हुए अश्रुओं की सुखद अनुभूतियों से ओत-प्रोत थी।

२

"मैं उनपर मुग्ध हूँ, बहुत मुग्ध!.. कितने अच्छे हैं वे दोस्त... कितने खुशदिल!" बार बार वह यही कहता जा रहा था और चाहता था कि वह आँसुओं में घुल जाय! परन्तु वह ऐसा क्यों चाहता था? वे अच्छे दोस्त कौन थे जिनपर वह इतना मुग्ध था, यह वह स्वयं न जानता था। कभी कभी वह किसी मकान की तरफ़ देखता और आश्चर्य करने लगता कि इसकी बनावट इतनी अद्भुत क्यों है? कभी उसे इसी बात पर ताज्जुब होता था कि कोचवान और वन्यूशा, जो उससे इतने भिन्न हैं, पास पास क्यों बैठे हैं, और जमी हुई बर्फ़ पर गाड़ी के चलने से अग़ल-बग़ल वाले घोड़ों के इधर-उधर हिलने-डुलने के कारण मुझे, कोचवान तथा वन्यूशा

को धक्के क्यों लगते हैं? उसने फिर दोहराया "कितने अच्छे!.. सुन्दर!" फिर उसके मुख से निकला—"बहुत खूब! वाह!" पर साथ ही उसे आश्चर्य भी हुआ कि वह यह सब क्या ऊलजलूल बक रहा है। उसने मन ही मन प्रश्न किया, "क्या मैंने अधिक पी ली है?" उसने शराब की कुछ बोतलें गले में उतारी जरूर थीं, परन्तु यह अकेली शराब ही न थी जिसका ओलेनिन पर असर हो रहा था। चलते समय कहे गये मित्रता के, आत्मीयता के, शिष्टाचार के तथा सहज आवेग के सभी शब्द उसे याद आने लगे। उसे याद आ रहा था कि उस समय मैंने किन किन से हाथ मिलाया था, किसने मुझे किस दृष्टि से देखा था और वे मौन क्षण कितनी व्यग्रता से बीते थे। उसके कान में "नमस्कार मित्या," ये शब्द अब भी बराबर गूंज रहे थे। उसे याद आ रहा था कि मैंने ये शब्द उस समय सुने थे जब मैं स्लेज में बैठ चुका था। उसे याद आ रहा था कि मैंने स्वयं कितनी स्पष्टवादिता दिखाई थी। और इन सब बातों का उसके लिए विशेष महत्व था। ऐसा लगता था कि न केवल मित्र और सम्बन्धी, न केवल वे लोग जो उसके प्रति उदासीन रहते थे परन्तु वे लोग भी उसपर मुग्ध थे जो उसे नहीं चाहते थे। ऐसा प्रतीत होता था कि उसके प्रस्थान करने से पूर्व लोगों ने उसे क्षमा कर दिया है जैसे कि साधारणतया लोग उस व्यक्ति को क्षमा करते हैं जिसने अपना अपराध स्वीकार कर लिया हो या जिसकी मृत्यु निकट हो।

"शायद मैं काकेशिया से न लौटूं," उसने सोचा। और उसे लगा कि वह अपने मित्रों को प्यार करता है, और उनके अलावा किसी एक और व्यक्ति को भी। उसे स्वयं अपने पर खेद हो रहा था। परन्तु यह उसका अपने मित्रों के प्रति वह प्रेम न था जिसने उसके हृदय को इतना उद्वेलित कर दिया था कि वह उन अनर्गल शब्दों पर भी क़ाबू न

पा सका जो स्वतः उसके मुँह तक आ चुके थे। और न यह किसी स्त्री का ही प्यार था (उसने अभी तक किसी स्त्री से प्रेम न किया था) जिसके कारण उसकी मानसिक स्थिति ही ऐसी हो गयी थी। वह स्वतः अपने को प्यार करता था ऐसा प्यार जिसमें आशा थी, जिसमें उष्णता थी। वह नन्हा-सा प्यार जो उसकी आत्मा के समस्त उदात्त रूप के लिए था (और उस समय उसे जान पड़ा कि उसमें उदात्त रूप के अतिरिक्त और कुछ नहीं है) उसे विवश कर रहा था कि वह क्रंदन और अनर्गल प्रलाप कर उठे।

ओलेनिन एक नवयुवक था। उसने कभी विश्वविद्यालय की पढ़ाई पूरी नहीं की, कहीं नौकरी नहीं की (हाँ, किसी सरकारी या ऐसे ही किसी दफ़्तर में नाममात्र के लिए कभी किसी जगह पर ज़रूर रहा था)। उसने अपनी आधी जायदाद खुराफ़ातों में ही फूँक दी थी। इस समय वह चौवीस वर्ष का हो चुका था और अभी तक न तो किसी काम पर लगा था और न जीविका का ही कोई सहारा ढूँढ़ सका था। वह एक ऐसा आदमी था जिसे मास्को के समाज में छैला कहा जाता है।

अट्ठारह वर्ष की अवस्था में वह स्वच्छन्द हो गया ठीक उसी प्रकार जैसे १८४०-५० में वे संभ्रान्त रूसी युवक हो जाते थे जिनकी बाल्यावस्था में उनके माता-पिता इस संसार से कूच कर जाते थे। अब उसके लिए न कोई शारीरिक बन्धन था, न नैतिक। वह इच्छानुसार जो चाहता कर सकता था। न उसे किसी की ज़रूरत थी और न वह किसी से बँधा ही था। न उसके लिए परिवार था, न पितृभूमि, न धर्म, न आवश्यकताएँ। न वह किसी में विश्वास करता और न किसी को स्वीकार करता। परन्तु वह नीरस और बुझा बुझा-सा रहनेवाला नवयुवक न था। वह बकवादी तो न था, हाँ, आसानी से मान जानेवाला व्यक्ति जरूर था। वह इस नतीजे पर पहुँचा था कि दुनिया में प्रेम नाम की कोई चीज़ नहीं। फिर भी किसी युवा और आकर्षक स्त्री को सामने देख कर उसका हृदय उसके वश में न

रहता। बहुत पहले से ही उसे यह विश्वास होने लगा था कि इज्जत और हैसियत सब वाहियात हैं। फिर भी जब एक नृत्य-समारोह के अवसर पर राजकुमार सेर्जियस उसके पास आया और उसने उससे शिष्टता से बातें कीं' उस समय ओलेनिन बड़ा प्रसन्न हुआ। वह अपनी अन्तःप्रेरणा के समक्ष तभी झुकता जब उसकी स्वच्छन्दता में बाधा न पड़ती।

जब कभी वह किसी बात से प्रभावित होता और उसे यह पता चल जाता कि इसके परिणामस्वरूप उसे परिश्रम और संघर्ष — जीवन से साधारण-सा संघर्ष भी — करना होगा तो स्वाभाविक प्रवृत्तिवश वह शीघ्र ही इस बात का प्रयत्न करता कि जिस क्रियाशीलता की ओर वह बढ़ रहा है अथवा जो अप्रिय अनुभूति उसे हो रही है उससे मुक्त होकर वह पुनः अपनी स्वच्छन्दता प्राप्त करे। इस प्रकार उसने सामाजिक जीवन, लोक-सेवा, कृषि, संगीत, यहाँ तक कि स्त्रियों से प्रेम करने के उस क्षेत्र में भी प्रयोग किये जिसमें स्वयं उसका अपना विश्वास न था। संगीत के लिए तो एक बार उसने अपना सारा जीवन ही लगा देने की ठान ली थी। वह सोचता रहा, विचारता रहा — मैं युवावस्था की उस अद्भुत शक्ति का उपयोग कैसे करूँ जो मनुष्य को जीवन में केवल एक बार प्राप्त होती है, उस शक्ति का नहीं जिसका सम्बन्ध मनुष्य के बौद्धिक विकास, उसकी अनुभूतियों अथवा उसके शिक्षण से होता है अपितु उस सहज आवेग का जिससे मनुष्य अपना, अथवा — जैसा उसे प्रतीत हो रहा था — अखिल ब्रह्मांड का रूप इच्छानुसार निर्मित कर सकता है चाहे वह कला के क्षेत्र में हो, या विज्ञान के, नारी-प्रेम के क्षेत्र में हो या व्यवहारिकता के। यह ठीक है कि कुछ लोगों में इस प्रेरक-शक्ति का पूर्णतः अभाव रहता है और जब वे जीवन में प्रवेश करते हैं उस समय अपना सिर उसी जुए में डाल देते हैं जिसे वे पहले-पहल देखते हैं और फिर पूरी ईमानदारी के साथ अपने शेष जीवन में उसी के साथ खटते रहते हैं।

परन्तु ओलेनिन को इस बात का पूर्ण ज्ञान था कि मुझमें सर्वप्रभुता सम्पन्न 'यौवन-देवता' विद्यमान है; वह क्षमता है जिससे सम्पूर्ण अस्तित्व को आदर्श या स्फूर्ति में परिवर्तित किया जा सकता है; इच्छा और क्रिया की सम्पूर्ण शक्ति है; वह सामर्थ्य है जिसके बल पर क्यों और कहाँ का विचार किये बिना गहरे पाताल तक में प्रवेश किया जा सकता है। वह इनसे अनुप्राणित होता था, उसे इनपर गर्व होता था और इनके कारण अज्ञात रूप से उसे प्रसन्नता होती थी। उस समय तक उसने स्वयं अपने को प्रेम किया था। वह अपने से प्रेम करने के लिए विवश था क्योंकि उसे विश्वास था कि वह अन्य किसी चीज़ का नहीं एकमात्र श्रेष्ठता का प्रतीक है। उसे निर्भ्रान्त होने का कभी कोई अवसर प्राप्त नहीं हुआ था। मास्को छोड़ने पर वह उस युवक जैसा प्रसन्न था, जो पिछली त्रुटियों के प्रति जागरूक रहते हुए अपने से कहा करता है "वह यथार्थता न थी," जो कुछ पहले हो चुका है वह केवल आकस्मिक एवं महत्त्वहीन था। उस समय तक वास्तव में उसने जीवित रहने का कोई प्रयत्न नहीं किया था। परन्तु, अब, मास्को से प्रस्थान कर चुकने के पश्चात् एक नया जीवन आरम्भ हो रहा था—ऐसा जीवन जिसमें पिछली त्रुटियाँ न होंगी, पश्चात्ताप की भावनाएँ न होंगी और हर्षोल्लास को छोड़कर निश्चय ही और कुछ न होगा।

लम्बे सफ़र में सदा यही होता है—जब तक पहले कुछ स्टेशन पार नहीं हो जाते तब तक ध्यान केवल उसी स्थान पर रहता है जिसे यात्री पहले-पहल छोड़ता है, परन्तु मार्ग पर पहला प्रभात होते ही वह गन्तव्य स्थान के सम्बन्ध में विचार करने लगता है और फिर हवाई क़िले बनाना शुरू कर देता है। यही बात ओलेनिन के साथ हुई।

नगर पीछे छूट जाने के पश्चात् उसने वर्फ़ से ढके मैदानों की ओर देखा और उनके बीच अकेले अपने को ही पाकर उसे असीम उल्लास की अनुभूति हुई। अपने को कोट में समेटते हुए वह स्लेज-तल पर शान्त पड़ा

रहा और न जाने किस समय उसकी आँख लग गई। मित्रों से बिछुड़ने का उसे बड़ा रंज था। मास्को में बिताये हुए आखिरी जाड़े की स्मृतियाँ और अस्पष्ट विचारों तथा पश्चात्तापों से परिपूर्ण विगत काल के धुँधले चित्र उसकी कल्पना के समक्ष निर्बाध रूप से साकार हो उठे थे।

उसे अपने उस मित्र की याद आई जो उसे विदा करने आया था और याद आई उस लड़की के साथ अपने सम्बन्धों की जिसके बारे में दोस्तों के बीच इतनी चर्चा हुई थी। लड़की धनी थी। "वह मुझसे प्रेम करती है – यह जानते हुए वह उसे कैसे प्यार कर सकता है ?" उसने विचार किया और कुत्सित सन्देहों से उसका मन भर गया। "अगर सोचा जाय तो पता लगेगा कि मनुष्य में बेईमानी ही बहुत है।" तब उसके सामने सहसा यह प्रश्न खड़ा हो गया कि "सचमुच बात क्या है कि मैंने कभी प्यार नहीं किया? सभी कहते हैं कि मैंने प्यार नहीं किया। कहीं ऐसा तो नहीं कि मैं सनकी हूँ?" और उसकी सारी लालसाएँ उसकी कल्पना के सामने साकार होने लगीं। उसे याद आया कि मैंने समाज में कैसे प्रवेश किया था। उसे अपने मित्र की उस बहन की भी याद आई जिसके साथ कई कई शामें उसने मेज़ पर गुज़ारी थीं। उसकी कल्पना के समक्ष कढ़ाई करती हुई उसकी नाज़ुक अंगुलियाँ और उसके सुन्दर मुखड़े का वह निचला भाग नाच रहा था जो उस दिन मेज़ पर रखे हुए लैम्प की रोशनी में दमक उठा था। उसे उसके साथ अपनी लम्बी लम्बी बातें याद आईं जो 'लकड़ी की अग्नि शिखा को अधिक से अधिक देर तक सुरक्षित रखने' के खेल की भाँति बढ़ती जाती थीं। और यह भी याद आया कि उस समय मैं कितना विचित्र था, कितना विवश था और इसके कारण मेरे अन्तस् में विद्रोह की कितनी तीव्रता थी। कोई आवाज़ उसके कानों में कह जाती "वह यह नहीं है, वह यह नहीं है" और वही हुआ। उसे एक नृत्य-समारोह की याद आई जिसमें उसने सुन्दरी द··· के साथ नृत्य किया था। "उस रात मैंने कितना प्यार किया

था और मैं कितना निहाल था! दूसरे दिन प्रातःकाल जब मैं जागा और मैंने अपने को फिर स्वतंत्र पाया उस समय मुझे कितनी पीड़ा और कितना क्लेश हुआ था! प्रेम आकर मेरे हाथ-पैर क्यों नहीं बाँध देता?" उसने विचार किया। "नहीं, प्रेम जैसी कोई चीज़ नहीं! मेरी पड़ोसिन मुझसे भी कहा करती थी, जैसा कि उसने दुब्रोविन और मार्शल से कहा था, कि उसे सितारों से प्रेम है। क्या यह भी प्रेम नहीं है।"

और उसे अपनी खेतीबारी तथा गाँव में किये गये अन्य कार्यों की याद आ रही थी। इन स्मृतियों में भी ऐसी कोई बात न थी जिसपर मन रम सकता। "क्या मेरे प्रस्थान के बारे में वे लोग बहुत कुछ कहेंगे?" उसे ख्याल आया। परन्तु ये 'वे लोग' हैं कौन वह न समझ सका। बाद में उसे एक ख़्याल और आया जिसने उसे चौंका दिया और अंट-संट बकने को विवश कर दिया। उसे दर्ज़ी म० कपेल की याद आई, जिसके अभी भी ६७८ रूबल देने बाक़ी थे और उसे वे शब्द भी याद आये जिनमें उसने दर्ज़ी से अगले वर्ष तक इन्तज़ार करने की प्रार्थना की थी। इन शब्दों से दर्ज़ी के चेहरे पर परेशानी और निराशा दीख पड़ने लगी थी। यह असह्य विचार दिमाग़ से निकाल देने के लिए उसने "हे भगवान, हे भगवान" ये शब्द दुहरा दिए। "और इन सबके होते हुए भी वह मुझे प्यार करती थी," उसे उस लड़की की याद आई जिसके बारे में उन्होंने विदाई-भोज के समय बातचीत की थी। "हाँ, यदि मैंने उससे विवाह कर लिया होता तो मैं किसी का क़र्ज़दार न रह गया होता। इस समय मुझे वसील्येव का ऋण चुकाना है।" फिर, उसे वह रात याद आई जब उसने क्लब में (उस लड़की को छोड़ने के तुरन्त बाद) वसील्येव के साथ जुआ खेला था। साथ ही उसे यह भी याद आया कि उसने उससे एक बार और खेलने के लिए घिघियाते हुए कहा था और वसील्येव ने बड़ी बेरहमी के साथ इनकार किया था। "एक साल तक हाथ रोककर ख़र्च करूँगा और सारे क़र्ज़े निपट

जायेंगे। शैतानों को सब कुछ मिल जायेगा..." परन्तु इस आश्वासन के होते हुए भी, उसने फिर हिसाब लगाना शुरू कर दिया कि उसे किसका किसका देना है, कितना देना है, क़र्ज़े किन तारीखों पर लिये गये थे और वह कब तक उन्हें चुका देने की आशा करता है। "और मुझे कुछ मोरेल का और कुछ शेवल्ये का भी तो देना है," उसने उस रात की याद करते हुए विचार किया, जब उसपर इतना बड़ा क़र्ज़ हो गया था। उस रात कुछ जिप्सियों के साथ पीने की होड़ लगी थी और इसका प्रबन्ध पीटर्सबर्ग के कुछ लोगों, सम्राट के अंगरक्षक साश्का ब..., एक छटे हुए बूढ़े घमंडी और राजकुमार द... ने किया था। "क्या बात है कि वे भले आदमी इतने आत्म-संतुष्ट हैं?" उसने विचार किया, "और उन्हें ऐसी कूट मण्डली बनाने का क्या अधिकार, जिसमें वे समझते हैं, कि दूसरों को शामिल करने के लिए उनकी चाटुकारिता की आवश्यकता है? क्या ऐसा इसलिए कि वे सम्राट के अंगरक्षक हैं? ओफ़! हैरानी होती है कि वे दूसरों को बेवक़ूफ़ और गधे समझते हैं। कुछ भी हो मैंने उन्हें बता दिया है कि मुझे उनकी आत्मीयता से कोई सरोकार नहीं। यह ज़रूर है कि जब मेरे स्टेट मैनेजर को पता चलेगा कि सम्राट के कर्नल तथा अंगरक्षक साश्का ब... से मेरी दोस्ती है तो उसे हैरत होगी। हाँ, और उस रात सबसे अधिक मैंने ही पी थी और उन जिप्सियों को एक नया गाना सिखाया था और प्रत्येक व्यक्ति ने उसे सुना था। मैंने कितनी ही बेवक़ूफ़ियाँ क्यों न की हों फिर भी मैं एक बहुत अच्छा आदमी हूँ।"

प्रातःकाल तक ओलेनिन तीसरे पड़ाव पर पहुँच गया था। उसने चाय पी और अपनी गठरियाँ और सन्दूक़ उठाने-धरने में वन्यूशा की मदद की। वह अपने सामान के बीच बैठ गया, स्वस्थचित्त और शान्त। उसे मालूम था कि उसकी चीज़ें कहाँ कहाँ हैं, उसके पास कितना रुपया है और कहाँ

रखा है, उसका पासपोर्ट और घोड़े तथा सीमा-कर सम्बन्धी कागज़ात कहाँ हैं। और जब उसे इत्मीनान हो गया कि सारी चीजें क़ायदे से रखी हैं तो वह खिल उठा और उसकी लम्बी यात्रा मनोरंजन के लिए किया जानेवाला पर्यटन मात्र बनकर रह गई।

पूरे सुबह और दोपहर तक वह यही हिसाब लगाता रहा कि मैं कितने मील चल चुका हूँ, अगला पड़ाव कितने मील बाद पड़ेगा, पहला नगर कितनी दूर है, जिस स्थान पर मैं मध्याह्न का खाना खाऊँगा या अपराह्न की चाय पिऊँगा वह यहाँ से कितने मील है, स्तावरोपोल कितनी दूर है, और इस समय तक मैं कुल यात्रा का कौनसा भाग चल चुका हूँ। उसने यह भी हिसाब लगा लिया कि मेरे पास कितना रुपया है, कितना रह जायेगा, सारे क़र्जों को चुकाने के लिए कितने रुपये की जरूरत होगी और आमदनी का कौनसा भाग म प्रति मास ख़र्च करूँगा। चाय के पश्चात् शाम के समय उसने हिसाब लगाया कि स्तावरोपोल तक पहुँचने के लिए मुझे कुल यात्रा का सात बटे ग्यारह भाग और चलना होगा, अपने क़र्जों को पूरा करने के लिए सात महीनों तक हाथ रोककर ख़र्च करना होगा और इसके लिए अपनी कुल सम्पत्ति के आठवें भाग की जरूरत होगी। इस प्रकार अपने दिमाग़ को कुछ शान्त कर लेने के पश्चात् उसने फिर अपना कोट लपेटा और स्लेज में पड़कर ऊँघने लगा। अब उसकी कल्पना उसे भविष्य की ओर ले गई—काकेशिया में। उसके भविष्य के स्वप्न अमलत-बेक जैसे नायकों, चेरकेसियन महिलाओं, पर्वतों, चट्टानों, भयानक तरंगों और विपत्तियों से टकराने लगे। उसके लिए ये सब चीज़ें अभी अस्पष्ट और धूमिल थीं परन्तु यश की चाह और मृत्यु के ख़तरे ने उसमें भविष्य के लिए एक उत्कट आकांक्षा पैदा कर दी थी। अब वह अपने अभूतपूर्व साहस और सबको चकित कर देनेवाली शक्ति से अनगिनत पर्वतीयों को या तो मौत के घाट

उता र देता है या उन्हें अपने अधिकार में कर लेता है ; अब वह खुद एक पर्वतीय है और रूसियों के विरुद्ध अपनी स्वतंत्रता की रक्षा के लिए लड़ रहा है। जैसे ही उसकी कल्पना के आगे कोई निश्चित चित्र आता कि उसे मास्को के चिरपरिचित चेहरे दिखाई देने लगते। सास्का व··· रूसियों या पर्वतीयों के साथ उसके विरुद्ध लड़ रहा है। स्वयं दर्जी म० कपेल ने विचित्र ढंग से विजेता की सफलताओं में हाथ बँटाया है। और जब इन सब विचारों के साथ उसे यह याद आता कि पहले उसने कितनी बार अपमान सहे हैं, कितनी बार कमज़ोरियाँ दिखाई हैं, कितनी बार ग़लतियाँ की हैं तो ये स्मृतियाँ भी उसे दुखद न लगतीं। यह स्पष्ट था कि वहाँ पर्वतों, झरनों, सुन्दर चेरकेसियनों और ख़तरों के बीच ऐसी ग़लतियाँ न दुहराई जायेंगी। एक बार अपने सामने ग़लतियाँ स्वीकार कर लेने के बाद फिर कुछ नहीं रह जाता। परन्तु इस युवक के भविष्य-स्वप्नों में एक कल्पना और छाई हुई थी जो मधुरतम थी—स्त्री की कल्पना। और वहाँ, पर्वतों के बीच, वह स्त्री एक चेरकेसियन गुलाम के रूप में दिखाई दी—वह सुन्दर थी और अपने लम्बे घुंघराले बालों तथा सलज्ज चितवन में और भी आकर्षक लग रही थी। अब उसकी कल्पना के आगे पर्वतों के बीच एक एकाकी झोंपड़ी थी जहाँ द्वार पर खड़ी वह उसकी प्रतीक्षा करती है और वह स्वयं थका-माँदा, धूल-धूसरित, रक्त-रंजित, यश:रंजित उसके पास आता है। उसके चुम्बनों के अभिज्ञान के साथ उसके कन्धे, उसकी मधुर बोली और उसकी विनयशीलता सभी कुछ तो वह जानता है—वह मोहक तो है परन्तु अशिक्षित, जंगली और रूखी है। जाड़े की लम्बी लम्बी शामों में वह उसे पढ़ाने बैठता है। उसमें बुद्धि है, प्रतिभा है और वह अपने ज़रूरत भर का सारा ज्ञान शीघ्र ही प्राप्त कर लेती है। क्यों नहीं? वह बड़ी आसानी से विदेशी भाषाएँ सीख सकती है, फ्रेंच के बड़े बड़े ग्रन्थ पढ़ और समझ सकती है, उदाहरण के लिए "नोत्र दाम दे पारिस" पढ़कर उसे सच्चा आनन्द

मिलेगा इसमें सन्देह नहीं। वह फ्रेंच भी बोल सकती है। ड्राइंग रूम में उसकी सहज शान का क्या कहना! ऊँचे से ऊँचे समाज की महिला भी उसका मुक़ाबला नहीं कर सकती। वह गा सकती है–आसानी से, मनमोहक गान, करुण स्वरों में... "अरे, यह सब क्या बेवक़ूफ़ी है!" उसने मन ही मन कहा। परन्तु यहाँ अब एक पड़ाव आ चुका था और उसे दूसरी स्लेज बदलनी थी, और बख़्शीशें भी देनी थीं। परन्तु फिर उसकी कल्पना उसी 'बेवक़ूफ़ी' की ओर दौड़ी जिसे वह अभी अभी छोड़ चुका था। और फिर चेरकेसियन सुन्दरियाँ, यश की प्राप्ति, रूस की वापसी, अंगरक्षक के रूप में उसकी नियुक्ति और एक अति सुन्दर पत्नी उसकी कल्पना के समक्ष साकार हो उठी। "परन्तु प्रेम के आगे किस चीज की हस्ती!" उसने मन ही मन कहा, "नेकनामी! सब बेकार की बात है। परन्तु ६७८ रूबल?.. और जीते हुए प्रदेश मुझे उससे भी अधिक धन देंगे जिसकी मुझे सारी जिन्दगी ज़रूरत पड़ सकती है? हाँ, सब का सब धन स्वयं मैं ही रख लूँ यह ठीक न होगा। इसे बाँटना भी तो चाहिए। परन्तु किसे? हाँ, ६७८ रूबल कपेल को। और फिर बाद में देखा जायेगा..." अस्पष्ट धुँधले चित्र उसके दिमाग़ में चक्कर काट रहे हैं और उसकी मदभरी मीठी नींद या तो वन्यूशा की आवाज़ से टूटती है या स्लेज के रुकने से। शायद ही उसे पता लगा हो, परन्तु उसने स्लेज बदली और फिर राह पकड़ी।

अगले दिन प्रातःकाल से फिर वही चक्र शुरू हुआ–पहले जैसे पड़ाव, चाय पीना, दौड़ते हुए घोड़ों की काठी, वन्यूशा से वही थोड़ी-सी बातचीत, वैसे ही अस्पष्ट स्वप्न और झपकियाँ और रात्रि में थकावट के बाद खर्राटों वाली पहली जैसी नींद।

३

ओलेनिन मध्य रूस से जितनी ही दूर आगे बढ़ता गया उसकी स्मृतियाँ उतनी ही पीछे छूटती गईं और काकेशिया के जितने ही समीप पहुँचता गया उसका हृदय उतना ही हल्का होता गया। "मैं हमेशा हमेशा के लिए दूर रहूँगा और समाज में अपना मुँह दिखाने कभी न लौटूँगा," यह विचार भी उसके मस्तिष्क में पैदा हो जाता, "जिन व्यक्तियों को म यहाँ देख रहा हूँ वे सच्चे अर्थ में व्यक्ति नहीं हैं। इनमें से कोई मुझे नहीं जानता और कोई भी मास्को के उस समाज में नहीं पहुँच सकता जहाँ मैं था। मेरी पिछली जिन्दगी के बारे में किसी को कुछ पता नहीं चल सकता। और उस समाज का कोई भी प्राणी कभी यह न जान सकेगा कि इन लोगों के बीच रहता हुआ मैं क्या कर रहा हूँ।" सड़कों पर वह जिन रूखे व्यक्तियों से मिलता उनके बीच उसे यह अनुभूति होती मानो वह अपने सम्पूर्ण विगत जीवन से नाता तोड़ चुका है। इन व्यक्तियों को वह उस अर्थ में व्यक्ति नहीं समझता था जिसमें उसके मास्को के परिचित समझे जाते थे। यह एक नई अनुभूति थी।

जो जितना ही रुक्ष होता और उसमें सभ्यता के चिन्ह जितने ही कम होते, वह अपने को उतना ही स्वतन्त्र अनुभव करता। स्तावरोपोल से होकर उसे जाना था। यहाँ जरूर उसे कुछ उलझन हुई थी। यहाँ के नाम-पटों को, जिनमें से कुछ फ्रेंच भाषा में भी थे, गाड़ियों में आने-जानेवाली स्त्रियों को, बाजारों में खड़ी गाड़ियों, और लबादा पहने तथा हैट लगाकर यात्रियों को घूरनेवाले एक भले आदमी को देखकर वह घबड़ा-सा गया था। "शायद ये लोग मेरे कुछ परिचितों को जानते हैं," उसने विचार किया; और एक बार फिर उसकी कल्पना के आगे क्लब, दर्जी, ताश, समाज... सभी कुछ घूमने लगे। परन्तु स्तावरोपोल

निकल जाने के पश्चात् फिर सब कुछ ठीक हो गया। यह वन्य स्थान था, सुन्दर था और यहाँ की प्रकृति में युद्धप्रियता प्रतिबिम्बित हो रही थी। ओलेनिन को अधिक से अधिक प्रसन्नता होने लगी। सभी कज़्ज़ाक, गाड़ीवान और पड़ाव-रक्षक उसे सीधे-सादे लगे, जिनके साथ वह हँसी-मज़ाक़ कर सकता था और बिना यह सोच-विचार के कि वे किस श्रेणी के हैं उनसे खुलकर और स्वतंत्रतापूर्वक बातचीत कर सकता था। वे सभी इन्सान थे जिन्हें ओलेनिन चाहता था, प्यार करता था। और, वे सब भी उसे दोस्त की तरह मानते और उसका आदर करते थे।

दोन कज़्ज़ाकों के प्रान्त में उसकी स्लेज बदल दी गई थी और अब वह पहियोंवाली एक गाड़ी में सफ़र कर रहा था। स्तावरोपोल के बाद इतनी अधिक गर्मी पड़ने लगी कि ओलेनिन को अपना भारी कोट उतारकर एक ओर रख देना पड़ा। बसन्त का आगमन हो चुका था और यह ओलेनिन के लिए एक मादक अनुभूति थी। रात में उसे कज़्ज़ाक गाँवों से बाहर नहीं जाने दिया गया था क्योंकि लोगों का कहना था कि शाम को यात्रा करना ख़तरे से ख़ाली नहीं है। वन्यूशा की व्याकुलता बढ़ने लगी और दोनों ने त्रोइका-गाड़ी* में बैठे बैठे अपनी भरी हुई बन्दूक़ सम्भाल ली। ओलेनिन को और भी प्रसन्नता हुई। एक पड़ाव पर पोस्टमास्टर ने उसे बताया कि हाल ही में राजमार्ग पर एक निर्मम हत्या हुई है। अब उन्हें सशस्त्र लोग मिलने लगे थे। "हाँ, अब यह आया!" ओलेनिन ने विचार किया और वह उन हिमावृत्त पर्वतशिखरों को देखने की आस लगाये रहा जिनका उल्लेख वह पीछे कई बार सुन चुका था। एक दिन सायंकाल नगई गाड़ीवान ने, बादलों से ढके हुए पहाड़ों की ओर अपने चाबुक से संकेत भी किया। ओलेनिन ने उत्सुकतापूर्वक उनकी ओर देखा—वातावरण शान्त था और पर्वत प्राय:

---

* तीन घोड़ोंवाली एक गाड़ी रूस में 'त्रोइका' कहलाती है।

बादलों के पीछे छिपे थे। ओलेनिन ने कुछ भूरे-सफ़ेद तथा रोयेंदार-जैसे दृश्य देखे थे परन्तु कोशिश करने पर भी वह पर्वतों में ऐसी कोई सुरम्य और आकर्षक छटा न देख सका जिसके बारे में उसने प्रायः पढ़ा और सुना था। उसे पर्वत तथा बादल दोनों एक जैसे ही लग रहे थे और वह सोच रहा था कि हिम शिखरों का विशिष्ट सौन्दर्य, जिसके बारे में उसे कितनी ही बार बताया गया था, बाख़ का संगीत या नारी के प्रति प्रेम जैसा ही कोई काल्पनिक आविष्कार है। और उसे न तो बाख़ के संगीत में ही कोई विश्वास था न नारी के प्रति प्रेम में ही। अतएव उसने पर्वतों की ओर देखना छोड़ दिया।

दूसरे दिन प्रातःकाल जब भीनी भीनी बयार की सुरभि से त्रोइका-गाड़ी में उसकी नींद टूटी तो उसने दाहिनी ओर एक उड़ती हुई नज़र डाली। प्रभात अपना सौन्दर्य बिखेर चुका था। सहसा उसने आँखें ऊपर उठाईं और लगभग बीस क़दम की दूरी पर उसे भूधराकार आकृतियाँ दिखाई पड़ीं। ऐसा प्रतीत होता कि सुदूर आकाश से उनके शिखरों की आकर्षक रूपरेखाएँ अपना सम्पूर्ण सौन्दर्य अपने में समेटे पृथ्वी पर उतर रही हैं। जब उसने अपने और उन आकृतियों तथा आकाश के बीच की दूरी पर ध्यान दिया और पर्वतों की विशालता पर एक निगाह डाली तथा उस अपूर्व सौन्दर्य की निस्सीमता का अनुभव किया तो उसे यह सोचकर भय होने लगा कि यह इन्द्रजाल है, स्वप्न है। उसने आँखें मलीं और एक बार सारे शरीर को झटका, यह देखने के लिए कि कहीं वह सो तो नहीं रहा है। परन्तु वे पर्वत ही थे अपनी जगह पर अटल, अविचल, स्थिर।

"क्या है वह? यह क्या है?" उसने गाड़ीवान से पूछा।

"क्यों? पहाड़ ही तो हैं," नगई गाड़ीवान ने अन्यमनस्कता से जवाब दिया।

"मैं तो इन्हें बड़ी देर से देख रहा हूँ," वन्यूशा ने कहा, "क्या वे सुन्दर नहीं? घर पर तो कोई विश्वास भी न करेगा।"

त्रोइका-गाड़ी चिकनी सड़क पर सर्राटे से चली जा रही थी और इसी कारण पहाड़ भी क्षितिज से सटकर भागते से दिखाई पड़ रहे थे। पहाड़ों के गुलाबी शृंग उदय होते हुए सूर्य के प्रकाश में जगमगा रहे थे। पहले-पहल ओलेनिन पहाड़ों को देखकर दंग रह गया परन्तु बाद में उसे बड़ी प्रसन्नता हुई। वह हिमावृत शृंखलाओं की ओर बराबर टकटकी लगाये देखता रहा। शृंखलाएँ भी अपनी सम्पूर्ण सुषमा लिये मीलों तक फैली हुई थीं। उनका प्रारम्भ मैदानों से ही हो गया था। ओलेनिन देर तक इस प्राकृतिक सौन्दर्य का पान करता रहा और अन्ततः उसे विश्वास हो गया कि मैं पर्वतों और शिखरों के बीच आ गया हूँ। उस क्षण से जो कुछ भी उसने देखा, जो कुछ भी उसने सोचा-विचारा और जो कुछ अनुभव किया उससे वह स्वयं महान् हो गया, विराट् हो गया, पर्वतों के समकक्ष हो गया! अब उसकी मास्को की स्मृतियाँ, लज्जा और पश्चात्ताप की अनुभूतियाँ और काकेशिया के बारे में उसके तुच्छ क्षुद्र स्वप्न समाप्त हो गये और फिर उनकी कभी पुनरावृत्ति नहीं हुई। "अब उसका आरम्भ होने लगा है" ऐसा लगता था कोई पवित्रवाणी उसके कानों में पड़ रही है। सड़क और तेरेक दूर ही से दिखाई पड़ रहे थे। अब कज्ज़ाक गाँव तथा वहाँ के निवासी उसके लिए केवल सुनी-सुनायी चीज़ ही न रह गये थे। उसने आकाश की ओर देखा और उसे पहाड़ों की याद आई। उसने अपनी तथा वन्यूशा की ओर देखा और फिर पर्वतों पर ध्यान केन्द्रित किया... दो कज्ज़ाक घोड़ों पर निकल गये। उनकी बन्दूकें उनके कन्धों से झूल रही थीं और उनके घोड़ों के सफ़ेद पैर उठते, पड़ते, आगे बढ़ते एक विचित्र ध्वनि पैदा कर रहे थे... और पहाड़! तेरेक के पीछे एक चेचेन औल से धुआँ उठ रहा है... और पहाड़! उदय होता हुआ सूर्य तेरेक पर चमक रहा है, उस तेरेक पर जो नरकट की

झाड़ियों का आलिंगन करती हुई घूम गई है... और पहाड़! गाँव से एक गाड़ी चली आ रही है और स्त्रियाँ, सुन्दरियाँ, आ-जा रही हैं... और पहाड़! अब्रेक* घोड़ों पर बैठे धीरे धीरे खुले मैदान में चक्कर लगा रहे हैं। और मैं हूँ कि उन्हीं के बीच गाड़ी पर बैठा हुआ आगे बढ़ रहा हूँ। और, मुझे उनसे तनिक भी डर नहीं लगता! मेरे पास बन्दूक़ है, ताक़त है, जवानी है... और पहाड़!

४

तेरेक तट के पूरे इलाक़े (लगभग अस्सी मील) में ग्रेबेन कज़्ज़ाकों के गाँव हैं। सभी गाँव, ग्रामक्षेत्रों अथवा वहाँ के निवासियों की दृष्टि से, प्रायः एक जैसे हैं। तेरेक, पहाड़ी जातियों को कज़्ज़ाकों की दुनिया से अलग करती है। नदी चौड़ी और शान्त है, परन्तु है गन्दी और प्रवाहयुक्त। अपने निचले तथा नरकटों के झाड़-झंखाड़ों से युक्त दाहिने तट पर भूरे रंग की रेत की तहें बिछाती और ढालू, कम ऊँचे, बायें तट को, जहाँ सैकड़ों वर्ष पुराने ओक के वृक्ष आज भी मौजूद हैं, धोती और तटवर्ती घनी झाड़ियों को सींचती हुई, तेरेक बहती जा रही है। दाहिने तट पर कुछ गाँव बसे हैं जहाँ चेचेन रहते हैं। वे सन्तुष्ट तो ज़रूर हैं परन्तु उनका हृदय शान्त नहीं है। बायें किनारे पर नदी से लगभग आधे मील दूर कज़्ज़ाकों के कई गाँव हैं। गाँव प्रायः एक दूसरे से सात सात या आठ आठ मील की दूरी पर हैं। पुराने ज़माने में इनमें से अनेक गाँव नदी-तट पर ही बसे थे। परन्तु, वर्ष प्रति वर्ष तेरेक के उत्तर की ओर बढ़ते रहने के कारण उसके किनारे

---

* उपद्रवी चेचेन जो लूटमार करने के लिए तेरेक के रूसी तट में घुस आये थे।

बह गये। अब वहाँ पुराने गाँवों के ध्वंसावशेष ही रह गये हैं। वहाँ आड़ू, बेर, जामुन और चिनार के वृक्ष तथा वनैले अंगूरों की लताएँ अब भी मिलती हैं। इस समय वहाँ कोई नहीं रहता। हाँ, हिरन, भेड़िये, खरगोश और तीतर आज भी इस स्थान को नहीं भूले हैं। वे इसे प्यार करते हैं और यहीं रहते हैं। अनेक गाँवों को मिलाती हुई एक सड़क ऐसी दिखाई पड़ती है मानो बन्दूक़ से छूटी हुई गोली अपना रास्ता बनाती हुई आगे बढ़ रही हो। कभी कभी जंगलों के कारण इस सड़क की दिश. में कुछ व्याघात पड़ जाता है। सड़क के किनारे कज्ज़ाकों के खेमे हैं जहाँ चौकसी का पूरा इन्तज़ाम है। वहाँ चौकीदारों की भी कमी नहीं। उर्वरा वन्य भूमि की लगभग सात सौ गज लम्बी संकरी पट्टी पर कज्ज़ाकों का अधिकार है। इसके उत्तर में नगई अथवा मज़दोक स्टेपी के रेत के टीले आरम्भ हो जाते हैं जो सुदूर उत्तर तक फैले हुए भगवान जाने कहाँ तक चले गये हैं—तुर्कमेन में, अस्त्राखान में या किरवीज़-कैसक स्टेपी में। तेरेक के उस पार दक्षिण में महान चेचना पर्वत, कोचकलिकोव्स्की पहाड़ियाँ, काला पर्वत, फिर कोई पर्वत श्रेणी और अन्त में हिमावृत पहाड़ हैं जो देखे भर जा सकते हैं, परन्तु अभी तक पर्वतारोहियों ने उनपर विजय नहीं पाई। इस उर्वरा पट्टी में वनस्पतियों की प्रचुरता है। यहीं बहुत प्राचीन काल से एक खूबसूरत रूसी जाति रहती आई है। ये लोग प्राचीन विश्वासकर्त्ताओं* के सम्प्रदाय के हैं और ग्रेबेन कज्ज़ाक कहलाते हैं।

बहुत प्राचीन काल से इन प्राचीन विश्वासकर्त्ताओं के पूर्वज रूस से भाग कर तेरेक के उस पार चेचेनों के बीच ग्रेबेन पर बस गये थे। ग्रेबेन

---

* प्राचीन विश्वासकर्त्ता उस सम्प्रदाय का एक सामान्य नाम है जो सत्रहवीं शताब्दी में रूसी-ग्रीक चर्च से अलग हो गया था—अनु०

महान चेचना के वनपूर्ण पर्वतों की पहली शृंखला है। चेचेनों के बीच रहते हुए कज़्ज़ाकों ने उनसे वैवाहिक सम्बन्ध स्थापित किये और पहाड़ी जातियों के आचरण तथा रीति-रिवाज अपनाये। परन्तु वे बराबर शुद्ध रूसी भाषा का प्रयोग करते रहे तथा अपने पुराने विश्वासों में अटल रहे। उनके मध्य एक दन्त-कथा चली आती है जो उन्हें आज भी याद है। इसके अनुसार एक बार भयंकर ज़ार इवान स्वयं तेरेक आया था और उसने उनके पूर्वजों को बुलाकर नदी के इस पार की जमीन देकर उनसे रूस के प्रति मित्रवत् व्यवहार करने का अनुरोध किया था और यह वादा किया था कि वह न तो उनपर अपना शासन लागू करेगा और न उन्हें अपने विश्वासों को बदलने के लिए बाध्य ही करेगा। आज भी कज़्ज़ाक परिवारों का कहना है कि उनका तथा चेचेनों का नाते-रिश्ते का सम्बन्ध है। उनकी प्रमुख विशेषताएँ हैं—स्वच्छन्दता, विराम-सुख, लूट-खसोट और युद्ध की चाह। रूसी प्रभाव का अप्रिय पक्ष कभी निर्वाचनों में हस्तक्षेप, गिरजे के घण्टों की ज़ब्ती और उन सैनिक टुकड़ियों के रूप में देखने को मिल जाता है जो आ..क्षेत्रों में तैनात कर दी गई हैं अथवा वहाँ से होकर गश्त लगाती हुई गुज़रती हैं।

कज़्ज़ाक उस सैनिक की अपेक्षा, जो उसके ग्राम की सुरक्षा के लिए उसके सर पर थोपा गया है परन्तु जिसने धूम्रपान करके उसकी झोंपड़ी को अपवित्र कर दिया है, उस जिगीत* पार्वतीय से कम घृणा करता है जिसने सम्भवतः उसके भाई को मौत के घाट उतारा है। वह अपने शत्रु पार्वतीय की इज्ज़त करता है परन्तु सैनिक को घृणा की दृष्टि से देखता है क्योंकि सैनिक उसकी निगाह में विदेशी है, अत्याचारी

---

* चेचेनों में 'जिगीत' कुछ उसी प्रकार के होते हैं जिस प्रकार लाल भारतीयों में 'बलवान'। परन्तु इस शब्द का रूढ़ार्थ निपुण घुड़सवार है।

है। वास्तविकता यह है कि कज़्जाक के दृष्टिकोण से, रूसी किसान विदेशी, जंगली और घृणित जीव है जिसका एक नमना उसे उन फेरीवालों में दिखाई पड़ता है जो उसके गाँवों में आते हैं और दूसरा बाहर से आ बसनेवाले उन हीन रूसियों में जिन्हें कज़्जाक घृणा से 'ऊन पीटनेवाले' कहता है। उसके लिए सुन्दर वेशभूषा का अर्थ है चेरकेसियन की वेशभूषा। सर्वोत्तम हथियार पार्वतीयों से प्राप्त होते हैं। इसी प्रकार सर्वोत्तम घोड़े भी या तो इन्हीं पार्वतीयों से मिलते हैं अथवा उनके यहाँ से चुरा लिये जाते हैं। उत्साही कज़्जाक हमेशा तातारी भाषा के अपने ज्ञान का प्रदर्शन करना चाहता है और जब मण्डली में शराब पीने लगता है उस समय भी अपने कज़्जाक दोस्तों से तातारी बोलता है।

इन सब बातों के होते हुए भी ईसाइयों का यह छोटा-सा फ़िरक़ा पृथ्वी के एक ऐसे छोटे-से कोने में निस्सहाय पड़ा है जिसके इर्द-गिर्द अर्द्ध-वहशी मुसलमान जातियाँ और सैनिक हैं। लेकिन वह वंश अपने आपको बड़ा समुन्नत समझता है और कज़्जाकों को छोड़कर अन्य किसी को मनुष्य ही नहीं मानता। वह बाक़ी सभी को घृणा की दृष्टि से देखता है। कज़्जाक अपना अधिकांश समय घेरा डालने, युद्ध करने, शिकार खेलने और मछली मारने में व्यतीत करता है। शायद ही कभी वह घर पर कोई काम करता हो। जब वह गाँव में ठहरता है उस समय केवल छुट्टी मनाता है। गाँव में ठहरना प्राय: उसके सामान्य कामों के अन्तर्गत नहीं आता। कज़्जाक अपनी शराब खुद बनाता है। पीना उसकी सामान्य आदत नहीं बल्कि उसके रीति-रिवाजों का एक अंग है। जो नहीं पीता वह अपने धर्म, नियम और समाज का बहिष्कार करनेवाला समझा जाता है। कज़्जाक स्त्री को अपने कल्याण की शक्ति समझता है। उनके समाज में आनन्द मनाने का अधिकार केवल अविवाहिता लड़कियों को ही है। विवाहिता स्त्री को जवानी से लेकर बुढ़ापे तक अपने पति के लिए काम करना पड़ता है। कज़्जाक अपनी पत्नी

में प्राच्य गुणों – परिश्रम और समर्पण – का विकास देखना चाहता है। शायद इसी कारण स्त्रियों का शारीरिक और मानसिक विकास होता है। और यद्यपि वे, जैसा कि पूर्वीय देशों में है, नाम मात्र को पराधीन रहती हैं फिर भी पाश्चात्य स्त्रियों की अपेक्षा पारिवारिक जीवन में उनका महत्व और प्रभाव कहीं अधिक है। सार्वजनिक जीवन से अलग तथा पुरुषों जैसे कठोर परिश्रम करने के अभ्यास के कारण परिवार में उनका अधिकार और महत्व बहुत बढ़ा-चढ़ा है। जो कज़्ज़ाक अपरिचितों के सामने अपनी पत्नी से प्रेमपूर्वक बातें करना या बिना ज़रूरत बोलना अनुचित समझता है वही जब उसके साथ अकेला रहता है उस समय पत्नी की वरिष्ठता और श्रेष्ठता का लोहा मानता है। उसका घर, उसकी सम्पत्ति, उसका सब कुछ केवल उसकी पत्नी की मेहनत और देखरेख के कारण ही सुव्यवस्थित रहता है। यद्यपि उसका निश्चित विश्वास है कि मेहनत करना कज़्ज़ाक के लिए अपमानजनक है, – मेहनत या तो नगई ग़ुलाम के लिए उचित है अथवा स्त्री के लिए – फिर भी वह यह बात भली भाँति जानता है कि उसके काम आनेवाली प्रत्येक वस्तु, जिसे वह अपनी कह सकता है, उसी मेहनत का नतीजा है। और यह केवल स्त्री (माता या पत्नी), जिसे वह अपना ग़ुलाम समझता है, के हाथ की बात है कि वह जब चाहे उसे उसकी अपनी चीज़ों से वंचित कर दे। इसके अतिरिक्त, पुरुषोचित बड़े बड़े कामों को बराबर करते रहने और सौंपी गई ज़िम्मेदारियों को निभाने के कारण ग्रेबेन महिलाओं के व्यक्तित्व में असाधारण स्वतन्त्रता और पौरुष का प्रादुर्भाव हुआ है और वे अपनी शारीरिक शक्तियों, सामान्य बुद्धि, संकल्प और दृढ़ता का विकास कर सकी हैं। अधिकांशतया महिलाएँ पुरुषों की अपेक्षा अधिक मज़बूत, अधिक बुद्धि सम्पन्न, अधिक विकसित और अधिक सुन्दर होती हैं। ग्रेबेन महिला की सुन्दरता की एक विशेषता यह है कि उसमें शुद्ध चेरकेसियन प्रकार के चेहरे-मोहरे और उत्तरी महिलाओं

के गठित और सशक्त शरीर का अद्भुत समन्वय होता है। कज्ज़ाक महिलाएँ चेरकेसियन वेशभूषा धारण करती हैं—तातारी कोट, बेशमेत*, मुलायम स्लीपर—और रूसियों की भाँति अपने सिर के चारों ओर रूमाल लपेटती हैं। चुस्ती, सफ़ाई, वेशभूषा का शिष्ट सौन्दर्य और झोपड़ों की सुव्यवस्था उनके आचार-व्यवहार का एक अंग है—और उनके लिए आवश्यक है।

पुरुषों के साथ अपने सम्बन्धों में स्त्रियों को, और विशेष रूप से अविवाहिता लड़कियों को, पूरी स्वतन्त्रता है।

नवोमलिन्स्काया ग्रेबेन कज्ज़ाकों का सबसे महत्वपूर्ण ग्राम है। अन्य सभी स्थानों की अपेक्षा प्राचीन ग्रेबेन जनता के रीति-रिवाज यहीं सबसे अधिक सुरक्षित रहे हैं। यहाँ की स्त्रियाँ अतीत काल से ही अपने सौन्दर्य के लिए काकेशिया भर में प्रख्यात रही हैं। अंगूर के बाग़, फलोद्यान, तरबूज़ और लौकी की खेती, मछली मारना, शिकार, मक्का तथा मोटे अनाज की पैदावार और युद्ध से प्राप्त लूट का माल यही कज्ज़ाक की जीविका के साधन हैं। नवोमलिन्स्काया गाँव तेरेक से प्रायः तीन मील पर है। गाँव तथा नदी के बीच एक घना जंगल पड़ता है। गाँव से होकर जानेवाली सड़क के एक ओर नदी और दूसरी ओर अंगूर के बाग़ और फलोद्यान हैं जिनके पीछे नगई स्टेपी के रेतीले टीले दीख पड़ते हैं। गाँव के चारों ओर मिट्टी के ढेर तथा गोखरू की घनी झाड़ियाँ हैं। गाँव में एक ऊंचे फाटक से होकर प्रवेश किया जाता है। यह फाटक दो खम्भों पर सधा है जिसके ऊपर नरकटों की घास-फूस की एक छत-सी है। इसके पास ही एक काठ की गाड़ी पर एक वृहदाकार तोप रखी है जिसे किसी ज़माने में कज्ज़ाक युद्ध-स्थल से लूट लाये थे। लगभग सौ साल से गोलेबारी के लिए इसका इस्तेमाल नहीं किया गया है। एक

---

* आस्तीनोंदार एक तातारी क़मीज़।

वर्दीधारी कज़्ज़ाक चौकीदार तलवार बन्दूक़ लेकर कभी कभी फाटक के पास खड़ा होता है और गुज़रते हुए किसी अफ़सर को कभी कभी सलाम कर लेता है।

फाटक की छत के नीचे एक सफ़ेद बोर्ड पर काले अक्षरों में लिखा हुआ है—घर २६६, पुरुष ८९७, स्त्रियाँ १०१२। कज़्ज़ाकों के मकान ज़मीन से दो या तीन फ़ुट की उंचाई पर लकड़ी के लट्ठों पर बने हैं। उनपर नरकटों की फूस बिछी है और दीवारों के ऊपरी भाग पर कुछ नक़्क़ाशी की हुई है। यद्यपि वे नये तो नहीं फिर भी साफ़-सुथरे और सीधे-सादे बने हैं। मकानों में भिन्न भिन्न प्रकार की ड्योढ़ियाँ हैं। वे एक दूसरे से सटे हुए नहीं हैं। उनके चारों ओर अच्छी-ख़ासी जगह छूटी है और वे चौड़ी चौड़ी सड़कों तथा गलियों के किनारे किनारे ख़ूबसूरती से बनाये गये हैं। बाड़ों के उस ओर बहुत से मकानों की बड़ी बड़ी और हल्की खिड़कियों के सामने गहरे हरे रंग के चिनार के वृक्ष तथा बबूल अपनी कोमल पीत हरियाली और सुगंधित फूलों की सुषमा बिखेरते हैं। ये वृक्ष कभी कभी मकान की छतों से भी ऊँचे होते हैं और बड़े लुभावने लगते हैं। इन वृक्षों के पास पीली सूरजमुखी, लताएँ और अंगूर की बेलें लहलहाती हैं। खुले चौड़े चौक में तीन दूकानें हैं, जहाँ वस्त्र, सूर्यमुखी तथा लौकी के बीज, सेम और अदरक भरी रोटियाँ बिकती हैं। चिनार के वृक्षों की पंक्ति के पीछे, अन्य मकानों से बड़े तथा ऊँचे, एक मकान में रेजीमेन्ट का कमांडर रहता है। इस मकान की सभी खिड़कियाँ चौखटदार हैं। सप्ताह के दिनों में, विशेष रूप से गर्मी में, गाँव की सड़कों पर थोड़े से ही लोग दिखाई पड़ते हैं। नवयुवक घेरों अथवा साहसिक अभियानों पर रहते है और वृद्ध या तो मछलियाँ मारते हैं या बाग़-बग़ीचों में स्त्रियों की सहायता करते हैं। केवल बहुत बूढ़े, बच्चे या बीमार लोग ही घरों पर रहते हैं।

५

काकेशिया में ऐसी मनमोहक शामें कम होती हैं। सूर्य पहाड़ों के पीछे छिप गया था परन्तु प्रकाश अब भी था। एक-तिहाई आकाश पर सायंकालीन झुटपुटा फैल चुका था और इस क्षीण होते हुए प्रकाश में पर्वतों का विषण्ण महाकार और भी गहरी रेखाओं में खिंच रहा था। वायु स्थिर थी, तरल थी और उसमें गूँज थी। स्टेपी पर मीलों तक पहाड़ों की साया पड़ रही थी। स्टेपी, सड़कें और नदी के दूसरी ओर का क्षेत्र सब सुनसान हो चुके थे। यदि कभी कभी कोई सवार दिखाई पड़ जाते तो शिविरों के कज़्ज़ाक तथा औलों (चेचेनों के गाँव) के चेचेन उन्हें आश्चर्य और उत्सुकता से देखने लगते और यह अनुमान लगाने का प्रयत्न करते कि ये जीव कौन हैं, कहाँ के हैं ?

रात होते होते लोग अपने अपने घरों में पहुँच जाते क्योंकि प्रत्येक को दूसरे का डर बना रहता। मनुष्यों के भय से मुक्त पशु पक्षी उस निर्जन स्थान पर टें-टें किया करते। स्त्रियाँ सूर्यास्त से पूर्व अंगूर की लताएँ लपेट-लपाट कर बाग़ों से जल्दी जल्दी घर की राह लेतीं और बातों ही बातों में उनका रास्ता मौज में कट जाता। आस-पास के क्षेत्रों की भाँति बाग़-बग़ीचे भी वीरान हो जाते। परन्तु, शाम के समय गाँवों में जीवन की बहार होती। सभी ओर से मनुष्यों का क़ाफ़िला गाँवों की ओर बढ़ता हुआ नज़र आता—कुछ पैदल, कुछ गाड़ियों पर और कुछ घोड़ों पर। फ़्राक पहने और हाथों में टहनियाँ नचाती हुई ग्राम-सुन्दरियाँ बातों मे रस घोलती हुई अपने पशुधन का स्वागत करने के लिए गाँव के प्रवेश द्वार तक दौड़ जातीं। उनके पशु भी धूलि-धूसरित और स्टेपी मे मक्खी-मच्छड़ों की फ़ौज लिये हुए गोखर में आते। स्वस्थ गाय भैंसें सड़क पर मटरगश्ती करतीं और कज़्ज़ाक स्त्रियाँ अपनी रंग-

बिरंगी वेशमेतें पहने उनके मध्य स्वच्छन्द घूमा करती। पशुओं के रंभाने के बीच उनकी हँसी और किलकारियाँ दूर दूर तक सुनाई पड़तीं। यहीं एक सशस्त्र घुड़सवार कज़्ज़ाक घेरे से छुट्टी पाकर एक घर की ओर जाता दिखाई पड़ता है। वहाँ पहुँच कर वह कुछ झुक कर खिड़की खटखटाता है। और एक नवयुवती का सुन्दर मुखड़ा खिड़की में से झाँकता हुआ दिखाई पड़ता है, और फिर मस्ती से भरी हँसी और आत्मीयता उस भाग्यशाली का स्वागत करती हैं। यहीं एक फटे-हाल नगई ग़ुलाम, जिसके गालों की हड्डियाँ उभरी हुई है, स्टेपी से गाड़ी पर नरकटों का एक बोझा लादे हुए आता दिखाई देता है। शीघ्र ही वह सारे नरकट कज़्ज़ाकी कप्तान के लम्बे-चौड़े और साफ़ आँगन में उलट देता है और बैलों पर से जुआ उतार देता है। बैल भी अब मुक्त होकर अपने सिर दाएँ-बाएँ झुलाने लगते हैं। इधर मालिक और ग़ुलाम तातारी भाषा में एक दूसरे को चिल्ला चिल्ला कर पुकारते हैं। सामने कीचड़ और कूड़ा-करकट से भरा एक पोखरा है जो वर्ष प्रति वर्ष प्रायः सड़क पार तक बढ़ आता है। इसे केवल मेड़ की सहायता से ही लाँघा जा सकता है। इसी पोखरे से होकर आती हुई एक कज़्ज़ाक महिला दीख पड़ती है। उसके पैर नंगे हैं और पीठ पर है लकड़ी का एक बोझ। कीचड़ से बचने के लिए उसने अपना फ़ाक कुछ ऊँचा उठा लिया है और उसके सफ़ेद पैर दीखने लगे हैं। शिकार से लौट कर आता हुआ एक कज़्ज़ाक उससे मज़ाक़ कर बैठता है—"तनिक और ऊपर उठा लो, मेरी जान!" और अपनी बन्दूक़ उसपर तान देता है। महिला फ़ाक छोड़ देती है और लकड़ियाँ गिरा देती है। एक वृद्ध कज़्ज़ाक मछली मार कर घर लौट रहा है। उसका पैजामा नारे के पास से मुड़ा हुआ है। उसका बालदार भूरा सीना खुला है। उसके कंधे पर एक जाल है जिसमें चाँदी जैसी चमकीली मछलियाँ अब भी तिलमिला रही हैं। रास्ता बचाने की ग़रज़

से वह अपने पड़ोसी की टूटी मेड़ पर जाता है और चढ़ते समय दोनों हाथों में अपना कोट पकड़ लेता है। एक महिला सूखी डाल घसीटती हुई आगे बढ़ रही है। एक कोने में कुल्हाड़ी की खटखट भी सुनाई पड़ रही है। कज़्जाकों के बच्चे, सड़क की चिकनी चिकनी जगहों पर लट्टू नचा रहे हैं और चीख चिल्ला रहे हैं। लम्बा चक्कर बचाने के लिए स्त्रियाँ मेड़ों पर चढ़ रही हैं। प्रत्येक चिमनी से किज़्याक* का सुगंधित धुआँ निकल रहा है। घर घर में चिल्लपों सुनाई दे रही है जैसे वह रात्रि की नीरवता की भूमिका हो।

कज़्ज़ाक कार्नेट एक स्कूल मास्टर है। उसकी पत्नी श्रीमती उल्लित्का अन्य स्त्रियों की तरह अपने आँगन के फाटक तक जाती है और उन मवेशियों का इन्तज़ार करती है जिन्हें उसकी पुत्री मर्यान्का सड़क से हांक कर ला रही है। टट्टर के बाड़े का फाटक पूरी तरह खुल भी नहीं पाता कि मच्छरों से सनी हुई एक बड़ी-सी भैंस हुंकारती हुई उसमें घुस जाती है। बाद में गायें भी वाड़े में प्रवेश करती हैं। पूँछों से शरीर झाड़ती हुई वे अपनी स्वामिनी की ओर इस दृष्टि से ताक रही है मानो कह रही हों 'देखो, हम आ गये'।

सुन्दर और सुगठित मर्यान्का फाटक में घुस आती है और झट से उसे बन्द कर लेती है। फिर वह भागती हुई कभी इधर, कभी उधर, गाय भैंसों को अलग अलग करती तथा प्रत्येक को उसके ओसारे में पहुँचाती है। "चट्टियाँ तो उतार दे, चुड़ैल!" उसकी माता चिल्लाती है। "घिसटा घिसटा कर क्या उनमें छेद बना देगी!" मर्यान्का को 'चुड़ैल' शब्द सुन कर न गुस्सा आया न तिलमिलाहट हुई। वह तो प्यार का शब्द

* सुखाये हुए गोबर का ईंधन—अनु०

था। अतएव, प्रसन्न होती हुई वह अपने काम में लगी रही। उसका चेहरा ढका हुआ है क्योंकि उसने सिर के चारों ओर एक रूमाल लपेट लिया है। वह गुलाबी रंग की एक फ़ाक तथा हरी बेशमेत पहने हुए है। वह अहाते में से होकर एक ओसारे में घुस जाती है। उसके पीछे पीछे एक बड़ी, मोटी भैंस भी लगी हुई है। बड़े दुलार से वह भैंस को पुचकारती हुई कह उठती है, "वहीं खड़ी रहेगी या आयेगी भी? कैसी बुद्धू है, आ जा, आ जा!" शीघ्र ही माँ-बेटी ओसारे से निकल कर बाहरी कमरे में आ जाती है। उनके हाथ में दो बरतन हैं जिनमें गाय भैंसों का इकट्ठा किया हुआ दिन भर का दूध है। कमरे की चिमनी से किज़्याक का धुआँ उठ रहा है। यहाँ दूध से मलाई तैयार की जा रही है। लड़की आग सुलगाने तथा उसे तेज़ करने में लग जाती है और उसकी माता फाटक की ओर बढ़ती है। झुटपुटा हो गया है। वायु में शाकसब्ज़ियों, मवेशियों और किज़्याक-धूम की सुगन्ध भरी हुई है। कज़्ज़ाक महिलाएँ हाथ में जलते हुए चिथड़े लेकर सड़कों पर तेजी से आ जा रही है। अहातों में दुहे जाते मवेशियों के रंभाने का शब्द सुनाई पड़ रहा है। सड़कों तथा आँगनों से स्त्रियों तथा बच्चों की आवाजें आ रही हैं—कोई किसी को पुकारता है तो कोई किसी को। सप्ताह के दिन किसी पियक्कड़ का शोरग़ुल प्रायः नहीं सुनाई पड़ता।

मर्दों-सी लगनेवाली एक लम्बी-चौड़ी कज़्ज़ाक वृद्धा सामने के मकान से आग माँगने श्रीमती उलित्का के पास आती है। उसके हाथ में एक चिथड़ा है।

"काम ख़तम हो गया न?"

"लड़की आग सुलगा रही है। तुम्हें आग चाहिए?" श्रीमती

उलित्का ने जवाब दिया। उसे गर्व है कि वह अपनी पड़ोसिन की मदद कर सकती है।

दोनों महिलाएँ अन्दर चली गईं। श्रीमती उलित्का ने अपनी मोटी मोटी उंगलियों से, जो छोटी वस्तुओं के व्यवहार में अभ्यस्त नहीं थीं, दियासलाई का ढक्कन काँपते हुए हाथों से खोला। काकेशिया के लिए दियासलाई एक दुर्लभ वस्तु है। मर्दों-सी लगनेवाली नवागता दहलीज पर जम कर बैठ जाती है। शायद वह गपशप करना चाहती हैं।

"तुम्हारा आदमी कहाँ है—स्कूल में?" उसने पूछा।

"हाँ। वह हमेशा बच्चों को पढ़ाने में लगा रहता है। परन्तु उसने लिखा है कि उत्सव के दिनों में वह घर आयेगा," श्रीमती उलित्का ने उत्तर दिया।

"आदमी होशियार है। चलो यह भी अच्छा है।"

"बेशक।"

"और मेरा लुकाश्का घेरे पर है। वे उसे घर नहीं आने देंगे," वृद्धा ने कहा, यद्यपि श्रीमती उलित्का यह सब बहुत पहले से जानती थी। वृद्धा अपने लुकाश्का के विषय में बातचीत चलाना चाहती थी। उसने कुछ समय पूर्व अपनेबेटे को कज्ज़ाक सेना में नौकरी के लिए भेज दिया था। वृद्धा उसका विवाह श्रीमती उलित्का की पुत्री मर्यान्का से करना चाहती थी।

"तो वह घेरे पर है?"

"हाँ। पिछले उत्सव के बाद से वह घर नहीं आया। अभी उसी दिन मैंने फ़ोमुश्किन के हाथ उसे कुछ क़मीज़ें भेजी थीं। उसका कहना है कि वह बड़े मज़े में है और उसके अफ़सर उससे खुश हैं। उसने लिखा है कि वे फिर अब्रेकों की तलाश में हैं। लुकाश्का कहता है कि वह बहुत खुश है।"

"भगवान की दया है," कार्नेट की पत्नी ने कहा, "निस्संदेह उसके लिए एक ही शब्द है, उर्वान।"

लुकाश्का का कल्पित नाम उर्वान था, जिसका अर्थ है 'छीनने वाला', और यह नाम इसलिए पड़ा था कि उसने एक बार नदी में डूबते हुए किसी लड़के को बचाकर अपनी बहादुरी का परिचय दिया था। श्रीमती उलित्का ने इस नाम का प्रयोग इसीलिए किया था कि लुकाश्का की माता को अपने पुत्र की बहादुरी का उल्लेख सुनकर प्रसन्नता हो।

"मैं ईश्वर को धन्यवाद देती हूँ कि वह अच्छा लड़का है, बहादुर है, और सब उसकी प्रशंसा करते हैं," लुकाश्का की माँ ने कहा। "अब तो मैं यही चाहती हूँ कि किसी प्रकार उसका घर बस जाय और मैं शान्ति की मौत मरूँ।"

"ठीक तो है! क्या गाँव में ढेरों जवान औरतें नहीं हैं?" चतुर श्रीमती उलित्का ने जवाब दिया और अपने खुरदरे हाथों से दियासलाई ठीक करने में लग गई।

"बहुत हैं" सिर हिलाते हुए लुकाश्का की माँ ने कहना शुरू किया, "तुम्हारी ही लड़की है – मर्यान्का। वह है एक लड़की। सारे इलाक़े में उस जैसी दूसरी होगी कौन?"

श्रीमती उलित्का लुकाश्का की माता का अभिप्राय जानती है, परन्तु यद्यपि उसे विश्वास है कि लुकाश्का एक अच्छा कज़्ज़ाक है फिर भी वह तरह दे जाती है, क्योंकि पहली बात तो यह है कि वह एक कार्नेट की बीवी है और धनी है, जबकि लुकाश्का एक मामूली कज़्ज़ाक का बेटा है और पितृहीन है, और दूसरी, अभी वह अपनी बेटी को अपने से अलग नहीं करना चाहती। लेकिन मुख्य बात तो औचित्य का तक़ाज़ा है।

"खैर, जब मर्यान्का बड़ी होगी तभी उसके विवाह की फ़िक्र भी की जायेगी," उसने गम्भीरता और मृदुता से कहा।

"मैं विवाह ठहराने वालों को तुम्हारे पास भेज दूँगी – अवश्य भेज दूंगी। अंगूर के बाग़ का मेरा काम ख़त्म हो जाने दो तब हम लोग तुम्हारे पास फिर आयेंगे और इस संबंध में बात चलायेंगे," लुकाश्का की माँ ने कहा, "और हम ईल्या वसीलियेविच से भी बात चलायेंगे।"

"ईल्या, ज़रूर, ज़रूर!" गर्व से कार्नेट की पत्नी बोली, "लेकिन इस सम्बन्ध में तुम्हें मुझसे बात करनी चाहिए। वह भी मौके-महल पर!"

लुकाश्का की माँ ने कार्नेट की पत्नी की ओर देखा। उसके मुख पर कर्कशता थी जिसे देखते ही उसने समझ लिया कि इस समय आगे कुछ कहना-सुनना ठीक नहीं। उसने अपने चिथड़े में दियासलाई लपेटी और बोली "मुझसे इनकार मत करना, याद रखना कि तुमने मुझसे क्या कहा है। अब चलती हूँ, आग सुलगाने का समय हो रहा है।"

वह जलते हुए चिथड़े को नचाती हुई सड़क पार करती है। रास्ते में उसकी भेंट मर्यान्का से होती है जो उसे प्रणाम करती है।

उस सुन्दर लड़की की ओर देखते हुए वह सोचती है, "यह तो रानी है, रानी। कितना अच्छा काम करती है यह लड़की! उसे और बड़ी होने की क्या ज़रूरत? यही समय है कि इसका ब्याह हो जाना चाहिए और इसे कोई अच्छा घर बसाना चाहिए; मेरे लुकाश्का के साथ!"

परन्तु श्रीमती उलित्का की अपनी चिन्ताएँ हैं। और वह दहलीज पर बैठी हुई गंभीरता से सोचने लगती है। तभी उसके कान में पुत्री के पुकारने की आवाज पड़ जाती है।

६

फ़ौज के पुरुष सैनिक अभियानों तथा घेरों में अथवा, जैसा कज़्ज़ाकों का कहना है, 'चौकियों पर' अपने अपने कामों में लगे हैं। सन्ध्या का समय है। लुकाश्का-उर्वान (जिसके सम्बन्ध में वृद्धाओं में बातें हुई थीं) तेरेक नदी पर स्थित निज्ने-प्रोतोत्स्की चौकी के एक पर्यवेक्षकी मचान पर खड़ा है। मचान के सीखचों पर झुककर वह नदी के उस पार, काफ़ी दूर, अपने साथी कज़्ज़ाकों को गहरी नज़र से देख रहा है और उनसे संकेतों से बातचीत भी कर रहा है। इस समय तक सूर्य हिमावृत पर्वतशिखरों तक पहुँच चुका था। शिखर उसकी किरणों का संस्पर्श पाकर दमक रहे थे। पहाड़ों के आस-पास बिखरे हुए बादल धीरे धीरे धूमिल होते जा रहे थे। मंद मंद वायु सायंकाल का परिचय दे रही थी। जंगलों की ओर से कभी कभी ताज़ी हवा का कोई झोंका आ जाता था यद्यपि चौकी के आस-पास की हवा अभी तक गर्म थी। कज़्ज़ाकों की बातचीत हवा में गूँजकर एक विचित्र सुरीलापन पैदा करती तथा तेरेक का तेज़ी के साथ बहता हुआ भूरा जल जब निश्चल तटों से टकराता तो नदी का तल तक साफ़-साफ़ दिखने लग जाता। अब नदी का पानी कम होता जा रहा था और यही कारण था कि तट पर तथा छिछले स्थलों पर कीचड़ और गंदला जल एकत्र हो रहा था। चौकी के ठीक सामने नदी के उस पार का क्षेत्र वीरान था। केवल नरकटों की नीची नीची झाड़ियाँ पहाड़ों की तलहटी तक फैली हुई थीं। निचले तट पर एक ओर हट कर एक चेचेन गाँव के मिट्टी के मकानों की चौरस छतें तथा कुप्पी के आकार की चिमनियाँ दिखाई पड़ रही थीं। मचान पर चौकसी करने वाले चौकीदार की तेज़ निगाहें उस शान्त गाँव के सायंकालीन धूम को चीरती हुई लाल-पीली पोशाकों में चलती-

फिरती उन चेचेन महिलाओं पर पड़ रही थीं जो दूरी के कारण बौनी-सी दिखाई पड़ती थीं।

कज़्ज़ाकों को ऐसा लगने लगा था कि अब्रेक न जाने किस समय तातार की ओर से आकर उनपर आक्रमण कर दें। मई का महीना होने के कारण नदी कहीं कहीं इतनी छिछली निकल आई थी कि घुड़सवार उसमें से होकर आसानी से गुज़र सकते थे, लेकिन तेरेक के आस-पास के जंगल इतने घने थे कि उन्हें पैदल पार करना कठिन था। और कुछ ही दिन पूर्व एक कज़्ज़ाक, सेना के कमांडर का इस आशय का गश्तीपत्र लेकर आया था कि स्वयंसेवकों ने सूचना दी है कि आठ व्यक्तियों का एक दल तेरेक पार करना चाहता है। पत्र में विशेष चौकसी के आदेश दिये गये थे। फिर भी घेरे में कोई खास चौकसी नहीं रखी गई थी। कज़्ज़ाक निहत्थे थे। उनके घोड़ों की ज़ीनें खुली हुई थीं और वे इतने बेखबर थे जैसे अपने अपने घरों में हों। कुछ मछली मारते, कुछ शराब में धुत्त रहते और कुछ शिकार में मन बहलाते। जो व्यक्ति ड्यूटी पर था केवल उसी के घोड़े पर ज़ीन दिखाई देती थी और एक मात्र वही जंगलों के पास की झाड़ी में चक्कर लगा रहा था। चेरकेसियन कोट पहने एक चौकीदार अपनी तलवार बन्दूक लिये पहरे पर डटा था। कारपोरल एक दुबला-पतला लम्बा कज़्ज़ाक था। उसकी पीठ लम्बी तथा हाथ पैर अपेक्षाकृत छोटे थे। उसकी बेशमेत के बटन खुले थे और वह एक झोपड़े के सामने के चबूतरे पर बैठा था। उसके चेहरे से पता लगता था कि उसमें बड़प्पन के लक्षण स्पष्ट हैं। कभी वह अपनी आँखें मूँदता, कभी खोलता और कभी एक हथेली पर माथा टेकता, तो कभी दूसरी पर। एक वयस्क कज़्ज़ाक तेरेक की उठती हुई तरंगों का आनन्द लेने के लिए वहाँ तक खिंचा चला आया था। उसकी लम्बी दाढ़ी का रंग भूरापन लिये हुए कुछ काला था। वह एक साधारण-

सी कमीज़ पहने और ऊपर से एक पेटी कसे था। गर्मी से घबड़ा कर तथा आधे-चौथाई कपड़े पहने हुए दूसरे कज़्ज़ाक भी तेरेक के किनारे जमा हो गये। कुछ नदी में अपने कपड़े निचोड़ने लगे, कुछ लगामें गूथने लगे और कुछ नदी तट की तपती हुई बालू पर लेटकर तानें छेड़ने लगे। एक कज़्ज़ाक झोपड़ी के पास लेटा था। उसका चेहरा धूप के कारण काला पड़ चुका था। ऐसा लगता था कि वह बुरी तरह से नशे में चूर है क्योंकि जिस दीवाल के सहारे वह लुढ़का पड़ा था उसपर सूर्य की सीधी किरणें पड़ रही थीं। यही दीवाल लगभग दो घंटे पूर्व छाया में थी।

लुकाश्का मचान पर खड़ा था। वह लगभग २० वर्ष का एक लम्बा, ख़बसूरत-सा जवान और बहुत-कुछ अपनी माता के समान था। इकहरे बदन का होते हुए भी उसके चेहरे और आकार से यह पता चलता था कि उसमें शारीरिक तथा नैतिक दोनों ही प्रकार का बल है। यद्यपि वह कज़्ज़ाकों की सेना के अग्रगामी दस्ते में अभी हाल ही में भरती हुआ था फिर भी उसके चेहरे के भावों तथा उसकी शान्त प्रकृति से यह स्पष्ट था कि उसने कज़्ज़ाकों और हथियार बाँधने के आदी व्यक्तियों के अनुरूप गौरवपूर्ण और युद्धप्रिय स्वभाव पाया है। उसे अपने कज़्ज़ाक होने का गर्व था और वह अपना मूल्य अच्छी तरह समझता था। उसका चेरकेसियन कोट कई जगहों से फटा था, उसकी टोपी उसके सिर के पीछे चेचेन फ़ैशन में लगी थी और उसके मोज़े उसके घुटनों के नीचे मुड़े थे। उसकी पोशाक क़ीमती न थी फिर भी वह उसे ऐसे कज़्ज़ाकी ढंग से पहने था जिसे देखकर प्रतीत होता था कि उसने चेचेन जिगीत का अनुकरण किया है। जिगीत की विशेषता यह है कि प्रत्येक वस्तु की मात्रा तो काफ़ी रहती है परन्तु या तो वह फटी-चिथी होती है या उपेक्षित। केवल उसके हथियार क़ीमती होते हैं। वह फटे कपड़ों के

साथ हथियारों को ऐसे बाँधता है, और वे उसपर इतने फब जाते हैं, कि कज्ज़ाकों अथवा पार्वतीयों की आँखें उसपर गड़ी की गड़ी रह जाती है। प्रायः उसकी कोई नकल तक नही कर पाता। इस मामले में लुकाश्का जिगीत से मिलता-जुलता था। तलवार पर अपना हाथ रखे और आँखें क़रीब क़रीब मूँदे हुए वह दूरस्थ औल की ओर देखता रहा। यद्यपि उसका चेहरा-मोहरा सुन्दर नही कहा जा सकता था, फिर भी जो भी उसके आकर्षक व्यक्तित्व और बुद्धिमत्ता का आभास देने वाले मुखमंडल को देखता उसके मुँह से बरबस निकल जाता, "कितना अच्छा है यह व्यक्ति!"

"उन औरतों की तरफ़ देखो। कितनी ढेर की ढेर गाँव में गश्त कर रही है!" उसने कुछ तीखी आवाज़ में कहा और उसके मोती जैसे दाँत चमक उठे। वह विशेष रूप से किसी को लक्ष्य करके नहीं कह रहा था। परन्तु, लेटे हुए नज़ारका ने अपना सिर उठाया और कहने लगा—

"पानी लेने जा रही होंगी।"

"मान लो मैं एक गोली चलाकर उन्हें डरा दूँ! तो वे घबड़ाकर भाग न जायंगी क्या?" वह हँसा।

"गोली, वहाँ तक पहुँचेगी भी।"

"क्या! अजी उनसे आगे निकल जायगी। थोड़ा ठहरो। उनकी दावत का दिन आने दो, तब देखना। मैं गिरेई-ख़ाँ से मिलने जाऊँगा और उसके साथ बूज़ा* पिऊँगा," लुकाश्का बोला। वह क्रोध में आकर उन मच्छरों को हटाता जा रहा था जो उसे चपटे जा रहे थे।

झाड़ियों में कुछ खड़खड़ाहट हुई और कज्ज़ाकों का ध्यान उधर चला गया। नाक ज़मीन की ओर किये तथा अपनी बिना बालों

---

* बाजरे से बनी तातारी बियर।

वाली दुम हिलाते हुए एक शिकारी कुत्ता भागता हुआ घेरे की तरफ़ आया। लुकाश्का ने कुत्ते को पहचान लिया। वह उसके पड़ोसी चचा येरोश्का का था जो एक शिकारी था। शीघ्र ही उसने देखा कि स्वयं शिकारी चचा भी भागते भागते कुत्ते के पीछे चले आ रहे हैं।

चचा येरोश्का कज्ज़ाकों में एक दैत्य था—बर्फ़ की तरह सफ़ेद लम्बी-चौड़ी दाढ़ी, सीना और कंधे इतने चौड़े और शक्तिशाली, अंगों की बनावट इतनी सुगठित कि जंगलों में, जहाँ उससे मुक़ाबला करने के लिए कोई भी न होता, वह विशेष लम्ब-तड़ंग न दीखता। उसका कोट फटा-पुराना था, पैरों में गर्म पट्टियाँ लिपटी थीं जिनके ऊपर मज़बूत धागे से बंधी हुई हिरन के कच्चे चमड़े की चप्पलें थीं। उसके सिर पर एक मैली-सी सफ़ेद टोपी भी रखी थी। उसके एक कंधे पर एक परदा था जिसके पीछे छिपकर वह तीतरों का शिकार करता था। परदे के साथ ही एक थैला भी लटका था जिसमें बाज़ तथा श्येन पक्षियों को फुसलाने के लिए एक मुर्ग़ी थी। उसके दूसरे कंधे पर फ़ीते से बंधी हुई एक जंगली बिल्ली थी जिसका उसने शिकार किया था। उसकी पेटी के साथ पीछे की ओर लटका हुआ एक छोटा-सा झोला था जिसमें कुछ गोलियाँ, बारूद और रोटियाँ थीं। इसी पेटी में एक ओर मच्छरों को उड़ाने के लिए घोड़े की एक दुम, फटी-फटाई म्यान में रखी हुई ख़ून के धब्बों वाली एक कटार और मरे हुए दो तीतर बंधे हुए थे। घेरा देखते ही वह रुक गया।

"ठहरो ल्याम!" उसने कुत्ते को इतनी सुरीली धुन में पुकारा कि उसकी प्रतिध्वनि जंगल में दूर तक सुनाई दे गई। और फिर, अपने कंधे पर से भारी बन्दूक़, जिसे कज्ज़ाक 'फ़िलन्ता' कहते थे, उतारकर उसने अपनी टोपी उठाई।

"आज बड़ा मज़ा आया, दोस्तो!" उसने तेज़ और दिल को ख़ुश कर देने वाली आवाज़ में कहा। यद्यपि वह कोई विशेष प्रयास करता-सा

नहीं दिखाई पड़ रहा था, फिर भी आवाज़ इतनी तेज़ थी जैसे वह नदी के दूसरी ओर खड़े हुए किसी व्यक्ति को पुकार रहा हो।

"बहुत खूब, चचा, बहुत खूब !" सब ओर से कज़्ज़ाकों ने कहना शुरू किया।

"तुम लोगों ने क्या देखा? आओ हमें बताओ!" चचा येरोश्का अपने कोट की आस्तीन से अपने मुँह का पसीने पोंछते हुए बोला।

"चचा, उस सामने वाले पेड़ पर एक बाज़ रहता है। जैसे ही रात होती है वह यहाँ ऊपर चक्कर लगाने लगता है," कंधे और टाँगें उचकाते तथा आँख मारते हुए नज़ारका कहने लगा।

"क्या! सचमुच?" बूढ़े ने कहा। उसे विश्वास नहीं हो रहा था।

"हाँ, हाँ, चचा जरूर है। यहीं ठहरो और देखते जाओ," हँसते हुए नज़ारका बोला।

दूसरे कज़्ज़ाक भी हँस दिये।

बाज देखने की बात कोरी गप थी। परन्तु घेरे के जवान कज़्ज़ाकों को तो चचा येरोश्का को मौक़े-बे-मौक़े परेशान करने और बुद्धू बनाने में मज़ा आता था।

"अरे बेवक़ूफ़—कभी तो सच बोला कर," मचान पर से लुकाश्का ने नज़ारका की तरफ़ मुड़ते हुए कहा।

नज़ारका फ़ौरन चुप हो गया।

"ज़रूर देखना चाहिए! मैं देखूँगा," बूढ़े ने जवाब दिया और जवान कज़्ज़ाक उसकी बातों का आनन्द लेने लगे। "क्या कभी सुअर देखे हैं तुमने? नहीं?"

"सुअर!" आगे झुकते तथा दोनों हाथों से पीठ खुजाते हुए कारपोरल बोला। उसे विनोद सूझ रहा था।

"अरे चचा, यहाँ तो हमें अब्रेकों को ढूँढना है सुअरों को नहीं।

कुछ वसन्त की भी खबर है तुम्हें, तुमने कुछ नहीं सुना?" आँखें मटकाते और खीसें निपोरते हुए उसने कहा।

"अब्रेक?" बूढ़ा बोला, "नहीं तो। मैंने तो कुछ नहीं सुना। खैर, कुछ चिखीर* हो तो देना। अरे भाई कुछ पिलाओ तो सही। देखते नहीं, कितना थक गया हूँ। वक़्त आने दो। मैं भी तुम्हें ताज़ा गोश्त खिलाऊँगा। ज़रूर खिलाऊँगा! भरोसा रखना। बस इस समय थोड़ी पिला दो," चचा ने बात बनाई।

"खैर, और तुम भी पहरा दोगे या नहीं?" कारपोरल ने पूछा जैसे उसने सुना ही न हो कि चचा क्या कह गया था।

"आज रात पहरा देने में मेरा अपना ही स्वार्थ है," चचा येरोश्का ने जवाब दिया, "भगवान ने चाहा तो मैं उत्सव के लिए ज़रूर कुछ न कुछ मारूँगा और उसमें तुम्हें तुम्हारा हिस्सा मिलेगा, ज़रूर मिलेगा।"

"चचा, अरे ओ चचा!" सभी का ध्यान आकर्षित करते हुए लुकाश्का ऊपर से चिल्लाया। सारे कज़्ज़ाक ऊपर देखने लगे। "नदी के किनारे किनारे चले जाओ। वहाँ ढेरों सुअर हैं एक से एक अच्छे। नहीं! मैं मज़ाक़ नहीं कर रहा हूँ। उस दिन हमारे एक साथी ने एक मारा भी था। सच कह रहा हूँ।" कन्धे पर बन्दूक़ संभालते हुए उसने ऐसी आवाज़ में कहा जिससे पता चलता था कि वह सचमुच मज़ाक़ नहीं कर रहा है।

"अरे! लुकाश्का-उर्वान, तुम यहाँ!" सिर ऊपर उठाते हुए चचा बोला, "यह कज़्ज़ाक कहाँ शिकार कर रहा था?"

"वाह चचा! तुमने अभी तक मुझे देखा भी नहीं? जान पड़ता

---

* घर की बनी काकेशिया की शराब—अनु०

है मैं तुम्हारे लिए बहुत छोटा हूँ?" लुकाश्का बोला और फिर सिर हिलाते हुए कुछ गम्भीरता से कहने लगा, "बिल्कुल खाई के पास। हम लोग खाई से होकर जा रहे थे कि हमें कुछ खटर-पटर सुनाई दी। मेरी बन्दूक़ केस में ही थी कि ईल्या ने उसे भाग जाने दिया... परन्तु मैं तुम्हें वह जगह दिखाऊँगा, दूर नहीं है। थोड़ा इन्तज़ार करो। मैं उनका एक एक रास्ता जानता हूँ। चचा मोसेव," घूमते हुए और कारपोरल को आज्ञा देने के लहजे में उसने कहा, "पहरा खत्म होने का वक़्त हो गया," और कन्धे पर बन्दूक़ लटकाते हुए वह आज्ञा की प्रतीक्षा किये बिना मचान से उतरने लगा।

"नीचे चले आओ," कारपोरल ने आज्ञा दी, परन्तु लुकाश्का उससे पहले ही चल चुका था। कारपोरल ने अपने चारों ओर नज़र डाली।

"गुरका, अब तुम्हारी बारी है न? तुम ऊपर जाओ... सच्ची बात है, लुकाश्का तो असली शिकारी हो रहा है," बूढ़े को सुनाता हुआ वह कहता गया, "तुम्हारी ही तरह वह भी घूमता रहता है। घर पर कभी नहीं टिकता। अभी उसी दिन उसने एक सुअर मारा था।"

७

सूर्य डूब चुका था और रात्रि का धुंधलका जैसे जंगल से बढ़ता चला आ रहा था। कज्ज़ाकों ने घेरे के इर्द-गिर्द के सारे कार्य समाप्त कर लिये थे और अब वे भोजन के लिए झोंपड़ी में एकत्र हो रहे थे। केवल बूढ़े चचा ही पेड़ के नीचे बैठे हुए बाज़ को देखने में व्यस्त थे। चचा अपनी मुर्गी के पैरों में बंधे हुए डोरे को कभी खींचते, कभी ढीला करते।

पेड़ पर बाज़ था ज़रूर परन्तु चचा की सारी कोशिशों के बावजूद वह नीचे नहीं उतर रहा था। लुकाश्का एक के बाद एक गाने गाता हुआ तीतरों को पकड़ने के लिए घनी झाड़ियों में जाल बिछाये आराम से बैठा था। क़द लम्बा और हाथ बड़े होते हुए भी उसे सभी अच्छे-बुरे कामों में कामयाबी हो जाती थी।

"ओ लुका!" पास की झाड़ी से नज़ारका की तीखी तेज़ आवाज़ सुनाई दी, "कज़्ज़ाक खाने जा चुके है!" और वह अपनी बग़ल में एक ज़िन्दा तीतर छिपाये झाड़ियो से होता हुआ पगडण्डी पर आ गया।

"ओहो!" गाने की कड़ी तोड़ते हुए लुकाश्का बोला, "यह तीतर कहाँ से मार लाये, यार? मैं समझता हूँ मेरे ही जाल में फँसा था।"

नज़ारका की उम्र लगभग लुकाश्का के बराबर ही थी। वह अभी पिछले वसन्त से ही युद्ध के हरावल में भर्ती हुआ था। सीधे-सादे, दुबले-पतले इस जवान की आवाज़ कर्कश थी जो शीघ्र ही दूसरों के कानों में गूँज उठती थी। वे पड़ोसी भी थे और साथी भी। लुकाश्का घास पर बैठा था और तातारों की भाँति उसका एक पर दूसरे पर चढ़ा था। वह अपना जाल सँभाल रहा था।

"मुझे पता नहीं किसका था—मैं समझता हूँ तुम्हारा।"

"क्या गड्ढे के उस तरफ़ पेड़ के पास पड़ा था? तब तो यह मेरा है। मैंने कल रात ही जाल बिछा दिये थे।"

लुकाश्का उठा और तीतर को सावधानी से देखने-भालने लगा। पक्षी ने भय के मारे अपनी आँखें निकाल दी थीं और गर्दन फैला दी थी। लुकाश्का ने उसका काला और चिकना सिर उंगलियों से थपथपाया और पक्षी को दोनों हाथों में दबा लिया।

"आज हम इसका पुलाव पकायंगे। जाओ इसे मार कर पकाओ।"

"क्या इसे हम लोग ही खायेंगे या कारपोरल को भी देंगे?"

"उसके पास तो बहुत हैं।"

"मैं उन्हें मारना पसन्द नहीं करता," नज़ारका बोला।

"इधर लाओ।"

लुकाश्का ने अपनी कटार के नीचे से एक छोटा चाकू निकाला और उसे झटके से पक्षी के सिर पर चला दिया। पक्षी तड़पने लगा, परन्तु इसके पहले कि वह अपने पंख फैला सके उसका रक्तिम सिर झुक गया और वह जड़ हो गया।

"ऐसे करना चाहिए!" तीतर को एक ओर डालते हुए लुकाश्का बोला, "इसका बनेगा बढ़िया पुलाव।"

नज़ारका ने पक्षी की ओर देखा और काँप गया।

"लुकाश्का, मैं कहता हूँ वह बदमाश आज रात फिर हमें झाड़ियों में भेजेगा," पक्षी को हाथों में उठाते हुए उसने कहा (उसका मतलब कारपोरल से था)। "उसने फ़ोमुश्किन को शराब लेने भेजा है। शायद आज उसी की बारी रही होगी। इसी प्रकार हमें हर रात उसका एक न एक काम करना पड़ता है। वह हमसे ऐसे ही काम लेता है।"

लुकाश्का सीटी बजाता हुआ घेरे तक गया। "डोरी अपने साथ ले लेना!" वह चिल्लाया। नज़ारका ने आज्ञा का पालन किया।

"आज मैं उससे बातें करूँगा, ज़रूर करूँगा," नज़ारका बोला, "हम यही कहेंगे कि हम नहीं जाएंगे, हम थक चुके हैं और बस बात ख़त्म हो जायगी! नहीं, तुम उससे कहना ज़रूर। वह तुम्हारी बात सुनेगा। भला यह भी कोई बात हुई!"

"हुँह, यह ऐसी बात नहीं जिसपर हुज्जत की जाय," लुकाश्का बोला। उसका दिमाग़ किसी दूसरी ओर था। "छि:, अगर उसने हमें इसी

समय रात में गाँव से बाहर चले जाने को कहा तो पहले बुरा तो लगेगा मगर वहाँ कुछ वक़्त तो मज़े में कटेगा, लेकिन यहाँ क्या है? एक ही बात है, चाहे घेरे में रहें चाहे झाड़ी में! कैसी लड़कपन की बातें करते हो!"

"और क्या तुम गाँव जा रहे हो?"

"मैं उत्सव में जाऊँगा।"

"गुरका कहता है कि तुम्हारी दुनैका फ़ोमुश्किन के साथ रंगरेलियाँ कर रही है," नज़ारका सहसा पूछ बैठा।

"जाय जहन्नुम में," लुकाश्का बोला और खीसें निकाल दीं, "मानो मुझे कोई दूसरी मिलेगी ही नहीं।"

"गुरका कहता है कि वह उसके घर गया था। उस समय उसका पति कहीं बाहर था परन्तु वहाँ फ़ोमुश्किन बैठा हुआ कचौड़ियाँ उड़ा रहा था। गुरका थोड़ी देर तो रहा परन्तु तुरन्त वहाँ से उठकर चला गया। जाते समय खिड़की के पास से उसने दुनैका को कहते हुए सुना था, 'चला गया शैतान ... तुम कचौड़ी क्यों नहीं खाते, मेरे प्यारे? आज रात तुम्हें अपने घर नहीं जाना है,' और खिड़की के नीचे से गुरका कहता है 'मुझे पसन्द है!'"

"तुम बातें बना रहे हो!"

"नहीं, भगवान जानता है, ठीक कहता हूँ।"

"ख़ैर, अगर उसे कोई दूसरा मिल गया है तो जाय जहन्नुम में," थोड़ा ठहरकर लुकाश्का बोला, "यहाँ लौंडियों की क्या कमी और सच पूछो तो मैं भी उससे तंग आ गया था।"

"कैसे आदमी हो यार," नज़ारका ने कहा, "तुम कार्नेट की बेटी, मर्यान्का से ही टिप्पस भिड़ाओ। वह क्यों किसी के साथ घूमने-घामने नहीं जाती?"

लुकाश्का का मुँह लाल हो गया। "हुँह, मर्यान्का! सब एक ही थैली के चट्टे-वट्टे हैं।" उसने कहा।

"कोशिश करो..."

"तुम क्या समझते हो? क्या गाँव में लड़कियों की कमी है?"

और लुकाश्का सीटी बजाता रहा। वह घेरे तक गया और रास्ते में झाड़ियों की पत्तियाँ तोड़ता और गिराता रहा।

सहसा एक छोटे-से पौधे पर उसकी निगाह पड़ी। उसने अपनी कटार के हैंडिल से एक चाकू निकाला और पौधा काट लिया। "इसी से बन्दूक की नली साफ़ करूंगा!" उसने कहा और पौधे को हवा में उड़ा दिया।

कज़्ज़ाक झोपड़े के भीतर मिट्टी से पुते हुए एक कमरे में एक नीची तातारी मेज के चारों ओर जमा थे। उस समय यह प्रश्न छिड़ा था कि आज झाड़ी में किसके लेटने की बारी है।

"आज रात कौन जायगा?" एक कज़्ज़ाक ने खुले हुए दरवाज़े में से कारपोरल से चिल्लाकर पूछा। वह पासवाले कमरे में ही था।

"हाँ, कौन जायगा?" कारपोरल ने वहीं से आवाज़ लगाई, "चचा बुरलाक जा चुके हैं और फ़ोमुश्किन भी जा चुका है," उसने संदेह प्रकट करते हुए कहा।

"अच्छा तो तुम दोनों जाओ, तुम और नज़ारका," उसने लुकाश्का को सम्बोधित करते हुए कहा, "और येरगुशोव भी जायगा। इस समय तक उसने अच्छी नींद ले ली होगी।"

"तू खुद तो सोता नहीं, वह सोयेगा?" नीची आवाज़ में नज़ारका बोला।

कज़्ज़ाक हँसने लगे।

येरगुशोव एक कज़्ज़ाक था जो नशे में धुत्त झोंपड़े के पास पड़ा सो

रहा था। वह उसी समय आँखें मलता और लड़खड़ाता हुआ कमरे में आ गया।

लुकाश्का उठ चुका था और अपनी बन्दूक़ सँभाल रहा था।

"बस जाने की तैयारी करो। खाना खाओ और चल दो," कारपोरल ने कहा और बिना हाँ-ना की प्रतीक्षा किये हुए उसने दरवाज़ा बन्द कर लिया। शायद उसे यह आशा न थी कि कज़्ज़ाक आज्ञा मान लेंगे। उसने वहीं से फिर कहा—"बेशक यदि मुझे हुक्म न मिला होता तो मैं किसी को भी न भेजता। परन्तु किसी भी समय कोई अफ़सर आ सकता है। फिर यह भी सुनने में आया है कि आठ अब्रेक घुस आये हैं।"

"मैं समझता हूँ कि हमें जाना चाहिए," येरगुशोव बोला, "यह एक नियम है जिसे ऐसे मौक़ों पर नहीं तोड़ा जा सकता। मैं कहता हूँ हमें जाना चाहिए।"

इस बीच लुकाश्का खाने में मस्त था। वह तीतर का एक बड़ा-सा टुकड़ा, दोनों हाथों से पकड़े, मुँह से लगाये था और कभी नज़ारका की ओर और कभी कारपोरल की ओर देखता जाता था। ऐसा लगता था कि जो कुछ हो गया है उससे उसे कोई सरोकार नहीं। वह उन दोनों पर हँस रहा था। इसके पहले कि कज़्ज़ाक झाड़ी में घुसने की तैयारी करें चचा येरोश्का उस अँधेरे कमरे में चला आया। अभी तक वह वृक्ष के नीचे बाज़ की राह देख रहा था, पर उसे न उतरना था तो न उतरा, और रात हो गई।

"अच्छा छोकरो," उसकी तेज़ आवाज़ नीची छत वाले उस कमरे में इतनी जोरों से फैली कि अन्य सारी बातें उसी में विलीन हो गईं। "मैं तुम लोगों के साथ चल रहा हूँ। तुम चेचेनों को देखना और मैं सुअरों की ख़बर लूँगा!"

८

जिस समय चचा येरोश्का और तीनों कज्जाक अपने अपने लबादे डाटे और कन्धों पर बन्दूकें लटकाये घेरे से बाहर निकलकर तेरेक स्थित उस स्थान की ओर चले, जहाँ उन्हें झाड़ियों में लेटना था, उस समय बिल्कुल अँधेरा हो चुका था।

नजारका तो जाना ही न चाहता था परन्तु लुकाश्का ने उसे डाँट पिलाई और तीनों चल दिये। चुपचाप थोड़ी दूर चल लेने के बाद वे खाई से एक ओर मुड़े और उन्होंने वह रास्ता पकड़ा जो नरकटों के कारण प्रायः छिप-सा गया था। अब वे नदी तक पहुँच गये थे। किनारे पर एक मोटा काला लट्ठा पड़ा था जिसे शायद नदी बहाकर लाई थी। उसके आस-पास की झाड़ियाँ दब गई थीं।

"क्या हम यहीं लेटेंगे?" नजारका ने पूछा।

"क्यों नहीं?" लुकाश्का ने उत्तर दिया, "तुम सब यहीं बैठ जाओ। मैं अभी एक मिनट में आया। मैं चचा को बता दूँ कि उन्हें कहाँ जाना चाहिए।"

"यही सबसे अच्छी जगह है। यहाँ से हम तो सब कुछ देख सकते हैं परन्तु हमें कोई नहीं देख सकता। इसलिए हम यहीं लेटेंगे। यही ठीक जगह है।" येरगुशोव ने कहा।

नजारका और येरगुशोव ने अपने अपने लबादे बिछा दिये और लट्ठे के पीछे जम गये। लुकाश्का चचा येरोश्का के साथ चल दिया।

"चचा, वह जगह यहाँ से दूर नहीं," बूढ़े के ऐन सामने आकर लुकाश्का बोला, "मैं तुम्हें दिखाऊँगा कि सुअर कहाँ थे। अकेला मैं ही वह जगह जानता हूँ।"

"यह बात है! तुम बहुत भले आदमी हो, सच्चे उर्वान!" बूढ़े ने फुसफुसाते हुए कहा।

कुछ दूर जाने के बाद लुकाश्का रुका, पोखरे के पास कुछ झुका और फिर सीटी बजाने लगा—"यहीं वे पानी पीने आये थे। देख रहे हो न?" खुरों के निशानों की ओर इशारा करते हुए उसने धीमी आवाज़ से कहा।

"भगवान तुम्हें बनाये रखे," बूढ़े ने जवाब दिया, "सुअर खाई के उस पार छिछले में होगा। मैं उसकी खबर लूँगा। तुम जा सकते हो।"

लुकाश्का ने अपना लबादा खिसकाया और अकेला लौट पड़ा। कभी वह बाईं ओर नरकटों की पंक्ति की तरफ़ देखता और कभी तट के नीचे तेज़ी से बहती हुई तेरेक पर। "मैं विश्वास के साथ कह सकता हूँ कि वहाँ कोई न कोई है ज़रूर, चाहे वह किसी को देख रहा हो या सरक रहा हो।" और उसके दिमाग़ में एक चेचेन पार्वतीय की आकृति घूमने लगी। सहसा सी-सी जैसी एक तेज़ आवाज़ और पानी में छपाक जैसा कोई शब्द सुनाई दिया। वह सतर्क हो गया और उसने दोनों हाथों में बन्दूक़ सँभाल ली। दूसरे ही क्षण गुर्राता हुआ एक सुअर तट के नीचे से निकला और भागकर नरकटों में घुस गया। पानी से निकलते समय उसके काले शरीर की परछाईं एक क्षण के लिए शीशे जैसे जल पर पड़कर तुरन्त ग़ायब हो गई थी। लुकाश्का ने अपनी बन्दूक़ तान दी, परन्तु उसके गोली चलाने के पूर्व ही वह झाड़ी में ओझल हो चुका था। लुकाश्का झुंझला उठा और उसने अपनी राह ली। एक छिपने के स्थान पर पहुँचकर वह फिर रुका और उसने हल्की-सी सीटी बजाई। सीटी का जवाब उसे सीटी में मिला और वह अपने साथियों की ओर चल दिया।

नज़ारका लबादे पर लुढ़का हुआ खर्राटे भर रहा था। येरगुशोव पैर पर पैर पसारे आराम से बैठा था। लुकाश्का को देखते ही वह उसे जगह देने के लिए एक ओर थोड़ा-सा खिसक गया।

"झाड़ी में छिपना कितना अच्छा है! सचमुच यह एक अच्छी जगह है," उसने कहा, "क्या तुम चचा को वहीं छोड़ आये?"

"मैंने उन्हें जगह दिखा दी है," अपना लबादा फैलाते हुए लुकाश्का ने जवाब दिया, "मगर मैंने कितना बड़ा सुअर हंकाया था, पानी के ठीक नीचे से। मैं समझता हूँ वही रहा होगा! तुमने उसकी आवाज़ सुनी होगी?"

"सुनी थी और मैं तुरन्त समझ गया था कि कोई शिकार होगा। मैंने मन में सोच लिया था कि 'लुकाश्का ने किसी जानवर को डरा कर भगा दिया होगा,'' येरगुशोव अपने चारों ओर लबादा लपेटते हुए बोला, "अब मैं सोऊँगा। जब मुर्ग़ा बोले तब जगा देना। हमें क़ायदे से रहना चाहिए। पहले मैं लेटकर थोड़ी झपकी लूँगा, और तब देखभाल करूँगा, और तुम सो लेना। यही ठीक होगा।"

"मैं सोना नहीं चाहता," लुकाश्का ने जवाब दिया।

रात अँधेरी थी, गर्म और शान्त। सितारे आकाश के केवल एक ओर ही चमक रहे थे। दूसरी ओर आसमान का अधिकांश एक वृहदाकार काले बादल से घिरा था जो पहाड़ों के शिखरों के आगे तक फैला हुआ था। वायु शान्त थी और बादल पहाड़ से सटा हुआ अपनी झुकी हुई कोरों को आगे बढ़ाता तारों भरे आकाश में गहराई से उभर आया था। सामने की ओर खड़ा हुआ कज्ज़ाक तेरेक नदी और उसके पार तक का अन्दाज़ लगा सकता था। परन्तु पीछे नरकटों की क़तारें थीं जो दोनों ओर तक फैली हुई थीं। प्रायः अकारण ही नरकट हिलने और एक दूसरे से टकरा टकराकर विशेष प्रकार की आवाज़ें करने लगते। नीचे से देखने पर स्वच्छ आकाश की पृष्ठभूमि में नरकटों की हिलती हुई टहनियाँ वृक्षों की परदार शाखाओं की भाँति प्रतीत होती थीं। लुकाश्का के पास ही नदी-तट था जहाँ तेज़ लहरें उठ रही थीं। कुछ आगे बढ़कर चमकीला भूरा

जल घूम घूमकर हिलोरें ले रहा था और उठता-गिरता तथा संगीतात्मक ध्वनि उत्पन्न करता हुआ तट से टकरा रहा था। कुछ और आगे, जल का प्रवाह, तट और बादल तीनों ही अभेद्य अन्धकार में विलीन हो गये थे। पानी की सतह पर काली काली परछाइयाँ-सी दिखाई पड़तीं जिनपर निगाह पड़ते ही कज्ज़ाक की अनुभवी आँखें फ़ौरन बता देतीं कि वे बड़े बड़े लट्ठे हैं जो प्रवाह के साथ बढ़ते चले जा रहे हैं। यदा-कदा जब बिजली काले दर्पण की भाँति जल में चमकती तो दूसरी ओर का ढलवाँ किनारा दिखाई दे जाता। रात्रि की संगीतात्मक ध्वनियाँ, नरकटों की सरसराहट, कज्ज़ाकों के खर्राटे, मच्छड़ों की भनभनाहट और जल की कलकल जब-तब दूर पर चलाई गई गोली से, अथवा किनारे की मिट्टी धसकने से हुई पानी की छलछलाहट से, अथवा किसी बड़ी मछली की छपाक से या जंगल में उगने वाली घनी झाड़ियों में से आती हुई किसी जानवर की खरखराहट से भंग हो जाती थी। एक बार तेरेक के किनारे किनारे एक उल्लू उड़ा, जिसके परों की फड़फड़ाहट कुछ इतनी क्रमबद्ध, कुछ इतनी नियमित थी कि उसमें संगीत-स्वरों के उतार चढ़ाव जैसा आनन्द आ रहा था। वह कज्ज़ाकों के सिरों के ठीक ऊपर से घूमता हुआ जंगल की ओर उड़ा, फिर पंख फड़फड़ाकर एक पुराने सीधे पेड़ की ओर बढ़ा और देर तक पत्तों को खड़खड़ा चुकने के बाद एक शाख़ पर जम गया। पहरा देनेवाला कज्ज़ाक इन सभी अप्रत्याशित ध्वनियों को ध्यानपूर्वक सुनता और कभी कभी चौकन्ना होकर बन्दूक़ पर हाथ रख लेता।

रात्रि का अधिकांश व्यतीत हो चला था। पश्चिम की ओर बढ़ने वाला काला बादल अब छंट चुका था और स्वच्छ तारक-जटित आकाश निकल आया था। पर्वत शिखरों के ऊपर सुनहले चन्द्र की तिरछी कला अरुणाभ होकर चमकने लगी थी। सर्दी भी बढ़ने लगी थी। नज़ारका जगा, कुछ बड़बड़ाया और फिर सो गया। लुकाश्का ऊब चुका था। अब वह

उठ खड़ा हुआ, उसने अपना छोटा चाकू निकाला और अपनी छड़ी नुकीली करने में लग गया। इस समय उसके मस्तिष्क में पहाड़ों पर रहनेवाले चेचेन ही घूम रहे थे। वह सोच रहा था उनके बहादुर बेटों के बारे में जो नदी पार करके इस ओर आते और जिन्हें कज्ज़ाकों से कोई डर न लगता। कभी कभी उसके दिमाग़ में यह बात भी आ जाती कि कहीं चेचेन इसी समय तो किसी स्थान पर नदी नहीं पार कर रहे हैं। कई बार वह अपनी छिपने की जगह से बाहर निकला और उसने नदी के किनारे किनारे दूर तक निगाह डाली, परन्तु कुछ दिखाई न दिया। चाँदनी रात के कारण दूसरी ओर के किनारे तथा नदी के जल में कोई विशेष फ़र्क़ नहीं लग रहा था। और जब वह नदी अथवा उसके सामने वाले तट की ओर देखता तो उसका ध्यान चेचेनों की ओर नहीं अपितु इस बात की ओर जाता कि कब वक़्त पूरा हो, कब वह अपने साथियों को जगाये और कब घर की राह ले। गाँव का विचार आते ही उसकी कल्पना दुन्या पर केन्द्रित हो गई। वह उसकी नन्हीं-सी जान थी—कज्ज़ाक अपनी रखेलियों को इसी नाम से पुकारते थे। दुन्या का ख़्याल आते ही उसे परेशानी-सी होने लगी। अब चाँदी-जैसा कोहरा पड़ने लगा था जो पानी के ऊपर शीशे की भाँति चमक रहा था। यह आनेवाले प्रभात का सूचक था। उससे थोड़ी ही दूर पर चीलें चें-चें करती हुई पर फड़फड़ा रही थीं। अन्त में, दूर के गाँव से आती हुई मुर्गे की 'कुकड़ूँकूँ' उसके कान में पड़ी। उसके बाद दूसरे मुर्गे ने एक लंबी बाँग दी और उसके उत्तर में अनेक बाँगें एक दूसरे के पश्चात् सुनाई देने लगीं।

"उन्हें जगाने का वक़्त हो चुका," लुकाश्का ने बन्दूक़ की नली साफ़ करते हुए सोचा। उसकी आँखें भारी हो रही थीं। वह अपने साथियों की ओर मुड़ा और मुश्किल से यह समझ पाया था कि कौनसी टाँगें किसकी हैं कि उसे लगा मानो उसने तेरेक के दूसरी ओर से छपाक जैसी

कोई आवाज़ सुनी हो। उसने पहाड़ियों के उस पार क्षितिज की ओर देखा जहाँ चन्द्रिका के घूंघट से ऊषा झाँकने लगी थी। उसने तेरेक के दूसरे तट पर भी निगाह दौड़ाई। अब धारा के सहारे सहारे बढ़नेवाला लट्ठा साफ़ दिखने लगा था। एक क्षण के लिए उसे ऐसा लगा कि मैं बह रहा हूँ परन्तु लट्ठा ठहरा है। उसने फिर बाहर देखा। उसका ध्यान एक बड़े लट्ठे की ओर आकृष्ट हुआ जिसमें एक शाखा निकली-सी लग रही थी। यह लट्ठा सीधे धारा के बीच में होकर यक विचित्र ढंग से बढ़ रहा था। न तो वह लुढ़कता-पुढ़कता था और न पानी में कोई चक्कर ही लगाता था। स्पष्ट दिखाई दे रहा था कि वह धारा के साथ नहीं बढ़ रहा है अपितु छिछले पानी की दिशा में नदी पार कर रहा है। लुकाश्का ने गर्दन उठाई और लट्ठे पर दृष्टि जमा दी। लट्ठा छिछली तरफ़ बह रहा था। कभी वह रुकता और कभी विचित्र ढंग से आगे बढ़ने लगता। लुकाश्का को लगा जैसे उसने नीचे से निकला हुआ एक हाथ देखा हो।

"मान लो मैं स्वयं एक अब्रेक को मार गिराऊँ," उसने विचार किया, और तुरन्त ही अपनी बन्दूक़ उतारी, उसे एक लकड़ी के सहारे रखा और निशाना बाँधकर उसे तान दिया। उसकी उंगलियाँ बन्दूक़ के घोड़े पर थीं। वह साँस रोके मक्खी में से निशाना साध रहा था। उसकी आँखें अंधेरे में कुछ ढूँढ़ रही थीं।

"मैं उन्हें नहीं जगाऊँगा," उसने सोचा। परन्तु उसका हृदय इतने ज़ोर से धड़कने लगा कि उसे घबड़ाहट होने लगी। उसके कान नदी की ओर लगे थे। सहसा लट्ठे ने डुबकी लगाई। अब वह धारा को काटता हुआ उसी की ओर बढ़ रहा था।

"मुझे चूकना नहीं चाहिए..." उसने सोचा। उसे हल्की चाँदनी में तैरते हुए उस लट्ठे के सामने एक तातार का सिर दिखाई पड़ रहा था। उसने सीधे सिर पर निशाना बाँधा। सिर उसे बहुत नज़दीक लगा, उसकी

बन्दूक के ठीक दूसरे सिरे पर। उसने एक क्षण के लिए आँखें ऊपर उठाईं। "बिल्कुल ठीक, अब्रेक ही है!" वह प्रसन्न था। सहसा अपने घुटनों पर बैठकर वह फिर निशाना साधने लगा। अब निशाना उसकी बन्दूक के दूसरे सिरे पर सध चुका था। वह अपने लक्ष्य को अच्छी तरह देखता रहा। उसने आवाज लगाई "पिता और पुत्र के नाम"—उसने बचपन में सीखी हुई यह बात एक विचित्र कज़्ज़ाकी ढंग से कही—और घोड़ा दबा दिया। एक क्षण के लिए नरकटों और जल दोनों ही में प्रकाश फैला और बन्दूक की आवाज़ नदी के पार बहुत दूर तक गूँज गई। अब लट्ठा इस ओर तैरकर आता हुआ नहीं लग रहा था। वह धारा के साथ लुढ़क-पुढ़क रहा था।

"पकड़ो, पकड़ो, मैं कहता हूँ!" अपनी बन्दूक ढूँढ़ते तथा उस लट्ठे के नीचे से, जहाँ वह लेटा था, सिर उठाते हुए येरगुशोव चिल्लाया।

"बकवास बन्द कर, शैतान!" लुकाश्का दाँत पीसते हुए फुसफुसाया, "अब्रेक!"

"तुमने किसपर गोली चलाई, लुकाश्का? वह कौन था?" नज़ारका ने पूछा।

लुकाश्का मौन रहा। वह बन्दूक में गोलियाँ भर रहा था और तैरते हुए लट्ठे को देखता जा रहा था। थोड़ी दूर आगे वह एक रेतीले किनारे पर रुका और उसके पीछे से कोई बहुत बड़ी चीज़ निकलकर पानी में गिरती हुई दिखाई दी।

"तुमने किसपर गोली चलाई? बोलते क्यों नहीं?" कज़्ज़ाकों ने फिर पूछा।

"कह तो रहा हूँ, अब्रेक!" लुकाश्का ने कहा।

"ऊल-जलूल मत बको! बन्दूक अपने आप तो नहीं दग़ गई?"

"मैंने एक अब्रेक मारा है, हाँ हाँ, अब्रेक मारा है!" पैरों पर उछलते हुए उत्तेजनापूर्ण आवाज़ में लुकाश्का ने कहा। "एक आदमी तैरता हुआ आ रहा था..." उसने रेतीले किनारे की ओर इशारा करते हुए कहा, "मैंने उसे मार डाला। वहाँ देखो।"

"यही कहानी सुनानी रह गई थी!" आँखें मलते हुए येरगुशोव ने फिर पूछा।

"क्या? मैं कहता हूँ। वहाँ देखो!" लुकाश्का बोला और उसने येरगुशोव के कंधों को इतनी जोर से झकझोरा और उसे इतनी ताक़त से अपनी ओर खींचा कि बेचारा मिमियाने लगा।

उसने उधर देखा जिधर लुकाश्का ने इशारा किया था। मृत शरीर देखकर उसकी बोली के चढ़ाव-उतार में भी अन्तर आ गया।

"अरे बाप रे! परन्तु अभी और भी बहुत से आयेंगे! विश्वास करो!" उसने धीरे से कहा और अपनी बन्दूक़ संभालने लगा।

"वह अवश्य एक स्काउट था और इसी ओर आ रहा था। मैं कहता हूँ या तो दूसरे लोग पहले से ही यहाँ हैं या उस ओर बहुत दूर नहीं हैं। मेरा विश्वास करो!"

लुकाश्का अपनी पेटी ढीली कर रहा था और अपना चेरकेसियन कोट उतारने जा रहा था।

"क्या कर रहे हो, बेवक़ूफ़?" येरगुशोव चिल्लाया। "अगर यहाँ शेख़ी बघारी तो कुछ हाथ न लगेगा। शायद जान से भी हाथ धोना पड़े और बेकार ही! मेरी बात मानो! अगर तुमने उसे मार ही डाला है तो वह भागेगा नहीं। मेरी बन्दूक़ के लिए कुछ बारूद तो देना? है या नहीं? नज़ारका! तुम घेरे को लौट जाओ। घबड़ाओ मत। परन्तु किनारे किनारे मत जाना वरना जान से हाथ धोना पड़ेगा, मेरा विश्वास करो।"

"अकेले जाने के लिए मैं ही रह गया हूँ क्या! खुद ही जाओ न!" गुस्से में आकर नज़ारका बोला।

लुकाश्का ने अपना कोट उतार दिया और किनारे की ओर जाने लगा।

"मैं कहता हूँ वहाँ मत जाओ!" बन्दूक़ ठीक करते हुए येरगुशोव बोला, "देखो वह हिल-डुल नहीं रहा है। मै देख सकता हूँ। यह सुबह का वक़्त है। जब तक लोग घेरे से नहीं आ जाते तब तक यहीं इन्तज़ार करो। तुम लौट जाओ नज़ारका! तुम डर गये हो। डरने की कोई बात नहीं, मैं कहता हूँ।"

"लुका, भाई लुकाश्का! मुझे बताओ तुमने यह सब कसे किया, कैसे किया?" नज़ारका ने पूछा।

लुकाश्का ने पानी में घुसने का अपना इरादा बदल दिया।

"तुम लोग तुरन्त घेरे में जाओ। यहाँ की निगरानी मैं रखूँगा। कज़्ज़ाकों से कहना कि सहायता के लिए कुछ लोगों को फ़ौरन भेजें। अगर अब्रेक इस तरफ़ हैं तो उन्हें पकड़ना होगा।"

"यही तो मैं भी कह रहा हूँ। वे भाग जायेंगे," येरगुशोव ने उठते हुए कहा, "उन्हें ज़रूर पकड़ना चाहिए!"

येरगुशोव और नज़ारका उठ खड़े हुए और सलीब का निशान बनाकर घेरे के लिए चलने को तैयार हो गये, नदी के किनारे किनारे नहीं वरन् झाड़-झंखाड़ों से होते हुए जंगल के एक रास्ते से।

"ध्यान रहे, लुकाश्का, यहाँ से हिलना-डुलना मत। वे यहाँ तुम्हें चोट पहुँचा सकते हैं। इसलिए ज़रा सावधानी से देखभाल रखना!" जाते हुए येरगुशोव बोला।

"तुम जाओ, मैं सब समझता हूँ," लुकाश्का बड़बड़ाया और अपनी बन्दूक़ की देखभाल कर चुकने के बाद फिर लट्ठे के पीछे दुबक रहा।

लुकाश्का अकेला रह गया था। वह नदी की छिछली ओर देखता रहा और उसके कान कज़्ज़ाकों की आहट की तरफ़ लगे रहे। परन्तु घेरा कुछ दूर था और उसके संयम के बाँध टूट रहे थे। वह यही सोचता रहा कि अब वे दूसरे अब्रेक, जो मेरी गोली से मारे गए आदमी के साथ थे, ज़रूर भाग जायेंगे। उसे भागनेवाले अब्रेकों पर वैसा ही ग़ुस्सा आ रहा था जैसा कि कल शाम उस सुअर पर आया था जो हाथ से निकल गया था। उसने चारों तरफ़ और सामने किनारे की ओर देखा। प्रत्येक क्षण उसे किसी न किसी व्यक्ति के दिखाई पड़ जाने की आशा बंधती और वह अपनी बन्दूक़ पर हाथ रख देता और लगता जैसे गोली चला देगा। यह विचार तो कभी उसके दिमाग़ में भी न आया कि स्वयं वह भी गोली का निशाना बन सकता है।

६

प्रकाश बढ़ रहा था। अब चेचेन का मृत शरीर छिछले जल में उतराता हुआ साफ़ दिखाई पड़ रहा था। सहसा समीप के नरकटों में सरसराहट सुनाई दी। लुका ने किसी की पगध्वनि सुनी और उसे नरकटों की पत्तियाँ हिलती-डुलती दिखने लगीं। उसने अपनी बन्दूक़ पर हाथ रखा और बुदबुदा उठा "पिता और पुत्र के नाम"। और गोली छूट गई। पैरों की आवाज़ शान्त हो गई।

"अरे भाई कज़्ज़ाको! अपने ही चचा को तो न मारो।" एक शान्त और गहरी आवाज़ लुकाश्का के कानों में पड़ी और नरकटों को हटाते हटाते चचा येरोश्का बरामद हो गया।

"मैंने तो तुम्हें मार ही डाला था चचा। भगवान क़सम मार डाला था!" लुकाश्का बोला।

"तुमने किसपर गोली चलाई थी ?" बूढे ने प्रश्न किया। उसकी मेघ-गम्भीर आवाज जगलो मे और नदी के उस पार तक व्याप्त हो गई। ऐसा लग रहा था कि रात्रि की नीरवता सहसा भग हो गई है और प्रत्येक वस्तु साफ नजर आने लगी है।

"चचा, वहा तुमने कुछ नही देखा। मैने एक जानवर मारा है," लुकाश्का ने उठते और बन्दूक का घोडा हाथ से छोडते हुए कहा।

बूढा लाश की तरफ घूर रहा था। लाश अब साफ साफ दिखाई पड रही थी। तेरेक का जल उसे चारो ओर से लपेटे हुए था।

'वह अपनी पीठ पर लट्ठा लिये तैर रहा था। मैने उसे देख लिया और फिर वहाँ देखो। वह नीला पतलून पहने है, बन्दूक लिये है, मै समझता हूँ क्या तुम देख रहे हो ?" लुका बोला।

"बेशक देख रहा हूँ!" बूढे ने क्रोध मे आकर कहा और उसका मुँह गम्भीर और कर्कश हो गया, "तुमने एक जिगीत को मार डाला है," उसने खेद से कहा।

"मै यहाँ बैठा था कि सहसा मुझे दूसरी ओर कोई काली काली चीज दिखाई दी। जब वह वही पर थी तभी मैने उसे देख लिया था। साफ समझ मे आ रहा था कि कोई आदमी आया और नदी मे कूदा। 'विचित्र बात है,' मैने सोचा। और तभी एक अच्छा-खासा बडा-सा लट्ठा तैरता हुआ आता है, धारा के साथ नही वरन् उसे काटता हुआ। और मै क्या देखता हूँ कि उसके नीचे से एक सिर झाँक रहा है। बडी विचित्र बात है! मैने नरकटो से से बाहर की ओर देखा। मुझे कुछ दिखाई नही दिया। तब मै उठ खडा हुआ—उस बदमाश ने मेरी आहट जरूर सुनी होगी—वह छिछले मे गया और वहाँ से देखने लगा। जैसे ही उसने जमीन पर पाव रखा और चारो ओर निगाह डाली कि मैने मन ही मन कहा नही, बच्चू, तुम बच कर नही निकल सकते! भाग भी नही सकते!

(और मुझे ऐसा लगा मानो मेरा दम घुटा जा रहा है!) मैंने अपनी बन्दूक़ संभाली परन्तु मैं हिला-डुला नहीं, बस बाहर की तरफ़ देखता रहा। उसने कुछ देर प्रतीक्षा की और फिर तैरने लगा और जब वह चाँदनी की तरफ़ आया तो मैं उसकी पूरी पीठ देख रहा था। 'पिता और पुत्र तथा पवित्र आत्मा के नाम में' और धुएँ में से मैंने देखा कि वह तड़प रहा था। वह कराहा था, कम से कम मुझे ऐसा ही लग रहा था। 'ओफ़', मैंने सोचा, शुक्र है भगवान का। मैंने उसे मार डाला!' और जब वह रेतीले तट की ओर बह रहा था उस समय मैंने उसे साफ़ साफ़ देखा। उसने उठने की कोशिश की परन्तु उठ न सका। थोड़ी देर तक वह तड़पा और फिर शान्त हो गया। मैंने सब कुछ देखा। देखो वह हिल-डुल नहीं रहा है। वह ज़रूर मर गया होगा। बाक़ी लोग घेरे तक जा चुके हैं इस ख्याल से कि दूसरे अब्रेक भाग न जायें!"

"इस प्रकार तुम उन्हें नहीं पकड़ सकोगे," बूढ़े ने कहा, "मेरे बच्चे! अब वे तुमसे बहुत दूर जा चुके हैं, बहुत दूर..." और फिर जैसे उदास होकर उसने अपना सिर हिलाया।

इसी समय उन्हें टूटती हुई झाड़ियों और कज्ज़ाकों की तेज़ आवाज़ें सुनाई दीं। ये लोग नदी के किनारे किनारे घोड़ों पर या पैदल आ रहे थे।

"तुम लोग नाव लाये?" लुकाश्का चिल्लाया।

"कितने बहादुर हो लुका। आओ किनारे चलें!" एक कज्ज़ाक चिल्लाया।

नाव की प्रतीक्षा किये बिना लुकाश्का कपड़े उतारने लगा। वह अपने शिकार की ओर देखता जा रहा था।

"ज़रा ठहरो। नज़ारका नाव ला रहा है!" कारपोरल चिल्लाया।

"अरे बेवक़ूफ़! कौन जाने वह ज़िन्दा ही हो और बन रहा

हो। अपने साथ कटार ले लो!" दूसरा कज़्ज़ाक तेज़ आवाज़ में चिल्लाया।

"बको मत!" लुका चीख़ पड़ा। उसने अपना पतलून तथा बाक़ी कपड़े उतार डाले और सलीब का निशान बनाकर छलाँग मारते हुए नदी में कूद पड़ा। वह दोनों हाथों से पानी हटाता और तैरता हुआ आगे बढ़ने लगा। कभी कभी वह गहरी साँस लेता और फिर तैरना आरम्भ कर देता। वह तेरेक के प्रवाह को काटता हुआ छिछले की ओर बढ़ रहा था। कज़्ज़ाकों की भीड़ किनारे पर जमा थी और वे सब जोर ज़ोर से बातें कर रहे थे। तीन घुड़सवार गश्त लगा रहे थे। इस समय तक मोड़ पर आती हुई नाव दिखाई पड़ने लगी थी। लुकाश्का रेतीले तट पर खड़ा होकर अब्रेक के शरीर पर झुक गया। फिर उसने उसे दो बार हिलाया-डुलाया और तेज़ आवाज़ में कहने लगा "मर चुका है!"

चेचेन के सिर में गोली लगी थी। वह नीला पतलून, एक क़मीज़ तथा एक चेरकेसियन कोट पहने था और उसकी कमर में एक बन्दूक़, और एक कटार बंधी थी। इन सबके अतिरिक्त उसी कमर में एक बड़ी-सी शाख भी बंधी थी जिसे देखकर पहले पहले लुकाश्का को भ्रम हुआ था।

"कितना बड़ा शिकार मारा है!" एक कज़्ज़ाक चिल्लाया। मृत शरीर नाव में से हटाया गया और उसे घास पर नदी के किनारे रख दिया गया। सारे कज़्ज़ाक घेरा बनाये लाश के चारों ओर खड़े तमाशा देख रहे थे।

"कितना पीला पड़ गया है वह!" दूसरा बोला।

"हमारे अन्य साथी कहाँ कहाँ ढूँढ़ने गये हैं? मैं समझता हूँ बाक़ी लोग दूसरे किनारे पर होंगे। यदि यह स्काउट न होता तो इस प्रकार तैरकर न चला आता। अकेले तैरकर आने का और क्या मतलब था?" तीसरे कज़्ज़ाक ने कहा।

"दूसरों से पहले अपनी जान जोखिम में डालनेवाला यही एक बहादुर निकला, एक सच्चा जिगीत," किनारे पर सर्दी के कारण काँपते तथा गीले कपड़ों को निचोड़ते हुए लुकाश्का ने व्यंग्य किया, "उसकी दाढ़ी रंगी हुई है और कटी हुई भी।"

"उसने अपना कोट एक थैले में टाँग रखा था ताकि उसे तैरने में कठिनाई न हो," किसी ने कहा।

"लुकाश्का, यहाँ देखो," कारपोरल ने कहा। उसने मृत व्यक्ति की कटार और बन्दूक़ अपने हाथ में ले ली थी।

"कटार अपने पास रख लो और कोट भी। परन्तु मैं तुम्हें बन्दूक़ के लिए चाँदी के तीन रूबल दूँगा। तुम खुद देखो बैरेल कोई ख़ास अच्छा तो है नहीं," नली में फूँक मारते हुए वह बोला, "मैं तो इसे केवल स्मृति-चिन्ह के रूप में चाहता हूँ।"

लुकाश्का ने कोई उत्तर न दिया। इस प्रकार की याचना से उसे क्रोध हो आया था परन्तु वह जानता था कि उसे करना वही होगा जो कारपोरल चाहता था।

"शैतान कहीं का," गुस्से में चेचेन का कोट एक ओर फेंकते हुए वह बोला, "अगर कोट ही होता तो कम से कम ढंग का तो होता। यह तो चिथड़ा है, चिथड़ा।"

"इस समय लकड़ी का इन्तज़ाम पहले होना चाहिए," एक कज़्ज़ाक ने कहा।

"मोसेव, मै घर जाऊँगा," लुकाश्का ने कहा। वह अपनी परेशानी भूल चुका था और चाहता था कि अधिकारी को तोहफ़ा देने के बदले में उससे कुछ तो लाभ उठाये।

"बहुत ठीक, तुम जा सकते हो।"

"लाश घेरे में ले जाओ, छोकरो," बन्दूक़ की जाँच-पड़ताल करते हुए कारपोरल बोला, "और धूप से बचाये रखने के लिए उसपर

साये का कोई इन्तजाम जरूर कर देना। हो सकता है उसकी वापसी के लिए पहाड़ों से कोई मोटी रकम भेजी जाय।"

"इस समय गर्मी नहीं है," किसी ने कहा।

"अगर कोई सियार उसे खा भी जाय तो भी क्या? बोलो, ठीक कहता हूँ न?" दूसरे कज़्ज़ाक ने कहा।

"हम सब उसपर निगरानी रखेंगे। उसे नुचवा डालना ठीक नहीं। मान लो वे लोग उसे खरीदने ही आ जायं।"

"खैर, लुकाश्का, तुम्हारी क्या राय है? तुम्हें इस खुशी में अपने साथियों को डटकर शराब पिलानी चाहिए," कारपोरल बोला। वह प्रसन्न था।

"बेशक! क़ायदा तो यही है," कज़्ज़ाक एक स्वर से बोले, "तुम्हीं देखो कैसी सिकन्दर तक़दीर लेकर आये हो। अभी मूँछें तक तो मसियाई नहीं और शिकार कर मारा अब्रेक का।"

"लो कटार और कोट दोनों ही खरीद लो। लालची मत बनो। मैं पतलून भी दे दूँगा, बस," लुकाश्का ने कहा, "पतलून मुझे बहुत तंग होती है। सींक-सलाई जैसा तो आदमी था।"

एक ने एक रूबल में कोट और दूसरे ने शराब की दो बालटियों में कटार खरीद ली।

"दोस्तो, पियो! मैं तुम्हें पूरी एक बालटी पिलाऊँगा और तुम्हारे लिए गाँव से खरीद कर लाऊँगा," लुकाश्का बोला।

"और पतलून काटकर लौंडियों के लिए रूमाल बनाऊँगा," नज़ारका ने चोट की।

कज़्ज़ाक हँस पड़े।

"हँसी-मज़ाक़ हो चुका," कारपोरल बोला, "अब लाश ले जाओ। क्या तुम इस निकम्मी चीज़ को झोंपड़ी के पास रखने जा रहे हो?"

"खड़े खड़े मुँह क्या ताक रहे हो? ले भी जाओ, मेरे मिट्टी के शेरो!" लुकाश्का ने आज्ञा-सी देते हुए कज्ज़ाकों से कहा। उन्होंने अनिच्छा से लाश उठाई और उसका उसी प्रकार हुक्म माना मानो वही उनका अफ़सर हो। थोड़ी दूर तक लाश घसीट चुकने के पश्चात् उन्होंने उसकी टाँगें ज़मीन में गिरा दीं। अब कज़्ज़ाक उसे छोड़कर अलग खड़े हो गये। नज़ारका बढ़ा और उसने लाश का एक ओर लुढ़का हुआ सिर सीधा कर दिया। उसके सिर का घाव तथा चेहरा साफ़ दिख रहा था।

"देखो तो गोली माथा पार करती हुई कैसी साफ़ निकल गई है। लाश बिगड़ेगी नहीं। उसके हक़दार उसे देखते ही पहचान लेंगे," उसने कहा।

किसी ने कोई उत्तर न दिया। कज़्ज़ाक एक बार फिर मौन हो गये।

अब सूर्य काफ़ी चढ़ आया था। उसकी किरणें ओस में डूबी हुई हरियाली पर बिखर रही थीं। पास ही के जंगल में तेरेक कलकल करती हुई बह रही थी; पक्षी परस्पर किलोलें करते हुए प्रातःकाल का स्वागत कर रहे थे। कज़्ज़ाक लाश को चारों ओर से घेरे शान्त और मौन खड़े उसकी ओर ताक रहे थे। लाश का रंग भूरा था। शरीर पर उस गीले नीले पतलून के अलावा और कुछ न था जो दुबले-पतले पेट पर कमरबन्द से बंधी थी। आदमी सुन्दर और सुगढ़ था। उसकी भरी-पूरी भुजाएँ शिथिल पड़ गई थीं। ऐसा लग रहा था कि सिर अभी हाल ही में मुँड़ाया गया है। सिर के एक ओर घाव था जो अब सूख चुका था। उसका चिकना और लाल माथा हाल के मुँड़े सिर के नीले भाग की तुलना में दूसरा ही प्रतीत हो रहा था। उसकी आँखें पथरा चुकी थीं और जड़वत् पुतलियाँ ऐसी लग रही थीं मानो

टकटकी लगाकर सभी कुछ देख रही हों। लाल और मुँड़ी हुई मूछों के नीचे सुन्दर ओठ थे जो हँसी की मुद्रा में एक ओर से दूसरी ओर तक खिंच गये थे। पतली कलाइयों पर छोटे छोटे लाल बाल दिखाई पड़ रहे थे, उंगलियाँ एक ओर मुड़ी थीं और नाखून लाल रंग में रँगे थे।

लुकाश्का ने अभी तक कपड़े नहीं पहने थे। वह भीगा खड़ा था। उसकी गरदन लाल थी और आँखों में पहले से अधिक चमक थी। उसके चौड़े चौड़े गालों में कम्पन हो रहा था और हृष्ट-पुष्ट शरीर से क्वचित् दृश्यमान धूम उठकर प्रातःकालीन नव समीर से मिल रहा था।

"वह भी आदमी था!" प्रत्यक्षतः लाश की प्रशंसा करते हुए वह बोला।

"जी हाँ, यदि तुम उसके हत्थे पड़ जाते तो वह ज़रा भी दया न करता," एक कज़्ज़ाक बोल उठा।

अब कज़्ज़ाकों का मौन टूट रहा था। वे शोर मचाने तथा परस्पर बातचीत करने में लग गये। दो तो सायबान बनाने के लिए लकड़ी काटने चले गये और बाकी घेरे की तरफ़ खिसक आये। लुकाश्का तथा नज़ारका गाँव जाने की तैयारी करने के लिए भागे।

आधे घंटे बाद लुकाश्का और नजारका घर की ओर चल पड़े। रास्ते में उनकी बातें ख़त्म होने ही न आ रही थीं। वे गाँव और तेरेक के बीच के जंगल से होकर प्रायः दौड़े चले जा रहे थे।

"अच्छी तरह समझ लो। उसे यह न बताना कि मैंने तुम्हें भेजा है। सिर्फ़ वहाँ जाओ और पता चलाओ कि उसका पति घर पर है या नहीं।" लुकाश्का अपनी तीखी आवाज़ में कहता जा रहा था।

"और मैं यामका भी जाऊँगा," नज़ारका बोला, "वहाँ रंगरलियाँ रहेंगी? कहो ठीक है न?"

"अगर आज भी आनन्द न मनाया तो क्या आक़बत में मनायेंगे?" लुकारका ने उत्तर दिया।

गाँव पहुँचकर उन्होंने इतनी पी कि शाम तक धुत्त पड़े रहे।

१०

ऊपर जिन घटनाओं का वर्णन किया गया है उनसे तीसरे दिन काकेशियाई सेना के दो दस्ते नवोमलिन्स्काया के कज़्ज़ाक गाँव में आये। घोड़ों की ज़ीनें उतार दी गईं और दस्तों की गाड़ियाँ एक चौक में खड़ी कर दी गईं। रसोइयों ने ज़मीन में एक बड़ा-सा गड्ढा खोदकर एक चूल्हा बना लिया और कुछ अहातों से (जहाँ ढेरों ईंधन जमाकर लिया गया था) लकड़ियाँ बटोर बटोरकर उसमें आग लगा दीं। अब वे भोजन पकाने में जुटे हुए थे। सारजेंट हाज़िरी ले रहे थे। सेवा-दल के लोग घोड़े बाँधने के लिए खूंटे गाड़ रहे थे और क्वार्टरमास्टर सड़कों पर इस आजादी से घूम रहे थे जैसे अपने घर में हों। वे अधिकारियों और सैनिकों को उनके क्वार्टर दिखा रहे थे।

एक पंक्ति में गोले-बारूद के हरे हरे सन्दूक़ रखे थे। वहीं दस्तों की गाड़ियाँ तथा घोड़े थे और पास ही बड़ी बड़ी कड़ाहियों में दलिया पक रहा था। वहाँ एक कप्तान, एक लेफ़्टीनेन्ट और एक सारजेंट-मेजर, ओनिसिम मिखाइलोविच, था। और चूंकि यह सब एक कज़्ज़ाक गाँव में हो रहा था, जहाँ, जैसी कि सूचना मिली थी, दस्ते के सैनिकों को अपने अपने क्वार्टरों में रहने के आदेश मिल चुके थे, इसीलिए सभी को ऐसा लग रहा था मानो वे अपने अपने घरों में हों।

परन्तु उन्होंने वही क्यो अड्डा जमाया? वे कज्जाक कौन थे और क्या वे यह चाहते थे कि सेना वही रहे, और क्या वे पुराने विश्वासवादी थे या नही—ये सब ऐसी बाते थीं जिनका कोई अर्थ न था। सैनिक अपनी ड्यूटी पर से होकर आये थे, थके-मांदे और धूल-धूसरित। अतएव शोर-गुल मचाते हुए तथा वे कही बस जाने की फिराक में मधुमक्खियो की तरह सड़कों और मैदानो मे फैल गये और, बिना इस बात पर ध्यान दिये कि कज्जाक बुरा मानेगे, गपशप करते तथा बन्दूके खटखटाते हुए दो-दो तीन-तीन की टोली मे झोपडो मे घुस गये। वहाँ उन्होंने गठरियाँ खोली और औरतो से हँसी-मजाक शुरू कर दिया। दलिया के देग के पास ढेरो सैनिक जम गये। दाँतो मे छोटे छोटे पाइप दबाये कभी वे उस धुएँ की तरफ देखते जो कड़ाही मे उठकर सीधा सफेद आसमान की ओर जाता, और कभी शिविरो के उस अलाव की ओर जिसकी लौ पिघले हुए शीशे की भाँति कभी इधर हिलती, कभी उधर। वे कज्जाक नर-नारियो से भी परिहास करते और उनका मजाक उड़ाते, क्योकि उनका रहन-सहन रूसियो जैसा न था। सभी अहातो मे सैनिक भर गये थे जिनकी हँसी वातावरण मे गूँज रही थी। घरो मे से उन कज्जाक स्त्रियो की भी त्रस्त और तेज चिल्लाहटे सुनाई पड रही थी जो इन सैनिको से अपने मकानो की रक्षा करने मे व्यस्त थी और उन्हे पानी अथवा खाना बनाने के बरतन देने से इनकार कर रही थी। छोटे छोटे लड़के-लडकियाँ एक दूसरे से अथवा अपनी माताओ से चिपटे हुए सैनिको की कारस्तानियाँ देख रहे थे (ऐसा उन्होंने उसके पहले कभी नही देखा था)। वे डर गये थे और उनसे दूर रहने के लिए इधर-उधर भागे भागे फिर रहे थे। पुराने कज्जाकों के मुँह पर मुर्दनी छाई हुई थी। वे अपने अपने घरो के इर्द-गिर्द मिट्टी के चबूतरो पर बैठे बैठे सनिको की हरकते ऐसे देख

रहे थे मानो कुछ समझ ही न पा रहे हों; अथवा इस सबका क्या नतीजा होगा इसका उन्हें कोई ख़्याल न था।

ओलेनिन एक कैडेट के रूप में केवल तीन महीने पहले ही सेना में भर्ती हुआ था। वह गाँव के सबसे अच्छे घरों में से एक में ठहराया गया था। यह कार्नेट ईल्या वसील्येविच, अर्थात् श्रीमती उलित्का, का मकान था।

"ईश्वर जाने, कैसा होगा दिमीत्री अन्द्रेयेविच," हाँफते हुए वन्यूशा ने ओलेनिन से कहा। ओलेनिन चेरकेसियन कोट पहने एक कबर्दा घोड़े पर सवार था। यह घोड़ा उसने ग्रोज़नया में ख़रीदा था। इस समय जब वह पूरे पाँच घंटों की चलाई के बाद अपने लिए निश्चित क्वार्टर में पहुँचा तो उसका उत्साह बढ़ गया था और वह ख़ुश नज़र आ रहा था।

"क्यों, क्या बात है?" उसने पूछा। वह अपने घोड़े को पुचकारता जा रहा था और थके, चिन्तित तथा परेशान वन्यूशा की ओर देख रहा था। वन्यूशा सामान की गाड़ियों के साथ आया था और पेटियां खोल रहा था।

सम्प्रति ओलेनिन एक दूसरा ही आदमी लग रहा था। सफ़ाचट हजामत और बाहर निकले हुए ओठों और ठुड्डी के बजाय जवानों-जैसी मूछें और छोटी-सी दाढ़ी। रात रात भर जागते रहने के कारण उसके पीले पड़े हुए चेहरे-मोहरे के स्थान पर अब उसके गाल, उसका माथा और उसके कानों के पीछे की खाल, धूप में रहते रहते लाल हो गई थी। काले नये लूम कोट की जगह अब वह ढेरों चुन्नटवाला एक मैला-सा चेरकेसियन कोट पहने था। उसके कन्धे पर बन्दूक़ थी। तुरन्त लोहा किये हुए कलफ़दार कालर की जगह उसके गले में रेशमी बेशमेत का एक लाल फ़ीता बंधा था। यद्यपि उसकी पोशाक चेरकेसियन थी

फिर भी उसके पहनने का ढंग निराला था जिसे देखकर कोई भी कह सकता था कि वह रूसी है, जिगीत नहीं। बात यही थी यद्यपि सही नहीं थी। परन्तु, इन सबके होते हुए भी, देखनेवाले कह सकते थे कि वह स्वस्थ है, खुश है और उसे आत्मसंतोष है।

"हाँ तुम्हें विचित्र ज़रूर लगता होगा," वन्यूशा बोला, "परन्तु ज़रा इन लोगों से खुद बातचीत करके तो देखो। वे तुमसे बात न करेंगे बल्कि तुम्हारी मुख़ालिफ़त करेंगे। तुम उनसे एक बात भी नहीं कहला सकते!" दहलीज़ पर बाल्टी फेंकते हुए वन्यूशा ने कहा, "कुछ भी हो वे रूसी-जैसे तो नहीं लगते।"

"तुम्हें गाँव के मुखिया से कहना चाहिए।"

"लेकिन मुझे क्या मालूम वह कहाँ रहता है?" उसने चिढ़ी हुई आवाज़ में कहा।

"मगर किसने तुम्हें इतना घबड़ा दिया है?" चारों ओर निगाह डालते हुए ओलेनिन ने पूछा।

"शैतान ही जाने! हुँह। यहाँ कोई असली मालिक नहीं। लोगों का कहना है कि वह किसी 'क्रिगा'* में गया है। और वह बुढ़िया! वह तो पूरी चुड़ैल है। हे भगवान रक्षा करो, रक्षा करो!" सिर पर हाथ रखकर वन्यूशा बोला, "मैं नहीं जानता कि हम यहाँ कैसे रहेंगे। मुझे यकीन है कि ये लोग तातारों से भी गये-बीते हैं, और कहते हैं अपने को ईसाई! तातार बुरा ज़रूर है परन्तु होता उदार है। 'क्रिगा गया है', हुँह। उनका यह 'क्रिगा' क्या बला है मैं नहीं जानता," वन्यूशा बोला और उसने दूसरी ओर मुँह फेर लिया।

---

* नदी के किनारे पर एक स्थान जिसे मछली मारने के लिए चारों ओर से घेर दिया जाता है।

"ये घर वैसे भी तो नहीं जैसे हमारे यहाँ नौकरों के होते हैं," बिना घोड़े से उतरे हुए ओलेनिन ने कहा।

"क्या मैं आपका घोड़ा ले सकता हूँ?" वन्यूशा ने प्रश्न किया। स्पष्ट था कि वह इस नये वातावरण से घबड़ा उठा था। परन्तु उसने सब कुछ भाग्य के भरोसे छोड़ रखा था।

"तातार ज़्यादा उदार है, क्यों वन्यूशा?" ओलेनिन ने घोड़े से उतरते तथा ज़ीन थपथपाते हुए कहा।

"आप हँस रहे हैं। आप समझते हैं यह मज़ाक़ है?" वन्यूशा क्रोध में बड़बड़ा रहा था।

"जाने भी दो! नाराज़ न हो वन्यूशा," ओलेनिन ने उत्तर दिया। वह अभी तक मुस्करा रहा था। "थोड़ा ठहरो। मैं अन्दर जाऊँगा और घर के लोगों से बातें करूँगा। देखना, मैं सब ठीक कर लूँगा। तुम्हें पता भी है यहाँ हम कितने प्रसन्न और हँसी-खुशी से रहेंगे। बस घबड़ाना भर मत।"

वन्यूशा ने कोई जवाब न दिया। उसने आँखें तरेर कर अपने मालिक को घृणा से देखा और सिर हिला दिया। सच बात तो यह थी कि वन्यूशा ओलेनिन को सिर्फ़ मालिक और ओलेनिन उसे सिर्फ़ नौकर समझता था। यदि कोई उनमें से किसी से भी यह कह देता कि वे मित्र हैं तो दोनों ही को आश्चर्य होता। परन्तु अनजाने दोनों ही एक दूसरे के मित्र थे। वन्यूशा अपने मालिक के घर पहले-पहल उस समय आया था जब वह ग्यारह वर्ष का था। उस समय ओलेनिन की भी कोई इतनी ही उम्र रही होगी। जब ओलेनिन पन्द्रह वर्ष का था तो उसने वन्यूशा को पढ़ाया भी था। विशेष रूप से ओलेनिन ने वन्यूशा को फ़्रेंच सिखाई थी। वन्यूशा को अपनी फ़्रेंच पर गर्व था। जब वह मौज में आता तो फ़्रेंच शब्दों का ही

इस्तेमाल किया करता और ऐसा करते समय बेवक़ूफ़ों जैसी हँसी हँस देता।

ओलेनिन दालान की सीढ़ियों तक दौड़ गया और धक्का देकर उसने मकान का दरवाज़ा खोल दिया। मर्यान्का उस समय एक गुलाबी फ़ाक में थी वैसी ही फ़ाक में जैसी कज्ज़ाक स्त्रियाँ प्रायः घरों में पहनती हैं। वह डरकर दरवाजे से अन्दर की ओर भागी और दीवाल के सहारे खड़े होकर उसने मुँह का निचला भाग अपनी चौड़ी चौड़ी आस्तीनों से ढक लिया। ओलेनिन ने दरवाज़ा पूरा खोल दिया और गलियारे के धुंधलके में उसे युवा कज्ज़ाक सुन्दरी की एक लम्बी सुगढ़ आकृति दिखाई दे गयी। युवावस्था की चंचलता और उत्सुकता के कारण उसने अनायास उस सुन्दरी के सुअंगों पर दृष्टि डाली और उसकी गुलाबी फ़ाक में से झाँकते हुए यौवन को देखकर मन्त्रमुग्ध रह गया। सुन्दरी की सलोनी काली काली आँखें बाल सुलभ उत्सुकता और भय से उसे देखती ही रह गई।

"यही है वह," ओलेनिन ने सोचा। "परन्तु उसकी जैसी और भी तो बहुत-सी यहीं होंगी," तुरन्त उसे ख्याल आया और उसने भीतरी दरवाज़ा खोल दिया।

बूढ़ी श्रीमती उलित्का उस समय एक घरेलू फ़ाक पहने, झुकी हुई, फ़र्श पर झाड़ू दे रही थी। उसकी पीठ ओलेनिन की ओर थी।

"नमस्कार माता जी, मैं यहाँ ठहरने आया हूँ," उसने कहना शुरू किया।

कज्ज़ाक महिला ने वैसे ही झुके झुके अपना कर्कश तथा सुन्दर चेहरा उसकी ओर फेर दिया।

"यहाँ क्यों आये हो? हमारी खिल्ली उड़ाना चाहते हो! ओफ़। मैं तुम्हें इसका मज़ा चखाऊँगी। काली महामारी तुझे समेट ले जाय!"

वह चिल्लाई। वह क्रोध में थी, फिर भी कनखियों से नवागत को घूरती जा रही थी।

पहले तो ओलेनिन ने सोचा था कि रास्ते की थकी-माँदी और वीर काकेशियाई सेना का (जिसका वह एक सदस्य था) सभी जगह सहर्ष स्वागत किया जायगा और कज़्ज़ाक उन्हें देखकर बड़े प्रसन्न होंगे क्योंकि उन्होंने लड़ाई मे सदा उनका साथ दिया है। लेकिन जब उसका स्वागत इस प्रकार हुआ तो वह उलझन में पड़ गया। परन्तु उसने अपना संतुलन न खोया और स्पष्ट करने का प्रयत्न किया कि वह अपने रहने-सहने का ख़र्च उठाने को तैयार है। मगर बूढ़ी कुछ भी सुनने को तैयार न थी।

"आख़िर तुम यहाँ आये किस लिए? तुम्हारे जैसे कीड़े-मकोड़ों की परवाह कौन करता है? शीशे में मुँह तो देखो! ज़रा ठहरो। जब मालिक आयेगा तो अकल ठिकाने कर देगा। तुम्हारा गन्दा पैसा मुझे नहीं चाहिए। हुँह! पैसा! जैसे हमने कभी देखा ही न हो। तमाखू चर चर कर तो तुम हमारा सारा घर गन्दा कर दोगे। पैसा क्या उसे ठीक कर देगा? क्या तुम्हारी जैसी जोंकें हमने पहले नहीं देखी थीं! ईश्वर करे, कुत्ते की मौत मरो, कुत्ते की मौत!" बुढ़िया बराबर चिल्लाती गई, जली-कटी बकती गई और उसने ओलेनिन को ज़रा भी बोलने का मौक़ा न दिया।

"लगता है, वन्यूशा ठीक कहता था," उसने सोचा, "तातार कहीं अधिक उदार होगा।" और श्रीमती उलित्का की फटकार खाकर वह उल्टे पैरों बाहर लौट पड़ा। जब वह बाहर जा रहा था तो मर्यान्का उसी गलियारे से होती हुई सर्र से उसके पास से निकल गई। वह अपना वही गुलाबी फ्राक पहने थी, परन्तु आँखों तक उसका मुँह एक सफ़ेद रूमाल से ढका था। नंगे पैरों जल्दी जल्दी सीढ़ियाँ उतरती हुई वह

दालान से होकर भागी, एक मिनट के लिए रुकी और युवक पर एक उड़ती हुई हँसती-सी नज़र डालकर घर के एक कोने में जाकर ग़ायब हो गई।

यौवन के भार से दबी हुई उसकी चंचल पद-गति, तथा सफ़ेद रूमाल के भीतर से झाँकती हुई उसकी अल्हड़ चितवन और उसके कसे हुए शरीर की सुडौल बनावट ने ओलेनिन को पहले से भी अधिक मुग्ध कर दिया था।

"हाँ, वह है एक," उसने सोचा और रहने-सहने की समस्या भूलकर केवल मर्यान्का के बारे में सोचने लगा। और, वन्यूशा की ओर आते समय वह मुड़ मुड़कर पीछे भी देखता गया—शायद उसे मर्यान्का की झलक फिर दिखाई पड़ जाय।

"अब आप खुद ही देखिये न? लड़की ही कैसी खूंखार है, जैसे जंगली घोड़ी!" वन्यूशा ने कहा। यद्यपि वह अभी तक सामान ही धरने-उठाने में लगा था, फिर भी इस समय खुश था। "ला फ़ाम," उसने कुछ तेज़ आवाज में कहा और अट्टहास कर उठा।

११

शाम के समय मछलियाँ पकड़ने के बाद घर के मालिक तशरीफ़ लाये और जब उन्हें पता चला कि कैडेट रहने के लिए किराया देगा तो उन्होंने बूढ़ी को मना लिया और वन्यूशा की माँगें मान लीं।

हर चीज नये मकान में क़रीने से सजा दी गई। मालिक मकान अपने जाड़े के मकान में चले गये और गर्मी का मकान उन्होंने तीन रूबल महीने किराये पर उठा दिया था। ओलेनिन ने थोड़ा खा पीकर

किसी प्रकार अपनी भूख शान्त की और सोने चला गया। लगभग शाम के समय वह जागा, उसने हाथ मुँह धोया और कपड़े आदि पहन कर खाना खाने बैठ गया। फिर उसने सिगरेट जलाई और खिड़की के पास आकर जम गया। खिड़की सड़क की ओर खुलती थी। हवा में ठंढक थी। मकान तथा उसकी दीवालों की तिरछी परछाई धूल भरी सड़क पर पड़ती और कभी कभी सामने के उस मकान की दीवालों पर चढ़ जाती, जिसकी नरकटों के फूसवाली ढालू छत अस्ताचलगामी सूर्य की किरणों में चमक चमक उठती। वायु स्वच्छ थी। गाँव का वातावरण शान्त और मौन हो गया था। सैनिक घरों में बस चुके थे और अब उनमें कोई होहल्ला नहीं रह गया था। मवेशी अपने. अपने घरों को वापस नहीं आये थे और लोग भी अभी तक नहीं लौटे थे।

ओलेनिन का घर क़रीब क़रीब गाँव के छोर पर था। इस वक़्त रह रहकर तेरेक के उस पार, काफ़ी दूर से, गोलेबारी की हल्की हल्की आवाज़ें सुनाई दे रही थीं। ओलेनिन वहीं से होकर तो आया था (चेचेन पहाड़ों अथवा कुमुक के मैदान पर से)। वह पड़ावों की तीन महीने की ज़िन्दगी से तंग आ चुका था। लेकिन अब उसे थोड़ा आराम मिल रहा था। अभी अभी धोया हुआ उसका चेहरा ताज़ा और मज़बूत शरीर स्वच्छ लग रहा था। मोर्चे के बाद उसे कुछ ऐसी राहत मिल रही थी जिसका उसे पहले कोई अनुभव नहीं हुआ था। इस समय विश्राम के कारण उसका अंग-प्रत्यंग सुखी था और उसे शान्ति तथा सबलता की अनुभूति हो रही थी। उसका मस्तिष्क भी ताज़ा हो चुका था। और, अब वह मोर्चे तथा पिछली विपत्तियों के बारे में सोच रहा था। उसे याद आया कि उसे अन्य व्यक्तियों से कम कठिनाइयाँ नहीं झेलनी पड़ी थीं और वीर काकेशिया निवासियों के बीच वह अग्रणी सेनानी माना जाने लगा था। मास्को की उसकी स्मृतियाँ पीछे रह गई

थी, ईश्वर जाने कितने पीछे। पुराना जीवन समाप्त हो चुका था और नये का आरम्भ हो गया था। इस नये जीवन में अभी तक कोई ख़ामियाँ न आई थीं। यहाँ नये नये व्यक्तियों के बीच, एक नये व्यक्ति के रूप में, वह नई और अच्छी ख्याति पैदा कर सकता था। वह यौवनोन्मत्त तथा विवेकहीन जीवनोल्लास के प्रति जागरूक था। वह खिड़की के बाहर कभी उन लड़कों की ओर देखता जो मकान के साये में लट्टू नचाते और कभी अपने छोटे-से घर के चारों ओर, और सोचता कि मैं इस नये कज़्ज़ाक गाँव में प्रसन्नतापूर्वक रह सकूँगा, रहूँगा और यहाँ का जीवन अपनाऊँगा। कभी वह पहाड़ों की ओर देखता, कभी आसमान की ओर। प्रकृति के इस अपूर्व सौन्दर्य का पान करने के साथ ही साथ वह अपने संस्मरणों तथा स्वप्नों का भी मानसिक साक्षात्कार कर लेता। उसका नव जीवन आरम्भ हो चुका था उस तरह से नहीं जैसा कि उसने मास्को छोड़ते समय सोच रखा था परन्तु उससे भी कहीं अच्छी तरह जिसकी उसे आशा भी न थी। पहाड़... पहाड़... पहाड़। उस समय पहाड़ ही उसके समस्त विचारों तथा उसकी अनुभूतियों के केन्द्र बने हुए थे।

"उन्होंने अपना कुत्ता चूम लिया और सुराही चाट ली!.. चचा येरोश्का ने अपना कुत्ता चूम लिया, कुत्ता चूम लिया!" सहसा खिड़की के नीचे लट्टू नचाते हुए कज़्ज़ाकों के बच्चे सड़क की ओर देख कर चिल्लाने लगे। "उन्होंने कुत्ता चूमा और कटार बेचकर शराब पी गये, शराब पी गये!" एक साथ इकट्ठे होकर और साथ ही पीछे हटकर बच्चे जोरों का शोर मचाने लगे।

शोर इसलिए मच रहा था कि उन्होंने चचा येरोश्का को देख लिया था। चचा कन्धे पर बन्दूक रखे और कमर में कुछ तीतर लटकाये शिकार से घर लौट रहा था।

"ग़लती हो गई, भाई अब रहने भी दो!" तेज़ी से हाथ झुलाते और सड़क के दोनों ओर की खिड़कियों पर निगाह डालते हुए बूढ़ा बोला,

"मैंने कुत्ते को शराब पीने छोड़ दिया था ; बस यही ग़लती की थी," उसने कहा। वह परेशान दिखाई पड़ रहा था, परन्तु बाहर से ऐसा बन रहा था मानो उसे कोई चिन्ता ही न हो।

लड़के बूढ़े शिकारी से जैसा व्यवहार कर रहे थे उसे देखकर ओलेनिन को आश्चर्य हो रहा था। परन्तु वह चचा येरोश्का के बुद्धि-प्रखर चेहरे और शक्तिशाली शरीर को देखकर बड़ा प्रभावित हुआ।

"अरे चचा इधर, भाई कज़्ज़ाक इधर!" ओलेनिन बोल उठा, "ज़रा इधर आ जाइये न, चचा, इधर, इधर।"

बूढ़े ने खिड़की की ओर देखा और रुक गया।

"नमस्ते, दोस्त," सफ़ाचट्ट खोपड़ी पर से टोप उठाते हुए उसने कहा।

"नमस्ते, मेरे अच्छे दोस्त," ओलेनिन ने उत्तर दिया, "ये बच्चे आप को देखकर शोर क्यों मचा रहे हैं?"

चचा येरोश्का खिड़की तक पहुँच चुका था। "वे एक बूढ़े को तंग कर रहे हैं। बस। कोई बात नहीं। मुझे यह सब अच्छा लगता है। कर लें वे अपने बूढ़े चचा को तंग। आख़िर बच्चे ही हैं न," चचा की आवाज़ में कुछ ऐसा संगीतात्मक उतार-चढ़ाव और आकर्षण था जो प्राय: बड़े-बूढ़ों की बातों में रहता है। "क्या तुम दस्तों के कमाण्डर हो?" उसने सवाल किया।

"नहीं, सिर्फ़ कैडेट हूँ। आपने ये तीतर कहाँ मारे?" ओलेनिन ने पूछा।

"ये तीन मैंने जंगलों में मारे हैं," बूढ़े चचा ने जवाब दिया और तीतर दिखाने के लिए घूमकर पीठ खिड़की के सामने कर दी। तीतर पीठ से लटके थे। उनके मुँह उसकी पेटी में घुसे थे। चचा के कोट पर कई जगह तीतरों के ख़ून के धब्बे भी पड़े थे।

"क्या तुमने इन्हें कभी नहीं देखा?" चचा ने पूछा, "अगर चाहो तो दो-एक ले लो! हाँ, हाँ, ये रहे," और उसने दो तीतर खिड़की की तरफ़ बढ़ा दिये। "आप शिकारी हैं?" उसने प्रश्न किया।

"जरूर। मोर्चे के वक़्त मैंने चार मारे थे।"

"चार! ये तो बहुत हुए!" बूढ़े ने व्यंग्य किया, "तुम्हें पीने-पिलाने का भी शौक है? चिख़ीर पीते हो?"

"क्यों नहीं? मुझे शराब अच्छी लगती है।"

"अरे, कितने अच्छे हो तुम। हम कुनक* हैं—तुम और मैं, मैं और तुम," चचा येरोश्का बोला।

"चले आइये," ओलेनिन ने कहा, "चिख़ीर ढलेगी।"

"मैं, ख़ैर पी लूँगा," बूढ़े ने कहा, "परन्तु ये तीतर थामो।" बूढ़े के चेहरे से लग रहा था कि आदमी उसे पसन्द है। उसे तुरन्त मालूम हो गया कि यहाँ उसे मुफ़्त की पीने को मिल सकती है, और तीतर की जोड़ी देना बेकार न होगा।

शीघ्र ही येरोश्का घर में दाखिल हो गया, और तब ओलेनिन ने निकट से देखा कि इस व्यक्ति का आकार कितना विशाल, शरीर की बनावट कितनी गठी हुई और चौड़ी सफ़द दाढ़ी वाले उसके मुंगई चेहरे पर उम्र और श्रम की रेखाएँ कितनी गहरी खिंची हुई हैं। उसके पैरों, भुजाओं और कन्धों की मांसपेशियाँ उसकी वृद्धावस्था को देखते हुए अधिक भरी-पूरी और हृष्ट-पुष्ट थीं। उसके सिर पर, थोड़े थोड़े घुटे हुए बालों के नीचे गहरे निशान थे। उसकी गझी हुई और पुष्ट गर्दन में बैलों जैसी झुर्रियाँ थीं जो एक दूसरे को

---

* शपथ लेकर बनाया गया मित्र जिसके लिए कोई भी त्याग बहुत बड़ा नहीं समझा जाता—अनु०

काटती हुई दिखाई पड़ती थीं। उसके सींग जैसे हाथों में इधर-उधर खरोंचें और हल्की चोटें-सी लगी थीं। आराम के साथ उसने देहलीज पार की, बन्दूक़ उतारी, उसे एक कोने में खड़ा किया, कमरे के चारों ओर एक सरसरी निगाह डाली, मन ही मन यह अन्दाज़ लगाया कि इस घर में कितने मूल्य का सामान होगा और फिर कच्चे चमड़े वाली अपनी मामूली-सी चप्पल पहने कमरे के बीचोंबीच आ गया। उसके आते ही एक तेज़ क़िस्म की शराब, चिखीर, कुछ बारूद और कुछ जमे हुए खून की गन्ध भी कमरे भर में फैल गई।

चचा येरोश्का देव-प्रतिमा की ओर देखकर झुक गया, उसने अपनी दाढ़ी पर हाथ फेरा और फिर अपना भरा-पूरा और भूरा हाथ फैला दिया। "कोशकिल्दी," वह बोला, "नमस्ते के लिए तातारी में यही कहते हैं—'शान्ति लाभ करो'; उनकी भाषा में इसके यही अर्थ हैं।"

"कोशकिल्दी! मैं जानता हूँ," ओलेनिन ने हाथ मिलाते हुए जवाब दिया।

"नहीं, तुम नहीं जानते! तुम ठीक तरीक़ा नहीं जानते, नासमझ हो।" तिरस्कार सूचक ढंग से खोपड़ी नचाते हुए चचा बोला, "अगर कोई तुमसे 'कोशकिल्दी' कहे तो तुम्हें जवाब देना चाहिए 'अल्लाह रज़ी बो सुन' यानी 'ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे'। यह तरीक़ा है, 'कोशकिल्दी' भर कह देना काफ़ी नहीं। परन्तु मैं तुम्हे यह सब सिखाऊँगा। हमारा एक दोस्त था, ईल्या मोसेइच। वह एक रूसी था। वह और मैं कुनक थे। क्या लाजवाब आदमी था—शराबी, चोर, शिकारी। और शिकारी भी कैसा! मैंने उसे सब कुछ सिखाया था।"

"और मुझे क्या क्या सिखाओगे चचा?" ओलेनिन ने पूछा। वह इस बूढ़े में अधिक से अधिक दिलचस्पी दिखा रहा था।

"मैं तुम्हें शिकार पर ले चलूँगा। तुम्हें मछली मारना सिखाऊँगा, चेचेनों को दिखाऊँगा और अगर कहोगे तो तुम्हारे लिए एक लड़की भी ढूँढ़ दूँगा। मैं तो इसी तरह का आदमी हूँ—मसखरा, हँसोड़।" और बूढ़ा हँस पड़ा, "मैं बैठूँगा। थक गया हूँ। करगा?" उसने उत्सुकता से कहा।

"यह 'करगा' क्या बला है?" ओलेनिन ने प्रश्न किया।

"क्यों जार्जियाई भाषा में इसका मतलब है 'बहुत ठीक'। पर मैं इसी तरह से कहता हूँ, कुछ ज़बान पर ही चढ़ गया है—करगा, करगा। मैं ऐसे ही कहता हूँ, मज़ाक़ में! ख़ैर, दोस्त! चिख़ीर के लिए आर्डर नहीं दोगे क्या? तुम्हारे पास तो अर्दली होगा, नहीं है? अरे, इवान!" बूढ़े ने पुकारा, "तुम्हारे सभी सैनिक इवान हैं! तुम्हारा अर्दली भी इवान है?"

"ठीक कहते हो उसका नाम है इवान—वन्यूशा*। वन्यूशा! हमारी मालकिन से थोड़ी चिख़ीर तो माँग लाना।

"इवान या वन्यूशा, एक ही बात है। तुम्हारे सारे सैनिक इवान ही क्यों हैं? इवान!" बूढ़ा बोला, "तुम उनसे कहो कि वे तुम्हें उस पीपे में से शराब दें जो उन्होंने अभी अभी खोला है। गाँव में उनके पास सबसे अच्छी चिख़ीर है। लेकिन उसके लिए तीस कोपेक से ज्यादा मत देना, समझे, क्योंकि इतने से ही बुढ़िया बहुत ख़ुश हो जायगी... हमारे लोग भी कैसे बेवक़ूफ़ हैं, कैसे ख़र दिमाग़!" चचा येरोश्का ने वन्यूशा के चले जाने के बाद चुपके से फिर कहना शुरू किया, "वे तुम्हें आदमी की तरह भी नहीं समझते, उनकी निगाह में तुम तातार से भी गये-बीते हो। 'दुनियावी रूसी' वे तुम लोगों को ऐसा कहते हैं। लेकिन जहाँ तक मेरी बात है हालांकि

---

* वन्यूशा—इवान का संक्षिप्त रूप है।

तुम सैनिक हो फिर भी मैं तुम्हें आदमी समझता हूँ। तुम्हारे दिल तो है, आत्मा तो है। है न? ईल्या मोसेइच एक सैनिक था परन्तु आदमियों में हीरा था। दोस्त, मैं ठीक कह रहा हूँ? यही वजह है कि यहाँ के लोग मुझे नहीं चाहते। मगर मुझे इसकी चिन्ता नहीं। मैं हँसोड़-फसोड़ आदमी ठहरा। मुझे सभी अच्छे लगते हैं। मैं येरोश्का हूँ येरोश्का, मेरे दोस्त।"

और बूढ़े कज़्ज़ाक ने बड़े प्रेम से युवक की पीठ थपथपाई।

१२

इस समय तक वन्यूशा ने घर का काम-काज पूरा कर लिया था, वह कम्पनी के नाई से हजामत बनवा चुका था और अपने ऊँचे बूटों में से पतलून निकाल चुका था—इसके माने थे कि कम्पनी के लोग आरामदेह मकानों में रह रहे हैं। इस समय वह बहुत खुश था। उसने येरोश्का को बड़े ध्यान से देखा, वैसे नहीं जैसे किसी दयालु धर्मात्मा को देखा जाता है परन्तु ऐसे जैसे पहले-पहल किसी जंगली जानवर को देखा जाता है। उसने उस फ़र्श को देखकर अपना सिर हिलाया जिसे बूढ़ा गन्दा कर चुका था, बेंच के नीचे से दो बोतलें उठाई और मालकिन के पास चल दिया।

"नमस्ते, मेहरबान दोस्तो," उसने बात आरम्भ की। उसने निश्चय कर लिया था कि वह विनम्र रहेगा, "मेरे मालिक ने मुझे आपके पास कुछ चिख़ीर लेने भेजा है। देंगे न थोड़ी-सी?"

बूढ़ी ने कोई उत्तर न दिया। एक लड़की ने चुपचाप वन्यूशा की ओर देखा। वह एक तातारी दर्पण के सामने अपने सिर पर रूमाल लपेट रही थी।

"दोस्तो, मैं इसके लिए पैसा दूँगा!" जेब में कोपेक खनखनाता हुआ वन्यूशा बोला, "हम पर मेहरबानी करो, और हम भी तुम पर मेहरबानी करेंगे।"

"कितनी चाहिए?" बूढ़ी ने रुखाई से पूछा।

"एक गैलन।"

"जाओ और इनके लिए थोड़ी शराब खींच दो। उसी बर्तन में से उड़ेल लेना जिसमें वह अब तक थोड़ी बहुत बन चुकी होगी, मेरी लाड़ली," श्रीमती उलित्का ने अपनी पुत्री से कहा।

लड़की ने चाबियाँ और नितारनी उठाई और वन्यूशा के साथ घर से बाहर निकल गई।

"चचा, ज़रा यह तो बताना कि यह लड़की है कौन?" ओलेनिन ने खिड़की से होकर गुज़रती हुई मर्यान्का की तरफ़ इशारा करते हुए चचा येरोश्का से पूछा। चचा ने आँख मारते हुए उसे अपनी कोहनी से कोंचा।

"तनिक ठहरो," उसने कहा और खिड़की के बाहर निकल गया, "अह-हाह!" वह खाँसा और फिर कहना शुरू कर दिया, "मर्यान्का, प्यारी मर्यान्का, मेरी जान, क्या मुझे प्यार न करोगी? मैं जोकर हूँ, जोकर!" अन्तिम शब्द उसने फुसफुसाते हुए ओलेनिन से कहे थे।

बिना सिर इधर-उधर मोड़े और अपने हाथों को बराबर तेज़ी से झुलाती हुई वह खिड़की से होकर निकल गई। उसमें कज़्ज़ाक महिलाओं जैसी दृढ़ता थी। फिर उसने धीरे धीरे आँखें बूढ़े की तरफ़ फेरीं।

"मुझसे प्यार करो तो ख़ुश हो जाओगी, मेरी जान!" येरोश्का चिल्लाया। उसने ओलेनिन को आँख मारी और उसकी ओर प्रश्नसूचक दृष्टि से देखा। "मैं भी कितने ग़ज़ब का आदमी हूँ! जोकर जो हूँ।" उसने कहा। "वह तो डंके की चोट रानी है, रानी।"

"वह सुन्दर है," ओलेनिन बोला, "उसे किसी तरह यहाँ बुलाओ न!"

"नहीं, नहीं," बूढ़े ने कहा, "उसका लुकाश्का से ब्याह होनेवाला है। वह एक अच्छा कज्जाक है और बहादुर भी। अभी उसी दिन उसने एक अब्रेक को ढेर किया है। मैं तुम्हारे लिए इससे भी अच्छी लड़की ढूढ़ दूँगा। ऐसी लड़की बताऊँगा जो रेशम और रूपे में सजी-संवरी विहार करेगी। जब मैंने एक बार कह दिया है तो जरूर करूँगा। मैं तुम्हे बहुत सुन्दर लड़की दूँगा, बहुत सुन्दर।"

"आप, एक बुजुर्ग आदमी, ऐसी बाते कहते है," ओलेनिन बोला, "क्यों! यह तो पाप है।"

"पाप? पाप है कहाँ?" बूढ़े ने ज़ोर देते हुए कहा, "किसी अच्छी लड़की को देखना, यह पाप है? उससे हँस बोल लेना, यह पाप है? क्या तुम्हारे प्रदेश में ऐसा ही होता है?.. नहीं, मेरे दोस्त, यह पाप नहीं, यह तो मुक्ति है मुक्ति। ईश्वर ने तुम्हें पैदा किया और एक लड़की को भी। उसने सभी को बनाया है। इसलिए एक सुन्दर लड़की की ओर देखना कोई पाप नही। वह इसीलिए तो बनाई गई है कि लोग उसे प्यार करें और वह इधर-उधर मौज-बहार बांटती फिरे। मैं तो यही समझता हूँ, दोस्त।"

अहाता पार करके मर्यान्का एक ठंढे, अँधियारे गोदाम में घुसी जहाँ शराब के पीपों के अम्बार लगे थे। वह एक पीपे के पास गई और प्रार्थना कर चुकने के पश्चात् उसमें एक कुप्पी डुबो दी। वन्यूशा दरवाज़े पर खड़ा खड़ा हँस रहा था और उसकी ओर देखता जा रहा था। वह सिर्फ़ एक फ़्राक पहने थी जो पीछे से सटी और सामने से उठी हुई थी। यह बात वन्यूशा को बड़ी विचित्र लगी। उसके गले में चाँदी की मुद्राओं की माला होना तो वन्यूशा को और भी अद्‌भुत लगा। उसने इसे बिल्कुल ग़ैर-रूसी समझा। उसके दिमाग में यह बात आई कि अगर हमारे यहाँ भूदासों के

क्वार्टरो मे ऐसी लडकी दिख जाय तो सभी उसपर हँसेगे। "क्या बढिया चीज है लड़की भी, रौनक लाने के लिये। मै अपने मालिक से इसका जिक्र करूँगा," उसने सोचा।

"अरे बुद्धू, वहाँ रोशनी मे खडे खडे क्या मटर भुना रहे हो?" लडकी चिल्ला उठी, "मुझे कटर क्यो नही दे देते!"

मर्यान्का ने ठढी लाल शराब कटर मे भरकर वन्यूशा को दे दी।

"पैसा माता जी को दो जाकर," उसने रुपये वाला हाथ एक ओर हटाते हुए कहा।

वन्यूशा हँस दिया, "मेरी जान, इतनी नाराज क्यो हो रही हो?" उसने कुछ मस्ती मे आकर और पैर सहलाते हुए कहा। मर्यान्का उस समय पीपा बन्द कर रही थी।

वह हँसने लगी।

"और तुम, तुम बड़े मेहरबान हो क्या?"

"हम यानी मै और मेरे मालिक दोनो ही बडे मेहरबान है," वन्यूशा ने दृढता से उत्तर दिया, "हम इतने मेहरबान है कि जहाँ जहाँ हम ठहरे मेजबान हमारे अहसानमद बने रहे। और इसकी वजह यही है कि हमारे मालिक बड़े ही भले आदमी है।"

लड़की खड़ी खड़ी सुनती रही।

"और क्या तुम्हारे मालिक का ब्याह हो गया?" उसने पूछा।

"नही, हमारे मालिक अभी छोटे है और उनका ब्याह नही हुआ है क्योकि अच्छे लोग छोटी उम्र मे ब्याह नही करते," वन्यूशा ने उसे समझाते हुए कहा।

"बहुत छोटे, क्या कहने! है तो मोटे भैसे जैसे और ब्याह के लिए छोटे है! क्या वही तुम सबके मुखिया है?" उसने पूछा।

"मेरे मालिक एक कैडेट हैं। इसका मतलब यह हुआ कि अभी तक वे अफ़सर नहीं हैं। लेकिन उनकी वक़त जनरल से ज़्यादा है—वे इज़्ज़तदार आदमी हैं। हमारा कर्नल और ख़ुद ज़ार भी उन्हें जानते हैं," वन्यूशा ने बड़े गर्व के साथ उसे समझाया, "हम लाइन रेजीमेंट के दूसरे भिखारियों की तरह नहीं। उनके पिता सिनेटर थे। उनके पास एक हज़ार से भी अधिक भूदास थे, सब उनके अपने। और वे हमें एक वक़्त में एक एक हज़ार रूबल भेजते हैं। यही वजह है कि सभी हमें चाहते हैं। कोई कप्तान हो और उसके पास पैसा न हो तो उसे कौन चाहेगा?"

"अच्छा अब जाओ। मुझे यहाँ ताला लगाना है," बात काटते हुए लड़की बोली।

वन्यूशा शराब लेकर ओलेनिन के पास आ गया। उसने फ़्रेंच में कहा कि लड़की मज़ेदार है, फिर बेवक़ूफ़ों की तरह हँसा और बाहर निकल गया।

१३

इसी बीच गाँव के चौक में सैनिकों की बुलाहट के लिए ढोल-नगाड़े पिटने लगे। लोग अपने अपने काम पर से वापस आ चुके थे। मवेशी भी सुनहरी धूल के बादलों में से होकर चले आ रहे थे। वे गाँव के फाटक तक पहुँचते पहुँचते डकरने लग गये। और, लड़कियाँ और स्त्रियाँ अपने अपने पशुओं को हाँकतीं-रगड़ातीं सड़कों और अहातों में भागती हुई दिखाई देने लगीं। सूर्य दूर हिमावृत शिखरों के पीछे छिप चुका था और पृथ्वी और आकाश दोनों ही पर हल्के नीले रंग का अन्धकार छा गया था। आसमान में अंधेरे फलोद्यानों के ऊपर तारे टिमटिमा रहे थे और गाँव का कोलाहल धीरे धीरे शान्त हो रहा था। मवेशियों की देखरेख ख़त्म हो चुकी थी

और वे रात भर आराम करने के लिए अपने अपने खूँटों से बाँधे जा चुके थे। औरतें घरों से निकल निकलकर सड़कों के किनारे जमा होने लगी थीं और दाँतों से सूर्यमुखी के बीज तोड़ती हुई अपने मकानों के चबूतरों पर बैठती जा रही थीं। बाद में एक भैंस और दो गायों को दुह चुकने के बाद मर्यान्का भी इनमें से एक टोली में शामिल हो गई। इस टोली में कुछ औरतें और लड़कियाँ थीं। एक बूढ़ा कज़्ज़ाक भी था। वे मृत अब्रेक के बारे में बातचीत कर रहे थे। कज़्ज़ाक क़िस्सा सुना रहा था और औरतें उससे प्रश्न कर रही थीं।

"मैं समझती हूँ उसे अच्छा-खासा इनाम मिलेगा," एक औरत बोली।

"बेशक, सुनने में आया है उसे पदक मिलेगा।"

"मोसेव उसे झाँसा देना चाहता था। उसने उससे बन्दूक़ ले भी ली थी। लेकिन किज़्ल्यार अधिकारियों को इसका पता चल गया।"

"मोसेव, कितना दुष्ट है!"

"कहते हैं लुकाश्का घर आ गया," एक लड़की ने कहा।

"वह और नज़ारका यामका के यहाँ मौज कर रहे हैं" (यामका एक कुख्यात अविवाहिता कज़्ज़ाक महिला थी जिसकी शराब की एक दूकान थी)। "मैंने सुना है कि वे आधी बाल्टी शराब पी गये।"

"कैसी तक़दीर है उस उर्वान की," एक औरत बोली, "सचमुच वह बहादुर है। इससे भी इनकार नहीं किया जा सकता कि वह अच्छा लड़का है—समझदार और फुर्तीला। उसका बाप, चचा किर्याक, भी वैसा ही था। बेटा बाप को पड़ा है। जब किर्याक मारा गया तो सारा गाँव रोया था। देखो, वे रहे," कुछ कज़्ज़ाकों की ओर, जो सामने से उनकी तरफ़ चले आ रहे थे, इशारा करते हुए वह बोली। "और येरगुशोव भी उनके साथ आ रहा है! वह शराबी!"

लुकाश्का, नजारका और येरगुशोव आधी बाल्टी शराब पी चुकने के बाद लड़कियों की ओर खिंचे चले आ रहे थे। तीनों के चेहरे, खास तौर से बूढ़े कज़्ज़ाक का चेहरा, साधारण से अधिक लाल थे। येरगुशोव बराबर लड़खड़ाता और कभी कभी नजारका की पसलियाँ कोंचता जा रहा था।

"तुम लोग गाती क्यों नही?" वह लड़कियों पर चिल्लाया, "हमारी ख़ुशी के लिए गाओ न!"

"दिन भर ख़ूब गुलछर्रे रहे! खब गुलछर्रे रहे?" इन शब्दों से उनका स्वागत किया गया।

"हम क्यों गायें? आज छुट्टी तो है नहीं?" एक औरत बोली, "तुम मौज में हो तो जाओ और अलापो।"

येरगुशोव ने क़हक़हा लगाया और नज़ारका को गुदगुदाया। "अच्छा तुम्हीं शुरू कर दो गाना। फिर मैं भी शुरू करूंगा। मै इस मामले में ज्यादा चतुर हूँ। बताये देता हूँ।"

"क्या सो गई, सुन्दरियो?" नज़ारका ने कहा। "हम घेरे से यहाँ ख़ुशियाँ मनाने आये हैं। हमने लुकाश्का के स्वास्थ्य की कामना में शराब के प्याले उतारे हैं।"

जब लुकाश्का उस टोली के पास पहुँचा तो उसने अपनी टोपी उठाई और लड़कियों के सामने खड़ा हो गया। उसका कपोल-पार्श्व और गला लाल था। वह धीरे धीरे और गम्भीरता से बोल रहा था। परन्तु उसकी निश्चलता और गम्भीरता में नज़ारका के चिबिल्लेपन और बकवास से अधिक उत्साह था, अधिक बल था। उसे देखकर उस घोड़े के बछेड़े की याद आ जाया करती जो कभी कभी हिनहिनाता और दुम हिलाता हुआ एकाएक खड़ा होकर ऐसा पत्थर हो जाता मानो उसके चारों पैर कीलों से ज़मीन पर जड़ दिये गये हों। लुकाश्का लड़कियों के सामने

शान्त खड़ा था। उसकी आँखें हँस रही थीं, लेकिन जब कभी वह शराब के नशे में चूर अपने साथियों और पास खड़ी हुई लड़कियों को देखता तो बहुत कम बोलता था।

जब मर्यान्का आकर टोली में खड़ी हुई तो लुकाश्का ने अपनी टोपी सिर से उठाई, थोड़ी हिलायी और फिर सिर पर रख ली। उसने कुछ हटकर उसे रास्ता दिया और आगे बढ़कर उसके पास आ गया। इस समय उसका एक पैर सामने था, उंगलियाँ पेटी में थीं और हाथ कटार से खेल रहे थे। अभिवादन के उत्तर में मर्यान्का ने अपना सिर झुका दिया, चबूतरे पर बैठ गई और अपनी फ़ाक में से बीज निकाल निकाल कर छीलने लगी। लुकाश्का की नज़र मर्यान्का पर ही जमी रही। वह भी बीजों को मुँह में रखता, उन्हें चट्ट से तोड़ता और छिलकों को थूकता रहा। जब मर्यान्का यहाँ आई थी उस समय सारी टोली में सन्नाटा छा गया था।

"बहुत दिनों के लिए आये हो क्या?" मौन तोड़ते हुए एक औरत ने पूछा।

"सिर्फ़ कल सुबह तक के लिए," लुकाश्का ने बड़ी गम्भीरता से उत्तर दिया।

"तक़दीरवाले हो," बूढ़े कज़्ज़ाक ने कहा, "मुझे तुम्हें देखकर खुशी होती है। यही मैं अभी अभी कह रहा था।"

"और यही तो मैं भी कहता हूँ," नशे में येरगुशोव हँसते हुए बड़बड़ाया, "हमारे यहाँ कितने मेहमान हैं," उसने सामने से गुज़रते हुए एक सैनिक की ओर इशारा करते हुए कहा, "सैनिकों की शराब अच्छी है--मुझे पसन्द है।"

"उन्होंने मेरे यहाँ भी तीन शैतान भेज दिये हैं," एक औरत बोली, "बाबा गाँव के बुज़ुर्गों के पास भी गये थे और वे कहते हैं कुछ नहीं हो सकता।"

"अह् हाह्! फंस गई मुसीबत में, फँसीं कि नहीं?" येरगुशोव ने कहा।

"मै समझती हूँ तुम्हें तो उन्होंने तम्बाकू के साथ पीकर उड़ा भी दिया होगा?" दूसरी ने कहा, "अहाते में चाहे जितनी तम्बाकू पी लो लेकिन मैं कहती हूँ, घर के भीतर हम नहीं पीने देंगे। भले ही मुखिया क्यों न आ जायें, मै ऐसा न होने दूँगी। और कौन जाने वे तुम्हें लूट-खसोट कर ही चल दें! उसने अपने घर म किसी को भी नहीं ठहराया, इसलिए उसे क्या डर। शैतान का बच्चा!"

"तुम्हें यह पसन्द नहीं, हुँह्!" येरगुशोव ने फिर शुरू किया।

"और मैंने तो यहाँ तक सुना है कि लड़कियाँ सिपाहियों का बिस्तरा लगायेंगी, उन्हें चिखीर और शहद पिलायेंगी," नज़ारका ने कहा। लुकाश्का की तरह उसका भी एक पैर आगे था और टोपी तिरछी।

येरगुशोव ने ज़ोरों का क़हक़हा लगाया और सबसे पास खड़ी हुई एक लड़की को अपनी भुजाओं में भर लिया, "मैं तुमसे सच कहता हूँ।"

"फिर वही, शैतान!" लड़की चीखी, "मैं तुम्हारी बुढ़िया से कहूँगी।"

"ज़रूर कह दो," वह चिल्लाया, "नज़ारका ने जो कुछ कहा है वह ठीक है। एक गश्ती खत घुमा दिया गया है। जानती हो वह पढ़ सकता है। बिल्कुल ठीक है!" और वह दूसरी लड़की का आलिंगन करने लगा।

"कहाँ जायगा, बदमाश!" हँसती और चाँटा रसीद करने की गरज़ से हाथ उठाती हुई उस्तेन्का चिल्लाई। उसका मुँह गुलाब जैसा लाल और गोल था।

कज़्ज़ाक एक तरफ़ हट गया और क़रीब क़रीब लड़खड़ा पड़ा। "लोग कहते हैं लड़कियों में ताक़त नहीं होती लेकिन तुमने तो मुझे मार ही डाला था।"

"भाग जा, पाजी कहीं का! कौन शैतान तुझे घेरे से यहाँ ले आया?" उस्तेन्का ने कहा और उससे कुछ परे हटकर फिर हँसने लगी। "तुम सो गये थे और अब्रेक चला आ रहा था। ठीक है न? मान लो वह तुम पर टूट पड़ता तो अब तक प्राण पखेरू उड़ गये होते। बड़ा अच्छा होता!"

"और तुम तो डर के मारे चीख़ने ही लगतीं," नज़ारका ने हँसते हुए कहा।

"चीख़ने लगती! तुम्हारी तरह डरपोक हूँ क्या?"

"ज़रा देखना, कहीं नज़र न लग जाय, सामना पड़ जाता तो चिल्लाते चिल्लाते आसमान सिर पर उठा लेती। है न, नज़ारका?" येरगुशोव बोला।

लुकाश्का अभी तक बराबर मर्यान्का को ही देखे जा रहा था। वह चुप था। उसके इस प्रकार देखते रहने से वह कुछ सकपका-सी गई।

"मर्यान्का, मैंने सुना है कि उन्होंने अपना एक चीफ़ तुम्हारे यहाँ टिकाया है," थोड़ा पास आते हुए उसने कहा।

मर्यान्का, जैसा उसका स्वभाव पड़ गया था, उत्तर देने के पहले कुछ रुकी और फिर उसने कज़्ज़ाकों की तरफ़ धीरे धीरे निगाह उठाई। लुकाश्का की आँखें हँस रही थीं मानो जो कुछ कहा गया था उसके अलावा भी कोई ख़ास बात उसके और मर्यान्का के बीच घट रही थी।

"हाँ, इन लोगों के लिए तो ठीक है। इनके दो दो मकान हैं," मर्यान्का की तरफ़ से एक बुढ़िया ने उत्तर दिया, "परन्तु फ़ोमुश्किन

के यहाँ भी उन्होंने एक चीफ़ ठहराया है और कहते हैं कि उसके सामान से घर का घर भर गया है। अब घर वाले जायं तो कहां जायं? क्या ऐसी बात पहले कभी सुनी गई थी कि एक छोटे से गाँव में पल्टन की पलटन बसा दी जाय?" उसने कहा, "और ये शैतान यहाँ करेंगे क्या?"

"मैंने सुना है कि वे तेरेक पर एक पुल बनायेंगे," एक लड़की बोली।

"और मैंने सुना है कि वे एक बड़ा सा गढ़ा खोदेंगे जिसमें सारी लड़कियाँ भर दी जायंगी क्योंकि वे हम छोकरों को प्यार नहीं करतीं," उस्तेन्का के समीप आते हुए नजारका ने कहा। और फिर उसने ऐसी मुद्रा बनाई कि सभी हँस पड़े और येरगुशोव, मर्यान्का के पास से निकल कर बग़ल में खड़ी हुई एक बुढ़िया का आलिंगन करने लगा।

"मर्यान्का को क्यों नहीं चिपटाते? वह तो पास ही में है," नज़ारका बोला।

"नहीं, बुढ़िया में मिठास ज़्यादा है," अपने आप को छुड़ाने का प्रयत्न करती हुई बुढ़िया को चूमते हुए कज़्ज़ाक चिल्लाया।

"तू तो मेरा गला घोंट देगा," हँसती हुई बुढ़िया चीख़ी।

सड़क के दूसरी ओर से आती हुई पैरों की आवाज़ से उनकी हँसी रुक गई। तीन सिपाही लबादे पहने और कन्धे पर बन्दूकें रखे मार्च कर रहे थे। वे गोला-बारूद वाली गाड़ी पर पहरा बदलने जा रहे थे। कारपोरल एक पुराना फ़ौजी था। उसने कज़्ज़ाकों को क्रोध से घूरा और अपने आदमियों को सीधे उस ओर ले गया जहाँ लुकाश्का और नजारका सड़क के बीचोबीच खड़े थे। उसके ऐसा करने का मतलब शायद यही था कि लोग रास्ते से हट जायं। नजारका तो हट गया लेकिन लुकाश्का की भौंहों में बल पड़ गये। उसने अपना कन्धा ज़रूर एक तरफ़ कर दिया परन्तु अपनी जगह

से नहीं हिला। "लोग यहाँ खड़े हैं इसलिए आप लोग घूम कर जायं," वह बुदबुदाया और अपना सिर थोड़ा-सा घुमा दिया। वह सिपाहियों को घृणा से देख रहा था। सिपाही शान्ति से गुज़रते रहे और उनके क़दम धूल भरी सड़क पर बराबर और नियमित रूप से पड़ते रहे। मर्यान्का हँसने लगी और दूसरी सभी लड़कियों ने भी उसका साथ दिया।

"बाँकपन तो देखो!" नज़ारका बोला, "जैसे सब के सब पादरी हों।" और सिपाहियों की नक़ल करता लेफ़्ट-राइट, लेफ़्ट-राइट करके कुछ दूर तक खुद भी मार्च करता रहा। हँसी का फ़ौवारा फिर छूटने लगा।

लुकाश्का धीरे धीरे मर्यान्का के पास आ चुका था। "और तुमने चीफ़ को ठहराया कहाँ?" उसने पूछा।

मर्यान्का ने एक क्षण विचार किया। "हमने उसे नया घर दे दिया," वह बोली।

"वह बूढ़ा है या जवान?" पास बैठते हुए लुकाश्का ने प्रश्न किया।

"तुम समझते हो मैंने उससे यह बात भी पूछी है?" लड़की ने उत्तर दिया, "जब मैं चिखीर लेने जा रही थी उस समय वह चचा येरोश्का के साथ खिड़की पर बैठा था। वहाँ से ऐसा लगता था जैसे उसका सिर लाल हो। वे लोग गाड़ी भर सामान लाये हैं।" और उसने आँखें झुका लीं।

"मैं कितना खुश हूँ कि घेरे से निकल आया!" लड़की के निकट सरकते और उसकी आँखों में आँखें डालते हुए लुकाश्का बोला।

"बहुत दिनों के लिए आये हो क्या?" मुस्कराते हुए मर्यान्का ने पूछा।

"सिर्फ़ सुबह तक के लिए। कुछ बीज तो देना," कहते हुए उसने अपना हाथ फैला दिया।

मर्यान्का अब खुलकर मुस्करा दी। फ्राक का गलबन्द खोलते हुए उसने कहा "सभी मत ले लेना।"

"बिना तुम्हारे मैं अपने को कितना अकेला समझ रहा था, मर्यान्का। हाँ, तुम्हारी क़सम!" उसने दबी ज़बान से धीरे से कहा और फ्राक में हाथ डाल कर बीज निकालने लगा। अब वह उसके ऊपर थोड़ा और झुका और हँसते हुए धीरे धीरे बातें करने लगा।

"मैं कह देती हूँ, मैं नहीं आऊँगी," उससे एक ओर हटते हुए सहसा तेज़ आवाज में मर्यान्का बोल उठी।

"नहीं, सचमुच... मैं तुमसे कुछ कहना चाहता था," लुकाश्का ने कान में कहा, "आना जरूर।"

मर्यान्का ने इन्कार किया, लेकिन फिर मुस्करा दी।

"मर्यान्का, मर्यान्का, माँ बुला रही है। खाने का वक़्त हो गया," टोली की ओर भाग कर आता हुआ मर्यान्का का छोटा भाई पुकारने लगा।

"आ रही हूँ," लड़की बोली, "चलो, चलो, अभी आई।"

लुकाश्का खड़ा हो गया और टोपी उठा ली।

"मैं समझता हूँ, मुझे घर जाना चाहिए। यही ठीक है," उसने कहा। वह कुछ ऐसा बन रहा था मानो उससे और किसी चीज से कोई मतलब ही नहीं। परन्तु वह अपनी हँसी न दबा सका और मुस्कराता हुआ घर के कोने में जाकर ग़ायब हो गया।

रात फैल चुकी थी। अँधियारे आकाश में सितारे टिमटिमा रहे थे। सड़कें अंधेरी और सुनसान हो चुकी थीं। नज़ारका किनारे पर कुछ औरतों के साथ रह गया। उनकी हँसी अभी तक सुनाई पड़ रही थी। लुकाश्का धीरे धीरे लड़कियों के पास से हट गया और बिल्ली की भाँति दुम दबा कर एक ओर बैठ गया। सहसा वह धीरे धीरे दौड़ने लगा। उसने अपनी कटार हाथ में थाम ली। वह घर की तरफ़ नहीं

कार्नेट के मकान की तरफ़ बढ़ रहा था। दो सड़कें पार कर चुकने के बाद वह एक गली में घुसा और अपने कोट का निचला भाग दोनों हाथों से उठाते हुए एक झाड़ी की छाया में बैठ गया। "कार्नेट की साहबज़ादी!" उसने मर्यान्का के सम्बन्ध में सोचा, "थोड़ा मनबहलाव भी पसंद नहीं -- शैतान कहीं की! ज़रा ठहरना!"

किसी औरत के आने की पगध्वनि सुनाई पड़ रही थी। वह उसे सुनने और मन ही मन हँसने लगा।

मर्यान्का सिर झुकाये और बाड़े के कटघरे को झिटकती हुई क़दम बढ़ाती सीधे लुकाश्का की ओर चली आ रही थी। लुकाश्का उठ खड़ा हुआ। मर्यान्का एकदम रुक गई।

"शैतान कहीं के! तुमने तो मुझे डरा ही दिया! तो अभी तक तुम घर नहीं गये।" उसने कहा और ज़ोर से हँस पड़ी।

लुकाश्का ने एक हाथ उसकी कमर में डाला और दूसरे से उसका मुंह कुछ ऊंचा उठाया, "भगवान जानता है, मैं तुम से कुछ कहना चाहता था!" उसकी आवाज़ लड़खड़ा रही थी।

"इतनी रात गये यह सब क्या बक रहे हो!" मर्यान्का ने उत्तर दिया। "माता जी मेरा इन्तज़ार कर रही हैं। अच्छा हो तुम अपनी चहेती के पास चले जाओ!" और उससे अपने को छुड़ाती हुई वह कुछ क़दम भागी, घर के बाड़े तक पहुंच कर सहसा रुकी और मुड़ कर कज़्ज़ाक की ओर देखने लगी। वह उसके पीछे पीछे दौड़ा चला आ रहा था और उससे विनती करता जा रहा था कि वह कुछ देर उसके पास और ठहर जाय।

"ख़ैर, तुम मुझसे क्या कहना चाहते हो, कहो।" और वह फिर हँसने लगी।

"मुझ पर हँसो मत, मर्यान्का! तुम्हें ईश्वर की सौगंध। मेरी चहेती है ज़रूर। जैसी है तैसी नही। जहन्नुम में जाय ऐसी चहेती! सिर्फ़ हाँ कह दो

और मैं तुम्हीं को प्यार करूंगा। जो तुम कहोगी वही करूँगा। इधर सुनो!" और उसने जेब में पड़े रुपये खनखना दिये। "अब हम ठाठ से रह सकते हैं। दूसरे तो मज़े लूटते हैं और मैं? मेरी तरफ़ तो तुम बिल्कुल नहीं देखतीं, प्यारी मर्यान्का!"

लड़की ने कोई उत्तर न दिया। वह उसके सामने खड़ी खड़ी जल्दी जल्दी उंगलियों से लकड़ी की खपच्ची तोड़ती रही।

सहसा लुकाश्का ने दाँत पीसे और मुट्ठी बांधी।

"यह सब इन्तजार किस लिए? क्या मैं तुम्हें प्यार नहीं करता? तुम मेरे साथ जो चाहो कर सकती हो," उसके मुंह से सहसा निकल पड़ा। उसने गुस्से से उसके दोनों हाथ पकड़ लिए।

मर्यान्का के चेहरे के शान्त भाव और उसकी धीमी आवाज़ में कोई अन्तर न आया।

"बनने की कोशिश मत करो लुकाश्का, और मेरी बात सुनो," उसने कहा और अपने हाथों को छुड़ाने की कोई कोशिश न की। "ठीक है मैं एक लड़की हूँ, परन्तु जो कहती हूं उसे सुनो। निश्चय करना मेरा काम नहीं। लेकिन यदि तुम मुझे प्यार करते हो तो तुमसे एक बात कहूँगी। मेरे हाथ छोड़ दो। मैं अपनी ओर से कह सकती हूँ कि तुमसे विवाह करूँगी। किन्तु तुम मेरे साथ कोई बेजा हरकत नहीं कर सकते। समझे?" मर्यान्का ने मुँह घुमाये बिना ही उत्तर दिया।

"मेरे साथ विवाह? विवाह हम पर तो निर्भर नहीं। प्यारी मर्यान्का, मुझे प्यार करो," लुकाश्का ने कहा। अब उसका क्रोध उतर रहा था। वह विनत, विनम्र और शिष्ट हो गया था। इस समय वह उसकी आँखों में आँखें डाले मुस्करा रहा था।

मर्यान्का ने उसे अपनी भुजाओं में भर लिया और उसके ओठ कस कर चूम लिये।

"मेरे प्यारे!" उसका और भी कसकर आलिंगन करते हुए वह धीरे से बोली। फिर उसने सहसा अपने को छुड़ाया और बिना इधर उधर देखे हुए अपने घर के फाटक की तरफ़ दौड़ गई।

कज़्ज़ाक मर्यान्का को क्षण भर रोकने के लिए गिड़गिड़ाता ही रह गया। मगर वह न रुकी।

"अब तुम जाओ," वह चिल्लाई, "हमें कोई देख न ले! मेरा ख़्याल है कि हमारे घर ठहरा हुआ शैतान मेहमान यहीं कहीं अहाते में घूम रहा होगा।"

"कार्नेट की पुत्री!" लुकाश्का ने सोचा। "वह मुझसे विवाह करेगी। विवाह अच्छी चीज़ है, लेकिन वह मुझे सिर्फ़ प्यार ही क्यों नहीं कर सकती?"

यामका के यहाँ उसकी से भेंट नज़ारका हुई। वहाँ थोड़ी देर तक उसके साथ शराब पीने के बाद वह दुनैका के घर चला गया। यद्यपि दुनैका ने उसे अपनी बेवफ़ाई का सबूत पहले ही दे दिया था फिर भी उसने रात वहीं बिताई।

१४

यह बात सच थी कि जब मर्यान्का फाटक में घुसी उस समय ओलेनिन अहाते में चहलक़दमी कर रहा था और उसने 'शैतान मेहमान' यानी वे शब्द सुन लिये थे जिनका प्रयोग मर्यान्का ने उसके लिए किया था। वह सारी शाम चचा येरोश्का के साथ अपने नये घर की दालान में बैठा बैठा चाय की चुस्कियों तथा सिगार के धुएँ के बीच चचा येरोश्का से गप्प लड़ाता रहा। कभी कभी तो मेज़ पर रखी हुई मोमबत्ती के प्रकाश में वहाँ शराब के दौर भी चलने लगते। उसने बैठे बैठे

चचा येरोश्का की गप्पों का आनन्द लिया था। उस समय हवा शान्त थी, फिर भी मोमबत्ती की लौ प्रायः झिलमिलाने लगती और कभी उसका प्रकाश दालान के खंभों पर, कभी मेज़ पर, कभी उस पर रखे हुए प्लेट-प्यालों पर और कभी बूढ़े के घुटे हुए सिर पर पड़ने लगता। बत्ती के चारों ओर पतंगे चक्कर लगाते और जब वे मेज़ पर उड़ते तो उनके परों की धूल या तो उसी पर झड़ पड़ती या पास रखे हुए गिलासों में। कभी वे बत्ती की लौ में प्रवेश करके अपने प्राणों की बलि देते और कभी सामने के अन्धकार में उड़ कर ग़ायब हो जाते। ओलेनिन और येरोश्का चिख़ीर की पांच बोतलें खाली कर चुके थे। प्रत्येक बार येरोश्का एक गिलास भर कर ओलेनिन को देता और एक स्वयं लेता और उसके स्वास्थ्य की कामना करते हुए उसे गटक जाता। और, फिर अपनी गप्पें शुरू कर देता। उसने ओलेनिन को पुराने ज़माने के कज़्ज़ाक-जीवन की घटनाएँ सुनाईं, अपने पिता 'हट्टे-कट्टे' के बारे में भी कुछ कहा जो तीन तीन सौ हंडरवेट तक के सुअर अपनी पीठ पर लाद लेते थे और एक एक बार में दो दो बाल्टी शराब पी जाते थे। उसने अपने ज़माने की भी बातें बताईं और अपने मित्र गिरचिक का उल्लेख भी किया जिसके साथ प्लेग के दिनों में वह तेरेक के उस पार से चोरी चोरी नमदे के लबादे लाया करता था। उसने बताया कि एक दिन प्रातःकाल उसने दो हिरनों का शिकार किया था। उसने अपनी प्रियतमा के बारे में भी बताया जो रात में भाग कर घेरे में उसके पास आया करती थी। ये सब बातें उसने कुछ इतना मज़ा ले लेकर तथा इतने रोचक ढंग से कहीं कि ओलेनिन को पता ही न चल पाया कि समय बीत कैसे गया।

"हाँ दोस्त तुम क्या जानो कि जवानी में मैं क्या था। उस समय मिलते तो तुम्हें कुछ दिखाता भी। आज 'येरोश्का जूठन चाटता है' परन्तु उस समय सारी फ़ौज में मशहूर था। किसका घोड़ा सबसे अच्छा था?

किसके पास गुर्दा* तलवार थी? कौन पी कर सबसे अधिक मस्त रहता था? अहमद-खाँ को मारने के लिए पहाड़ों पर किसे भेजा जाय? हमेशा जवाब होता था—येरोश्का। लड़कियों को कौन प्यार करता था? इसका जवाब भी हमेशा येरोश्का को ही देना पड़ता। चूँकि मैं एक असली जिगीत था, पियक्कड़ था, चोर था (मैं पहाड़ों में से लोगों के घोड़े छीन लाया करता था), गवैया था, इसलिए हर काम में मेरा हाथ हो सकता था। अब वैसे कज़्ज़ाक रह कहाँ गये। अब तो उनकी तरफ़ देखने की भी तबीयत नहीं होती। जब वे इतने से ही होते हैं (येरोश्का ने ज़मीन से लगभग तीन फ़ुट की उंचाई तक हाथ उठा कर संकेत किया) तभी मसखरों जैसे जूते पहनने लगते हैं और उन जूतों को इस लोभी दृष्टि से देखते हैं कि उनके लिए सिवा जूतों के दुनिया में कुछ है ही नहीं। या फिर शराब पीते हैं, और शराब भी कोई आदमियों की तरह थोड़े ही पीते हैं, अजी जानवरों की तरह ढकोसते हैं, जानवरों की तरह। और मैं कौन था? मैं था येरोश्का—चोर। गाँवों और पहाड़ों में सभी जगह मेरा नाम था। राजकुमार मुझसे मिलने आते थे। वे मेरे कुनक थे। मैं भी सभी का कुनक होता था। तातार के साथ तातार जैसा, आरमीनियाई के साथ आरमीनियाई जैसा, सिपाही के साथ सिपाही जैसा, अफ़सर के साथ अफ़सर जैसा! बस उसे पियक्कड़ भर रहना चाहिए और चाहे जो हो। लोग कहते हैं 'इस मायामोह को छोड़ो। सिपाहियों के साथ शराब मत पियो। तातारों के साथ खाना मत खाओ'।"

"ऐसा कौन कहता है?" ओलेनिन ने पूछा।

---

*काकेशिया में सबसे अधिक प्रसिद्ध तलवारें या कटारें उनके निर्माता—गुर्दा—के नाम से प्रसिद्ध थीं—संपादक।

"क्यों, हमारे ये पादरी। किन्तु किसी मुल्ला या तातार क़ाज़ी की बात सुनो। वह कहेगा 'तुम काफ़िर! तुम सुअर का गोश्त क्यों खाते हो?' इसका अर्थ है हर एक की अपनी अपनी ढपली अपना अपना राग। परन्तु मैं समझता हूँ कि सब एक हैं। भगवान ने जो कुछ बनाया है वह मनुष्य के आराम के लिए, उसके उपभोग के लिए। और इसमें पाप की क्या बात! मिसाल के लिए आप एक पशु को ही ले लीजिए। वह तातार के जंगलों में भी रहता है और हमारे जंगलों में भी। वह चाहे जहाँ जाये वही उसका घर है। भगवान जो भी उसे दे देता है वही खा लेता है। लेकिन हमारे लोग कहते हैं कि इन सबके लिए तुम्हें नर्क में जलती हुई कढ़ाइयों में भूना जायगा। और मैं समझता हूँ यह सब गप है," उसने थोड़ा ठहर कर कहा।

"क्या गप है?" ओलेनिन ने पूछा।

"क्यों, पादरी क्या कहते हैं? हमारे साथ चेर्वलेनया में एक फ़ौजी कप्तान था। वह मेरा कुनक था और भला आदमी था, मेरे ही जैसा। वह चेचना में मारा गया। कहा करता था कि ये सब बातें पादरियों और उपदेशकों के दिमाग़ों की उपज हैं। 'जब तुम मरोगे तो तुम्हारी क़ब्र पर भी घास ही उगेगी और कुछ नहीं!' वह कहा करता था।" बूढ़ा हँस दिया। "वह एक ढीठ आदमी था।"

"तुम्हारी क्या उम्र है?" ओलेनिन ने पूछा।

"भगवान ही जाने! यही कोई सत्तर वर्ष। जब तुम्हारे यहाँ ज़ारिना राज्य करती थीं उस समय मैं बहुत छोटा नहीं था। इसलिए तुम हिसाब लगा सकते हो। मैं सत्तर वर्ष का ही हूँगा।"

"हाँ, ज़रूर होगे। किन्तु अब भी तुम आदमी मज़ेदार हो।"

"भगवान की कृपा है। मैं अब भी तन्दुरुस्त हूँ। बराबर तन्दुरुस्त रहा हूँ। सिर्फ़ एक औरत ने बीच में कुछ गड़बड़ कर दिया, बस..."

"सो क्या ?"

"हाँ, उसी ने सब गड़बड़ किया।"

"और इसलिए जब तुम मरोगे तो तुम्हारी क़ब्र पर भी घास ही उगेगी ?" ओलेनिन ने वे शब्द दुहराये।

येरोश्का नहीं चाहता था कि अपने विचारों को स्पष्ट रूप से कहे। वह कुछ देर तक मौन रहा।

"और तुम क्या सोचते हो ? अमाँ पियो भी !" और उसने हँसते हँसते ओलेनिन को शराब का गिलास थमा दिया।

१५

"तो मैं क्या कह रहा था ?" सोचने की कोशिश करते हुए उसने अपनी बात फिर शुरू की। "हाँ, तो मैं ऐसा आदमी हूँ। मैं शिकारी हूँ और फ़ौज भर में मुझसे अच्छा दूसरा शिकारी कोई है भी नहीं। मैं किसी भी जानवर या किसी भी चिड़िया का पता लगा सकता हूँ। मैं तुम्हें दिखा दूंगा। ये जानवर क्या करते हैं, कहाँ जाते हैं मैं सब जानता हूँ। मेरे पास कुत्ते हैं, दो बन्दूकें हैं, जाल है, परदा है, बाज़ है। भगवान का दिया सब कुछ है। अगर तुम सच्चे शिकारी हो और सिर्फ़ शेखी ही नहीं बघारते तो मैं तुम्हें सब कुछ दिखा दूंगा। तुम्हें मालूम है कि मैं कैसा आदमी हूँ ? मैं पैरों के निशान देख भर लूँ कि जान लूँगा जानवर कौनसा होगा, कहाँ बैठेगा, कहाँ पानी पियेगा और कहाँ लोटे-पोटेगा। मैं एक अड्डा बना लेता हूँ और रात भर वहाँ बैठा बैठा अपने शिकार पर निगाह रखता हूँ। घर पर ठहरने से क्या लाभ ! घर बैठे बैठे शरारत ही तो सूझती है या फिर शराब दिखाई देती है। औरतें आती हैं, बकबक करती हैं। बच्चे आते हैं, सिर खाते

है। यह सब किसी की भी खोपड़ी ख़ाली कर देने के लिए काफ़ी है।

"सायंकाल घर के बाहर निकल जाने की बात ही दूसरी है। नरकटों को दबाते हुए आप उनपर बैठ जाते हैं और भलेमानुसों की तरह इन्तज़ार करते हैं, जंगलों में जो कुछ हो रहा है उस पर सरसरी निगाह डालते हैं, आसमान ताकते हैं, सितारों को आते-जाते देखते हैं और आपको पता चल जाता है कि इस समय क्या बजा है। आप जंगल के चारों ओर देखने लगते हैं—जंगल में आपको सी-सी जैसी आवाज सुनाई पड़ती है, और वहाँ आप बैठे बैठे इन्तजार करते हैं, और काफ़ी देर के बाद आपको झाड़ियों में खड़खड़ाहट सुनाई देती है और आप समझने लगते हैं कि अब कोई सुअर निकलेगा और कीचड़ में लोटेगा। चीलों के बच्चे चेंचें करते हैं, मुर्गे गाँव में बांग देते हैं और बत्तखें चिंचियाती हैं। जब आप बत्तखों की बोली सुनते हैं तो इसका अर्थ यह है कि अभी आधी रात नहीं हुई। और मुझे ऐसी सभी चीज़ों के बारे में मालूम है। अथवा, आप कहीं दूर गोली दगने की कोई आवाज सुनते हैं और सोच में पड़ जाते हैं। कौन गोली चला रहा है? क्या वह आप ही जैसा कोई दूसरा कज़्ज़ाक तो नहीं, जो किसी जानवर की टोह में कहीं छिपा हो। और क्या उसने शिकार मारा भी? हो सकता है उसने उसे घायल ही किया हो और बेचारा जानवर लंगड़ाता लंगड़ाता नरकटों के बीच घूम रहा हो और अपने पीछे पीछे खून की बूँदें टपकाता जाता हो। तो उसकी मेहनत बेकार ही हुई न? मुझे यह सब पसन्द नहीं! ओफ़ ये सब बातें मुझे कितनी नापसन्द हैं! किसी जानवर को आप घायल क्यों करें? बेवक़ूफ़! बेवक़ूफ़! अथवा आप सोचने लगते हैं कि 'हो सकता है किसी अब्रेक ने किसी बेवक़ूफ़ नवयुवक कज़्ज़ाक को ही मार डाला हो' और आपके मस्तिष्क में इसी

प्रकार के विचार आते रहते हैं। और एक बार जब मैं किसी जानवर की टोह में बैठा इन्तज़ार कर रहा था तो क्या देखता हूँ कि एक पालना तैरता हुआ चला आ रहा है। पालना बिल्कुल ठीक था, बस उसका एक कोना थोड़ा-सा टूटा था। उस समय मेरे दिमाग़ में बहुत से विचार आने-जाने लगे थे! किसका पालना हो सकता है यह? मैंने सोचा कि तुम्हारे ही कुछ सिपाही, वे शैतान, किसी औल में घुस गये होंगे और उन्होंने चेचेन महिलाओं को पकड़ लिया होगा, फिर किसी शैतान ने किसी बच्चे को मार डाला होगा, उसकी टांगें पकड़ी होंगी और सिर दीवाल से दे मारा होगा। क्या वे यह सब नहीं करते? ओफ़, आदमी सचमुच निर्दय और हृदयहीन होता है। और मेरे दिमाग़ में ऐसे ऐसे विचार आये जिन्होंने मेरे कठोर हृदय में भी करुणा भर दी। हाँ, मैंने सोचा, उन लोगों ने पालना फेंक दिया होगा, पत्नी को निकाल बाहर किया होगा और घर फूंक दिया होगा। और अब उस अबला का पति बन्दूक़ लेकर हमारे इलाक़े में हमें लूटने आया है। जब आप वहाँ बैठते हैं तो न जाने कितने विचार आते हैं, जाते हैं। जब आप कोई ऐसी आवाज़ सुनते हैं जिससे आपको लगता है कि कोई जानवर झाड़ी से होकर गुज़र रहा है तो आपके हृदय में गुदगुदी होने लगती है। काश वह इधर आ जाता! परन्तु तुरन्त ही आप सोचते हैं कि कहीं उसी को आपका सुराग़ न मिल जाय। आप बैठे रहते हैं, अपनी जगह से हिलते तक नहीं और आपका दिल धड़कने लगता है। आप हवा में उड़ने लगते हैं। इसी बसन्त की बात है। एक दिन ऐसा लगा जैसे कोई जानवर मेरे बिल्कुल ही पास आ गया। मुझे कोई काली काली चीज दिखाई दी। 'पिता और पुत्र के नाम' मैंने ये शब्द मुँह से निकाले ही थे और गोली चलाने ही वाला था कि एक शूकरी घुरघुरा दी। 'बच्चो, यहाँ ख़तरा है,' वह कहती है, 'यहाँ कोई आदमी है' और फिर झाड़ियों को चीरते-फाड़ते वे सब के

सब भाग गये। मुझे इतना गुस्सा आया कि जी हुआ कि शूकरी को दांतों से नोच डालूँ।"

"शूकरी अपने बच्चों से यह कैसे कह सकती थी कि वहाँ कोई आदमी था?" ओलेनिन ने पूछा।

"क्यों नहीं कह सकती। तुम समझते हो जानवर बेवक़ूफ़ होते हैं? नहीं, शूकरी आदमी से अधिक बुद्धिमान होती है, यद्यपि आप उसे कहते सुअर ही हैं! वह सब कुछ जानती है। मिसाल के तौर पर यही बात ले लीजिये। यदि मनुष्य मनुष्यों के पैरों के निशान देखे तो उन पर ध्यान न देगा। परन्तु जब कोई शूकरी आपके पैरों के निशान देखती है तो उन्हें सूँघती है और भाग जाती है। इससे पता चलता है कि उसे बुद्धि है। बोलो, ठीक कहता हूँ न? आपको अपनी महक भले ही न लगे परन्तु वह उसे पहचानती है। आप उसका शिकार करना चाहेंगे लेकिन वह जंगल में भाग जायगी और आप टापते रह जायेंगे। आपका क़ानून दूसरा है और उसका दूसरा। वह शूकरी जरूर है परन्तु आपसे गई-बीती नहीं है। हम सब ईश्वर के बनाये हैं। दोस्त! आदमी क्या है—बेवक़ूफ़, बेवक़ूफ़, बेवक़ूफ़!" बूढ़े ने कई बार यह बात दुहराई और फिर सिर लटकाकर कुछ सोचने लगा।

ओलेनिन की मुद्रा भी विचारशील हो गयी। वह पीठ पीछे दोनों हाथ रख कर दालान से बाहर आया और अहाते में इधर उधर टहलने लगा।

अब येरोश्का ने अपना सिर उठाया और मोमबत्ती की झिलमिलाती हुई लौ पर गिरते तथा अपनी बलि देते हुए पतंगों को ताकने लगा।

"बेवक़ूफ़ो, बेवक़ूफ़ो!" उसने कहा, "किधर उड़े जा रहे हो? तुम सब बेवक़ूफ़ हो!" वह उठा और अपनी मोटी उंगलियों से पतंगे उड़ाने में जुट गया।

"अरे बेवक़ूफ़! अपने को जला डालेगा क्या! इधर उड़। यहाँ बहुत जगह पड़ी है," वह बड़ी कोमलता से बोला। उसने अपनी मोटी उंगलियों में कुछ पतंगे पकड़े और उड़ा दिये। "तुम सब अपने को जला रहे हो। मुझे तुम्हारी बुद्धि पर तरस आता है।"

वह बड़ी देर तक गपशप करता और शराब की चुस्कियाँ लेता रहा। ओलेनिन अहाते में चहलक़दमी कर रहा था। सहसा उसने फाटक के बाहर कुछ फुसफुसाहट सुनी। साँस रोके हुए उसने किसी स्त्री की हँसी, किसी पुरुष की आवाज़ और चुम्बन की ध्वनि सुनी। पैरों से घास रौंदते और उसमें चरचराहट पैदा करते हुए वह अहाते को पार करके उसके दूसरी ओर आ गया। परन्तु थोड़ी ही देर बाद फाटक बन्द होने की आवाज़ सुनाई दी। गहरा चेरकेसियन कोट पहने और भेड़ की खाल की सफ़ेद टोपी लगाये एक कज्ज़ाक युवक बाड़े के दूसरी ओर से गुज़रा (यह लुकाश्का था) और सिर पर सफ़ेद रूमाल लपेटे एक लम्बी युवती ओलेनिन के पास से होकर निकल गई। ऐसा लगता था जैसे मर्यान्का के कठोर क़दम कह रहे हों "हमारा तुम्हारा एक दूसरे से कोई मतलब नहीं।" उसकी आंखें घर के दालान तक उसका पीछा करती रहीं। खिड़की में से उसने यह भी देखा कि उसने मुँह पर से रूमाल उतारा और बैठ गई। और सहसा एकाकीपन की अनुभूतियों, अस्पष्ट इच्छाओं और आशाओं तथा किसी न किसी के प्रति ईर्ष्या के भावों ने उस युवक की आत्मा को अभिभूत कर लिया।

मकानों की आख़िरी बत्तियाँ बुझा दी गई थीं। शोरगुल ख़त्म हो गया था। ऐसा लगता था कि बाड़ों के टट्टर, अहातों में दिखाई पड़ने वाले मवेशी, मकानों की छतें और गर्वोन्नत चिनार इन सभी पर शान्त, स्वस्थ निद्रा का प्रभाव पड़ चुका है। कहीं दूर से आती हुई मेंढकों की 'टर्र-टर्र' को छोड़ कर बाक़ी सब कुछ शान्त था। पूर्व की ओर टिमटिमाते

हुए सितारों की संख्या कम होती जा रही थी और लगता था कि वे बढ़ते हुए प्रकाश में विलीन हुए जा रहे हैं। किन्तु सिर के ठीक ऊपर वे पहले से अधिक गझे हुए और चमकदार लग रहे थे। बूढ़ा अपना सिर हाथों पर रखे ऊँघ रहा था। अहाते के दूसरी ओर से मुर्गे की कुकड़ूँकूँ सुनाई दी। परन्तु ओलेनिन विचारों में खोया हुआ अहाते में टहलता रहा, कभी इस ओर, कभी उस ओर। उसके कानों में एक समूह गान की धुन पड़ी। वह बाड़े के टट्टरों के पास तक बढ़ आया और सुनने लगा। कुछ नवयुवक कज़्जाक झूमते हुए गा रहे थे। इनमें से एक आवाज़ ऐसी थी जो दूर से ही स्पष्ट सुनाई पड़ रही थी।

"तुम जानते हो वहाँ कौन गा रहा है?" बूढ़े ने उठते हुए कहा, "वह है बहादुर लुकाश्का। उसने एक चेचेन को मारा है और अब जशन मना रहा है। परन्तु इसमें खुशियाँ मनाने की क्या बात?.. बेवक़ूफ़, बेवक़ूफ़!"

"क्या तुमने कभी किसी आदमी को भी मारा है?" ओलेनिन ने प्रश्न किया।

बूढ़ा एकाएक अपनी दोनों कुहनियों के बल उठा और ओलेनिन के मुँह के पास मुँह ले जाकर कहने लगा। "शैतान कहीं के!" उसकी आवाज़ तेज़ होती जा रही थी। "क्या पूछ रहे हो? इसका ज़िक्र मत करो। यह बात इतनी गम्भीर है कि मनुष्य को पतन की किसी भी सीमा तक ले जा सकती है... उफ़, यह बात बड़ी गम्भीर है! अच्छा, दोस्त, नमस्ते। तुम्हारे भोजन और तुम्हारी शराब में मज़ा आ गया।" और उठते उठते उसने पूछा "मैं कल आऊँ, चलोगे शिकार खेलने?"

"हाँ, ज़रूर।"

"मगर यह ध्यान रहे। उठना जल्दी है अगर ज्यादा देर तक सोते रहे तो जुर्माना देना होगा!"

"डरो मत, मैं तुमसे पहले उठूँगा।"

बूढ़ा चला गया। गाना भी बन्द हो गया। परन्तु अभी तक पगध्वनियाँ और हँसी खुशी की बातें सुनाई पड़ रही थीं। थोड़ी देर बाद गाना फिर शुरू हुआ। अब येरोश्का की तेज़ आवाज़ भी सुनाई पड़ी।

"कैसे लोग हैं! कैसा जीवन!" ओलेनिन ने सोचा। उसने एक आह भरी और अपने कमरे में चला गया—अकेले।

१६

चचा येरोश्का नौकरी छोड़ चुका था और अकेला रहता था क्योंकि बीस साल पहले उसकी पत्नी ईसाइन बन चुकी थी और उसने उन्हें छोड़ कर एक रूसी सार्जेंट-मेजर से विवाह कर लिया था। येरोश्का के कोई बच्चा न था। जब उसने कहा था कि अपनी जवानी में मैं सबसे बहादुर था तब वह कोई शेखी नहीं मार रहा था। सेना में सभी लोग उसका पराक्रम जानते थे। एक से अधिक रूसियों और चेचेनों की मृत्यु ने उसकी आत्मा पर गहरा प्रभाव डाला था। वह लूट-मार करने के लिए पहाड़ों में जाया करता था। उसने रूसियों को लूटा भी था और इसके लिए उसे दो बार जेल भी काटनी पड़ी थी। उसके जीवन का अधिकांश जंगलों में शिकार खेलते बीता था। वहाँ कई कई दिनों तक तो वह सिर्फ़ रोटी पानी पर रहा करता था। परन्तु जब कभी गाँव में होता तो सुबह से शाम तक मौज उड़ाता। ओलेनिन के पास से आने के बाद वह दो-एक घंटे सोया और फिर रोशनी होने से पहले पहले उठ गया। वह बिस्तर पर पड़ा पड़ा उस व्यक्ति के बारे में सोच रहा था जिससे उसका अभी शाम को ही परिचय हुआ था। ओलेनिन की सादगी (सादगी इस माने

में कि उसने उसे शराब पिलाई थी) ने उसे मुग्ध कर दिया था। स्वयं ओलेनिन के व्यक्तित्व का भी उसपर प्रभाव पड़ा था। उसे आश्चर्य होता था कि ये रूसी 'सीधे-सादे' क्यों होते हैं, इतने धनी क्यों होते हैं, और ऐसा क्यों कि वे जानते तो कुछ भी नहीं परन्तु फिर भी ख़ूब पढ़े-लिखे होते हैं। वह इन सभी प्रश्नों पर मनन करता रहा और सोचता रहा कि ओलेनिन के सम्पर्क से वह क्या लाभ उठा सकता है।

चचा येरोश्का का मकान बड़ा था और पुराना भी न था। परन्तु उसमें प्रवेश करते ही स्पष्ट प्रतीत हो जाता कि वह 'बिन घरनी घर भूत का डेरा' बना हुआ है। कज़्ज़ाक अपनी स्वच्छता-सफ़ाई के लिए प्रसिद्ध रहा है। परन्तु यह सारे का सारा मकान गन्दा और बेतरतीब था। कहीं मेज़ पर एक कोट पड़ा था जिसपर ख़ून के धब्बे साफ़ साफ़ दिखाई पड़ रहे थे; कहीं कटा-कटाया कोई कौआ पड़ा था, जो वह बाज को खिलाया करता था, और कहीं आटे और शक्कर का बना आधा लड्डू पड़ा था। बेंचों पर कच्चे चमड़े की चप्पलें, एक बन्दूक़, एक कटार, गीले कपड़े और कुछ चीथड़े इधर-उधर बिखरे पड़े थे। एक कोने में एक नाँद थी जिसमें बदबूदार पानी था। उसी में एक जोड़ी चप्पलें भी पड़ी थीं। पास ही एक रायफ़ल और शिकारी परदा तना था। फ़र्श पर एक जाल फिंका पड़ा था जिसमें कई मरे हुए तीतर लपटे थे और टाँग बंधी एक मुर्ग़ी मेज़ के आस-पास धूल में सनी फुदक रही थी। बुझी हुई अंगीठी पर एक टूटा बर्तन चढ़ा था जिसमें दूध की तरह का कोई सफ़ेद द्रव पड़ा था। अंगीठी के सिरे पर एक श्येन चिनचिना रहा था और उस डोरे को तोड़ने का प्रयत्न कर रहा था जिससे वह बंधा था। अंगीठी के एक किनारे एक बाज़ बैठा था जिसके पर फैले हुए थे। वह पास खड़ी हुई एक मुर्ग़ी को कनखियों से घूर रहा था और कभी अपना सिर इधर घुमाता, कभी उधर।

चचा येरोश्का एक साधारण सी क़मीज़ पहने स्टोव और दीवाल के बीच रखे हुए एक छोटे से पलंग पर औंधा लेटा था। उसकी टाँगें स्टोव पर थीं। वह अपनी मोटी उंगलियों से उन खरोंचों को सहला रहा था जो बाज़ ने उसके बायें हाथ में मार दिये थे—उसे बिना दस्ताना पहने ही बाज को अपने हाथों पर बिठाने का अभ्यास था। सारे कमरे, और मुख्यतया, बूढ़े के आस-पास की जगह से एक विचित्र प्रकार की तेज़ गंध-सी आ रही थी। चचा स्वयं इस गंध को अपने शरीर पर लादे लादे फिरा करता था।

"यूदे-मा, चाचा?" (क्या चचा अन्दर है?) खिड़की में से एक तेज़ आवाज़ सुनाई पड़ी। बूढ़े ने उसे पहचान लिया। आवाज़ लुकाश्का की थी।

"यूदे, यूदे, यूदे! मै यहाँ हूँ!" बूढ़ा चिल्लाया। "आ जाओ, पड़ोसी मार्का, लुका मार्का। तुम्हारा यह चचा तुम्हारे लिये क्या कर सकता है? क्या घेरे की तरफ़ जा रहे हो?"

मालिक की चिल्लाहट सुनकर बाज़ ने अपने पंख फड़फड़ाये और अपनी डोरी पर खिंच गया।

बूढ़ा लुकाश्का को पसन्द करता था क्योंकि एक वही व्यक्ति रह गया था जिसे चचा ने जवान कज़्ज़ाकों से, जिनसे वह साधारणतया घृणा करता था, भिन्न समझा था। इसके अतिरिक्त पड़ोसी होने के नाते लुकाश्का और उसकी माँ उसे कभी शराब, कभी मलाई और कभी घर की बनी ऐसी चीज़ें दे दिया करतीं जो उसके पास न होतीं। चचा येरोश्का जीवन भर बहकता ही रहा था। वह अपनी बेवक़ूफ़ी वाली बात भी एक व्यवहारिक दृष्टिकोण से समझाया करता। "वे क्यों न दें? वे देने में समर्थ जो है," वह मन ही मन कहता था, "मैं उन्हें कुछ ताजा गोश्त या कोई चिड़िया दे दूँगा और फिर वे अपने चचा को कभी न भूलेंगे। कभी कभी वे भी अपने चचा को केक या कचौड़ी समोसा दे दिया करेंगे।"

"नमस्ते, मार्का! तुमसे मिलकर बड़ी खुशी हुई," बूढ़ा खुशी से चिल्ला उठा और अपने नंगे पैरों को अंगीठी से उतारते हुए पलंग से नीचे कूद पड़ा, चरमराते हुए फ़र्श पर एक-दो क़दम चला, पैरों की मुड़ी हुई उंगलियों पर एक निगाह डाली और पैरों की शकल देख कर मुस्करा दिया। फिर, उसने ज़मीन पर एड़ी जमाई और झट से घूम गया।

"इसे कहते हैं कौशल!" उसने कहा और उसकी छोटी छोटी आँखें चमक उठीं। लुकाश्का धीरे से मुस्करा दिया।

"घेरे पर जा रहे हो?" बूढ़े ने पूछा।

"मैं तुम्हारे लिए चिख़ीर लाया हूँ। तुम्हें याद होगा जब मैं घेरे में था तो मैंने तुम्हें पिलाने का वादा किया था।"

"भगवान भला करे!" बूढ़े ने दुआ दी और फ़र्श पर पड़ी बड़ी बड़ी मोहरी वाली अपनी पतलून और बेशमेत पहनी, कमर में पेटी लगाई, मिट्टी के घड़े से कुछ पानी हाथ पर ढरकाया, हाथ पतलून में पोंछे, कंघे से दाढ़ी चिकनी की और लुकाश्का के सामने आकर खड़ा हो गया। "तैयार," उसने कहा।

लुकाश्का ने एक गिलास उठाया, उसे धोया, उसमें शराब उड़ेली और बूढ़े को पकड़ा दी।

"तुम्हारे स्वास्थ्य की कामना करते हुए! पिता और पुत्र के नाम!" गम्भीरतापूर्वक शराब स्वीकार करते हुए बूढ़ा बोला, "तुम्हारी मनोकामना पूरी हो, हमेशा वीर बने रहो और पदक प्राप्त करो।"

लुकाश्का ने भी कुछ बुदबुदाते हुए थोड़ी सी पी और बाक़ी मेज़ पर रख दी।

बूढ़ा उठा, कुछ सूखी हुई मछलियाँ बटोरीं, उन्हें फ़र्श पर रखा, छड़ी से पीटा और अपने सींग जैसे हाथों से उन्हें एक नीली तश्तरी में (उसके पास यही एक तश्तरी थी) रखते हुए मेज़ की तरफ़ बढ़ा दिया।

"जो कुछ मुझे चाहिए मेरे पास सब है। खाने की चीजें भी हैं। भगवान की दया है," वह गर्व से बोला, "मोसेव के बारे में क्या रहा?" उसने पूछा।

लुकाश्का ने बूढ़े की राय जानने के उद्देश्य से उसे बताया कि किस प्रकार कारपोरल ने उससे बन्दूक़ हथिया ली थी।

"बन्दूक़ की चिन्ता मत करो," बूढ़ा बोला, "अगर बन्दूक़ नहीं दोगे तो इनाम नहीं मिलेगा!"

"परन्तु, चचा, लोग कहते हैं कि जब तक कज़्ज़ाक घुड़सवार सैनिक नहीं होता तब तक उसे बहुत थोड़ा इनाम मिलता है। बन्दूक़ बढ़िया है, ८० रूबल की।"

"अरे जाने भी दो! मुझसे भी एक अफ़सर से ऐसा ही झगड़ा हो गया था—वह मेरा घोड़ा चाहता था। 'मुझे इसे दे दो और तुम कार्नेट बना दिये जाओगे,' वह कहता था। मैंने घोड़ा नहीं दिया और मैं कुछ नहीं बना।"

"हाँ, चचा, परन्तु मुझे एक घोड़ा ख़रीदना है। लोग कहते हैं कि नदी के उस पार भी कोई घोड़ा ५० रूबल से कम नहीं मिलेगा, और माता जी हैं कि उन्होंने अभी तक हमारी शराब ही नहीं बेची।"

"अरे मुझे तो कभी इसकी चिन्ता नहीं रही," बूढ़ा बोला, "जब चाचा येरोश्का तुम्हारी उम्र के थे तभी नगई लोगों से ढेर के ढेर घोड़े चुरा कर तेरेक के इस पार हांक लाते थे और अक्सर हम एक आध गिलास शराब या एक लबादे में लोगों को बढ़िया से बढ़िया घोड़े दे देते थे।"

"इतने सस्ते क्यों?" लुकाश्का ने पूछा।

"तुम नासमझ हो, पूरे नासमझ, मार्का," बूढ़े ने घृणा से कहा, "क्यों, मनुष्य चोरी इसीलिए तो करता है कि कंजूस न बने। जहाँ तक तुम्हारा सवाल है मैं समझता हूँ तुम्हें तो यह भी न मालूम होगा कि चोरी की कैसे जाती है? बोलते क्यों नहीं?"

"मै क्या कह सकता हूँ, चचा?" लुकाश्का ने जवाब दिया, "लगता है हम तुम दोनों एक धातु के नहीं बने हैं।"

"तुम बेवक़ूफ़ हो, मार्का। पूरे बुद्धू! एक धातु के नहीं!" कज़्ज़ाक छोकरे को मुंह बिराते हुए बूढ़े ने कहा, "भाई, जब मैं तुम्हारी उम्र का था उस समय मैं वैसा कज़्ज़ाक नहीं था।"

"यह कैसे?" लुकाश्का ने पूछा।

बूढ़े ने घृणा से गर्दन हिला दी।

"चचा येरोश्का सीधा-सादा था। उसने कभी किसी से ईर्ष्या न की। इसीलिए मैं सब चेचेनों का कुनक था। जब कभी कोई कुनक मुझ से मिलने आता तो मैं उसे शराब पिला कर ख़ुश कर देता और सोने के लिए अपना पलंग दे दिया करता और जब मैं उससे मिलने जाता तो उसे तोहफ़े दिया करता। मिलने-जुलने का यही एक तरीक़ा है वैसा नहीं जैसा कि आजकल आप लोग अपनाए हुए हैं। आपका मन-बहलाव ही क्या–बीजे तोड़िये और छिलके थूकिये!" बूढ़े ने बात खत्म की और आजकल के उन कज़्ज़ाकों की नक़ल करने लगा जो सूर्यमुखी के बीज फोड़ते और छिलके थूका करते थे।

"हाँ, मैं जानता हूँ," लुकाश्का बोला, "तुम ठीक कहते हो।"

"अगर तुम ढंग के आदमी बनना चाहते हो तो जिगीत बनो, किसान नहीं! किसान भी एक घोड़ा ख़रीद सकता है–वह रुपया दे दे और घोड़ा ले ले।"

दोनों कुछ देर के लिए चुप हो गये।

"गाँव और घेरे दोनों ही जगह बड़ा सन्नाटा है, चचा, परन्तु ऐसी भी तो कोई जगह नहीं जहाँ खेल-कूद में ही आदमी थोड़ा दिल बहला ले। हमारे सभी छोकरे तो डरपोक हैं। नज़ारका को ही ले लो। अभी उसी दिन, जब हम औल गये थे, हमें गिरेई-ख़ाँ ने कुछ घोड़े लेने के लिए नगई बुलाया था। परन्तु कोई भी नहीं गया। मैं अकेले कैसे जाता?"

"तुम्हारे चचा तो है? तुम समझते हो कि मुझमे कोई जोश बाकी नही रहा?.. नही, ऐसी बात नही। मुझे एक घोडा दो और मै तुरन्त नगई चला जाऊगा।"

"बेवकूफी की बातो से क्या फायदा!" लुकाश्का ने कहा, "मुझे तो यह बताओ कि अब गिरेई-खॉ से कैसे निबटा जाय। उसका कहना है, 'सिर्फ़ तेरेक तक घोडे ले आओ फिर उनकी सख्या चाहे जितनी ही हो मै उन्हें रखने की जगह बना लूगा'। वह चेचेन है, मालूम है। उसकी बात का कोई ठिकाना नही।"

"तुम गिरेई-खॉ का विश्वास कर सकते हो। उसके खानदान के सभी लोग अच्छे है। उसका पिता मेरा कुनक था। परन्तु अपने चचा की सुनो, वह तुम्हे गलत राय न देगा। गिरेई-खॉ को कसम खिला दो और तब सब कुछ ठीक हो जायगा, और अगर तुम उसके साथ जाओ तो साथ में पिस्तौल भी तैयार रखना, खासकर उस समय के लिए जब घोड़े बांटने का सवाल उठे। एक बार एक चेचेन ने तो इस प्रकार मुझे मार ही डाला था। मै उससे एक घोडे के १० रूबल चाहता था। विश्वास करना अच्छी बात है, परन्तु बिना बन्दूक के सोने मत जाना।"

लुकाश्का बूढे की बात बडे ध्यान से सुन रहा था।

"मै पूछता हूँ, चचा, तुम्हारे पास पत्थर-तोड घास है?" कुछ क्षणो के बाद उसने प्रश्न किया।

"मेरे पास तो नहीं पर मै तुम्हे बता सकता हूँ कि वह मिल कैसे सकती है। तुम एक अच्छे छोकरे हो। इस बूढे को मत भूलना... तो क्या मै तुम्हे बताऊं?"

"बताओ, चचा।"

"कछुआ देखा है? कितना भयकर जीव है, जानते हो?"

"जानता हूँ!"

"किसी प्रकार उसके रहने का ठिकाना मालूम करो और उसे बाड़े से घेर दो ताकि वह अन्दर न जा सके। वह वहाँ आयेगा, उसका चक्कर लगायेगा और पत्थर-तोड़ घास की फ़िराक़ में वापस चला जायेगा। शीघ्र ही वह घास लेकर लौटेगा और बाड़ा तोड़ देगा। ध्यान रहे कि तुम अगले दिन जरा तड़के वहाँ पहुँचना। जहाँ बाड़ा टूटा हुआ मिलेगा वही पत्थर-तोड़ घास भी होगी। इसे तुम जहाँ चाहो ले जा सकते हो।"

"क्या तुमने स्वयं यह तरीका इस्तेमाल किया है, चचा?"

"जहाँ तक इस्तेमाल करने की बात है तो भाई मैंने नहीं किया। परन्तु यह बात मुझे भले लोगों ने ही बताई है। मै तो केवल एक ही जादू इस्तेमाल करता था यानी जब मै घोड़े पर चढ़ता था तो जोर से चिल्लाता था 'जय बोलो' और फिर मुझे कभी किसी ने भी मौत के घाट नही उतारा!"

"यह 'जय बोलो' क्या है, चचा?"

"क्या तुम यह भी नहीं जानते? कैसे आदमी हो! चचा से पूछते हो ठीक करते हो। अब सुनो और मेरे साथ दोहराओ—

जय बोलो! ओ ज़ियाँ-निवासी!
करो दिव्य दर्शन राजा के
हम अश्वारोहण अभिलाषी।
सफ़ोनियाँ के अश्रु गिरे,
जहारियस के वैन फिरे,
पिता महान मान्द्रिच हैं जो
मानवता-प्रिय चिर विश्वासी।
जय बोलो! ओ जियाँ-निवासी![1]

---

[1] हिन्दी रूपांतरकार डॉ० राम कुमार वर्मा।

"मानवता-प्रिय चिर विश्वासी," बूढ़े ने दुहराया। "अब समझ गये न? इस तरीक़े का इस्तेमाल करो।"

लुकाश्का हँस पड़ा।

"बताओ, चचा, क्या इसीलिए उन्होंने तुम्हारी जान बख़्श दी थी? हो सकता है यह सिर्फ़ इत्तिफ़ाक की ही बात रही हो!"

"तुम बड़े चतुर होते जा रहे हो। इसे ज़बानी याद कर लो और फिर कहो। इससे तुम्हें कोई नुक़सान न होगा। केवल यही गाये जाना 'जय बोलो' और तुम्हारा सब काम बन जायेगा," और ख़ुद बूढ़ा भी हँसने लगा, "लुका, अच्छा हो तुम नगई न जाओ!"

"क्यों न जाऊँ?"

"अब समय बदल गया है। तुम लोग भी अब वैसे आदमी नहीं रहे। आजकल तुम सारे कज्ज़ाक पाखण्डी हो गये हो! और यह भी देखो कि कितने रूसी हमारे सिर पर सवार हो गये हैं! वे तुरन्त तुम्हें अदालत में खड़ा कर देंगे। जाने दो, यह विचार छोड़ दो। यह तुम्हारे बस का नहीं। गिरचिक और मैं, हम दोनों..." और बूढ़ा अपनी अनन्त गाथा सुनाने जा ही रहा था कि लुकाश्का ने खिड़की की ओर देखते हुए उसकी बात काटी।

"चचा, सूर्य निकल चुका है। अब मुझे जाना चाहिए। किसी दिन हमसे मिलने आओ न।"

"भगवान भला करे। मैं उस फ़ौजी के पास जा रहा हूँ। मैंने वादा किया है कि उसे शिकार पर ले जाऊँगा। भला आदमी लगता है।"

१७

येरोश्का के मकान से निकलकर लुकाश्का सीधे घर गया। ज़मीन से कुहरा उठ उठ कर सम्पूर्ण गाँव को ढके ले रहा था। मवेशी तो दिखाई नहीं पड़ रहे थे फिर भी सभी ओर से ऐसी ऐसी आवाज़ें आती

सुनाई पड़ रही थीं जिनसे प्रतीत होता था कि उनमें भी रेल-पेल शुरू हो गई है। मुर्गे एक दूसरे की बाँग का उत्तर-प्रत्युत्तर क्रमशः जल्दी जल्दी देने लगे थे। रोशनी बढ़ रही थी और गाँव के लोग उठने लग गए थे। जब तक वह अपने घर के बिलकुल नज़दीक न पहुँच गया तब तक उसे अपने अहाते के टट्टर तक का अन्दाज़ नहीं लग पाया क्योंकि सभी जगह कुहरा ही कुहरा था, क्या मकान का दालान और क्या खुला सायबान। अपने कुहरावृत अहाते से उसने कुल्हाड़ी से काटी जाती हुई लकड़ी की चर्र-चर्र सुनी। वह घर में घुस गया। उसकी माँ जाग चुकी थी और अंगीठी के पास खड़ी खड़ी उसमें लकड़ियाँ लगा रही थीं। उसकी छोटी बहन अभी तक बिस्तरे में पड़ी पड़ी खर्राटे ले रही थी।

"देखो लुकाश्का, तुम काफ़ी छुट्टी मना चुके हो?" उसकी माँ ने धीरे से पूछा, "रात कहाँ बिताई?"

"गाँव में था," पुत्र ने अनिच्छा से उत्तर दिया और थैले में से अपनी बन्दूक़ निकाल कर उलटने-पुलटने लगा।

माँ ने भी सिर हिला दिया। लुकाश्का ने थोड़ी सी बारूद एक बर्तन में रखी, फिर एक थैली ली, उसमें से कुछ ख़ाली कारतूस निकाले और उन्हें भरने लगा। साथ ही वह उनमें एक एक गोली भी भरता रहा। गोलियाँ एक चिथड़े में लिपटी थीं। तब, भरे हुए कारतूसों की दाँतों से परीक्षा कर लेने के बाद उसने थैली एक ओर रख दी।

"माँ, मैंने तुमसे कहा था न कि थैलियों में मरम्मत की ज़रूरत है। हो गई मरम्मत?" उसने पूछा।

"हाँ, हाँ, हमारी गूँगी कल रात कुछ उधेड़-बुन कर तो रही थी। क्यों, घेरे में जाने का वक़्त हो गया क्या? मैंने तो तुम्हारी कोई चीज़ नहीं देखी।"

"हाँ, जैसे ही तयार हो जाऊँगा, वैसे ही जाना होगा," बारूद बांधते बांधते लुकाश्का ने जवाब दिया, "और हमारी गूँगी कहाँ है, बाहर?"

"मैं समझती हूँ लकड़ी काट रही है। वह तुम्हारे लिए परेशान हो रही थी। 'मैं उससे बात भी नहीं करूंगी,' उसने मुझसे संकेत से कहा था। वह अपने मुँह पर ऐसे हाथ रखती है, जबान ऐसे चटखाती है और अपने दिल पर यों हाथ धरती है मानो उसका हृदय कह रहा हो 'काश मैं उससे मिल सकती!' मैं उसे यहाँ बुला लूँ क्या? उसे अब्रेक की सारी दास्तान मालूम हो चुकी है।"

"बुला लो," लुकाश्का ने कहा, "और मेरे पास कुछ चिकनई रखी थी, उसे भी ले आना। मुझे अपनी तलवार चिकनी करनी है।"

बूढ़ी चली गई और थोड़ी ही देर बाद लुकाश्का की गूँगी-बहरी बहन पट-पट करती हुई कमरे में दाखिल हो गई। वह अपने भाई से छ वर्ष बड़ी थी और यदि उसके चेहरे की भावाभिव्यक्ति में बराबर रुक्षतापूर्ण परिवर्तन न हुआ करता (जैसा कि गूँगे-बहरे लोगों में स्वभावतया देखने को मिलता है) तो वह भी बहुत कुछ उसी के समान होती। वह एक भद्दी सी फ़्राक पहने थी जिसपर जगह जगह पैबंद लगे थे। उसके पैर नंगे और कीचड़ से सने थे। उसके सिर पर एक पुराना नीला रूमाल कसा था। उसका गला, उसके हाथ और उसका चेहरा सभी मर्दों की तरह मजबूत थे। उसके कपड़ों और आकृति-प्रकृति से पता चलता था कि वह सख़्त क़िस्म की, पुरुषों जैसी, मेहनत की आदी थी।

वह दोनों हाथों में थोड़ी सी लकड़ियाँ लाई और अंगीठी के पास फेंक कर अपने भाई के पास चली आई। उसका चेहरा प्रसन्नता से खिल

उठा। उसने उसके कंधे पर हाथ रखा और हाथ, मुँह और सारे शरीर से जल्दी जल्दी संकेत करने लगी।

"ठीक है, टीक है, तुम बहुत अच्छी लड़की हो, स्तेप्का!" भाई ने सिर हिलाते हुए जवाब दिया, "तुम सब कुछ ले आई, तुमने सारी चीज़ों की मरम्मत कर दी। तुम बहुत अच्छी हो! यह लो!" उसने दो मीठी रोटियाँ अपनी जेब से निकालीं और उसे दे दीं।

गूँगी का चेहरा मारे प्रसन्नता के दमक उठा। वह ख़ुशी से नाच उठी। रोटी पाकर तो वह और भी जल्दी जल्दी इशारे करने लगी। प्रायः वह एक विशेष दिशा की ओर संकेत करती और फिर अपनी उंगली कभी भौंहों पर रखती, कभी मुंह पर। लुकाश्का ने उसकी बात समझ ली और ओठों पर हल्की मुस्कराहट लाते हुए सिर हिला दिया। वह कह रही थी कि लुकाश्का लड़कियों को भी कुछ स्वादिष्ट चीज़ें दे, लड़कियाँ उसे प्यार करती हैं और वह लड़की मर्यान्का जो सबसे सुन्दर है उससे बहुत प्रेम करती है। मर्यान्का की बात बताते हुए उसने उसके घर की दिशा में संकेत किया, अपनी भौंहों और अपने मुँह पर उंगली फेरी, ओठों से चुम्बन जैसा शब्द किया और अपना सिर हिला दिया। "वह तुमसे प्रेम करती है," अपने ही हाथों से अपनी छाती दबाती और किसी का आलिंगन करने जैसे इशारे करती हुई लड़की ने अभिनय किया। उनकी माँ भी अन्दर आ गई। वह भी गूँगी पुत्री की भाषा समझ कर मुस्करा दी और अपना सिर हिलाने लगी। पुत्री ने माँ को रोटी दिखाई और ऐसा शोर करने लगी जिससे प्रकट होता था कि मारे ख़ुशी के पागल हुई जा रही है।

"मैंने पिछले दिन उलित्का से कहा था कि मैं उसके पास विवाह की बात चलाने के लिए किसी मुनासिब आदमी को भेजूँगी," माँ ने कहा, "उसने मेरी बात बड़े क़ायदे से सुनी थी।"

लुकाश्का मौन माँ की ओर देखता रहा। "परन्तु शराब बेचने का क्या रहा, माँ? मुझे एक घोड़ा चाहिए।"

"जब समय आयेगा मैं उसे गाड़ी पर लदवा दूँगी। मैं सब कुछ तैयार रखूँगी," माँ बोली। सम्भवतः वह नहीं चाहती थी कि उसका पुत्र घरेलू मामलों में हाथ डाले।

"जब जाने लगना तो अपने साथ गलियारे में रखा हुआ थैला ले लेना। वह मैं अपने पड़ोसियों से माँग लाई हूँ और उसमें मैंने कुछ चीजें रख दी हैं जिन्हें तुम घेरे पर लिये जाना। या कहो तो उसे ज़ीन के साथ वाले थैले में डाल दूँ?"

"ठीक है," लुकाश्का ने जवाब दिया, "और अगर गिरेई-खाँ नदी पार करके इधर आ जाय तो उसे मेरे पास घेरे में भेज देना। अब मुझे बहुत समय तक छुट्टी न मिल सकेगी। मुझे उससे कुछ काम है।"

वह चलने के लिए तैयार होने लगा।

"मैं उसे भेज दूँगी," माँ बोली, "तुम सारे वक़्त याम्का के घर लफ़ंगापन करते रहे? यह बात ठीक है न? रात में मैं मवेशियों की देख-भाल के लिए निकली थी, और मैं समझती हूँ कि वह तुम्हारी ही आवाज़ थी। तुम उस वक़्त गा रहे थे।"

लुकाश्का ने कोई जवाब न दिया। वह गलियारे में घुसा, थैले अपने कंधे पर डाले, कोट के किनारे पेटी से बांधे, बन्दूक़ उठाई और दहलीज़ पर एक क्षण के लिए रुक गया।

"नमस्ते, माँ," फाटक बन्द करते करते उसने कहा, "नज़ारका के साथ शराब का एक छोटा सा कनस्तर भिजवा देना। मैंने छोकरों को पिलाने का वादा किया है। नज़ारका शराब लेने यहीं आयेगा।"

"ईश्वर रक्षा करे, लुकाश्का। मैं तुम्हें नये कनस्तर में से थोड़ी सी भेज दूँगी," टट्टर तक जाते हुए बूढ़ी ने कहा, "परन्तु सुनो," टट्टर पर झुकते हुए वह बोली।

कज़्ज़ाक रुक गया।

"यहाँ तुम मस्ती करते रहे हो। खैर ठीक है। जवान आदमी को उसके लिए भी अवकाश क्यों न मिले? भगवान ने तुम्हें तक़दीरवाला बनाया है और यह बहुत अच्छा है। परन्तु बेटे आँख खोलकर काम करना। हर क़दम सोचकर उठाना। किसी व्यसन या शरारत में हाथ न डालना। अपने से बड़ों की इज़्ज़त करना। ये सब बातें भूलना मत। और मैं शराब बेच दूँगी और घोड़े के लिए रुपया जुटा लूँगी। साथ ही मैं उस लड़की से तुम्हारा व्याह भी तय कर दूँगी।"

"अच्छी बात है, अच्छी बात है," पुत्र ने नाक-भौं सिकोड़ते हुए रूखा-सा जवाब दे दिया।

उसकी गूँगी बहन ने उसका ध्यान आकृष्ट करने के लिए कुछ आवाज़ की। उसने अपने सिर की तरफ़ इशारा किया और अपनी हथेली दिखाई, जिसका अर्थ था कि वह किसी चेचेन के घुटे हुए सिर के बारे में कुछ कहना चाहती है। फिर उसके चेहरे पर क्रोध के लक्षण दिखाई दिये और उसने ऐसे संकेत किये मानो बन्दूक़ से किसी को निशाना बना रही हो, फिर चिल्लाई और जल्दी से अपना शरीर कँपाने और सिर हिलाने-डुलाने लगी। इसका मतलब यह था कि लुकाश्का को किसी दूसरे चेचेन को भी मौत के घाट उतारना चाहिए।

लुकाश्का गूँगी का अभिप्राय समझ गया। वह मुस्करा दिया और लबादे के नीचे पीठ पर बंदूक़ रखते हुए धीरे धीरे वहाँ से चल दिया, और शीघ्र ही घने कुहरे में अदृश्य हो गया।

बूढ़ी भी थोड़ी देर तक वहाँ खड़ी रहने के बाद घर वापस चली गई और काम में लग गई।

१८

ठीक उसी समय, जब लुकाश्का घेरे की ओर चला, चचा येरोश्का ने अपने कुत्ते बुलाने के लिए सीटी बजाई, फिर वह टट्टर के ऊपर चढ़ा और पिछवाड़े की गलियों से होते हुए ओलेनिन के घर की ओर चल पड़ा। शिकार पर जाने के पहले वह औरतों से मिलना बिलकुल पसन्द न करता था।

ओलेनिन सो रहा था। वन्यूशा यद्यपि जगा हुआ था फिर भी अभी तक चारपाई पर ही पड़ा था और कमरे के चारों ओर यह जानने के लिए निगाह दौड़ा रहा था कि उठने का समय तो नहीं हो गया। बस इसी समय कंधे पर बन्दूक रखे शिकारी की पोशाक पहने और ज़रूरी अंगड़-खंगड़ लिए हुए चचा येरोश्का ने दरवाज़ा खोला।

"डंडा उठाओ!" वह भारी आवाज़ में चिल्लाया, "विपत्ति आ गई! चेचेनों ने हमपर हमला बोल दिया। इवान! अपने मालिक के लिए समोवर तैयार करो, तुम भी आ जाओ न। जल्दी करो!" बूढ़ा चिल्लाया, "हमारा यही तरीक़ा है, भले आदमी! क्यों! अरे लड़कियाँ तक जाग चुकी हैं! खिड़की के बाहर देखो। लड़कियाँ पानी भरने जा रही हैं और तुम हो कि अभी तक चारपाई तोड़ रहे हो।"

ओलेनिन जाग पड़ा और कूद कर पलंग के नीचे आ गया। बूढ़े की शक्ल देखते और उसकी आवाज़ सुनते ही उसे ताज़गी आई और उसका हृदय हलका हो गया। "वन्यूशा, जल्दी करो, जल्दी करो!" वह चिल्लाया।

"ऐसे ही आप शिकार मारेंगे?" बूढ़ा बोला, "दूसरे लोग नाश्ता पानी कर चुके और आप अभी तक स्वप्नलोक की सैर कर रहे हैं! ल्याम, इधर तो आना!" उसने कुत्ते को आवाज़ लगाई।

"तुम्हारी बन्दूक़ तैयार है न?" वह इतनी जोर से चिल्लाया मानो कमरे में भीड़ की भीड़ इकट्ठी हो।

"मैं मानता हूँ कि ग़लती मेरी ही है। परन्तु मैं कर ही क्या सकता हूँ? 'बारूद, वन्यूशा, बन्दूक़ की डाट!..'"

"तुम्हें जुर्माना देना होगा!" बूढ़ा चिल्लाया।

"दू ते वुले वू?"* दाँत पीसते हुए वन्यूशा ने पूछा।

"तुम हमारी जाति के नहीं और तुम्हारी बक-बक भी हमारी बोली की तरह नहीं, शैतान!" दाँत दिखाते हुए बूढ़ा वन्यूशा पर गुर्राया।

"पहली ग़लती माफ़ होनी चाहिए," खुशी के लहजे में ओलेनिन ने कहा। वह अपने ऊँचे बूट पहनने में लगा था।

"ओह! तो यह पहली ग़लती है। जाओ माफ़ की। लेकिन यदि फिर कभी ज़्यादा देर तक सोये तो तुमपर एक बाल्टी चिख़ीर जुर्माना करूंगा। गर्मी बढ़ जाने पर एक भी हिरन हाथ न लगेगा। समझे?"

"और अगर वह हमें मिल जाय तो हमसे ज़्यादा बुद्धिमान होगा," ओलेनिन ने चचा के पिछली शाम के शब्दों को दुहराते हुए कहा, "और तुम उसे धोखा नहीं दे सकते।"

"हाँ हँस लो, दोस्त, हँस लो! एक मार कर दिखाओ तब बात करना। अच्छा, अब जल्दी करो! वह देखो ख़ुद मालिक मकान तुमसे मिलने आ रहा है," खिड़की के बाहर निगाह डालते हुए येरोश्का बोला, "देखो तो कितना बना-ठना है। नया कोट पहन रखा है, यह दिखाने के लिए कि अफ़सर है। ओफ़, ये लोग, ये आदमी!"

---

* क्या आपको चाय चाहिए?

और निस्संदेह वन्यूशा आया और उसने बताया कि मालिक मकान ओलेनिन से मिलना चाहता है।

"लारजाँ*," वन्यूशा ने उसके आने का अभिप्राय बताने के उद्देश्य से कहा। उसके पीछे पीछे मकान मालिक भी चला आया। वह एक नया चेरकेसियन कोट पहने था, जिसपर कन्धे के स्थान पर अफ़सरों वाली पट्टियाँ थीं। वह चमकते हुए जूते भी पहने था (कज़्ज़ाकों में इतने बढ़िया जूते शायद और किसी के पास न थे)। वह इधर-उधर डोलता जा रहा था और अपने मेहमान का स्वागत कर रहा था।

कार्नेट ईल्या वसील्येविच एक पढ़ा-लिखा कज़्ज़ाक था। वह मुख्य रूस हो आया था, एक अध्यापक था और सबसे अच्छी बात यह थी कि भला आदमी था। वह चाहता था कि उसकी चाल-ढाल देखकर भी लोग उसे भला आदमी ही समझें। परन्तु उसकी चटक-मटक, उसके आडम्बर, उसके आत्मविश्वास और बातचीत करने के उसके बेतुके ढंग को देखकर देखने वाले समझ लेते थे कि वह चचा येरोश्का का भी चचा है। यह बात उसके धूप से कुम्हलाये हुए चेहरे और हाथों तथा लाल नाक से भी स्पष्ट हो जाती थी। ओलेनिन ने उससे बैठ जाने को कहा।

"नमस्ते, ईल्या वसील्येविच," थोड़ा सा सिर झुकाते हुए येरोश्का बोला। ओलेनिन को लगा कि चचा ने व्यंग्य किया है।

"नमस्ते, चचा। तो तुम यहाँ पहले से ही डटे हो," लापरवाही से सिर हिलाते हुए कार्नेट बोला।

कार्नेट लगभग ४० वर्ष का एक अधेड़ व्यक्ति था। उसकी दाढ़ी भूरी और नुकीली थी। शरीर दुबला-पतला और सूखा हुआ सा, परन्तु खूबसूरत

---

* रुपये।

था। अवस्था को देखते हुए उसमें उल्लास की कमी न थी। वह ओलेनिन से मिलने आया था और उसे डर था कि कहीं वह उसे मामूली कज़्ज़ाक ही न समझ बैठे। वह चाहता था कि ओलेनिन उसके बड़प्पन को पहले से ही समझ ले।

"यह रहा हमारा ईजिपशियन-नीमरोद", ओलेनिन को सम्बोधित करते हुए वह कहने लगा और हँसते हुए उसने बूढ़े की ओर इशारा किया, "आप के सामने एक बहुत बड़ा शिकारी खड़ा है, हमारे सब कामों में वह सब से आगे रहता है। मैं देखता हूँ तुम्हारी उसकी जान-पहचान पहले से ही हो चुकी है।"

चचा येरोश्का ने अपने पैरों की ओर देखा, जिनमें वह कच्चे चमड़े की चप्पलें पहने थे, और कार्नेट की योग्यता तथा विद्वत्ता देखकर विचारशील मुद्रा में अपना सिर हिलाने और बड़बड़ाने लगे, "जीप्शियन नीमरोद! ऐसी बातें वह सोचता है!"

"हाँ हम शिकार पर जाने की तैयारी में हैं," ओलेनिन ने उत्तर दिया।

"महाशय, वही तो मैं देख रहा हूँ," कार्नेट बोला, "परन्तु मुझे आप से कुछ काम की बातें करनी हैं।"

"मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ?"

"यह देखते हुए कि आप एक भले आदमी है," कार्नेट ने कहना शुरू किया, "और चूंकि मैं भी अपने को एक अफ़सर के पद का समझता हूँ, इसलिए हम भले आदमियों की तरह आपस में बातें कर सकते हैं..." (वह कुछ रुका और मुस्कराते हुए उसने ओलेनिन और बूढ़े की तरफ़ देखा।) "मेरी पत्नी हमारी जाति की एक नासमझ औरत है। वह आपके कल के शब्दों को अच्छी तरह समझ नहीं पाई। मैं कहता हूँ कि बिना अस्तबल के ही मेरे क्वार्टर रेजीमेंटल ऐडजूटैंट को छ रूबल

माहवार पर उठाये जा सकते हैं; लेकिन मैं अपनी तरफ़ से तो क्वार्टर किराये पर देना नहीं चाहता। परन्तु, चूंकि आप घर चाहते हैं इसलिए मैं खुद अफ़सर के पद का और इस जिले का निवासी होने के कारण, न कि अपने रीति-रिवाजों के अनुसार, किसी भी विषय पर आपके साथ कोई भी क़रार कर सकता हूँ, और हर दशा में शर्तों का पालन कर सकता हूँ..."

"बोलता साफ़ है!" बूढ़ा बुदबुदाया।

कार्नेट बड़ी देर तक इसी लहजे में बातचीत करता रहा। अन्त में, बड़ी मुश्किल से ओलेनिन की समझ में यह बात आई कि वह अपना क्वार्टर छः रूबल महीने पर उठाना चाहता है। ओलेनिन ने तुरन्त उसे स्वीकार कर लिया और उससे चाय पीने का आग्रह किया। कार्नेट ने इनकार कर दिया।

"अपने गन्दे रीति-रिवाजों के अनुसार हम दुनिया भर के जूठे लोटे गिलास में कोई चीज़ पीना हराम समझते हैं," उसने कहा, "यद्यपि अपनी शिक्षा-दीक्षा के कारण मैं तो समझ सकता हूँ परन्तु अपनी इन्सानी कमजोरियों के कारण मेरी पत्नी..."

"अच्छा तो आप थोड़ी सी चाय पियेंगे?"

"यदि आप मुझे इजाज़त दें तो मैं अपना गिलास ले आऊँ," कार्नेट ने जवाब दिया और बाहर निकल कर दालान में आ गया।

"मेरा गिलास तो लेते आना!" उसने आवाज दी।

कुछ ही मिनटों में दरवाज़ा खुला और गुलाबी आस्तीन में एक मूँगई हाथ ने गिलास बढ़ा दिया। कार्नेट ने आगे बढ़ कर उसे ले लिया, और अपनी पुत्री के कान में कुछ फुसफुसाया। ओलेनिन ने कार्नेट के लिए चाय उसके ख़ास गिलास में, और येरोश्का के लिए एक दुनिया भर के जूठे गिलास में उड़ेल दी।

"मैं आपको रोकना नहीं चाहता," गिलास ख़ाली करते और ओठों पर जीभ फेरते हुए कार्नेट बोला, "मुझे भी मछली मारने का बड़ा शौक है और जब मुझे अपने कामों से कुछ दिनों की छुट्टी मिल जाती है तो मन बहलाने के लिए यहाँ आ जाता हूँ। मुझे भी तक़दीर आज़माने की इच्छा है। मैं देखना चाहता हूँ कि मेरे हिस्से में भी तेरेक की कुछ भेंटें पड़ती हैं या नहीं। मैं चाहता हूँ कि किसी दिन आप हमारे यहाँ आयें और हमारे गाँव के रीति-रिवाजों के अनुसार हमारे साथ शराब पियें," कार्नेट ने सिर झुकाया, ओलेनिन से हाथ मिलाया और बाहर चला गया। जब ओलेनिन तैयार हो रहा था उस समय उसके कानों में कार्नेट की आवाज़ पड़ी। वह अधिकारपूर्ण ढंग से अपने परिवारवालों को हुक्म दे रहा था। कुछ ही मिनटों बाद उसने देखा कि वह एक फटा-सा कोट पहने, घुटनों तक पतलून मोड़े और कंधों पर मछली मारने का जाल रखे खिड़की से गुज़रता हुआ निकल गया।

"बदमाश!" अपना दुनिया भर का गिलास ख़ाली करते हुए चचा येरोश्का बोला। "क्या सचमुच तुम उसे छः रूबल दोगे? क्या ऐसी बात पहले कभी सुनी गई थी? गाँव में सब से अच्छा घर तुम्हें दो रूबल महीने पर मिल सकता है। पाजी कहीं का! क्यों, तीन रूबल में तो मैं अपना ही घर उठा सकता हूँ?"

"नहीं, मैं यहीं रहूँगा," ओलेनिन बोला।

"छः रूबल!.. यह तो रुपया फेकना हुआ, फेकना।" बूढ़े ने आह भरी, "आओ कुछ चिख़ीर ही पी जाय, इवान!"

रास्ते भर के लिए थोड़ा-बहुत खाना पेट में डालने और एक एक गिलास शराब उड़ेल लेने के बाद ओलेनिन और चचा येरोश्का आठ बजे के पहले पहले घर से निकल पड़े। फाटक पर उन्हें एक बैलगाड़ी मिली जिसे मर्यान्का हाँक रही थी। उस समय वह अपने सिर के चारों तरफ़

आँख के पास तक एक रूमाल लपेटे थी और फ़ाक के ऊपर एक कोट और पैरों में ऊँचे जूते पहने थी। हाथ में एक चाबुक लिए हुए वह टिक टिक करती चली आ रही थी।

"कितनी सुन्दर है यह!" बूढ़े ने कहा और अपने दोनों हाथ ऐसे फैला दिये जैसे उसे पकड़ ही तो लेगा।

मर्यान्का ने अपना चाबुक उसकी ओर फेरा और अपनी सलोनी आँखों से दोनों को देखने लगी।

ओलेनिन को लगा कि उसका हृदय और भी हल्का हो गया है।

"बढ़े आओ, चलने चलो!" बन्दूक़ कन्धे पर फेंकते हुए वह बोला। उसे बराबर ऐसा लगता रहा कि लड़की की आँखें उसपर गड़ी हुई हैं।

बैलों को सम्बोधित करती हुई मर्यान्का की आवाज़ पीछे से गूँज रही थी और साथ ही चलती हुई गाड़ी की चूँ-चर्र भी सुनाई पड़ रही थी।

उनका रास्ता गाँव के पीछे चरागाहों से होकर था। येरोश्का बराबर बातें करता रहा। वह कार्नेट को न भूला था और उसे बराबर गालियाँ देता जा रहा था।

"उससे तुम इतने नाराज़ क्यों हो?" ओलेनिन ने पूछा।

"वह कमीना है। और, यह बात मुझे पसन्द नहीं," बूढ़े ने जवाब दिया, "जब मरेगा तो सब यहीं छोड़ जायेगा! तब किसके लिए बचा रहा है? दो दो मकान बनवा लिये हैं और भाई से मुकदमा लड़कर उसका एक बाग़ भी हथिया लिया है। काग़ज़ की नाव चलाता है कुत्ता है, कुत्ता! दूसरे गांव से लोग उससे अपने काग़ज़-पत्र लिखवाने आते हैं और जो कुछ वह लिख देता है वही हो जाता है। वह ऐसा ही करता है। परन्तु वह धन बचा किसके लिए रहा है? उसके एक लड़का है और एक लड़की और जब लड़की की शादी हो जायगी तब रह कौन जायगा?"

"हो सकता है वह दहेज देने के लिए जोड़ रहा हो," ओलेनिन बोला।

"दहेज? क्या बात करते हो? लड़की को ख़ुद लोग घेरते है। बड़ी सुन्दर है! परन्तु वह इतना पाजी है कि उसका व्याह किसी अमीर से ही करेगा। वह उसकी अच्छी क़ीमत वसूल करना चाहता है। यहाँ एक कज़्ज़ाक है, लुका। मेरा पड़ोसी है, मेरा भतीजा है और एक अच्छा लड़का है। उसी ने चेचेन को मारा था। बेचारा बहुत दिनों से उसका दीवाना है, मगर यह पाजी अपनी लड़की उसे नहीं देगा। इसके लिए वह बहाने पर बहाने गढ़ता जा रहा है, कहता है 'लड़की छोटी है' लेकिन मैं जानता हूँ कि वह क्या सोच रहा है। वह चाहता है कि वे लोग उसके आगे झुकते रहें और घिघियाते रहें। आज इस लड़की के कारण कितनी शर्म उठानी पड़ी! फिर भी वे लोग लड़की लुकाश्का को दिलायेंगे क्योंकि गाँव में वही सबसे अच्छा कज़्ज़ाक है, जिगीत है। उसी ने एक अब्रेक को मारा है, और उसे पदक भी मिलनेवाला है।"

"मगर यह कैसे? जब पिछली रात मैं अहाते में घूम रहा था तो मैंने मालिक मकान की लड़की और एक कज़्ज़ाक को आपस में एक दूसरे का चुम्बन करते देखा था," ओलेनिन बोला।

"मुझे तुम्हारी बात का कोई यक़ीन नहीं!" रुकते हुए बूढ़ा कहने लगा। उसकी आवाज़ तेज़ थी।

"मै अपनी क़सम खाता हूँ," ओलेनिन बोला।

"बड़ी बेहया है," येरोश्का ने कहा और विचारों में डूब गया, "लेकिन वह कज़्ज़ाक था कौन?"

"मैं नहीं देख सका।"

"ख़ैर, कैसी टोपी पहिने था, सफ़ेद?"

"हाँ।"

"और लाल कोट? तुम्हारे ही इतना लम्बा था?"

"नहीं, कुछ अधिक।"

"तब तो वही था!" और येरोश्का हँसते हँसते लोटपोट हो गया, "वह तो मार्का ही था। उसका नाम लुका है, लेकिन मैं उसे मज़ाक़ मज़ाक़ में मार्का कहता हूँ, मार्का। मैं उसे चाहता हूँ। मैं भी ठीक उसी की तरह था। इसमें बुराई क्या है? मेरी प्रेमिका अपनी माँ और ननद के पास सोया करती थी, परन्तु मैं किसी न किसी प्रकार उस तक पहुँच जाता था। वह ऊपर कोठे पर सोती थी। उसकी माँ क्या थी, पूरी चुड़ैल। वह मुझसे कितनी नफ़रत करती थी! मैं अपने दोस्त के साथ जाता था। उसका नाम था गिरचिक। हम लोग उसकी खिड़की के नीचे पहुंच जाते। मैं अपने दोस्त के कन्धों पर चढ़ जाता, खिड़की में धक्का मारता और सिर अन्दर करके देखने लगता। वह भी वहीं एक बेंच पर सोया करती। एक दिन मैंने उसे जगा दिया और वह क़रीब क़रीब चिल्ला पड़ी। उसने मुझे पहचाना न था। 'कौन है?' उसने पूछा था और मैं जवाब भी न दे पाया। उसकी माँ भी अंगड़ाई लेने लगी थी जिसे देखकर मैंने अपना टोप उतारा और उसके मुँह पर रख दिया। उसने तुरन्त टोप पहचान लिया क्योंकि वह फटा था। और, फिर दौड़ी मेरे पीछे। उन दिनों मैं जिस चीज़ की भी इच्छा करता वह मुझे मिल जाया करती। वह लड़की मेरे लिए मलाई लाती, अंगूर लाती और न जाने क्या क्या लाती!" येरोश्का ने अपने ख़ास लहजे में कहा, "और फिर कोई वही अकेली तो थी नहीं। अजी वह ज़िन्दगी थी!"

"और अब क्या है?"

"अब हमें कुत्ते के पीछे लगना है। तीतर को पेड़ पर बैठ जाने दो, फिर तुम गोली चला सकते हो।"

"मर्यान्का के लिए कोशिश क्यों नहीं करते?"

अपने कुत्ते, ल्याम, की ओर संकेत करते हुए बूढ़े ने कहा, "कुत्ते पर नज़र रखना! आज तुम्हें उसकी बानगी दिखाऊँगा!"

थोड़ी देर ठहर चुकने के बाद लगभग सौ क़दम तक वे फिर बातों में लगे रहे। तभी बूढ़ा रुका और उसने सड़क के उस पार पड़ी हुई एक टहनी की तरफ़ इशारा किया।

"उसके बारे में क्या सोचते हो?" उसने पूछा, "तुम समझते हो यह कोई बात ही नहीं? टहनी इस तरह नहीं पड़ी रहनी चाहिए। समझे! यह असगुन होता है।"

"असगुन क्यों होता है?"

बूढ़ा हँस पड़ा। उसकी हँसी में तिरस्कार की भावना व्यक्त हो रही थी।

"अरे तुम कुछ नहीं जानते। मेरी बात सुनो। जब कभी कोई टहनी इस तरह पड़ी दिखाई दे तो उसे कभी लाँघकर मत जाओ। तुम्हें उससे घूमकर जाना चाहिए अथवा उसे रास्ते से हटाकर फेंक देना चाहिए, फिर कहना चाहिए 'पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा' और तब भगवान् के आशीर्वाद से आगे बढ़ना चाहिए। तुम्हें कुछ नहीं होगा। बुज़ुर्ग मुझे यही सिखाते रहे हैं।"

"आओ, क्या अंट-संट बक रहे हो!" ओलेनिन ने कहा। "मुझे मर्यान्का के बारे में कुछ और बताओ। क्या लुकाश्का से उसकी मुहब्बत चल रही है?"

"हुश ... अब चुप रहो!" बूढ़े ने फुसफुसाते हुए फिर बात काटी। "सिर्फ़ सुनते जाओ। हम जंगल से होकर जायेंगे।"

और बूढ़े ने, जिसकी चप्पलों की आहट तक न सुनाई पड़ रही थी, एक संकरे रास्ते से होकर घने जंगल में प्रवेश किया। कभी कभी वह त्योरियाँ चढ़ाकर ओलेनिन की तरफ़ भी घूर लेता जो अपने भारी भारी जूतों से

चर्र-मर्र की आवाज करता चला जा रहा था। वह अपनी बन्दूक भी बड़ी लापरवाही से थामे था और प्रायः रास्ते में मिलनेवाली टहनियों से उलझ जाता था।

"इतना शोर मत करो। धीरे धीरे क़दम रखो, दोस्त!" बूढ़ा गुस्से मे फुसफुसा उठा।

हवा से ऐसा लग रहा था कि सूर्योदय हो चुका है। कोहरा छंट रहा था यद्यपि वह अभी तक पेड़ों के ऊँचे से ऊँचे सिरों को ढके था। जहाँ तक निगाह जाती थी वन की जबर्दस्त उँचाई ही नज़र आती थी। क़दम क़दम पर दृश्य परिवर्तित हो रहे थे। दूर से जो पौधा वृक्ष जैसा लगता वही पास जाकर झाड़ी निकलता, और इसी प्रकार नरकट, एक पेड़ जैसा।

१६

कोहरा कुछ कुछ हट गया था। अब छतों की नम फूस दिखाई पड़ने लगी थी। कहीं कहीं उसने ओस का भी रूप ले लिया था। सड़क तथा बाड़ों के इर्द-गिर्द की घास भीग गई थी। जगह जगह चिमनियों से धुआँ उठ रहा था। लोग गाँव से बाहर जाने लगे थे—कुछ काम पर, कुछ नदी की ओर और कुछ चौकियों की तरफ़। शिकारी नम और घास वाली सड़कों के किनारे-किनारे चहलक़दमी कर रहे थे। कुत्ते दुम हिलाते और अपने मालिकों की ओर पीछे देखते हुए उनके इर्द-गिर्द दौड़ रहे थे। असंख्यों मच्छड़ हवा में उड़ उड़कर शिकारियों पर हमले बोल रहे थे और उनकी पीठों, हाथों और आँखों को ढके ले रहे थे। वातावरण में घास की गन्ध और वन की नमी फैल रही थी। ओलेनिन बराबर उस गाड़ी को देखता रहा जिसपर बैठी हुई मर्यान्का बैलों पर एक टहनी से चाबुक जमा रही थी।

चारों ओर नीरवता थी। पहले जो आवाज़ें गाँवों से आती हुई सुनाई पड़ रही थीं अब वे बन्द हो चुकी थीं। जब कुत्ते कँटीली झाड़ियों में से होकर दौड़ते तो वे खड़खड़ाने लगतीं। कभी कभी पक्षी भी एक दूसरे पर चहचहाते हुए सुनाई पड़ते। ओलेनिन जानता था कि जंगलों में हमेशा खतरा रहता है क्योंकि ऐसी ही जगहों में अब्रेक छिपा करते हैं। परन्तु वह यह भी समझता था कि जंगल में पैदल चलनेवाले मनुष्य की सबसे बड़ी सुरक्षा उसकी बन्दूक़ है। यह बात नहीं थी कि वह डर रहा था परन्तु वह यह समझता था कि यदि उसके स्थान पर कोई दूसरा होता तो शायद डर जाता। वह नम एवं कुहरे से ढके हुए वन को देख रहा था और दूर से आती हुई हल्की और विचित्र-सी लगनेवाली आवाज़ बड़े ध्यान से सुन रहा था। अब उसने बन्दूक़ ढीली कर दी और उसे एक ऐसी सुखद अनुभूति होने लगी जो उसके लिए नई थी। चचा येरोश्का आगे आगे चल रहा था और कभी कभी रुककर ऐसे स्थानों का सूक्ष्म निरीक्षण-सा करने लगता जहाँ उसे जानवरों के पैरों के दुहरे निशान दिखाई पड़ जाते। वह इन निशानों को ओलेनिन को भी दिखाता चलता। वह शायद ही कभी बोलता था। जब उसे कोई बात कहनी होती तो फुसफुसा भर देता। जिस रास्ते से होकर वे चल रहे थे वह कभी गाड़ियों की वजह से बन गया था। परन्तु, अब वहाँ घासें उग आई थीं। दोनों ओर देवदार तथा प्लेन वृक्षों का इतना घना वन था और वहाँ लताएँ इतनी अधिक फैली हुई थीं कि उनमें से कुछ भी देख सकना असम्भव था। शायद ही कोई ऐसा वृक्ष रहा हो जिसपर नीचे से लेकर ऊपर तक अंगूर की वन-लताएँ न लिपटी हों। कँटीली झाड़ियां ज़मीन पर बिछी हुई थीं। जंगल के छोटे से छोटे खुले स्थान पर भी काली बेरी की झाड़ियाँ और भूरे रंग के परदार नरकट उगे हुए थे। कहीं कहीं खुरों के बड़े बड़े निशान और भागते हुए तीतरों के पग-चिन्ह रास्ते से होकर घनी झाड़ियों तक दिखाई पड़ जाते थे। जंगल में उगी हुई घनी

झाड़ियों, लताओं तथा वृक्षों आदि से होकर कभी कोई मवेशी न गुज़रे थे। वन का यह सौन्दर्य ओलेनिन पर छाता जा रहा था क्योंकि इसके पहले उसने प्रकृति का यह रूप कभी न देखा था। यह जंगल, यह विपत्ति, यह बूढ़ा और उसकी विचित्र फुसफुसाहट, नखशिख-सौन्दर्य की मूर्ति यह मर्यान्का और यह पहाड़ उसे स्वप्न जैसे लग रहे थे।

"एक तीतर बैठ गया," चारों ओर निगाह डालते और अपने चेहरे पर टोपी खींचते हुए बूढ़ा फुसफुसाया, "जल्दी से मुँह ढँक लो! यह रहा तीतर!" उसने ओलेनिन को तीखी नज़रों से देखा और हाथों तथा पैरों के सहारे जानवरों की भाँति चुपके चुपके आगे बढ़ने लगा। "उसे मनुष्य का मुँह अच्छा नहीं लगता।"

ओलेनिन पीछे ही था कि बूढ़ा रुका और एक पेड़ की जाँच-पड़ताल करने लगा। पेड़ पर चढ़ा हुआ एक मुर्ग़-तीतर गुर्राते हुए कुत्ते को देखकर कुकुड़ाने लगा। ओलेनिन ने भी पक्षी को देखा और उसी क्षण येरोश्का की बन्दूक़ की 'धाँय' उसके कानों में पड़ी। पक्षी फड़फड़ाया, उसके कुछ पर टूटे और वह ज़मीन पर आकर धम्म से गिर पड़ा। जैसे ही ओलेनिन बूढ़े की ओर बढ़ा कि उसने दूसरे मुर्ग़-तीतर को भी उड़ा दिया। ओलेनिन ने तुरन्त अपनी बन्दूक उठाई, निशाना साधा और दन्न से गोली दाग दी। क्षण भर को तीतर उड़ा, फिर गिरते हुए उसने कुछ शाखाएँ पकड़ने की कोशिश की और ज़मीन पर लुढ़क पड़ा।

"बहुत अच्छे!" हँसते हुए बूढ़ा चीखा। उड़ते हुए पक्षी पर निशाना साधना उसके वश का न था।

उन्होंने तीतरों को उठाया और चल दिये। प्रशंसा के शब्द सुनकर ओलेनिन का उत्साह बढ़ा और वह बूढ़े से बातें करने लगा।

"ठहरो, इधर आओ, इस तरफ़" येरोश्का ने बात काटी, "मैंने यहाँ कल एक हिरन के पैरों के निशान देखे थे।"

जंगल में क़रीब तीन सौ क़दम चल चुकने के बाद वे एक झाड़ी के समीप पहुँचे जहाँ नरकटों की बहुतायत थी और चारों ओर पानी भरा था। ओलेनिन बढ़े शिकारी के साथ न रह सका। वह पिछड़ गया। शीघ्र ही येरोश्का, जो लगभग बीस क़दम आगे था, रुका और सिर और हाथ हिलाने लगा। पास आने पर ओलेनिन ने देखा कि येरोश्का आदमी के पैरों के निशानों की तरफ़ इशारा कर रहा है।

"देख रहे हो न?"

"हाँ," ओलेनिन ने धीरे से बोलने का प्रयत्न करते हुए कहा, "आदमी के पैरों के निशान।"

अनायास ओलेनिन के दिमाग़ में कूपर कृत "पथ-अनुसंधानकर्ता" और अब्रेक घूम गये। परन्तु यह देख कर कि बूढ़ा कितने विचित्र ढंग से आगे बढ़ रहा है उसे उससे कुछ भी पूछने में संकोच हुआ। उसे सन्देह हो रहा था कि यह वैचित्र्य ख़तरे के भय के कारण है अथवा शिकार की उत्सुकता के कारण।

"नहीं। ये तो मेरे ही पैरों के निशान हैं," बूढ़े ने सहज ही उत्तर दिया और उस घास की तरफ़ इशारा किया जहाँ किसी जानवर के पैरों के निशान दिखाई पड़ रहे थे।

बूढा चलता गया और ओलेनिन पीछे पीछे लगा रहा। क़रीब बीस क़दम चल चुकने के बाद वे एक नाशपाती के पेड़ के पास आये जिसके नीचे काली भूमि पर किसी जानवर का ताज़ा गोबर पड़ा था। यह स्थान अंगूर लताओं से आच्छादित एक कुंज की तरह था। यहाँ कुछ कुछ अंधेरा था और नमी भी।

"सुबह वह यहीं था," आह भरते हुए बूढ़ा बोला, "माँद अब भी नम है, बिल्कुल ताज़ी।"

सहसा उन्हें जंगल में अपने खड़े होने के स्थान से लगभग दस क़दम पर एक भयानक चरमराहट की आवाज़ सुनाई दी। दोनों चौंक पड़े। उन्होंने अपनी अपनी बन्दूकें सम्भाल लीं। परन्तु उन्हें कुछ दिखाई नहीं दिया, हाँ शाखाओं के टूटने का शब्द अवश्य कानों में पड़ा। एक क्षण तक तो उन्हें तेज़ दौड़ जैसी कोई ध्वनि भी सुनाई दी जो बाद में हलकी आहट में बदल गई। यह आहट क्रमशः दूरातिदूर वन की दिशाओं में ध्वनित और प्रतिध्वनित होती हुई वायु की लहरों में विलीन होती गई। ओलेनिन को ऐसा लगा कि उसके हृदय का कोई तार टूट गया। उसने हरी झाड़ियों में से झाँकने की कोशिश की परन्तु व्यर्थ। फिर वह बूढ़े की तरफ़ मुड़ा। चचा येरोश्का कंधे पर बन्दूक़ रखे निश्चल खड़ा था। उसकी टोपी पीछे खिसक गई थी, उसकी आँखों में असाधारण चमक आ गई थी और उसका मुँह खुला का खुला रह गया था। उसके घिसे हुए पीले दाँत क्रोध से बाहर निकल आये थे।

"बारहसिंघा!" वह बड़बड़ाया और हतोत्साह अपनी बन्दूक़ एक तरफ़ फेंकते हुए अपनी भूरी दाढ़ी पर हाथ फेरने लगा। "वह यहीं खड़ा था। हमें उस रास्ते से घूमकर आना चाहिए था... बेवक़ूफ़! बेवक़ूफ़!" और ग़ुस्से मे उसने अपनी दाढी नोच ली। "बेवक़ूफ़, सुअर!" दाढ़ी से लड़ते हुए वह बड़बड़ाने लगा।

जंगल में कुहरे से होकर कोई चीज़ उड़ती हुई सी लगी और भागते हुए बारहसिंघे की आवाज़ दूर दूर तक प्रतिध्वनित हो उठी।

जब भूखा-प्यासा, थका-माँदा परन्तु स्फूर्ति से भरा हुआ ओलेनिन बूढ़े के साथ घर लौटा उस समय शाम का धुंधलका छा चुका था। खाना तैयार था। उसने बूढ़े के साथ खाना खाया, शराब पी और तब कहीं जाकर उसे गर्मी आई, उसका चित्त ठिकाने हुआ। अब वह दालान में गया। यहाँ, सूर्यास्त के समय, पहाड़ एक बार फिर उसकी निगाहों

के सामने घूम गये, एक वार फिर बूढ़े ने अब्रेकों, प्रेमिकाओं, और वन्य, साहसिक तथा निश्चिन्त जीवन की अपनी अनन्त कहानियाँ शुरू कीं, एक वार फिर मर्यान्का अन्दर आई, बाहर गई और अहाते के पार भागी, और एक बार फिर उसका वक्षोन्नत यौवन उसके झीने फ्राक में से झाँक उठा।

२०

दूसरे दिन ओलेनिन अकेले उस स्थान की ओर गया जहाँ चचा येरोश्का ने बारहसिंघे को भड़का दिया था। फाटक से होकर जाने के लिए लम्बा चक्कर लगाने के बजाय वह झाड़ियों के टट्टरों पर चढ़ गया, जैसा कि दूसरे लोग करते थे, और इसके पहले कि वह अपने कोट मे चुभे हुए काँटे निकालता उसका कुत्ता सामने की तरफ़ दौड़ा और उसने दो तीतर उड़ा दिये। मुश्किल से वह कँटीली झाड़ियों तक पहुँचा होगा कि चलते-फिरते तीतर क़दम क़दम पर दिखाई देने लगे। (बूढ़े ने उसे वह जगह कल शायद इसलिए नहीं दिखाई थी कि वह वहाँ परदे की ओट में शिकार करना चाहता था।) ओलेनिन ने बारह बार गोलियाँ चलाई और पाँच तीतर मार गिराये। परन्तु कँटीली झाड़ियों पर चढ़ने-उतरने के कारण वह इतना थक गया कि पसीने से तर हो गया। उसने अपने कुत्ते को पुकारा, बन्दूक़ से कारतूस निकाले, उसके छोटे छेद में थोड़ी-सी गोलियाँ रखीं और अपने चेरकेसियन कोट की चौड़ी आस्तीन से मच्छरों को हटाता हुआ वह उस स्थान की ओर बढ़ने लगा जहाँ वे लोग अभी कल ही गये थे। परन्तु कुत्ते को पीछे रखना असम्भव था। वह रास्ते भर जानवरों के पद-चिन्ह ढूंढ़ता चल रहा था। ओलेनिन ने दो तीतर और मारे। इस प्रकार उसे अपने गन्तव्य स्थान तक पहुँचते पहुँचते क़रीब क़रीब दोपहर हो गई।

इस समय दिन शान्त, स्वच्छ और गर्म था। प्रातःकाल की आर्द्रता वन तक में सूख चली थी। असंख्यों मच्छर उसके मुँह, पीठ और हाथों पर चक्कर लगा रहे थे। उसके कुत्ते का रंग भी काले से भूरा हो गया था क्योंकि उसके शरीर पर मच्छर ही मच्छर दिखाई दे रहे थे। यही दशा ओलेनिन के कोट की भी थी जिसमें से ये कीड़े डक मारने का प्रयत्न कर रहे थे। ओलेनिन वहाँ से भाग निकलने को तैयार खड़ा था। उसने यह अनुभव करना शुरू कर दिया कि इस गाँव में गर्मियों में रहना असम्भव है। एक बार वह घर वापस जाने के लिए मुड़ा भी परन्तु यह याद करके कि आखिर दूसरे लोग भी तो ये कठिनाइयाँ बरदाश्त करते हैं, उसने उन्हें सहन करने का निश्चय किया और फिर आगे बढ़ने के लिए कमर कसी। आश्चर्य यह था कि दोपहर तक वह बड़ा खुश दिखाई देने लगा। उसे ऐसा अनुभव हुआ मानों मच्छरों से भरे हुए अपने इस चतुर्दिक वातावरण के बिना, पसीने से मिले हुए मच्छड़-निर्मित अंगराग के बिना जिसे हाथ अनायास ही मुख पर चुपड़ देते थे और सारे शरीर की अनवरत खुजलाहट के बिना जंगल का सारा आकर्षण और मजा ही किरकिरा हो जायेगा। ये असंख्य कीड़े अत्यधिक परिमाण में इधर-उधर बिखरी हुई वन्य वनस्पतियों, वनों में रहनेवाले लाखों पशुपक्षियों, अंधेरे लता-कुंजों, आर्द्रता से पूर्ण वायु, तेरेक से मिलने वाले मटमैले पानी के पोखरों के, जिसपर झुकी हुई पेड़ों की पत्तियाँ अपना अद्‌भुत सौंदर्य बिखेर रही थीं, इतने अनुकूल थे कि वही चीज जो उसे आरम्भ में भयानक और असह्य लग रही थी, अब आकर्षक लगने लगी थी। उस स्थान पर पहुँचकर, जहाँ कल उन्हें बारहसिंघे का भ्रम हुआ था, और जहाँ इस समय कुछ भी न था, उसने आराम करने की सोची। सूर्य इस समय सिर के ठीक ऊपर था और जब कभी ओलेनिन किसी खुली झाड़ी या सड़क पर आ जाता तो सूर्य की सीधी किरणें उसकी

पीठ और सिर पर पड़ने लगतीं। सात भारी भारी तीतरों को लटकाये लटकाये उसकी कमर दुखने लगी थी। बारहसिंघे के पद-चिन्हों को देखकर वह एक झाड़ी में घुस गया ठीक उसी जगह जहाँ बारहसिंघा लेटा था। और, उसकी माँद में पड़ रहा। उसने अपने चारों ओर के झुरमुटों को देखा, उस स्थान पर निगाह डाली जहाँ बारहसिंघा पसीने पसीने हुआ होगा, और सूखा हुआ गोबर, बारहसिंघे के घुटनों के निशान, थोड़ी काली मिट्टी, जिसे उसने पैरों से तोड़ दिया था, और कल के अपने पैरो के निशान भी देखे। इस समय वह स्वस्थ था, मस्त था और उसके दिमाग़ में न तो कोई विचार ही घूम रहे थे और न हृदय में कोई आकांक्षाएँ ही। सहसा उसे किसी अकारण प्रसन्नता और चारों तरफ़ के मनमोहक आकर्षण की ऐसी अद्भुत अनुभूति हुई कि अपने बचपन की एक पुरानी आदत के अनुसार वह सलीब का निशान बनाने और किसी अज्ञात व्यक्ति को धन्यवाद देने लग गया। अकस्मात् उसका ध्यान किसी दूसरी बात की ओर गया और वह सोचने लगा कि "यहाँ मैं हूँ, दिमीत्री ओलेनिन, एक ऐसा आदमी जो किसी भी दूसरे व्यक्ति से भिन्न है, बिल्कुल अकेला—एकाकी। भगवान ही जाने कि वहाँ रहनेवाले बारहसिंघे ने कभी आदमी का चेहरा देखा भी है या नहीं। और मैं इस समय वहाँ हूँ जहाँ कभी कोई मनुष्य न बैठा था, जहाँ किसी के मस्तिष्क में ऐसे विचार आये तक न थे। यहाँ मैं हूँ, मेरे चारों ओर छोटे-बड़े वृक्ष हैं, बड़ी-बड़ी अंगूर-लताएँ हैं और तीतर फुदक रहे हैं जो एक दूसरे को खदेड़ रहे हैं और शायद अपने उन भाई-बन्दों की महक ले रहे हैं, जिन्हें मैंने मारा है।" उसने अपने तीतरों पर हाथ फेरा, उन्हें देखा-भाला और हाथ में लगा हुआ ताज़ा खून अपने कोट में पोंछ लिया। "शायद गीदड़ों को भी उनकी महक मिल जाती है और असन्तुष्ट होकर वे दूसरी दिशा में चल देते हैं। मेरे ऊपर, पत्तियों के बीच

उड़ते हुए मच्छड़ों को ये पत्तियाँ बड़े बड़े द्वीपों की तरह लगती हैं। वे हवा में झूमते हैं, भनभनाते हैं; एक, दो, तीन, चार; सौ, हजार, लाख मच्छड़। और, सभी कुछ न कुछ भनभनाते हैं, और प्रत्येक अपने में दिमीत्री ओलेनिन है जो अन्य सभी से उतना ही भिन्न है जैसा मैं खुद हूँ।" मच्छड़ क्या भनभनाते हैं इसकी भी उसने स्पष्ट कल्पना कर ली थी—"इधर, इधर, अरे छोकरो! यहाँ कोई ऐसी चीज़ है जिसे हम खा सकते हैं!" वे भनभनाये और उसे काटने लगे। और उसे लगा कि वह रूसी अभिजात्य नहीं, मास्को समाज का सदस्य नहीं, अमुक और अमुक का मित्र या सम्बन्धी नहीं, वह सिर्फ़ एक मच्छड़ है या एक तीतर या हिरन, ठीक वैसे ही जैसे कि वे इस समय उसके चारों ओर थे। "जैसे वे हैं, जैसे चचा येरोश्का हैं, मैं भी ठीक वैसे ही कुछ क्षण जिऊँगा फिर मर जाऊँगा और, जैसा वह कहता है, हमारी क़ब्र पर घास ही उगेगी और कुछ नहीं।"

"घास उगती है तो उगे इससे क्या?" वह विचारने लगा, "फिर भी मुझे ज़िन्दा रहना चाहिए, प्रसन्न रहना चाहिए क्योंकि आखिर मैं क्या चाहता हूँ—प्रसन्नता ही तो। परवाह नहीं मैं कुछ ही क्यों न हूँ—बाक़ी सब की तरह पशु ही सही, जिनके ऊपर घास उगेगी और सिर्फ़ घास, या एक ऐसा चौखटा जिसमें ईश्वर का कोई अंश जुड़ा है—फिर भी मुझे अच्छी से अच्छी तरह रहना चाहिए। इसलिए खुश रहने के लिए मुझे कैसे रहना चाहिए? और, मैं पहले क्यों प्रसन्न नहीं था?" और वह अपने पूर्व जीवन की याद करने लगा और उसे अपने से निराशा होने लगी। उसे लगा मानो उसकी आकांक्षाएँ बुरी तरह बढ़ रही हैं और वह स्वार्थी बनता जा रहा है, यद्यपि सच पूछा जाय तो अभी तक उसे अपने लिए किसी चीज़ की भी आवश्यकता न पड़ी थी। वह लता-कुंजों, उनसे छनती हुई रोशनी, डूबते हुए सूरज और

स्वच्छ आकाश की ओर देखता रहा। उसे इस समय उतनी ही प्रसन्नता हो रही थी जितनी पहले हुई थी।

"इस समय मैं क्यों खुश हूँ और पहले मेरे जीने का क्या उद्देश्य था?" उसने विचार किया, "मैंने अपने से कितना कुछ चाहा था, कितनी योजनाएँ बनाई थीं फिर भी सिवा दुख और शर्म के मुझे मिला क्या? और अब, खुश रहने के लिए मुझे कुछ नहीं चाहिए।" और सहसा उसे अपने भीतर एक नये प्रकाश का अनुभव हुआ। "यही प्रसन्नता है!" उसने मन ही मन में कहा। "दूसरों के लिए जिन्दा रहना यही प्रसन्नता है। यह बात बिल्कुल साफ़ है। खुश रहने की इच्छा प्रत्येक मनुष्य में है। इसलिए वह मान्य है। स्वार्थपरता के साथ इस इच्छा की पूर्ति के प्रयत्न में—अर्थात् अपने लिए धन, यश, आराम और प्यार की तलाश में—यह भी हो सकता है कि ऐसी परिस्थितियाँ आ जायें जिनसे इन इच्छाओं की पूर्ति ही असम्भव हो जाय। इसका अर्थ यह हुआ कि ये इच्छाएँ अनुचित हैं, सुखी बनने की आवश्यकता अनुचित नहीं। किन्तु बाह्य परिस्थितियों के बावजूद किन किन इच्छाओं की पूर्ति सदैव ही सम्भव है? प्रेम की, आत्म-त्याग की!" जब उसे इन बातों का ज्ञान हुआ (और यह उसे एक नया सत्य प्रतीत हुआ) तो वह इतना प्रसन्न और उत्तेजित हो उठा कि उछल पड़ा और बड़ी बेसब्री से किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश की बात सोचने लगा जिसके लिए वह अपना बलिदान कर सके, या जिसकी वह कोई भलाई कर सके या जिसे वह प्यार कर सके। "चूँकि मैं अपने लिए कुछ नहीं चाहता," उसने विचार किया, "इसलिए मैं दूसरों के लिए ही क्यों न ज़िन्दा रहूँ?"

उसने बन्दूक़ उठाई और इस योजना पर विचार करने तथा भलाई करने का अवसर ढूँढ़ने के लिए तुरन्त लौट जाने का निश्चय किया और झाड़ी से होकर घर की राह ली।

खुली जगह में पहुँचकर उसने अपने चारों ओर एक निगाह डाली। सूर्य पेड़ों के सिरों के ऊपर से जा चुका था। ठंढ बढ़ रही थी और वह स्थान उसे बिल्कुल नया-सा लग रहा था—गाँव के आसपास के क्षेत्र की भाँति नहीं। ऐसा प्रतीत होता था कि मौसम और जंगल की आकृति, सभी कुछ बदल गई है—आसमान बादलों से ढका था, हवा पेड़ों के सिरों से टकरा टकराकर सनसना रही थी और सभी तरफ़ सिवा नरकटों और गिरे-गिराये पेड़ों के और कुछ भी दिखाई न पड़ता था। उसका कुत्ता किसी जानवर के पीछे पीछे भाग गया था। उसने कुत्ते को पुकारा और उसकी आवाज़ वैसे ही लौट आई जैसे रेगिस्तान में लौटती है। और एकाएक उसमें भय का संचार हुआ। वह डर गया। उसे अब्रेकों की याद आई और याद आई उन हत्याओं की जो अब्रेकों ने की थीं। बराबर उसे ऐसा लगता रहा कि न जाने किस क्षण झाड़ी के पीछे से कौन अब्रेक उसपर झपट पड़े और फिर उसे अपनी ज़िन्दगी के लाले पड़ जायें, अथवा मौत को गले लगाना पड़े, अथवा कायरता ही दिखाना पड़े! कौन जाने! अब उसका ध्यान भगवान और मरणोपरान्त प्राप्त होनेवाले दूसरे जीवन की ओर गया जिसके विषय में उसने बहुत समय से कुछ भी सोचा-विचारा न था। उसके चारों तरफ़ अंधकारमय, कठोर और वन्य प्रकृति का साम्राज्य था। उसने विचार किया, "जब तुम किसी भी क्षण मर सकते हो और किसी के प्रति बिना कोई भलाई किये ही मर सकते हो और वह भी इस प्रकार कि किसी को पता भी न चले तो क्या तुम्हें स्वयं अपने लिए जीना मुनासिब है, उचित है?" वह उस दिशा की ओर बढ़ा जहाँ उसने कल्पना की थी कि गाँव होगा। शिकार का ध्यान उसके दिमाग़ से उतर चुका था। वह थक चुका था और प्रत्येक झाड़ी तथा प्रत्येक पेड़ की ओर बड़े ध्यान से झाँकता जा रहा था। वह डर रहा था। प्रत्येक क्षण उसे यही आशा हो रही थी कि न जाने कब

कौन उसकी जान का दुश्मन निकल आये। काफ़ी समय तक घूम फिर लेने के बाद वह एक खाई के पास आया जिसमें तेरेक से बहकर आता हुआ ठंडा और मटमैला जल भरा था। रास्ता भूल जाने के भय से उसने उसी के किनारे किनारे चलने का निश्चय किया। वह चलता गया बिना यह जाने हुए कि खाई उसे कहाँ ले जायगी। सहसा उसके पीछे के नरकटों में खड़खड़ाहट हुई। वह काँप गया और उसने बन्दूक संभाल ली। अगले ही क्षण वह शर्म के मारे पानी पानी हो गया। उत्तेजित कुत्ता गहरी गहरी साँसे लेता हुआ आकर सीधा खाई के पानी में घुस गया और उसे हिलोरने लगा।

उसने भी पानी पिया और कुत्ते के पीछे हो लिया यह सोचकर कि वह उसे सीधे गाँव ले जायगा। कुत्ते के साथ रहने पर भी उसे ऐसा लगा कि उसके चारों ओर की प्रत्येक चीज़ किसी संकटापन्न भविष्य की आशंका बढ़ा रही है। अब जंगल और भी अंधकारपूर्ण होता जा रहा था और टूटे हुए वृक्षों के सिरों पर हवा सनसनाती हुई तेज़ी से चल रही थी। चिड़ियाँ उन पेड़ों पर अपने घोंसलों के चारों ओर उड़ रही थीं, चक्कर लगा रही थीं, चहचहा रही थीं। अब वनस्पति की हरियाली क्षीण होती गई और वह हवा के कारण सनसनाते हुए नरकटों और उन रेतीले स्थानों के बीच पहुँच गया जहाँ जानवरों के पद-चिन्ह दिखाई पड़ रहे थे। हवा की तेज आवाज़ के साथ ही दिल दहला देने वाली एक दूसरी गरज भी सुनाई दी। अब वह काफ़ी निराश हो चला था। पीछे हाथ बढ़ाकर उसने अपने तीतर टटोले। एक ग़ायब था। शायद कहीं गिर पड़ा था। ख़ून से लथपथ उसकी गरदन और सिर पेटी में ही चिपका रह गया था। अब उसे पहले से अधिक डर लगने लगा। वह भगवान की रट लगाने लगा। उसे केवल यही भय था कि वह बिना कोई भलाई किये या किसी पर दया दिखाये हुए ही मर जायगा। मगर उसमें जीने की उत्कट अभिलाषा थी। वह इसलिए जीना चाहता था कि आत्म-बलिदान का एक महान कार्य पूरा कर सके।

२१

सहसा उसे लगा जैसे उसकी आत्मा मे सूर्य का प्रकाश छा गया हो। उसे रूसी भाषा मे कही हुई बाते सुनाई पडी, साथ ही तेरेक का कलकल भी। कुछ कदम आगे अपने सामने उसने नदी की भूरी भूरी किन्तु चलती-फिरती सतह देखी। उसे उसके किनारो और छिछले स्थानों पर जमी भूरी और गीली बालू दिखाई पडी । उसने पानी के बहुत ऊपर निकली हुई घेरे की मचान, झाडियो मे जीन वगैरह से लैस एक मजबूत घोडा और सामने ऊँचे ऊँचे पहाड देखे। एक क्षण के लिए बादलो के नीचे से रक्त-वर्ण सूर्य के भी दर्शन हुए और उसकी अन्तिम किरणे नदी, नरकटों, मचान और कज्जाको के झुड पर पडती हुई विलीन होने लगी। इसी समय उसने अपने सामने लुकाश्का की आवेशपूर्ण आकृति भी देखी।

ओलेनिन को लगा कि फिर उसे अकारण प्रसन्नता हो रही है। वह नदी के दूसरी ओर एक शान्त औल के सामने तेरेक की निज्ने-प्रतोत्स्की चौकी तक पहुँच गया। उसने कज्जाको को नमस्कार किया, परन्तु अभी तक किसी की भलाई करने का कोई अवसर न मिलने के कारण वह एक घर मे घुस गया। वहा भी उसे इसका कोई मौका न मिला। कज्जाक उसके साथ बडी रुखाई से पेश आये। घर मे दाखिल होने पर उसने एक सिगरेट जलाई। मगर कज्जाको ने उसकी ओर कोई ध्यान न दिया, क्योंकि एक तो वह सिगरेट पी रहा था और दूसरे उन्हे उस शाम व्यस्त रखने के लिए अन्य काम भी थे। जो अब्रेक मारा गया था उसके कुछ सम्बन्धी चेचेन मुआवजा देकर उसकी लाश लेने के लिए पहाडो से आये थे। कज्जाक गॉव मे अपने अफसर के आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। मृत अब्रेक का

भाई शान्त था। वह एक लम्बा हृष्ट-पुष्ट व्यक्ति था और उसकी लाल रंग में रंगी हुई छोटी दाढ़ी दूर से ही चमक रही थी। वह एक फटा-सा कोट पहने और मामूली-सी टोपी दिये था, फिर भी उसकी आन-बान सम्राटों जैसी लग रही थी। उसका चेहरा बहुत कुछ भरे हुए अब्रेक जैसा ही था। उसने न तो किसी की ओर देखने का प्रयत्न किया और न लाश पर ही नज़र डाली। वह साये में उकड़ूँ बैठा हुआ अपना हुक्का पीता और थूकता जा रहा था। कभी कभी वह अपने साथियों को भारी स्वर में कुछ हुक्म दे देता जिसकी तामील पूरे अदब और पूरी फुर्ती के साथ होती। प्रत्यक्षतः वह एक जिगीत था जिसका भिन्न भिन्न परिस्थितियों में एकाधिक बार रूसियों से मुक़ाबला हो चुका था। उसे इन रूसियों की न तो किसी बात से आश्चर्य ही होता था और न वह उनमें कोई दिलचस्पी ही दिखाता था। ओलेनिन लाश के पास गया और उसे देखने लगा। मृत अब्रेक का भाई शायद इसे सहन न कर सका। वह ओलेनिन को तिरस्कारसूचक दृष्टि से देख रहा था और जल्दी जल्दी और ग़ुस्से में कुछ कहे जा रहा था। साथी स्काउट तुरन्त अपने कोट से लाश का मुँह ढकने के लिए बढ़ा। ओलेनिन उस जिगीत का शानदार और कठोर चेहरा देखकर बड़ा प्रभावित हुआ। वह उससे बातें करने लगा और पूछने लगा कि वह किस गाँव से आया है। परन्तु चेचेन उसकी ओर न देखते हुए घृणा की मुद्रा मे बराबर थूकता ही रहा। उसने अपनी गर्दन एक ओर फेर ली। ओलेनिन को चेचेन की यह उपेक्षा देखकर इतना आश्चर्य हुआ कि उसने यही अन्दाज़ लगाया कि वह रूसी नहीं जानता और बेवक़ूफ़ है। इसलिए वह स्काउट की तरफ़ घूमा जो दुभापिया था और अपने मालिक को उसकी रूसी भाषा का तात्पर्य अपनी भाषा में समझा सकता था। स्काउट के शरीर पर कोई अच्छे कपड़े न थे। दूसरे की तरह वह भी फटे-हाल था।

परन्तु भूरे बालों के स्थान पर उसके काले काले बाल, काली चमकदार आँखें और मोती जैसे दाँत थे। स्काउट ने प्रसन्नतापूर्वक बातचीत में भाग लिया और एक सिगरेट माँगी।

अपनी टूटी-फूटी रूसी में उसने कहना शुरू किया, "उसके पाँच भाई थे। यह तीसरा भाई है जिसे रूसियों ने मार डाला। अब सिर्फ़ दो बचे हैं। वह जिगीत है, एक महान जिगीत!" चेचेन की तरफ़ इशारा करते हुए उसने कहा, "जब उन्होंने अहमद-ख़ाँ को, जो अब मर गया है, अपनी गोली का निशाना बनाया उस समय यह नदी के उस पार नरकटों के बीच बैठा था। उसने सब कुछ देख लिया था। उसने देखा था कि उसे नाव पर रखा और किनारे की तरफ़ ले जाया गया। वह वहाँ रात भर बैठा रहा और चाहता था कि बूढ़े को मार डाले परन्तु दूसरों ने उसे ऐसा न करने दिया।"

लुकाश्का दुभाषिये के पास आकर बैठ गया।

"किस औल से आ रहे हो?" उसने पूछा।

"वहाँ, पहाड़ों पर से," तेरेक के उस पार हल्के नीले रंग के कुहरे की तरफ़ इशारा करते हुए स्काउट ने कहा, "क्या तुमने 'सुयूक़-सू' का नाम सुना है? हमारा गाँव उससे भी आठ मील आगे है।"

"तुम्हारा गिरेई-ख़ाँ से भी कोई परिचय है? वह 'सुयूक़-सू' में ही रहता है," लुकाश्का बोला। उसे उसके साथ परिचित होने पर गर्व था, "वह मेरा कुनक है।"

"वह मेरा पड़ोसी है," स्काउट ने उत्तर दिया।

"अच्छा आदमी है।" और लुकाश्का, जिसे अब इन बातों में दिलचस्पी आती जा रही थी, स्काउट के साथ तातारी में बातें करने लगा।

शीघ्र ही एक कज़्ज़ाक लेफ़्टीनेंट और गाँव का मुखिया अपने अपने घोड़ों पर आ गये। उनके साथ दो कज़्ज़ाक और थे। लेफ़्टीनेंट एक कज़्ज़ाक अफ़सर था, जिसे हाल ही में कमीशन मिला था। उसने कज़्ज़ाकों के "सुस्वास्थ्य" की कामना करते हुए उनका अभिवादन किया, परन्तु किसी ने भी जवाब में यह नहीं कहा कि "सरकार, आप स्वास्थ्य लाभ करें" जैसी कि रूसी सेना की रीति है। केवल थोड़े से ही लोग ऐसे थे जिन्होंने सिर झुकाकर मौन उत्तर दिया। कुछ लोग, जिनमें लुकाश्का भी था, उठे और सावधानी से खड़े हो गये। कारपोरल ने बताया कि चौकी पर सब कुछ ठीक है। ओलेनिन को यह सब मज़ाक़ लगा। उसे ऐसा प्रतीत हुआ कि ये लोग सिपाही का काम खेल समझते हैं। परन्तु शीघ्र ही इन छोटी-मोटी बातों के बाद काम की बातें आरम्भ हो गईं। लेफ़्टीनेंट एक वीर कज़्ज़ाक भी था। वह दुभाषिये के साथ धाराप्रवाह तातारी में बात करने लगा। उन्होंने कुछ काग़ज़-पत्र तैयार कर लिये थे, जिन्हें स्काउट को देकर उन्होंने कुछ रुपये वसूल किये। अब वे लोग लाश के पास आये।

"तुम लोगों में से लुका गव्रीलोव कौन है?" लेफ़्टीनेन्ट ने पूछा।

लुकाश्का ने टोपी उतारी और सामने हाजिर हो गया।

"मैंने तुम्हारे बारे में कमांडर को रिपोर्ट भेज दी है। पता नहीं उसका क्या नतीजा हो। मैंने तुम्हें पदक दिये जाने की सिफ़ारिश की है। कारपोरल बनाये जाने के लिए अभी तुम्हारी उम्र कम है। पढ़ सकते हो?"

"नहीं, मैं पढ़ नहीं सकता।"

"किन्तु देखने में कितना गठीला जवान है!" लेफ़्टीनेंट आज्ञा के स्वर में बोला, "टोपी लगाओ। यह किस गव्रीलोव परिवार का है?.. ब्रॉड का, ऐं?"

"उसका भतीजा है," कारपोरल बोला।

"मैं जानता हूँ, जानता हूँ। खैर तुम लोग जरा काम में भी हाथ बटाओ," कज्ज़ाकों की ओर घूमते हुए उसने कहा। लुकाश्का का चेहरा प्रसन्नता से खिल उटा। वह कारपोरल के पास से हट आया और टोपी लगाकर ओलेनिन के पास बैठ गया।

मृत शरीर को नाव पर रख दिया गया। अब उसका चेचेन भाई भी किनारे पर आया। कज्ज़ाक उसे रास्ता देने के लिए स्वयं ही एक ओर हट गये। वह कूदकर नाव पर चढ़ गया और नदी में अपना मज़बूत पैर अड़ाकर नाव खोल दी। अब ओलेनिन ने देखा कि चेचेन ने पहली बार कज्ज़ाकों पर एक सरसरी निगाह डाली और अपने साथी से कुछ पूछा। साथी ने कुछ उत्तर दिया और लुकाश्का की तरफ़ इशारा कर दिया। चेचेन उसकी ओर देखता रहा और फिर धीरे धीरे उसके पास से निगाह हटाकर दूसरी तरफ़ का तट देखने लगा। उसकी दृष्टि में घृणा नहीं अपितु अत्यधिक तिरस्कार की झलक मिलती थी। उसने फिर कुछ कहा।

"क्या कह रहा है?" ओलेनिन ने स्काउट से पूछा।

"तुम्हारे आदमी हमारे आदमियों को मारते हैं, हमारे तुम्हारे आदमियों को। हमेशा यही होता है।" स्काउट ने उत्तर दिया और जब वह कूदकर नाव पर चढ़ने लगा तो हँसी के कारण उसके सफ़ेद सफ़ेद दाँत चमकने लगे।

मृत व्यक्ति का भाई निश्चल बैटा उस पार का तट ताक रहा था। उसका हृदय घृणा और तिरस्कार से इतना भरा हुआ था कि उसके लिए नदी के इस ओर ऐसी कोई भी चीज़ न रह गई थी जिसमें उसे कोई उत्सुकता होती, कोई रुचि होती। स्काउट नाव के एक ओर खड़ा होकर उसे बढ़ाने के लिए कभी बाँस नाव के इस ओर डालता, कभी उस

ओर। वह बराबर बातचीत करता जा रहा था। जैसे जैसे नाव धारा पार करके आगे बढ़ती गई, वैसे वैसे वह छोटी दिखाई पड़ने लगी और उसमें से आनेवाली आवाज़ें क्षीण पड़ती गईं। अन्त में लोगों ने देखा कि नाव किनारे लगी, जहाँ दो घोड़े मुस्तैद खड़े थे, लाश उतारी गई और एक घोड़े पर लाद दी गई। घोड़ा चल पड़ा। ज्यों ज्यों घोड़ा श्रौल से होकर आगे बढ़ रहा था त्यों त्यों लाश देखने के लिए वहाँ के लोगों की भीड़ भी बढ़ती जा रही थी।

नदी के रूसी किनारे के कज़्ज़ाक पूरी तरह से सन्तुष्ट और खुश थे। सभी तरफ़ से हँसी-मज़ाक़ के फ़ौवारे छूट रहे थे। लेफ़्टीनेंट और मुखिया भी आनन्द मनाने के लिए एक मिट्टी के घर में घुस गये। लुकाश्का अपने प्रफुल्लित चेहरे पर गम्भीरता लाने का व्यर्थ प्रयास करता हुआ ओलेनिन की बगल में घुटनों पर दोनों हाथ रखकर बैठ गया और चाकू से एक छड़ी काटने लगा।

"तुम तम्बाकू क्यों पीते हो?" उसने उत्सुकता से पूछा, "यह अच्छी बात है क्या?"

प्रत्यक्षतः उसके पूछने का एकमात्र कारण यही था कि उसे यह अनुभव हुआ था कि ओलेनिन कुछ खिन्न है और उसकी कज़्ज़ाकों से पट नहीं रही है।

"आदत ही तो है," ओलेनिन ने उत्तर दिया, "क्यों?"

"हुँह, यदि हम में से कोई तम्बाकू पीना चाहे तो उसपर मुसीबत आ जाय! उधर देखो, पहाड़ दूर नहीं है," लुकाश्का कहता गया, "फिर भी तुम वहाँ नहीं पहुँच सकते! अकेले लौटोगे कैसे? अंधेरा हो रहा है! अगर तुम चाहो तो मैं तुम्हें ले चलूँ। कारपोरल से कह दो मुझे छुट्टी दे दे।"

"कितना अच्छा आदमी है!" कज़्ज़ाक के प्रफुल्लित चेहरे की ओर देखते हुए ओलेनिन ने सोचा। उसे मर्यान्का की याद हो आई और उस

चुम्बन की भी जिसकी ध्वनि उसने फाटक के पास सुनी थी। उस समय उसने समझा था कि लुकाश्का कितना असभ्य है। "यह सब कैसी उलझन है," उसने विचार किया, "कोई आदमी किसी को मौत के घाट उतारता है और उसे इतना संतोष और प्रसन्नता होती है जैसे उसने कोई बड़ा पड़ाव मार लिया हो। क्या इसके माने यह हैं कि कोई उसे यह बताने नहीं आता कि 'तुम्हारे लिए आनन्द मनाने का कोई कारण नहीं और प्रसन्नता मार काट में नहीं आत्म-बलिदान में है?'"

"ख़ैर, अच्छा हो यदि तुम्हारी उसकी मुलाक़ात ही न हो, दोस्त!" लुकाश्का की तरफ़ मुड़ते एक कज़्ज़ाक ने कहा जिसने खुलती हुई नाव देखी थी, "तुमने सुना कि वह तुम्हारे बारे में क्या पूछ-ताछ कर रहा था?"

लुकाश्का ने अपना सिर उठाया। "मेरा ईश्वर-पुत्र?" लुकाश्का बोला। उस शब्द से उसका तात्पर्य मृत चेचेन से था।

"तुम्हारा ईश्वर-पुत्र तो न उठेगा मगर वह जो लाल रंगवाला है वह तुम्हारे ईश्वर-पुत्र का भाई है!"

"उससे कहो कि ईश्वर को धन्यवाद दे कि यहाँ से सही सलामत चला गया," लुकाश्का ने उत्तर दिया।

"तुम खुश क्यों हो?" ओलेनिन ने पूछा, "मान लो तुम्हारा ही कोई भाई मारा जाता तो तुम खुश होते क्या?"

आँखों में मुस्कराहट लिये कज़्ज़ाक ने ओलेनिन की तरफ़ देखा। उसने ओलेनिन का अभिप्राय अच्छी तरह समझ लिया था, परन्तु उसकी ओर कोई ध्यान नहीं दिया।

"हाँ, यह भी होता है। क्या हमारे साथी नहीं मारे जाते?"

२२

लेफ़्टीनेंट और गाँव का मुखिया दोनों ही घोड़ों पर बैठकर चल दिये। ओलेनिन ने लुकाश्का को खुश करने और घने जंगल से अकेले न जाने की गरज़ से कारपोरल से लुकाश्का को छुट्टी दे देने की सिफ़ारिश कर दी। कारपोरल ने छुट्टी दे दी। ओलेनिन ने सोचा कि लुकाश्का मर्यान्का से मिलना चाहता है। उसे प्रसन्नता थी कि उसके साथ इस समय एक खुशदिल और खुशमिज़ाज कज्ज़ाक है। उसने अपनी कल्पना में अनायास लुकाश्का और मर्यान्का को मिला दिया था और उसे उनके बारे में सोच सोचकर प्रसन्नता हो रही थी। "वह मर्यान्का को प्यार करता है," ओलेनिन ने सोचा, "मैं भी उसे प्यार कर सकता था।" और जब दोनों घर की ओर जा रहे थे तो ओलेनिन में कोमल भावनाओं का उद्रेक हुआ। लुकाश्का को भी प्रसन्नता हुई। ऐसा लगा कि इन दो परस्पर भिन्न व्यक्तियों में भी स्नेह का कोई सूत्र है जो उन्हें बाँध रहा है। जब कभी वे एक दूसरे की तरफ़ देखते तो उनका जी खुलकर हँसने को करने लगता।

"तुम किन फाटकों से होकर जाते हो?" ओलेनिन ने प्रश्न किया।

"बीच वालों से। परन्तु मैं तुम्हें दलदल तक पहुँचा दूँगा उसके बाद कोई खटका नहीं।"

ओलेनिन हँस दिया।

"तुम समझते हो मैं डरपोक हूँ? तुम वापस जा सकते हो। धन्यवाद। मैं अकेला चला जाऊँगा।"

"ठीक है। मुझे क्या करना? और तुम्हारी तो बात ही क्या खुद हम भी डरते हैं," ओलेनिन की आत्म-भावना को ठेस न पहुँचाने की गरज़ से वह बोला और हँस पड़ा।

"तो मेरे साथ आओ। हम बातें करेंगे, खाएँ-पियेंगे। सुबह चले जाना।"

"तुम समझते हो कि रात बिताने के लिए मेरे पास कोई ठिकाना नहीं?" लुकाश्का हँस दिया, "परन्तु कारपोरल ने तो मुझसे लौट आने को कहा है।"

"कल रात मैंने तुम्हें गाते सुना था और देखा भी था।"

"खैर..." लुकाश्का ने अपना सिर हिलाया।

"यह ठीक है क्या कि तुम्हारा विवाह हो रहा है?" ओलेनिन ने पूछा।

"माँ मेरा विवाह कर देना चाहती हैं। परन्तु मेरे पास तो अभी घोड़ा तक नहीं!"

"क्या तुम्हारी नौकरी मुस्तकिल नहीं?"

"सच पूछो तो नहीं। अभी तो मैं भरती ही हुआ हूँ। अभी तक मेरे पास कोई घोड़ा नहीं और न मुझे मिल ही सकता है। इसीलिए शादी की बात पक्की नहीं हो पाती।"

"और घोड़ा आयेगा कितने का?"

"हम उस दिन नदी पर एक का सौदा पटा रहे थे और वे साठ रूबल से कम चाहते न थे यद्यपि घोड़ा सिर्फ़ नगई था।"

"तुम मेरे द्रबान्त* हो सकते हो? मैं उसका इन्तज़ाम कर दूँगा और तुम्हें एक घोड़ा दे दूँगा।" ओलेनिन ने एकाएक कहा, "सचमुच मेरे पास दो घोड़े हैं और मुझे दो की जरूरत नहीं।"

"दो की ज़रूरत नहीं?" लुकाश्का ने हँसते हुए उसके शब्द दुहराये, "तुम हमें तोहफ़े में घोड़े क्यों दो? ईश्वर ने चाहा तो हम खुद ले लेंगे।"

---

*द्रबान्त—एक प्रकार का अर्दली जो अभियान के समय अफ़सर के साथ रहता है।

"तोहफ़े में क्यों? तुम द्रवान्त नहीं बनना चाहते क्या?" ओलेनिन ने कहा। उसे प्रसन्नता थी कि उसके दिमाग़ में लुकाश्का को एक घोड़ा देने की बात आई थी, यद्यपि उसे अकारण परेशानी और घबड़ाहट हो रही थी और उसकी समझ में न आ रहा था कि वह बात कैसे चलाए।

लुकाश्का ने मौन तोड़ा। "क्या रूस में तुम्हारा अपना मकान है?"

ओलेनिन को कहना पड़ा कि वहाँ उसके एक नहीं कई मकान हैं।

"अच्छा मकान? हमारे मकानों से बड़ा?" लुकाश्का ने मुस्कराते हुए कहा।

"बहुत बड़ा। इससे दस गुना बड़ा और तीन मंज़िल का," ओलेनिन ने उत्तर दिया।

"और क्या तुम्हारे घोड़े भी हमारे घोड़ों की तरह हैं?"

"मेरे पास सौ घोड़े हैं और हर एक तीन तीन सौ चार चार सौ रूबल का है। तीन सौ चाँदी के रूबल। परन्तु वे तुम्हारे जैसे घोड़ों की तरह नहीं हैं! फुदके.. फिर भी मैं यहाँ के घोड़ों को बहुत पसन्द करता हूँ।"

"और क्या तुम यहाँ अपनी इच्छा से आये थे या भेजे गये थे?" लुकाश्का ने पूछा। ऐसा प्रतीत होता था कि वह अभी अभी हँस देगा। "देखो! वहाँ तुम रास्ता भूल गये," उसने कहना शुरू किया और उस रास्ते की तरफ़ इशारा किया जहाँ से होकर वे गुज़र रहे थे, "तुम्हें दाहिनी ओर मुड़ना था।"

"मैं स्वयं अपनी इच्छा से आया हूँ। अपने देश का यह इलाक़ा देखने और यहाँ अभियान में भाग लेने की मेरी बड़ी इच्छा थी," ओलेनिन ने उत्तर दिया।

"मैं तो किसी भी दिन अभियान पर निकल सकता हूँ," लुकाश्का बोला, "उधर गीदड़ों की चीख सुन रहे हो?" उस ओर कान लगाते हुए उसने कहा।

"मैं पूछता हूँ किसी मनुष्य को मारकर क्या तुम्हे कोई डर नहीं लगता?" ओलेनिन ने पूछा।

"इसमें डरने की क्या बात, परन्तु मैं अभियान में भाग लेना चाहूँगा," लुकाश्का बोला।

"शायद हमें साथ जाना होगा। हमारी कम्पनी छुट्टियों के पहले रवाना हो रही है। तुम्हारे भी सौ आदमी जायेंगे।"

"तुम यहाँ क्यों आना चाहते थे? तुम्हारे घर हैं, घोड़े हैं, दास हैं। तुम्हारी जगह मैं होता तो सिवा मौज मारने के और कुछ न करता! हाँ तुम्हारा पद क्या है?"

"मैं फ़िलहाल कैडेट हूँ। परन्तु मेरे लिए कमीशन की सिफ़ारिश की जा चुकी है।"

"ख़ैर, अगर तुम अपने घरबार के बारे में शेखी नहीं बघारते तो यदि तुम्हारी जगह मै होता तो कहीं दूसरी जगह न जाता। तुम हम लोगों के बीच रहना पसन्द करते हो?"

"हाँ, पसन्द करता हूँ," ओलेनिन ने उत्तर दिया।

गाँव तक पहुँचते पहुँचते काफ़ी अंधेरा छा चुका था। अभी तक उन्हें अपने चारों ओर जंगल का ही घना अन्धकार नजर आ रहा था। पेड़ों के ऊपरी सिरों पर हवा सनसना रही थी। ऐसा लगता था कि उसके बिल्कुल निकट गीदड़ चिल्ला रहे हैं और हा-हा हू-हू कर रहे हैं। परन्तु उनके ठीक सामने गाँव में स्त्रियों की आवाज़ें और कुत्तों की भों-भों भी सुनाई पड़ रही थीं। दूर से झोंपड़े दिखाई पड़ने लगे थे, रोशनी आ रही थी और वायुमण्डल में किज़्याक धुएं की विचित्र गन्ध छाती जा रही थी। और, उस समय ओलेनिन को ऐसा लगा कि इसी गाँव में उसका अपना घर है, अपना परिवार है, वह खुश है और जिस तरह वह इस कज़्ज़ाक गाँव में रह रहा है वैसा खुश किसी दूसरी जगह नहीं रह सकेगा।

उस रात वहाँ उसे सभी अच्छे लगे और ख़ास तौर से लुकाश्का। जब वे घर पहुँचे तो ओलेनिन ने सायबान में से, स्वयं अपने हाथों से, एक घोड़ा खोला और लुकाश्का को थमा दिया। लुकाश्का आश्चर्यचकित उसे आँख फाड़ फाड़कर देखता रह गया। ओलेनिन ने यह घोड़ा ग्रोज़नाया में ख़रीदा था। यह वह घोड़ा न था जिसपर वह प्रायः सवारी करता था। घोड़ा बहुत जवान न था, फिर भी ख़राब नहीं था। उसने घोड़ा लुकाश्का को दे दिया।

"तुम मुझे सौग़ात में इसे क्यों दे रहे हो?" लुकाश्का बोला, "मैंने अभी तक तुम्हारे लिए कुछ भी तो नहीं किया।"

"सचमुच यह कोई चीज़ नहीं," ओलेनिन बोला, "इसे ले लो। एक दिन तुम भी मुझे कोई सौग़ात दोगे... हम शत्रु के ख़िलाफ़ अभियान में एक साथ ही तो चलेंगे।"

लुकाश्का परेशान-सा हो गया। "इससे तुम्हारा मतलब क्या है? तुम्हें मालूम है घोड़ा एक क़ीमती चीज़ है," बिना घोड़े की तरफ़ देखे हुए ही उसने कहा।

"इसे ले जाओ! इसे ले जाओ! अगर नहीं लोगे तो मुझे बुरा लगेगा। वन्यूशा! घोड़े को इसके घर पहुँचा आओ।"

लुकाश्का ने लगाम पकड़ ली। "अच्छा, तो अनेक धन्यवाद। मैं यह ज़रूर कहूँगा कि यह ऐसी बात है जिसकी मैंने कभी आशा न की थी।"

ओलेनिन को इतनी प्रसन्नता हुई जैसे वह बारह वर्ष का बालक हो।

"अभी इसे यहाँ बाँध दो। यह एक अच्छा घोड़ा है। इसे मैंने ग्रोज़नाया में ख़रीदा था। कैसी दुलकी चालता है! वन्यूशा हमारे लिए कुछ चिख़ीर तो लाना। अन्दर आ जाओ।"

शराब लाई गई और लुकाश्का प्याला लेकर बैठ गया।

"ईश्वर ने चाहा तो मैं तुमसे उऋण होने की जुगत निकाल लूँगा,"

शराब का गिलास खाली करते हुए वह बोला, "तुम्हारा नाम क्या है?"

"दिमीत्री अन्द्रेइच।"

"अच्छा दिमीत्री अन्द्रेइच, ईश्वर आपकी रक्षा करे। हम कुनक होंगे। अब तुम हम से मिलने जरूर आना। भले ही हम धनी नहीं हैं परन्तु कुनक के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए इसे अच्छी तरह जानते हैं। मैं माँ से कह दूँगा कि अगर तुम्हें किसी चीज की जरूरत हो—जैसे क्रीम या अंगूर की—तो वे तुम्हें दे दें, और अगर तुम घेरे की तरफ़ आओ तो मैं तुम्हारी सेवा करूँगा, तुम्हारे साथ साथ शिकार को जाऊँगा, नदी पार जाऊँगा और जहाँ कहोगे वहाँ जाऊँगा। अभी उसी दिन की बात है—मैंने एक बड़ा सुअर मारा था और कज़्ज़ाकों में बाँट दिया था। अगर मुझे मालूम होता तो तुम्हें भी देता, जरूर देता।"

"ख़ैर, ठीक है। धन्यवाद! परन्तु घोड़े को जोतना मत। वह कभी जोता नहीं गया।"

"नहीं नहीं! हाँ तुमसे एक बात और कहना चाहता हूँ," लुकाश्का धीरे से बोला, "मेरा एक कुनक है गिरेई-ख़ाँ। उसने मुझसे कहा है कि मैं उसके साथ उन झाड़ियों में लेटा रहूँ जहाँ से लोग पहाड़ों पर से उतरते हैं। क्या हम साथ चलेंगे? मैं तुम्हें धोखा नहीं दूँगा। मैं तुम्हारा मुरीद* रहूँगा।"

"हाँ हम चलेंगे, किसी दिन, ज़रूर चलेंगे।"

अब लुकाश्का अपने को ओलेनिन का घनिष्ठ मित्र समझने लगा था। इसलिए उसे अब किसी प्रकार का संकोच न रह गया था। उसकी शाँत प्रकृति और सदाचार से ओलेनिन को आश्चर्य हुआ, कभी कभी तो

---

*मुरीद का तात्पर्य यहाँ शिक्षक से है—अनुवादक।

इससे उसे खिन्नता भी होने लगती। वे लोग देर तक बातें करते रहे। यद्यपि लुकाश्का ने ढेर-सी शराब पी थी फिर भी वह नशे में न था (वह नशे में कभी न होता था)। काफ़ी देर तक वहाँ ठहर चुकने के बाद अब वह उठा, उसने ओलेनिन से हाथ मिलाया और बाहर चल दिया। ओलेनिन ने खिड़की के बाहर झाँका यह देखने के लिए कि वह अब कर क्या रहा है। लुकाश्का सिर नीचा किये धीरे धीरे चला जा रहा था। फिर घोड़े को फाटक से बाहर ले आने के बाद उसने एकाएक अपना सिर हिलाया, उछलकर बिल्ली की तरह उसकी पीठ पर सवार हुआ, लगाम हाथ में ली, कुछ टिक टिक की और उसे सड़क पर दौड़ाने लगा।

ओलेनिन ने आशा की थी कि लुकाश्का मर्यान्का के पास जायगा और उसे अपनी प्रसन्नता की बात बताकर खुश करेगा। परन्तु, यद्यपि उसने ऐसा नहीं किया था फिर भी ओलेनिन की आत्मा को इतनी शान्ति मिली जैसी ज़िन्दगी में पहले कभी न मिली थी। वह बच्चों की तरह खुश था। उसने वन्यूशा को न केवल यही बताया कि घोड़ा उसने लुकाश्का को दे दिया है अपितु उससे यह भी कहा कि ऐसा उसने क्यों किया है। और, उसे प्रसन्न रहने का अपना नया सिद्धान्त समझाया।

वन्यूशा ने उसके सिद्धान्त का अनुमोदन नहीं किया। वह कहने लगा कि "ल'अरजाँ इल न्या पा"* यानी ये सब मूर्खता की बातें हैं।

लुकाश्का घोड़े पर सवार घर पहुंचा, और उसे अपनी माता को देते हुए बोला कि वह उसे कभी कभी कज़्ज़ाकों के घोड़ों के साथ चरने भेज दिया करे। उसे स्वयं उसी रात घेरे पर लौटना था। उसकी गूँगी बहन ने घोड़े की देख-भाल का ज़िम्मा लिया और इशारों से उसे

---

* "पैसा नहीं है..."

समझाया कि जब वह उस व्यक्ति से मिलेगी जिसने घोड़ा दिया है तो वह उसके पैरों पर गिरकर उसे प्रणाम करेगी। बूढ़ी ने अपने पुत्र की दास्तान पर सिर्फ़ सिर हिला दिया और अपने दिल में समझ लिया कि हो न हो घोड़ा चोरी का है। इसीलिए उसने अपनी बहरी लड़की को ताक़ीद की कि वह सूर्य निकलने से पहले ही उसे घोड़ों के झुंड में ले जाया करे।

लुकाश्का अकेले घेरे की ओर गया और रास्ते भर ओलेनिन के बारे में विचार करता रहा। उसने घोड़े को कोई बहुत अच्छा तो नहीं समझा था फिर भी वह चालीस रूबल से किसी भी हालत में कम न था। निस्संदेह उसे घोड़ा मिलने की बड़ी ख़ुशी थी। परन्तु घोड़ा उसे क्यों दिया गया इसे वह बिल्कुल न समझ सका। इसी कारण उसे कृतज्ञता की कोई अनुभूति न हुई। इसके विपरीत उसके हृदय में अस्पष्ट आशंकाएँ उठने लगीं कि कैडेट का इरादा उसकी ओर से बुरा है। परन्तु वह कौनसा इरादा हो सकता है वह नहीं कह सकता था। यह बात भी उसके गले से नहीं उतरती थी कि एक अपरिचित व्यक्ति चालीस रूबल की कीमत का घोड़ा ऐसे ही दयावश किसी को दे देगा। यह असम्भव है। हाँ, अगर उसने शराब के नशे में ऐसा किया होता तो बात भी समझ में आती। तब तो यह भी कहा जा सकता था कि उसने शान बघारने के लिए ऐसा किया है। परन्तु कैडेट बिल्कुल नशे में न था। वह गम्भीर था। इसलिए सम्भव है उसने घोड़ा इसलिए मुझे घूस में दिया हो कि मैं किसी अनुचित बात में उसकी सहायता करूँगा। "अरे यह सब बकवास है!" लुकाश्का ने विचार किया "क्या मुझे घोड़ा मिला नहीं? ज़रूर मिला है। बाक़ी सब बाद में देखा जायगा। मैं कोई बुद्धू थोड़े ही हूं और हम देखेंगे कि कौन किससे अच्छा है," उसने विचार किया। उसे अब इस बात की जरूरत मालूम पड़ रही थी कि उसे होशियार रहना चाहिए और

ओलेनिन से दोस्ती नहीं बढ़ानी चाहिए। उसने यह बात किसी से भी नहीं बताई कि उसे घोड़ा मिला कैसे। किसी से कहा कि मैंने घोड़ा मोल लिया है, फिर किसी से कुछ कहा, किसी से कुछ। मगर सच्ची बात शीघ्र ही गाँव भर में फैल गई, और जब लुकाश्का की माँ, मर्यान्का, ईल्या वसील्येविच तथा अन्य कज़्ज़ाकों को इस बेकार की सौग़ात का पता चला तो वे परेशान हो उठे और कैडेट से सतर्क रहने लगे। लेकिन अपनी शंकाओं के होते हुए भी उसके इस कार्य ने उन लोगों में उसके प्रति समादर की भावना उत्पन्न कर दी थी और वे समझने लगे थे कि आदमी सीधा-सादा है और साथ ही अमीर भी।

"क्या तुमने सुना," एक ने कहा, "कि जो कैडेट ईल्या वसीलिच के मकान में ठहरा है उसने पचास रूबल का घोड़ा लुकाश्का को योंही दे दिया? ज़रूर वह धनी होगा..."

"हाँ मैंने सुना है," दूसरा बोला, "ज़रूर उसने उसका कोई बड़ा काम किया होगा। पता तो चल ही जायगा कि बात क्या है। उर्वान तक़दीर का धनी है!"

"ये कैडेट एक ही ख़ुर्राट होते हैं," तीसरे ने कहा, "देखना कहीं वह मकान में आग लगाकर ही न रफ़ूचक्कर हो जाय, या कोई दूसरा पाजीपन न कर बैठे।"

२३

ओलेनिन का जीवनक्रम नियमित रूप से चलता रहा परन्तु वह उसमें नीरसता का अनुभव कर रहा था। अपने कमांडिंग अफ़सरों अथवा अपने साथवालों से भी उसकी यदा-कदा ही बातचीत होती। काकेशिया में एक धनी कैडेट की स्थिति विशेष रूप से लाभदायक समझी जाती है। उसे न तो काम के लिए ही भेजा गया था और न ट्रेनिंग के लिए ही।

अभियान में भाग लेने के फलस्वरूप उसके लिए एक कमीशन की सिफ़ारिश कर दी गई थी और इस बीच उसे शान्ति से रहने के लिए छोड़ दिया गया था। अधिकारी उसे रईस समझते थे और उसकी इज़्ज़त करते थे। ओलेनिन को ताश खेलना अथवा अफ़सरों के नाच-रंग और सिपाहियों के गाने-बजाने में भाग लेना, जिसका उसे सेना में रहने के कारण अच्छा अनुभव हो गया था, पसन्द न था। वह इस समाज तथा गाँव में अफ़सरों की जीवनचर्या से प्रायः अलग ही रहता था। कज़्ज़ाक गाँव में ठहरे हुए इन अफ़सरों का जीवनक्रम कुछ निश्चित-सा हो चुका था। जैसे किसी क़िले में प्रत्येक कैडेट या अफ़सर नियमित रूप से शराब पीता है, ताश खेलता है और अभियानों में भाग लेने के कारण मिलनेवाले पुरस्कारों पर बहस करता है, वैसे ही कज़्ज़ाक गाँव में भी वह नियमित रूप से चिख़ीर पीता है, लड़कियों को मिठाइयाँ और शहद बाँटता है, कज़्ज़ाक महिलाओं के पीछे मारा मारा फिरता है, उन्हें प्यार करता है, और कभी-कभी उनसे शादी भी कर लेता है। ओलेनिन का रास्ता अलग था। उसे पिटे-पिटाये मार्ग से होकर चलना अच्छा न लगता। यहाँ भी उसने वह जीवनक्रम नहीं अपनाया जिसे काकेशिया में रहनेवाले अफ़सर अपना रहे थे।

उसका स्वभाव तड़के उठ जाने का पड़ चुका था। चाय पीने तथा अपनी दालान में से दिखाई पड़नेवाले पहाड़ों, प्रभात काल और मर्यान्का की मूक प्रशंसा कर चुकने के पश्चात् वह बैल के चमड़े का एक पुराना कोट पहनता, भिगोये हुए कच्चे चमड़े की चप्पलें पैरों में डालता, कटार लटकाता, बन्दूक़ कन्धे पर फेंकता, एक छोटे से थैले में कुछ सिगरेट और भोजन की सामग्री रखता, अपने कुत्ते को पुकारता और पाँच बजे के ठीक बाद गाँव के बाहर जंगल की ओर चल देता। शाम को सात बजे वह थका-माँदा, भूखा-प्यासा घर लौटता, पाँच-छः तीतर

उसकी पेटी से लटके होते (कभी कभी अन्य कोई जानवर भी होता) और उसके खाने तथा भोजन सामग्री का थैला वैसे का वैसा घर वापस आ जाता। यदि थैले में पड़ी हुई सिगरेटों की भाँति ही उसके मस्तिष्क में संचित विचार भी स्थिर पड़े रहते तो इस बात का स्पष्ट पता चल जाता कि इन चौदह घण्टों की दौड़-धूप के बाद भी कोई विचार अपनी जगह से खिसका नहीं है।

जब वह घर वापस आता तो तरोताज़ा होता, मज़बूत होता, खुश होता। उस समय वह यह नहीं कह सकता था कि सारे समय वह क्या क्या सोचता रहा है। उसके मस्तिष्क में जो बातें चक्कर लगाया करती थीं वे क्या होती थीं—विचार, स्मृतियाँ या स्वप्न? प्रायः तीनों ही। कभी-कभी वह अपनी ही विचारधारा में बुरी तरह बह जाता और उसकी कल्पना के समक्ष एक चित्र खड़ा हो जाता—वह कज़्ज़ाकों में घुलमिल गया है, अपनी कज़्ज़ाक पत्नी के साथ अंगूर के खेत में काम कर रहा है, या पहाड़ों में घूमने-फिरनेवाला अब्रेक बन गया है, अथवा उसके पास से होकर कोई सुअर अभी अभी निकल गया है, और सारे समय वह किसी तीतर, सुअर या हिरन की तरफ़ झाँकता या उनकी टोह में लगा रहता।

शाम के समय चचा येरोश्का आ टपकता और उसके पास बैठा रहता। वन्यूशा चिख़ीर से भरा एक कंटर ले आता और फिर दोनों बातें करते, शराब पीते और रात होते होते एक दूसरे से अलग हो जाते, और अन्ततः सोने चले जाते। फिर दूसरे दिन वही शिकार, वही थकान, शाम के समय का वही वार्तालाप, शराब का वही दौर और वही बिस्तर। कभी कभी छुट्टी या आराम के दिन ओलेनिन सिर्फ़ घर पर रहता। उस समय उसका मुख्य काम होता एकटक मर्यान्का को निहारना। वह अपनी खिड़की या दालान में से उसकी प्रत्येक गति को सतृष्ण दृष्टि

से देखा करता। वह मर्यान्का की इज्ज़त करता था, उससे प्रेम करता था (कम से कम वह समझता यही था) ठीक उसी तरह जैसे कि वह पहाड़ों और आकाश के सौन्दर्य से प्रेम करता था। परन्तु उसने उससे किसी प्रकार का सम्बन्ध जोड़ने की बात नहीं सोची थी। उसे ऐसा लगता था कि उसके तथा मर्यान्का के बीच ऐसे सम्बन्ध नहीं पैदा हो सकते जैसे कि मर्यान्का और कज्ज़ाक लुकाश्का के बीच थे। फिर वैसे सम्बन्धों का तो कहना ही क्या जो धनी अफ़सरों और अन्य कज्ज़ाक लड़कियों के बीच हुआ करते थे। उसे स्पष्ट लग रहा था कि यदि उसने भी वैसा ही करना आरम्भ कर दिया जैसा कि उसके सहयोगी अफ़सर किया करते थे तो वह चिन्तन के पूर्णानन्द के स्थान पर क्लेशों, भ्रमजालों और भर्त्सनाओं के नर्क में ही गिरेगा। इसके अतिरिक्त मर्यान्का के सम्बन्ध में उसमें स्वार्थ-त्याग की जो भावना विकसित हुई थी उससे उसे बड़ी प्रसन्नता हुई थी। किन्तु एक तरह से वह मर्यान्का से डरता भी था और उससे किसी भी दशा में अपने प्रेम-प्रकाशन के सम्बन्ध में एक शब्द भी नहीं कह सकता था।

एक बार गर्मी के मौसम में ओलेनिन शिकार पर न जाकर घर ही में था, तभी मास्को का एक परिचित सहसा उसके पास आ खड़ा हुआ। यह एक नवयुवक था जिससे मास्को के समाज में उसकी मित्रता हुई थी।

"आह, 'मोन शेर', प्रिय दोस्त, जब मैंने सुना कि तुम यहाँ हो उस समय मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई!" उसने मास्को में बोली जानेवाली फ़्रेंच में कहना शुरू किया और अपनी बातचीत में फ़्रेंच शब्दों का प्रयोग करता गया। "उन्होंने कहा था, 'ओलेनिन'। कौन ओलेनिन? और मुझे कितनी खुशी हुई थी... भाग्य से हम दोनों यहाँ मिल सके हैं। कैसा संयोग है! खैर, तुम्हारे हालचाल कैसे हैं? कैसे

हो? क्यों?" और राजकुमार बेलेत्स्की ने सारी कथा कह सुनाई कि किस प्रकार अस्थायी रूप से वह सेना में भरती हुआ, किस प्रकार कमांडर-इन-चीफ़ ने उसे अंगरक्षक के कार्य पर लगाने का प्रस्ताव किया और किस प्रकार अभियान के पश्चात् वह उस पद को संभालेगा, यद्यपि सच पूछा जाय तो वह इसके प्रति बिल्कुल उदासीन था।

"यहाँ इस कोने में रहते हुए मनुष्य को अपना आगामी जीवन, भविष्य, सुधारना चाहिए—पदक या कोई पद प्राप्त करना चाहिए अथवा 'गार्ड' के रूप में स्थानान्तरित कर दिया जाना चाहिए। यह अनिवार्य है, मेरे लिए नहीं अपितु मेरे मित्रों और सगे-सम्बन्धियों के लिए। राजकुमार ने मेरी बड़ी आवभगत की थी। वह अच्छा आदमी है," बेलेत्स्की बोला और आगे कहता गया, "अभियान के लिए मुझे 'सेंट आन्ना पदक' दिये जाने की सिफ़ारिश की जा चुकी है। अब मैं यहाँ उस समय तक ठहरूँगा जब तक कि अभियान के लिए न चल दूँ। यह तो राजधानी की तरह है। कैसी स्त्रियाँ हैं! ख़ैर तुम्हारी कैसी बीत रही है? हमारे कप्तान स्तारत्सेव ने बताया था, तुम जानते हो वही न जो रहम-दिल है परन्तु है बेवक़ूफ़... ख़ैर, उसने कहा था कि तुम यहाँ वहशियों की तरह रह रहे हो, न किसी से मिलते-जुलते हो, न बात करते हो। मैं यह बात भली भाँति समझ सकता हूँ कि यहाँ पर जिस प्रकार के अफ़सर आ गये हैं उनसे मिलना-जुलना तुम्हें अच्छा न लगता होगा। मुझे प्रसन्नता है कि तुम्हें और मुझे एक दूसरे को जानने-समझने और साथ साथ उठने-बैठने का मौक़ा मिलेगा। मैं कारपोरल के मकान में ठहरा हूँ। वहाँ एक लड़की है, उस्तेन्का! बड़ी सुन्दर है।"

और उस दुनिया के, जिसे ओलेनिन ने समझा था कि वह छोड़ चुका है, ढेरों फ़्रेंच और रूसी शब्द बराबर बरसते गये, झरते गये।

बेलेत्स्की के बारे में लोगों की आम राय यह थी कि वह एक

अच्छे स्वभाववाला व्यक्ति है। शायद वह था भी अच्छा। फिर भी, यद्यपि उसका चेहरा आकर्षक और सुन्दर था, ओलेनिन ने उसे अपने लिए बड़ा असुखकर समझा। उसे ऐसा लगा कि उसका मित्र उसी आवारागर्दी का बखान कर रहा है जिसे वह छोड़ चुका है। सबसे अधिक तो वह यह समझकर परेशान हुआ कि वह इस व्यक्ति को, जो उस दुनिया से आया है, न तो फटकार ही सकता है और न उसमें—यदि वह ऐसा करना चाहे तो भी—वैसा करने की शक्ति ही है। वह जिस पुरानी दुनिया से छूटकर आया है उसी में फँस रहा है, जकड़ रहा है। ओलेनिन को अपने तथा बेलेत्स्की दोनों के ही ऊपर क्रोध आया, फिर भी अपनी इच्छा के प्रतिकूल अपनी बातचीत में उसे फ्रेंच शब्दावली का प्रयोग करना पड़ा, कमांडर-इन-चीफ़ और मास्को के अपने परिचितों के बारे में रुचि दिखानी पड़ी। और चूँकि वह तथा बेलेत्स्की यही दो इस कज़्ज़ाक गाँव में फ्रेंच बोल सकते थे इसलिए उसने अपने सहयोगी अफ़सरों और कज़्ज़ाकों के बारे में तिरस्कारसूचक शब्दों में बातचीत की, उससे मिलते-जुलते रहने का वादा किया और उसे कभी कभी मिलने के लिए आते रहने का निमंत्रण भी दिया। मगर ओलेनिन खुद कभी मिलने के लिए बेलेत्स्की के पास नहीं गया।

वन्यूशा को बेलेत्स्की का स्वभाव अच्छा लगा। उसने तो यहाँ तक कह डाला कि यह व्यक्ति सचमुच बड़ा सज्जन है।

बेलेत्स्की नें तुरन्त ही उस प्रकार का जीवन व्यतीत करना आरम्भ कर दिया जैसा कि कज़्ज़ाक गाँव में धनी अफ़सर प्राय: व्यतीत किया करते थे।

ओलेनिन के देखते देखते एक ही महीने में वह इस गाँव में इतना प्रसिद्ध हो गया जैसे यहाँ का पुराना निवासी हो; वह गाँव के बड़े-बूढ़ों को शराब पिलाता, सायंकालीन पार्टियों का आयोजन करता, लड़कियों

द्वारा दी जानेवाली पार्टियों में भाग लेता और उनकी सफलताओं पर उनकी झूठी बड़ाई करता। स्त्रियाँ और लड़कियाँ उसे किसी अज्ञात कारण से 'दादा' कहकर सम्बोधित करतीं। और स्वयं कज़्ज़ाक भी, जो ऐसे व्यक्ति को अच्छी तरह समझते थे, जिसे सुरा और सुन्दरी से प्यार होता था, उसके मुरीद हो गये और उसे ओलेनिन से भी अधिक चाहने लगे, क्योंकि ओलेनिन उनके लिए अभी तक एक पहेली बना हुआ था।

२४

सुबह के पाँच बजे थे। वन्यूशा दालान में समोवर जला रहा था, और लम्बे बूट का एक पैर लेकर उसपर हवा कर रहा था। ओलेनिन तेरेक में स्नान करने के लिए घर से जा चुका था। (हाल ही में उसने अपने मनोविनोद का एक नया साधन, ढूँढ़ लिया था—नदी में घोड़े को नहलाना।) उसकी मकान-मालिकन घर में थी और उसके कमरे की जलती हुई भट्ठी का धुआँ चिमनी से निकलकर आसमान में उड़ रहा था। उसकी लड़की सायबान में बैठी भैंस दुह रही थी। "चुड़ैल, ठीक से खड़ी भी नहीं रह सकती!" उसकी यह आवाज कभी कभी कानों में पड़ने लगती और बालटी में गिरते हुए दूध की छलछल वायुमण्डल में विलीन हो जाती।

मकान के सामने की सड़क से दौड़ते हुए घोड़े की टापें सुनाई दीं और बिना ज़ीनवाले एक भीगे और चमचमाते हुए गहरे भूरे रंग के घोड़े पर आता हुआ ओलेनिन दिखाई पड़ा। वह फाटक तक पहुँच चुका था। मर्यान्का ने रूमाल से लपटा हुआ अपना सिर एक क्षण के लिए सायबान से बाहर निकाला और फिर अन्दर कर लिया। ओलेनिन रेशम की एक लाल कमीज़ और सफ़ेद चेरकेसियन कोट पहने था, जिसके चारों ओर पेटी बंधी थी और उसमें एक कटार लटक रही थी। उसके सिर पर एक ऊँचा-सा हैट था।

वह अपने भीगे और तन्दुरुस्त घोड़े पर बैठा हुआ और कन्धे पर बन्दूक़ रखे फाटक खोलने के लिए झुका। उसके बाल अभी तक गीले थे और यौवन तथा हृष्ट-पुष्ट शरीर के कारण उसका चेहरा दमक रहा था। उसने अपने को ख़ूबसूरत, फुरतीला और जिगीत की तरह का जवान समझा परन्तु वह ग़लती पर था। कोई भी अनुभवी काकेशियाई उसे एक ही नज़र में देख कर कह सकता था कि वह अभी तक सिर्फ़ एक सिपाही है और कुछ नहीं।

जब उसने लड़की को सिर बाहर निकालते देखा तो वह फ़ुर्ती से झुका और लगाम ढीली करते हुए उसने अपना चाबुक फटकारा और अहाते में घुस गया। "वन्यूशा, चाय तैयार है?" उसने सायबान के दरवाज़े की तरफ़ न देखते हुए आवाज़ दी। उसने इस बात पर भी ध्यान दिया कि उसका सुन्दर घोड़ा अपनी पिछली टाँगों पर कितनी ख़ूबसूरती के साथ खड़ा हुआ, हिनहिनाया, अपनी माँस-पेशियाँ सिकोड़ीं, फैलाईं और शान के साथ अहाते की कड़ी मिट्टी खूंदने लगा। ऐसा लगता था कि वह टट्टर से बाहर फाँद जाने के लिए तैयार खड़ा है। "से प्रे!"* वन्यूशा ने उत्तर दिया। ओलेनिन को ऐसा लगा कि मर्यान्का का सुन्दर ख़ूबसूरत सिर अभी भी सायबान के बाहर निकला हुआ है, परन्तु वह उसकी ओर देखने के लिए भी न मुड़ा। जैसे ही वह घोड़े से नीचे कूदा कि उसकी बन्दूक़ बरामदे से टकरा गई। वह विचित्र ढंग से ठिटका और उसने सायबान की तरफ़ एक डरती-सी नज़र डाली, जहाँ दिखाई तो कोई न पड़ता था, हाँ दुहे जाने की छलछल अवश्य सुनाई पड़ती थी।

घर में प्रवेश करने के तुरन्त बाद वह पुस्तक और हुक्का लेकर बाहर आ गया और दालान में चाय पीने बैठ गया। अभी तक यहाँ सूर्य

---

*"तैयार है!"

की किरणें नहीं पड़ रही थीं। उसने तय कर लिया था कि उस दिन वह दोपहर के पहले कहीं भी न जायेगा और केवल पत्र ही लिखेगा क्योंकि बहुत समय से उसने पत्र नहीं लिखे थे। परन्तु कारण चाहे जो भी हो उसे दालान में अपनी जगह छोड़ना अच्छा न लगा। घर के भीतर तो उसे ऐसा लग रहा था मानो जेल हो। इस समय तक घर की मालकिन ने अंगीठी जला दी थी। लड़की मवेशी खदेड़ चुकने के बाद वापस आ गई थी और 'किज़्याक' इकट्ठे करके टट्टर के पास जमा करती जा रही थी। ओलेनिन पढ़ रहा था, परन्तु पुस्तक में जो कुछ लिखा था उसकी एक पंक्ति भी उसकी समझ में न आ रही थी। वह पुस्तक से बार बार आँखें उठाकर उस हृष्ट-पुष्ट नवयुवती की ओर देखता जो अहाते में टहलती टहलती कभी मकान की तरल प्रातःकालीन छाँह में जाती और कभी अहाते में फैली हुई चमचमाती हुई धूप में। प्रखर रंगों की पोशाक में उसका सुषमा-सम्पन्न शरीर धूप में निखर उठता और उसकी एक श्यामल छाया पड़ने लगती। ओलेनिन को भय होता कि उसकी दृष्टि से कहीं उसकी कोई भाव-भंगिमा अनदेखी तो नहीं रह गई? ओलेनिन खिल उठता जब वह देखता कि किस प्रकार उसका शरीर ऋजुता और शोभा के साथ भूमि की ओर झुकता है, उसका एकमात्र वस्त्र, गुलाबी फ़ाक, उसके उरोजों से ढरकता हुआ उसके सुन्दर पैरों तक कितनी सिलवटें डालता है, अंगड़ाई लेते समय साँसों से आन्दोलित उसका वक्षस्थल उसके कसे हुए फ़ाक में कितनी गहरी रेखाओं में उभरता है, पुरानी लाल स्लीपरों में उसकी कोमल एड़ियाँ पृथ्वी चूमते समय किस प्रकार अपना आकार बनाये रखती हैं, बाँह चढ़ाये हुए उसकी सुदृढ़ भुजाएँ अपनी माँस-पेशियों की शक्ति से किस प्रकार क्रोध जैसी मुद्रा में कुदाल उठाती हैं और किस प्रकार उसकी गहरी काली काली आँखें उसकी आँखों से चार होती हैं। यद्यपि उसकी कोमल भौंहों में बल पड़ जाते, फिर

भी उसकी आँखों से आनन्द की वर्षा होती और उन्हें देखकर ऐसा लगता कि उन्हें अपने सौन्दर्य का पूरा-पूरा ज्ञान है।

"ओलेनिन, मैं पूछ रहा हूँ–तुम आज बहुत जल्दी उठ गये थे क्या?" काकेशियाई अफ़सर का कोट पहने अहाते में प्रवेश करते हुए बेलेत्स्की ने पूछा।

"बेलेत्स्की!" ओलेनिन ने अपना हाथ बढ़ाते हुए जवाब दिया, "आज क्या बात है जो इतनी जल्दी निकल पड़े?"

"हाँ, मुझे जल्दी निकलना पड़ा। यों कहो निकाल दिया गया। आज रात हमारे यहाँ बालडान्स है। मर्यान्का, तुम तो उस्तेन्का के यहाँ आओगी ही?" लड़की की ओर मुड़ते हुए वह बोला। ओलेनिन को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि बेलेत्स्की किस आसानी से इस लड़की से बातें कर रहा है। परन्तु मर्यान्का ने जैसे कुछ सुना ही न हो। उसने अपना सिर झुका लिया और कुदाल कन्धे पर डालती हुई मरदानी चाल से अपने घर की ओर चल दी।

"वह लजीली है, दोस्त, लजीली," उसके जाने के बाद बेलेत्स्की बोला, "तुम से लजाती है," उसने कहा और हँसता हुआ दालान की सीढ़ियों की ओर दौड़ गया।

"आखिर बात क्या है कि तुम्हारे यहाँ नृत्य भी है और तुम निकाल भी दिये गये? मेरी तो कुछ समझ में नहीं आता!"

" भाई, नाच है उस्तेन्का के यहाँ। वह हमारी मकान-मालकिन है। और तुम्हारा निमंत्रण है। और नाच के माने हैं शराब के दौर और लड़कियों के जमघट।"

"परन्तु हम वहाँ क्या करेंगे?"

बेलेत्स्की मुस्करा दिया और उसने उस दिशा की ओर देखते हुए, जहाँ जाकर मर्यान्का ओझल हो गई थी, अपना सिर हिलाया और आँख मारी।

ओलेनिन ने कन्धे उचका दिये। शर्म के मारे उसका मुँह लाल हो गया। "सचमुच तुम विचित्र आदमी हो!" वह बोला।

"अच्छा अब आओ, ज़्यादा बनो मत!"

ओलेनिन की भृकुटियाँ चढ़ रही थीं और बेलेत्स्की देख देखकर मुस्कराये जा रहा था।

"अरे, आओ भी, मतलब भी नहीं समझते?" उसने कहा, "एक ही मकान में रहना—और इतनी आकर्षक, इतनी मज़ेदार रमणी, सौन्दर्य की साकार मूर्ति..."

"सच कहते हो, ग़ज़ब की सुन्दरी है! मैंने तो इसके पहले किसी में इतना सौन्दर्य देखा भी न था," ओलेनिन बोला।

"तब फिर?" बेलेत्स्की बोला। परिस्थिति उसकी समझ में न आ रही थी।

"बात भले ही अजीब हो," ओलेनिन ने उत्तर दिया, "परन्तु अगर कोई सत्य है तो उसे मैं क्यों न कहूँ? चूँकि मैं यहाँ रह रहा हूँ इसलिए मुझे तो ऐसा लगता है मानों औरतें मेरे लिए हैं ही नहीं। और यह सब कितना अच्छा है, सचमुच कितना अच्छा! हाँ हममें और ऐसी औरतों में क्या समानता हो सकती है? येरोश्का—ख़ैर वह आदमी ही दूसरे ढंग का है! उसका और मेरा एक ही नशा है—वह भी शिकारी है और मैं भी।"

"ठीक, समानता का चक्कर। अच्छा, अमालिया इवानोवना से मेरी क्या समानता है, तुम्हीं बताओ, क्या समानता है? बात सब एक है! हाँ यह कह सकते हो कि ये लोग साफ़-सुथरे नहीं हैं, बस। यह बात मैं मानता हूँ ... अ ला गेर कोम अ ला गेर!"*

---

* "जैसा देस तैसा भेस"—अनु०

"परन्तु मेरी जान-पहचान तो किसी भी अमालिया इवानोवना से नहीं रही और मैं यह भी नहीं जानता कि इस प्रकार की औरतों से कैसे व्यवहार करना चाहिये," ओलेनिन बोला, "उनकी कोई इज़्ज़त नहीं कर सकता, परन्तु मैं ज़रूर करता हूँ।"

"ज़रूर करो। तुम्हें रोकता कौन है?"

ओलेनिन ने कोई जवाब न दिया। वस्तुतः वह अपनी उस बात को कह देना चाहता था जो उसने अभी अभी शुरू की थी क्योंकि वह उसके दिल की आवाज़ थी।

"मैं जानता हूँ कि मैं अपवादस्वरूप हूँ..." उसे कुछ उलझन महसूस हुई। "परन्तु मेरी ज़िन्दगी का ढर्रा कुछ इस तरह चलने लगा है कि अगर मैं तुम्हारी तरह रहना चाहूँ भी तो नहीं रह सकता। मैं अपने सिद्धान्तों का त्याग करने की आवश्यकता नहीं समझता। अकेले रहना मुझे प्रिय है। यही कारण है कि इन लोगों को मैं उस नज़र से नहीं देख पाता जिस नज़र से तुम देखते हो।"

बेलेत्स्की ने आँखें ऊपर की और उसे सन्देह की दृष्टि से देखा। "कुछ भी हो, आज शाम को आना ज़रूर। वहाँ मर्यान्का भी होगी। मैं तुम्हारा उससे परिचय करा दूँगा। आना ज़रूर! अगर मन न लगे तो लौट आना। आओगे न?"

"आऊँगा परन्तु सच पूछो तो मुझे इस बात का डर है कि मैं बहक न जाऊँ।"

"हो, हो, हो!" बेलेत्स्की चिल्लाया। "बस आ भर जाओ, बाद में तुम्हारी देख-भाल का ज़िम्मा मेरा। आओगे न? सच कहते हो?"

"आऊँगा! मगर भाई, मुझे वहाँ करना क्या होगा, कौनसा पार्ट अदा करना होगा!"

"तुमसे याचना कर रहा हूँ, दोस्त, आना अवश्य, भूलना मत!"

"हाँ, शायद आऊँगा," ओलेनिन बोला।

"सुन्दरता की चलती-फिरती मूर्तियाँ देखने को मिलती कहाँ हैं। और, ब्रह्मचारी की जिन्दगी! क्या आदर्श है प्यारे। क्यों जिन्दगी तबाह कर रहे हो? जो मिल रहा है उससे हाथ धोना कहाँ की बुद्धिमानी है? तुमने यह भी सुना है क्या कि हमारी कम्पनी को वज्द्वीजेन्स्काया जाने की आज्ञा हुई है?"

"ऐसी सम्भावना तो कम है। मैंने तो सुना था कि आठवीं कम्पनी वहाँ भेजी जायेगी," ओलेनिन बोला।

"नहीं मुझे अंगरक्षक का एक पत्र मिला है जिसमें उसने लिखा है कि स्वयं राजकुमार अभियान में भाग लेंगे। मुझे प्रसन्नता है कि मुझे उनकी बानगी भी देखने को मिलेगी। अब तो इस जगह से मैं ऊबता-सा जा रहा हूँ।"

"मैंने सुना है कि हमें शीघ्र ही हमला बोलना होगा।"

"इसके बारे में मैंने कुछ नहीं सुना। हाँ यह खबर ज़रूर है कि क्रिनोवित्सिन को हमला करने के लिए 'सेंट आन्ना पदक' मिल चुका है। उसे आशा थी कि वह लेफ्टीनेंट बना दिया जायेगा।" बेलेत्स्की हँसते हुए बोला, "कैसी बेवक़ूफ़ी! वह इसके लिए प्रधान कार्यालय भी गया था..."

झुटपुटा हो रहा था। अब ओलेनिन पार्टी के बारे में सोचने लगा। उसे जो निमंत्रण मिला था उससे उसे चिन्ता हो गई थी। वह जाना तो चाहता था परन्तु उसे लग रहा था कि वहाँ जो कुछ घटेगा वह बड़ा विचित्र, भद्दा और शायद भयप्रद भी होगा। वह जानता था कि न तो वहाँ कज़्ज़ाक होंगे, न वृद्धाएँ होंगी और न लड़कियों को छोड़कर और ही कोई होगा। भगवान जाने क्या हो? उसे कैसा व्यवहार करना चाहिए? वे लोग क्या क्या बातें करेंगे? उसका और उन कज़्ज़ाक लड़कियों का क्या

सम्बन्ध है? बेलेत्स्की ने उसे ऐसे ऐसे विचित्र, सनकी और साथ ही कई मज़बूत सम्बन्धों के बारे में बहुत कुछ बताया था। उसे यह विचार ही बड़ा विचित्र लग रहा था कि एक ही कमरे में वह भी होगा और मर्यान्का भी। और शायद उसे उससे बातें भी करनी पड़ें। जब उसे उसका शानदार व्यक्तित्व याद आया तो यह बात उसे असम्भव-सी लगी। परन्तु बेलेत्स्की ने तो इस प्रकार बात की थी मानो यह सब बड़ी मा'मूली चीज़ हो! "क्या यह सम्भव है कि बेलेत्स्की मर्यान्का के साथ भी वैसा ही व्यवहार करेगा? बात दिलचस्प है," उसने विचार किया, "नहीं, अच्छा है वहाँ जाऊँ ही नहीं। यह सब कितना बेतुका है, कितना भद्दा—फिर इससे लाभ ही क्या!" परन्तु फिर उसे यह सोचकर घबड़ाहट हुई कि वहाँ क्या होगा। न जाने क्या हो! और अब तो वह वचनबद्ध भी हो चुका है। वह बिना इधर-उधर का कोई निश्चय किये हुए ही चल पड़ा। वह बेलेत्स्की के मकान तक पहुँचा और भीतर चला गया।

जिस मकान में बेलेत्स्की रह रहा था वह ओलेनिन की ही तरह का था और ज़मीन से पाँच फ़ीट ऊपर लकड़ी के लट्ठों पर बना था। उसमें दो कमरे थे। पहले में (जिसमें ओलेनिन सीधे सीढ़ियाँ चढ़कर घुसा था) परों के पलंग, कम्बल, धुस्से और कुशन ख़ूबसूरती से कज़्ज़ाक फ़ैशन में सजाये हुए मुख्य दीवाल से सटे रखे थे। बग़ल की छोटी दीवालों पर जलपात्र थे हथियार टँगे थे, और फ़र्श पर, एक बेंच के नीचे, कुछ तरबूज़ और कद्दू रखे थे। दूसरे कमरे में लकड़ी की एक बड़ी अंगीठी, एक मेज़, कुछ बेंचें और कुछ मूर्तियाँ थीं। यहीं बेलेत्स्की रहता था और यहीं उसका पलंग, उसका सामान और उसका ट्रंक था। उसके हथियार इसी कमरे की एक दीवाल पर लटके हुए थे। उनके पीछे एक कम्बल टंगा था। मेज़ पर कंघा, शीशा, तेल आदि शृंगार सामग्री और कुछ चित्र रखे थे। एक बेंच पर एक रेशमी गाउन भी फिंका पड़ा था।

इस समय बेलेत्स्की खुश था और मामूली कपड़े पहने पलंग पर लेटा हुआ 'ले त्रुआ मास्केतेयर'* पढ़ रहा था।

वह उछल पड़ा।

"वहाँ देखो, मैंने हर चीज़ का कैसा इन्तज़ाम किया है! कैसा बढ़िया प्रबन्ध है! है न? मुझे खुशी है कि तुम आ गये। सब के सब जी तोड़कर लगे हैं। मालूम है केक काहे के बने हैं? उसमें सुअर का माँस है, अंगूर है और भी बहुत-सी चीजें हैं। परन्तु यही सब कुछ तो है नहीं। उधर देखो कैसी हलचल मची है!"

और सचमुच खिड़की के बाहर उन्होंने देखा कि मकान में बड़ी चहल-पहल है। लड़कियाँ कभी भीतर भागती हैं, कभी बाहर, कभी यह चीज़ लेने, कभी वह।

"क्या सब कुछ जल्दी ही तैयार हो जायगा या अभी इन्तज़ार करना पड़ेगा?" बेलेत्स्की ने वहीं से आवाज़ लगाई।

"बहुत जल्दी! क्यों? ज़ोर की भूख लग आई?" और अन्दर से एक साथ क़हक़हों की आवाज़ें आने लगीं।

छोटे क़द की, गुलाबी गालोंवाली और चंचल सुन्दरी उस्तेन्का बाहें चढ़ाये बेलेत्स्की के कमरे में घुस आई। उसे कुछ तश्तरियाँ लेनी थीं।

"परे हटो नहीं तो फोड़ दूँगी तश्तरियाँ!" बेलेत्स्की से बचती हुई महीन आवाज़ में वह बोली, "यह तो होता नहीं कि आयें और हमारी मदद करें," ओलेनिन की ओर देखकर हँसती हुई वह बोल उठी, "और लड़कियों के जलपान की बात मत भूलना" (जलपान से अर्थ था मसालेदार रोटियाँ और मिठाइयाँ)।

---

*'तीन बन्दूक़चियें'—अनु०

"मर्यान्का आ गई क्या?"

"क्यों नहीं! और अपने साथ आटा भी गूँधकर लाई है।"

"जानते हो," बेलेत्स्की बोला, "अगर उस्तेन्का को बढ़िया कपड़े पहना दिये जायें और मुँह पर थोड़ी पालिश कर दी जाय तो वह हमारी सारी सुन्दरियों से सुन्दर निकलेगी। क्या तुमने कभी उस कज्जाक औरत को देखा है जिसने एक कर्नल के साथ ब्याह किया है? कितनी सुन्दर थी! बोर्शचेवा। कैसी शान थी उसकी! कहाँ से बटोर लाती हैं इतनी सुन्दरता ये सब?.."

"बोर्शचेवा को तो मैंने देखा नहीं, लेकिन मैं समझता हूँ कि उस पोशाक से अच्छी कोई चीज़ नहीं जिसे वे यहाँ पहनती हैं।"

"अरे मुझमें यही तो ख़ासियत है कि मैं किसी तरह के जीवन में भी घुलमिल सकता हूँ," आराम की साँस लेते हुए बेलेत्स्की ने कहा, "मैं जाकर देखूँगा कि वे सब क्या कर रही हैं।" उसने गाउन कन्धे पर डाला और चिल्लाता हुआ दौड़ पड़ा, "और तुम 'जलपान' का ध्यान रखना।"

ओलेनिन ने बेलेत्स्की के अर्दली को मसालेदार रोटियाँ और शहद लेने भेजा। परन्तु रुपया देने में उसे कुछ इतना संकोच हो रहा था (मानो वह किसी को घूस दे रहा हो) कि जब अर्दली ने पूछा कि "पिपरमिंट के साथ कितनी रोटियाँ होंगी और शहद के साथ कितनी?" तो ओलेनिन को कोई जवाब न सूझा।

"जितनी तुम चाहो।"

"क्या सब पैसा ख़र्च कर डालूँ?" बूढ़े सिपाही ने प्रश्न किया, "पिपरमिंट महँगी है—सोलह कोपेक की।"

"हाँ, हाँ सब ख़र्च कर डालो," ओलेनिन ने उत्तर दिया और खिड़की के पास बैठ गया। उसका हृदय इतने ज़ोरों से धड़क रहा था

मानो कोई गम्भीर अपराध करने जा रहा हो। जब बेलेत्स्की लड़कियों के कमरे में था उस समय ओलेनिन ने वहाँ कुछ चीख़ें-चिल्लाहटें सुनीं और कुछ ही क्षणों बाद उसने क़हक़हों और चिल्लपों के बीच उसे सीढ़ियाँ उतरते देखा। "निकाल दिया गया," वह बोला।

थोड़ी ही देर बाद उस्तेन्का अन्दर आई और उसने ख़बर दी कि सब कुछ तैयार है।

कमरे में आने पर उन्होंने देखा कि सचमुच सब कुछ तैयार है। उस्तेन्का कुशनों को दीवाल से लगा लगाकर ठीक से रख रही थी। पास ही मेज़ पर एक छोटा-सा मेज़पोश पड़ा था जिसपर चिख़ीर का एक कंटर और कुछ सूखी हुई मछलियाँ रखी थीं। कमरे में गुंधे हुए आटे और अंगूर की महक आ रही थी। लगभग आधी दर्जन लड़कियाँ चुस्त बेशमेतें पहने और मुंह बिना रूमाल से लपेटे (प्रायः लड़कियाँ अपना मुँह रूमाल से लपेटे रहा करती थीं) अंगीठी के पीछे एक कोने में खड़ी गुपचुप कर रही थीं और कभी कभी हँसी के मारे लोटपोट भी हो रही थीं।

"मैं बड़ी नम्रतापूर्वक आप सबसे प्रार्थना करती हूँ कि आप लोग हमारे सन्त पेट्रन को इज़्ज़त बख़्शें," अपने अतिथियों को मेज़ पर आमंत्रित करती हुई उस्तेन्का बोली।

ओलेनिन ने देखा कि मर्यान्का भी उन्हीं लड़कियों के दल में थी। सभी सुन्दर थीं। उसे ऐसी विषम परिस्थितियों में मर्यान्का से मिलने में घबड़ाहट हो रही थी। ऐसी दशा में उसने वही करने का निश्चय किया जो बेलेत्स्की ने किया था। बेलेत्स्की गम्भीरतापूर्वक मेज के पास गया था, उसने उस्तेन्का के स्वास्थ्य की कामना करते हुए गिलास भर शराब पी और दूसरों को भी वैसा ही करने के

लिए कहा। उस्तेन्का ने घोषणा की कि लड़कियाँ शराब नहीं पीती।

टोली की एक लड़की बोली "हम थोड़ा शहद ले लेंगे।"

अर्दली शहद और मसालेदार रोटियाँ लेकर लौट आया।

उसने उन लोगों की ओर कनखियो से देखा (चाहे घृणा से कहिए या ईर्ष्या से) जो उसकी राय में शराब और नाच-रंग मे मस्त थे और उन्हें रद्दी कागज़ में लपेटा हुआ शहद तथा रोटियाँ देकर उनके मूल्य और रेज़गारी आदि का हिसाब समझाने लगा। परन्तु बेलेत्स्की ने उसे भगा दिया। शराब के गिलासों में शहद मिलाकर और तीन पौंड रोटियाँ मेज़ पर लगाकर बेलेत्स्की ने लड़कियों को कोनें से खींचकर मेज़ के पास बिठा दिया और रोटियाँ बाँटने लगा। ओलेनिन ने अनायास देखा कि किस प्रकार मर्यान्का ने हाथ बढ़ाकर एक भूरे रंग का और दो पिपरमिंट के केक उठा लिये और अब वह समझ नहीं पा रही थी कि उनका क्या करे। उस्तेन्का और बेलेत्स्की एक दूसरे के साथ घुल घुलकर बातें कर रहे थे और यद्यपि दोनों ही चाहते थे कि मजलिस में जान आये, फिर भी आपसी बातचीत फीकी थी और किसी को भी उसमें कोई आनन्द न आ रहा था। ओलेनिन ने, यह समझकर कि वह खुद न बोल कर लड़कियों में उत्सुकता को ही बढ़ावा दे रहा है और शायद वे उसका मूक परिहास कर रही हैं और बहुत सम्भव है कि दूसरों पर भी इस भीरुता का असर पड़ रहा हो, कुछ बोलने का प्रयत्न किया। शर्म के मारे उसके गालों पर गुलाबी छा रही थी और उसे ऐसा लग रहा था कि मर्यान्का परेशान है। "शायद वे हम लोगों से यह आशा कर रही होंगी कि हम उन्हें कुछ पैसा दें," उसने विचार किया, "मगर हम यह करें कैसे? और ऐसा करने और फिर निकल जाने का सबसे सरल तरीक़ा है क्या?"

"आखिर बात क्या है कि तुम अपने ही घर में रहनेवाले को नहीं जानतीं?" बेलेत्स्की ने मर्यान्का को सम्बोधित करते हुए प्रश्न किया।

"जब वह कभी हमसे मिलने नहीं आते तो मैं उन्हें कैसे जान सकती हूँ?" ओलेनिन की ओर देखते हुए मर्यान्का ने उत्तर दिया।

ओलेनिन को ऐसा लगा कि उसे भय लग रहा है। परन्तु, किस चीज़ का भय, यह वह न जान सका। वह विह्वल हो गया और बिना यह जाने हुए कि वह क्या कह रहा है उसने कहना शुरू किया—

"मुझे तुम्हारी माँ से डर लगता है। पहले ही दिन जब मैं तुम्हारे घर गया था तो उसने मुझे वह क़रारी फटकार सुनाई थी कि छठी का दूध याद आ गया था।"

मर्यान्का ठठाकर हँस पड़ी।

"और तुम डर गये?" उसने कहा और उसपर एक सरसरी निगाह डाली और तुरन्त हटा ली।

यह पहला अवसर था जब ओलेनिन ने उसका सुन्दर चेहरा आँख भर कर देखा था। उसके पहले तक तो उसने उसे मुँह पर रूमाल लपेटे हुए ही देखा था। इसमें सन्देह नहीं कि लोग उसे 'गाँव की सुन्दरी' का जो नाम देते थे वह सार्थक था।

उस्तेन्का भी एक सुन्दर लड़की थी—ठिंगनी, लचकीली, गुलाबी मुखड़ेवाली। उसकी आँखें भूरी थीं और ओठ लाल, जो या तो हँसते रहते या बातचीत में चलते रहते। इसके विपरीत मर्यान्का लावण्य की प्रतिमा तो नहीं, हाँ सुन्दरी अवश्य कही जा सकती थी—लम्बा शरीर, गठा हुआ बदन, उन्नत उरोज, भरे भरे कन्धे, धनुपाकार गहरी आँखें और उनपर पड़ती हुई काली काली भौंहों की छाया। यदि उसमें ये गुण न होते

तो शायद उसकी चाल-ढाल और नाक-नक़्शे को देखकर उसमें मरदानेपन और कठोरता का भी आभास मिलता। उसमें युवतियों जैसी मुस्कान थी और जब वह हँसती तो देखनेवाले देखते ही रह जाते। परन्तु वह हँसती कम थी। ऐसा ज्ञात होता कि वह कौमार्य की शक्ति एवं स्वास्थ्य की किरणें बिखेर रही है। सभी लड़कियाँ सुन्दर थीं। ये लड़कियाँ किन्तु वे स्वयं, बेलेत्स्की और अर्दली, जो मसालेदार रोटियाँ लाया था, सभी उसे कनखियों से देखते और जो भी लड़कियों से कोई बात कहता वह मर्यान्का को ज़रूर सम्बोधित करता। ऐसा प्रतीत होता कि मजलिस की रानी वही है।

टोली को ज़िन्दा बनाये रखने की दृष्टि से बेलेत्स्की कभी लड़कियों को चिख़ीर बाँटता, कभी उनसे छेड़छाड़ करता और कभी ओलेनिन से फ़्रेंच में मर्यान्का के विषय में छींटेकशी करता, कहता कि यह सुन्दरी तो बस 'तुम्हारी' (ला वोत्र) ही है। उसने ओलेनिन से वैसा ही व्यवहार करने के लिए कहा जैसा वह स्वयं कर रहा था। ओलेनिन और भी अधिक व्यग्र होता जा रहा था। वह भागने का बहाना ढूँढ़ रहा था कि इतने में बेलेत्स्की ने घोषणा की कि उस्तेन्का, जिसके नाम में आज का सारा आयोजन हो रहा था, आदमियों को चिख़ीर बाँटे और उनका चुम्बन करे। वह राज़ी हो गई मगर शर्त यह थी कि, जैसा विवाह के अवसरों पर हुआ करता है, वे उसकी तश्तरी में रुपया डालते जायें।

"मैं इस नामाकूल दावत में आया ही क्यों!" ओलेनिन ने सोचा। वह भाग खड़ा होने के लिए उठने लगा।

"कहाँ खिसक रहे हो, दोस्त?"

"कुछ तम्बाकू लेने जा रहा हूँ," वह बोला। उसका उद्देश्य वहाँ से हट जाने का था। परन्तु बेलेत्स्की ने उसका हाथ पकड़ लिया और फ़्रेंच में कहा, "मेरे पास रुपया है।"

"तो यहाँ कुछ न कुछ देना ज़रूर होगा। कोई योंही नहीं भाग सकता," ओलेनिन ने विचार किया। उसे अपने ऊपर क्रोध आ रहा था, "क्या मैं सचमुच बेलेत्स्की की भाँति व्यवहार नहीं कर सकता? मुझे आना ही न चाहिए था लेकिन जब आ ही गया हूँ तो मुझे गुड़ गोबर तो नहीं करना चाहिए। मुझे कज़्ज़ाक की भाँति पीना चाहिए," और उसने काष्ठपात्र लेकर (जिसमें आठ गिलास रखे थे) उसमें शराब भरी और देखते ही देखते उसे पी गया। लड़कियाँ उसकी ओर देखती ही रह गईं। एक साथ और इतनी ज़्यादा! उन्हें आश्चर्य हो रहा था और डर भी लग रहा था। उन्हें यह बात बड़ी विचित्र और भद्दी लगी। उस्तेन्का ने उन दोनों को एक एक गिलास और दिया और उन्हें चूम लिया।

"प्यारी लड़कियो, अब कुछ जशन मनेगा," उस्तेन्का ने उन चार रूबलों को खनखनाते हुए कहा जो लोगों ने तश्तरी में डाले थे। अब ओलेनिन को कोई भी संकोच न रह गया था। वह बातूनी हो रहा था।

"मर्यान्का अब तुम्हारी बारी है। तुम हमें शराब दो और चुम्बन भी," उसका हाथ पकड़ते हुए बेलेत्स्की बोला।

"हाँ मैं तुम्हें ऐसा चुम्बन दूँगी!" वह बोली मानो तमाचा जड़ने की तैयारी कर रही हो।

"तुम बिना कुछ लिए हुए ही उनका चुम्बन कर सकती हो," एक दूसरी लड़की ने कहा।

"तुम बड़ी अच्छी लड़की हो," अपने को छुड़ाती हुई लड़की को चूमते हुए बेलेत्स्की बोला, "नहीं तुम्हें देना ही होगा," मर्यान्का को सम्बोधित करते हुए उसने ज़िद की, "अपने किरायेदार को भी एक गिलास दो न।"

ग्रौर उसका हाथ पकड़ते हुए, वह उसे बेंच के पास ले गया ग्रौर ग्रोलेनिन के पास बिठा दिया।

"कैसी सुन्दर है!" उसका सिर घुमाकर उसे ऊपर से नीचे तक देखते हुए उसने कहा।

मर्यान्का ने ग्रब ग्रपने को छुड़ाने की कोई कोशिश न की ग्रौर ग्रपनी बड़ी बड़ी ग्राँखें ग्रोलेनिन पर गड़ा दीं।

"कितनी सुन्दर!" बेलेत्स्की ने दुहराया ग्रौर मर्यान्का की दृष्टि से ऐसा लगा मानो कह रही हो "हाँ, देखो, कितनी सुन्दर हूँ मैं।"

बिना यह सोचे-विचारे कि वह क्या कर रहा है, ग्रोलेनिन ने मर्यान्का को छाती से लगा लिया ग्रौर उसका चुम्बन करने जा ही रहा था कि वह ग्रपने को उसके ग्रंक-पाश से मुक्त करती, बेलेत्स्की को धक्का देती ग्रौर मेज़ को गिराती हुई ग्रंगीठी की तरफ़ भागी। सभी चिल्लाने ग्रौर क़हक़हे लगाने लगे। तभी बेलेत्स्की ने लड़कियों के कान में कुछ फूँका ग्रौर वे सहसा गलियारे में भाग गईं ग्रौर दरवाजा बन्द हो गया।

"तुमने बेलेत्स्की को क्यों चूमा? मुझे क्यों नहीं चूमती थीं?" ग्रोलेनिन बोला।

"ऐसे ही! मैं नहीं चाहती। बस।" ग्रोंठ काटते ग्रौर त्यौरियाँ चढ़ाते हुए वह बोली, "वह 'दादा' है," उसने मुस्कराते हुए कहा। वह दरवाज़े की ग्रोर लपकी ग्रौर उसे भड़भड़ाने लगी, "ग्ररी चुड़ैलो, दरवाज़ा क्यों बन्द कर लिया?"

"ख़ैर, उन्हें वहाँ रहने दो ग्रौर हम यहाँ रहेंगे," उसके ग्रौर भी निकट ग्राते हुए ग्रोलेनिन बोला।

मर्यान्का ने भौंहें कसीं ग्रौर उसे हाथ से धक्का देकर एक ग्रोर हटा दिया, ग्रौर एक बार फिर ग्रोलेनिन को वह इतनी महान,

इतनी सुन्दर लगी कि वह अपने होश में आ गया और उसे अपने किये पर शर्म आने लगी। वह खुद दरवाज़े तक गया और उसे खींचने लगा।

"वेलेत्स्की! दरवाज़ा खोलो! यह क्या बेवक़ूफ़ी है!"

मर्यान्का फिर मधुरता से हँस दी। उसका चेहरा दमक रहा था।

"अरे तुम तो मुझसे डरते हो?"

"वाक़ई डरता हूँ। आखिर अपनी माँ की बेटी हो, न!"

"तुम्हें अपना अधिक समय येरोश्का के साथ बिताना चाहिए। वही तुम्हें लड़कियों से प्रेम करवाएगा।" और वह सीधे उसकी आँखों में देखती हुई मुस्करा दी।

ओलेनिन को नहीं मालूम था कि वह क्या उत्तर दे। "और अगर मैं तुमसे मिलने आऊँ..."

"वह बात दूसरी है," सिर हिलाते हुए वह बोली।

उसी क्षण बेलेत्स्की ने धक्के से दरवाज़ा खोल दिया और मर्यान्का उसके पास से कूदकर भाग गई। उसकी जाँघ ओलेनिन के पैर से छू गई।

"प्रेम, स्वार्थत्याग और लुकाश्का वग़ैरह के बारे में मैं जो कुछ सोचता रहा हूँ वह सब बेवक़ूफ़ी है। प्रसन्नता दूसरी ही चीज़ है। जो प्रसन्न है वही ठीक है, ठीक रास्ते पर है।" ओलेनिन ने सोचा और पूरी ताक़त से मर्यान्का को पकड़ कर पहले उसकी कनपटी के पास चुम्बन किया, फिर उसके गाल पर। मर्यान्का को कोई क्रोध न आया। वह ज़ोर से हँस पड़ी और दूसरी लड़कियों के पास भाग गई।

पार्टी समाप्त हो चुकी थी। उस्तेन्का की माँ काम पर से लौटी, उसने लड़कियों को फटकारा और बाहर निकाल दिया।

२६

"हाँ," ओलेनिन ने सोचा। वह घर की ओर बढ़ा जा रहा था। "मुझे थोड़ी लगाम ढीली करने की ज़रूरत है, फिर मैं उस कज़्ज़ाक लड़की से बुरी तरह प्रेम करने लगूँगा," यही विचार लेकर वह सोने चला परन्तु वह समझता था कि ये विचार पानी के बुलबुले हैं। नहीं, वह पहले की ही तरह रहना आरम्भ करेगा। परन्तु यह बात न हुई। मर्यान्का के साथ उसके सम्बन्धों में परिवर्तन हुआ। जो दीवाल उन्हें अलग कर रही थी वह ढह चुकी थी। अब जब कभी दोनों मिलते तो ओलेनिन उसे नमस्कार कर लेता।

मालिक मकान को ओलेनिन के धनी और उदार होने का पता चल गया था। एक दिन जब वह किराया वसूल करने आया तो चलते-चलाते उसे अपने घर आने का निमंत्रण भी देता गया। पार्टीवाले दिन के बाद से मर्यान्का की माँ उससे बड़े तपाक से मिलने लगी थी। कभी कभी सायंकाल वह मेज़बानों के साथ बैठता और बड़ी रात तक गप्पें मारा करता। ऐसा लगता कि गाँव में वह पहले की ही तरह रह रहा है, परन्तु उसके अन्तस् का सब कुछ बदल चुका था। पहले ही की तरह अब भी वह दिन दिन भर जंगलों में रहता और सायंकाल आठ बजे के क़रीब अकेले अथवा चचा येरोश्का के साथ अपने मेज़बानों से मिलने चल पड़ता। वे भी उसके आने-जाने के इतने अभ्यस्त हो गये थे कि जिस दिन वह न आता उस दिन उन्हें आश्चर्य होता। वह शराब की अच्छी क़ीमत देता। वह शान्त व्यक्ति था। वन्यूशा उसके लिए चाय लाता और वह अंगीठी के पास एक कोने में बैठ जाता। बूढ़ी इस ओर बिल्कुल ध्यान न देती और अपने काम में लगी रहती। और वे चिख़ीर के जाम या चाय के प्याले की चुस्कियाँ लेते हुए कभी कज़्ज़ाकों के बारे में, कभी पड़ोसियों के बारे में और कभी

रूस के बारे में बातें किया करते । दूसरे लोग प्रश्न करते और ओलेनिन उत्तर देता। कभी कभी वह कोई पुस्तक ले आता और उसे पढ़ा करता। मर्यान्का बकरी की तरह सिकुड़ी हुई कभी अंगीठी के ऊपर और कभी कोने में पैर सिकोड़े बैठी रहती। वह बातचीत में कोई भाग न लेती। ओलेनिन उसकी आँखें और सुन्दर चेहरा निहारा करता। कभी उसके कानों में उसके चलने-फिरने की और कभी बीज फोड़ने की आवाज़ पड़ा करती। ओलेनिन को ऐसा लगता कि जब जब वह कुछ बोलता तब तब मर्यान्का पूरे ध्यान से उसकी बातें सुना करती। और जब वह मन ही मन कुछ पढ़ता तो उसे उसकी उपस्थिति का भान होता रहता। कभी कभी वह सोचता कि मर्यान्का की आँखें उसी पर गड़ी हैं। और, वह भी उनके तेज से प्रकाशित होने के लिए उसे चुपचाप निहारा करता। उस समय वह तुरन्त अपने चेहरे को छिपा लेती और वह भी ऐसा बन जाता मानो बुढ़िया से कुछ गूढ़ विषय पर बड़ी गम्भीरता से बातचीत कर रहा है। परन्तु अपनी समस्त मन:शक्ति को एक ओर केन्द्रित करते हुए वह पूरे समय उसकी चलती हुई साँस और आने-जाने की आवाज़ सुना करता और इस बात की प्रतीक्षा किया करता कि वह उसकी ओर अब देखे तब देखे। दूसरों की मौजूदगी में वह उसके साथ सामान्यतया चंचल और खुश रहती, परन्तु जब दोनों अकेले होते उस समय वह लजीली और रूखी हो जाती। कभी कभी वह मर्यान्का के घर वापस आने से पहले ही वहाँ पहुँच जाता और तब एकाएक उसके कानों में उसके आने की पग-ध्वनि पड़ती और खुले हुए दरवाज़े पर उसकी नीली सूती फ्राक उसकी आँखों में चमक जाती। तब वह मकान में प्रवेश करती, उसपर एक नज़र डालती, थोड़ा-सा मुस्कराती और कुछ प्रसन्न और डरी हुई सी चल देती।

न तो वह उससे कुछ चाहता ही था और न उसकी कोई आकांक्षा ही थी। परन्तु प्रतिदिन उसके लिए मर्यान्का की उपस्थिति अनिवार्य-सी बनती गई।

५

ओलेनिन कज़ाक गाँव के जीवन में इतना रम गया था कि उसे अपनी पुरानी जीवन-चर्या विस्मृत-सी हो गई। उसे भविष्य के लिए, और विशेष रूप से वह जिस दुनिया में सम्प्रति रह रहा था उससे बाहर की दुनिया के लिए, न तो कोई चिन्ता ही थी और न उसमें उसे रुचि ही रह गई थी। जब उसे घर से, सम्बन्धियों से या अपने दोस्तों से पत्र प्राप्त होते जिनमें यह चिन्ता व्यक्त की जाती थी कि उनके लिए वह अब एक खोया हुआ सा व्यक्ति हो गया है तो उसे परेशानी हो जाती और क्रोध भी आ जाता। वह इस गाँव में रहते हुए उन लोगों को खोया हुआ समझता जो उसकी तरह नहीं रह रहे थे। उसे विश्वास था कि अपने पूर्व जीवन और वातावरण से मुँह मोड़कर उसने जो यह नया ग्राम्य जीवन अपनाया है और अब वह जितना स्वच्छन्द एवं मौलिक जीवन व्यतीत कर रहा है उसके लिए उसे कोई पश्चाताप न होगा। जब उसने अभियानों में भाग लिया था और उसे एक क़िले में रहना पड़ा था तब भी वह प्रसन्न था, परन्तु यहाँ चचा येरोश्का के साथ उठते-बैठते, जंगलों में शिकार करते, गाँव के एक कोने में स्थित अपने मकान में आराम से रहते और लुकाश्का तथा मर्यान्का के बारे में सोचते हुए उसे अपना पूर्व जीवन कृत्रिम और हास्यास्पद-सा लग रहा था। अपने पूर्व जीवन की कृत्रिमता पर पहले भी उसे क्रोध आता था परन्तु इस समय तो उससे बेहद घृणा हो रही थी। यहाँ वह अपने को दिन प्रतिदिन स्वतंत्र अनुभव करता और समझता कि वह भी आदमी है। काकेशिया इस समय उसकी कल्पना के काकेशिया से बिल्कुल भिन्न था। यहाँ उसे काकेशिया का वह रूप देखने को नहीं मिला जो उसने पढ़ा और सुना था। उसने अपने स्वप्नों के अनुरूप यहाँ कोई भी बात न देखी। "यहाँ काकेशिया के वे दृश्य, वे चट्टानें, अमालत-बेक, नायक, खल नायक कुछ भी तो नहीं," उसने सोचा, "यहाँ लोग प्राकृतिक ढंग पर रहते हैं, फूलते-फलते हैं—पैदा होते हैं, मरते हैं,

मिलते-जुलते हैं, लड़ते हैं, खाते हैं, जीते है, आनन्द मनाते है और मर जाते हैं। यहाँ उनपर कोई प्रतिबन्ध नहीं सिवा उन प्रतिबन्धों के, जो प्रकृति ने सूर्य और घास, जानवरों और वृक्षों पर लगाये है। उनके दूसरे कोई भी क़ानून नही।" इसलिए अपनी तुलना में ये व्यक्ति उसे खूबसूरत, मजबूत और स्वतंत्र लगे, जिन्हें देखकर उसे अपने ऊपर शर्म आती और आत्मा को दुख होता। प्राय: वह सोचने लगता कि वह सब कुछ छोड़-छाड़ दे और कज़्ज़ाक हो जाय, एक घर और कुछ मवेशी खरीद ले, किसी कज़्ज़ाक महिला से शादी कर ले (सिर्फ़ मर्यान्का से नही क्योंकि वह उसे लुकाश्का की सम्पत्ति समझने लगा था), चचा येरोश्का के साथ रहे और उसके साथ शिकार खेलने अथवा मछली मारने, या कज़्ज़ाकों के साथ उनके अभियानों पर, जाया करे। "परन्तु मैं यह सब कर क्यों नहीं डालता? किसका इन्तज़ार कर रहा हूँ?" उसने अपने से प्रश्न किया और उसे अपने ही पर शर्म आई, "क्या मुझे वह सब कुछ करने में डर लगता है जिसे मैं उचित और ठीक समझता हूं? क्या साधारण कज़्ज़ाक होने, प्रकृति के निकट रहने, किसी को हानि न पहुँचाने और लोगों की भलाई करने की मेरी आकांक्षा मेरे उन पूर्व स्वप्नों से अधिक मूर्खतापूर्ण है जिनमें मैं राज्य का मंत्री या कर्नल बन जाने की कल्पना किया करता था?" और उसे ऐसा लगता कि कोई आवाज़ उसके कान में कह रही है कि अभी उसे इन्तज़ार करना चाहिए और कोई निर्णय नहीं कर लेना चाहिए। उसे कभी कभी यह खटका बना रहता कि वह अभी येरोश्का और लुकाश्का की तरह नहीं रह सकेगा क्योंकि प्रसन्नता के विषय में उसके विचार उन दोनों से भिन्न थे। वह समझता था कि सच्ची प्रसन्नता स्वार्थ-त्याग में है। उसने लुकाश्का के लिए जो कुछ भी किया था उससे उसे बड़ा सन्तोष और हर्ष हुआ था। वह बराबर दूसरों के लिए अपने स्वार्थों की बलि देने के मौक़े ढूंढ़ा करता था परन्तु उसे ऐसा एक भी अवसर न मिला। कभी कभी

वह प्रसन्नता के अपने इस नवाविष्कृत सूत्र को भूल जाता और सोचता कि वह चचा येरोश्का की तरह जीवनयापन कर सकता है। परन्तु फिर उसके विचार पलटते और वह स्वार्थ-त्याग की भावना में बहने लगता, और इसी दृष्टिकोण से शान्ति और गर्व के साथ लोगों की भलाई और प्रसन्नता की बातें सोचा करता।

२७

अंगूर चुनने की फ़स्ल के कुछ ही पहले लुकाश्का घोड़े पर चढ़कर ओलेनिन से मिलने आया। इस समय वह हमेशा से अधिक तेज़ और फुर्तीला लग रहा था।

"दोस्त, सुना है तुम्हारा ब्याह हो रहा है?" उसका प्रसन्नता-पूर्वक स्वागत करते हुए ओलेनिन ने पूछा। लुकाश्का ने कोई सीधा जवाब न दिया।

"मैंने तुम्हारा घोड़ा नदी के उस पार बदल लिया है! यह रहा नया घोड़ा, लोव* का कबर्दा पट्ठा है। मैं घोड़े पहिचानता हूँ।"

उन्होंने नया घोड़ा देखा और उसे अहाते में घुमाया-फिराया। सचमुच घोड़ा बहुत अच्छा था। शरीर स्वस्थ और गठा हुआ, खाल चिकनी, पूँछ और सिर के बाल रेशम जैसे मुलायम। उसका पालन-पोषण भली प्रकार हुआ था। उसकी खिलाई-पिलाई इतनी अच्छी हुई थी, जैसा कि लुकाश्का कहता था, कि "आदमी उसकी पीठ पर आराम से सो सकता है।" उसकी टापें, उसकी आँखें, उसके दाँत–सभी की बनावट

---

* लोव फ़ार्म के घोड़े काकेशिया में सर्वोत्तम घोड़ों में समझे जाते थे।

बहुत सुन्दर थी जैसी बढ़िया नस्ल के घोड़ों की होती है। घोड़े की तारीफ़ किये बिना ओलेनिन से न रहा गया। उसने काकेशिया में अभी तक इतना सुन्दर घोड़ा न देखा था।

"और उसकी चाल कितनी मस्तानी है!" घोड़े की गर्दन थपथपाते हुए लुकाश्का बोला। "कैसी दुलकी चलता है! और चतुर इतना कि मालिक के इशारे पर ही नाचता है।"

"क्या इस बदलाई में तुम्हें कुछ देना भी पड़ा?" ओलेनिन ने पूछा।

"हाँ, कितना! यह मैंने गिना नहीं था," मुस्कराते हुए लुकाश्का ने जवाब दिया, "मुझे यह एक कुनक से मिला था।"

"बहुत सुन्दर घोड़ा है! तुम इसका कितना लोगे?" ओलेनिन ने पूछा।

"मुझे इसके एक सौ पचास रूबल मिल रहे थे परन्तु तुम्हें मुफ़्त दे दूँगा," लुकाश्का बोला। उसे प्रसन्नता हो रही थी, "हाँ भर कह दो और घोड़ा तुम्हारा। मैं इसे खोल दूँगा और तुम ले जा सकते हो। बस मेरे काम भर के लिए मुझे कोई मामूली-सा दे देना।"

"नहीं, किसी भी तरह नहीं।"

"ख़ैर, तुम्हारी मर्ज़ी! मैं तुम्हारे लिये यह सौग़ात लाया हूँ," अपना कमरबन्द खोलकर उसमें लटकती हुई दो कटारों में से एक दिखाते हुए लुकाश्का बोला।

"मुझे यह नदी के उस पार मिली है।"

"धन्यवाद।"

"माँ ने वादा किया है कि वे तुम्हारे लिए कुछ अंगूर लायेंगी।"

"इतनी तकलीफ़ की क्या ज़रूरत? ख़ैर इसका हिसाब हम बाद में

किमी दिन कर लेंगे। मैं तुम्हें इस कटार के लिए कोई रुपया नहीं दे रहा हूँ!"

"दे भी कैसे सकते हो? हम कुनक जो हैं। नदी के उस पार गिरेई-ख़ाँ रहता है। वह भी मेरा कुनक है। अपने घर ले जाकर कहने लगा, 'जो पसन्द हो उठा लो!' मैंने यह कटार उठा ली। हमारी यही प्रथा है।"

दोनों भीतर गये और दोनों ने थोड़ी थोड़ी पी।

"यहाँ कुछ दिनों ठहरोगे भी?" ओलेनिन ने पूछा।

"नहीं, मैं तो यहाँ तुम सबसे विदा लेने आया हूँ। वे मुझे घेरे से हटाकर तेरेक पार की कम्पनी में भेज रहे हैं। आज रात मैं अपने साथी नजारका के साथ वहाँ जा रहा हूँ।"

"और विवाह कब हो रहा है?"

"सगाई के लिए मैं जल्दी लौट आऊँगा और फिर कम्पनी वापस चला जाऊँगा।" अनिच्छापूर्वक लुकाश्का ने जवाब दिया।

"और जिसके साथ सगाई हो रही है उससे नहीं मिलोगे?"

"देखा जायेगा – मिलने से फ़ायदा ही क्या? अगर कभी तुम्हारा अभियान पर आना हो तो हमारी कम्पनी में लुकाश्का करके पूछ लेना। वहाँ बहुत से सुअर हैं! दो मैंने भी मारे हैं। मैं तुम्हें ले चलूँगा।"

"ठीक है, नमस्कार! ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे।"

लुकाश्का घोड़े पर चढ़ गया और बिना मर्यान्का से मिले हुए ही खटपट करता सड़क पर वहाँ जा पहुँचा, जहाँ नज़ारका खड़ा उसका इन्तज़ार कर रहा था।

"मैं पूछता हूँ कि क्या इधर-उधर की कोई ख़बर नहीं लोगे?" यामका के घर की तरफ़ इशारा करते हुए नजारका बोला।

"क्यों नहीं," लुकाश्का बोला, "मेरा घोड़ा उसके पास ले जाओ। अगर मैं जल्दी न आऊँ तो उसे कुछ चारा डाल देना। सुबह होते ही मैं कम्पनी पहुँच जाऊँगा।"

"क्या कैडेट ने तुम्हें कोई दूसरी चीज़ नहीं दी?"

"मैंने एक कटार देकर उसका आभार चुका दिया। वह तो घोड़ा ही माँगने जा रहा था," घोड़े से उतरते और उसे नज़ारका को थमाते हुए लुकाश्का बोला।

वह तेजी से अहाते में घुस गया, ओलेनिन की खिड़की से होकर गुज़रा और कार्नेट के मकान की खिड़की तक पहुँच गया। इस समय बिल्कुल अंधेरा था और मर्यान्का अपना फ़्राक पहने बालों में कंघी कर रही थी। शायद सोने की तैयारी में थी।

"मैं हूँ, मैं," कज़्ज़ाक धीरे से बोला। मर्यान्का ने सिर घुमाया। उसकी नज़र में तीखापन था। परन्तु जैसे ही उसने लुकाश्का की बोली सुनी कि उसके चेहरे पर रौनक आ गई। उसने खिड़की खोली और बाहर झुकी। उसे प्रसन्नता भी हो रही थी और डर भी लग रहा था।

"क्या है, क्या चाहते हो?" उसने पूछा।

"दरवाज़ा खोलो!" लुकाश्का धीरे से बोला, "मुझे अन्दर आने दो एक मिनट के लिए। इन्तज़ार करते करते थक गया हूँ।"

उसने खिड़की में से उसका सिर पकड़ लिया और उसे चूम लिया। "सचमुच खोलो तो!"

"क्या बेवक़ूफ़ों जैसी बात कह रहे हो? कह तो दिया कि नहीं, क्या देर तक के लिए आये हो?"

उसने कोई उत्तर न दिया और बराबर उसे चूमता रहा। वह भी कुछ न बोली।

"यहाँ तो मैं खिड़की से तुम्हारी कमर में हाथ भी नहीं डाल सकता।"

"मर्यान्का बेटी!" उसकी माँ की ग्रावाज सुनाई दी, "वहाँ तुम्हारे साथ कौन है?"

लुकाश्का ने ग्रपनी टोपी उतार ली ताकि वह पहचाना न जा सके ग्रौर खिड़की के नीचे छिप गया।

"जाग्रो, जल्दी करो!" मर्यान्का धीरे से बोली।

"लुकाश्का ग्रा गया है," उसने जवाब दिया, "वह पिताजी को पूछ रहा है।"

"तो उसे यहाँ भेज दो!"

"वह चला गया, कहता था जल्दी में हूँ।"

वास्तव में लुकाश्का खिड़की के नीचे झुका हुग्रा लम्वे लम्वे डग भरता ग्रहाते से भाग चुका था, ग्रौर ग्रब यामका के मकान की तरफ़ जा रहा था। इस समय उसे सिवा ग्रोलेनिन के ग्रौर किसी ने भी न देखा। दो चापूर* चिखीर पी लेने के बाद वह ग्रौर नजारका चौकी की तरफ़ चले। रात्रि गर्म, ग्रंधेरी ग्रौर शान्त थी। दोनों मौन चले जा रहे थे। उन्हें सिवा ग्रपने घोड़ों की टापों के ग्रौर कुछ न सुन पड़ता था। लुकाश्का ने कज़्ज़ाक मिंगल के बारे में एक गाना शुरू कर दिया था, परन्तु पहला पद समाप्त करने के पूर्व ही वह रुका ग्रौर कुछ क्षण बाद नजारका की तरफ़ मुड़ते हुए बोला, "मैं कहता न था कि वह मुझे ग्रन्दर न ग्राने देगी!"

"ग्ररे?" नज़ारका ने कहा, "मैं जानता था वह न ग्राने देगी। मालूम है यामका ने मुझसे क्या कहा था? कहा था कि कैडेट उनके घर ग्राने-जाने लगा है। चचा येरोश्का कहते हैं कि कैडेट ने उन्हें एक बन्दूक़ दी है उसे मर्यान्का दिलाने के लिए।"

---

* चापूर—एक पात्र, जिसमें प्राय: ८ गिलास शराब ग्राती है—ग्रनु०

"बूढ़ा शैतान झूठ बोलता है!" लुकाश्का गुस्से में बोला, "वह वैसी लड़की नहीं है। अगर बूढ़ा अपनी हरकतें बन्द नहीं करेगा तो मुझे उसके कान गर्म करने पड़ेंगे।" और वह अपना प्रिय गान गाने लगा—

इज़माइलोवो गाँव एक था
    उसमें थी उपवन-शाला;
उड़ा बाज़ अपने पिंजड़े से
    रतनारी आँखोंवाला।
उसके पीछे युवक शिकारी
    घोड़े पर दौड़ा आया;
अपना हाथ बढ़ाकर उसने
    पक्षी के सम्मुख गाया—
"आओ बैठो बाज़!
    दाहने कर पर, तुम कहना मानो;
यदि तुम आए नहीं विनय सुन,
    तो फिर बस, इतना जानो।
निश्चय ही दे देगा सूली
    मुझे ज़ार यह ईसाई,
निश्चय ही दे देगा सूली।"
    कहा बाज़ ने—"हे भाई!
सोने के पिंजड़े में मेरा
    पालन क्या तुमने जाना?
और दाहने कर पर मेरा
    लालन क्या तुमने जाना?
उड़ जाऊँगा दूर—

नील सागर तक पंख पसारूँगा ;
उज्ज्वल राजहंस मैं अपने—
लिए वहाँ पर मारूँगा।
उसे मारकर मैं अपना
यह जीवन सफल बनाऊँगा ;
राजहंस का मधुर माँस मैं
खूब पेट भर खाऊँगा।"

२८

सगाई कार्नेट के घर हो रही थी। लुकाश्का गाँव तो लौट आया था परन्तु अभी तक ओलेनिन से मिलने नहीं गया था। यद्यपि ओलेनिन को आमंत्रित किया गया था फिर भी वह सगाई में शामिल नहीं हुआ था। आज वह जितना उदास था उतना इस कज्जाक गाँव में बसने के बाद से कभी न हुआ था। उसने सायंकाल लुकाश्का को अपने सर्वोत्तम वस्त्र पहने माँ के साथ जाते हुए देखा था। वह यह सोचकर परेशान हो रहा था कि लुकाश्का उसके प्रति उदासीन क्यों है। ओलेनिन ने दरवाज़ा बन्द कर लिया और अपनी डायरी में लिखने लगा—

"हाल ही में मैंने बहुत-सी बातों पर विचार किया है और मैं बहुत कुछ बदल गया हूँ," उसने लिखा, "अब मै 'कापी-बुक सिद्धान्त' पर आ गया हूँ। प्रसन्न रहने का एक तरीका है प्रेम करना, ऐसा प्रेम जिस में स्वार्थ की गंध न हो, हर व्यक्ति से प्रेम करना, हर चीज़ से प्रेम करना, चारों ओर प्रेम का जाल फैलाना और उन सब का स्वागत करना जो उसमें फंस जायें। इस प्रकार मैंने इस जाल में वन्यूशा, चचा येरोश्का, लुकाश्का और मर्यान्का को फंसा लिया है।"

ल्याम ल्याम

जैसे ही ओलेनिन ने यह वाक्य पूरा किया कि चचा येरोश्का कमरे में दाखिल हुआ।

येरोश्का इस समय बहुत प्रसन्न था। आज से कुछ पहले एक दिन शाम को ओलेनिन उससे मिलने गया था। उसने देखा था कि चचा येरोश्का खुश है और अहाते में बैठा एक छोटे-से चाकू से एक सुअर की खाल उतार रहा है। कुत्ते (जिनमें उसका प्रिय कुत्ता ल्याम भी एक था) उसके पास बैठे दुम हिला रहे थे और देख रहे थे कि वह कर क्या रहा है। छोटे छोटे बच्चे टट्टर के उस पार से उसे आदर से देख रहे थे और, अपने अभ्यास के प्रतिकूल, उसे तंग नहीं कर रहे थे। उसकी पड़ोसिनों ने, जो सामान्यतया उसके प्रति अधिक उदारता नहीं बरतती थी, उसका सत्कार किया—किसी ने उसे चिख़ीर का प्याला दिया, किसी ने क्रीम और किसी ने थोड़ा आटा। दूसरे दिन ख़ून के धब्बोंवाले कपड़े पहने चचा येरोश्का अपने गोदाम में बैठकर सुअर का गोश्त बाँटता दिखाई दिया। वह क़ीमत के रूप में किसी से कुछ शराब ले लेता और किसी से नक़द रुपया। उसके चेहरे से पता चलता था मानो कह रहा हो, "भगवान ने मुझे तक़दीरवाला बनाया है। मैंने एक सुअर मारा है। इसलिए अब मेरी भी क़द्र है।" इसका परिणाम यह हुआ था कि वह बराबर चार दिनों तक शराब पीता रहा। इस बीच उसने कभी अपना गाँव नहीं छोड़ा। इसके अलावा उसे सगाई के दिन भी पीने को मिली थी।

जब वह ओलेनिन के पास आया उस समय नशे में चूर था। मुँह लाल, दाढ़ी उलझी हुई और शरीर पर स्वर्ण-खचित काम की एक नई लाल बेश्मेत। वह अपने साथ एक बलालाइका (तितारा) भी लाया था जो उसे नदी के उस पार मिला था। उसने बहुत पहले ही ओलेनिन से वादा कर रखा था कि किसी दिन वह उसके लिए इसी प्रकार के मन-बहलाव की

व्यवस्था करेगा। और आज जब वह मूड में था तो उसने देखा कि ओलेनिन लिखने की धुन में मस्त है, और वह उदास हो गया।

"लिखे जाओ, लिखे जाओ, दोस्त," वह फुसफुसाया मानो सोच रहा हो कि उसके और कागज़ के बीच कोई आत्मा बैठी है। यह आत्मा डरकर कहीं भाग न जाय। वह चुपके से फ़र्श पर बैठ गया। जब चचा येरोश्का शराब की मस्ती में होता उस समय उसके बैठने की जगह फ़र्श ही हुआ करती। ओलेनिन ने चारों ओर देखा, शराब लाने का हुक्म दिया और लिखने में जुट गया। इस समय अकेले शराब पीना येरोश्का को हराम लग रहा था। वह बातें करना चाहता था।

"मैं कार्नेट के यहाँ सगाई में गया था। लेकिन वहाँ! सब सुअर के बच्चे हैं! मैं उन्हें देखना भी नहीं चाहता। तुम्हारे पास चला आया।"

"और यह बलालाइका कहाँ से झाड़ दिया?" ओलेनिन ने पूछा और फिर लिखने लगा।

"दोस्त, मैं नदी के उस पार गया था। इसे वहीं से लाया हूँ," उसने जवाब दिया और फिर धीरे से इतना और कहा, "मैं इस बाजे का उस्ताद हूँ। तातारी या कज़्ज़ाकी, भले आदमियोंवाला या सिपाहियाना जो भी गाना तुम्हें पसन्द हो सुना डालो। मैं हाज़िर हूँ।"

ओलेनिन ने उसकी ओर देखा, कुछ मुस्कराया और फिर लिखने लग गया।

उसकी मुस्कराहट से बूढ़े में भी जवानी आ गई।

"अरे यार, छोड़ो भी। मेरे साथ आओ!" कुछ दृढ़ता से एकाएक उसने कहा, "आओ भी! किसी ने तुम्हें चोट पहुँचाई है क्या? जाने भी दो उन्हें जहन्नुम में। उनपर ख़ुदा की मार! आओ! लिखना, लिखना, लिखना इससे क्या लाभ, क्या फ़ायदा?"

और वह अपनी मोटी अंगुलियों से फ़र्श को थपथपाकर ओलेनिन के लिखने की नक़ल करने और अपना मुँह बनाकर तिरस्कार सूचित करने लगा।

"क्यों लिखे जा रहे हो ये दुझौवलें? अरे खाओ, पियो, मौज करो और दिखा दो कि तुम भी मर्द हो!"

लिखे जानेवाले विषय के सम्बन्ध मे उसके दिमाग में एक ही विचार घूम रहा था—कोई क़ानूनी दाँवपेंच की बात और बस। ओलेनिन हँस पड़ा और येरोश्का भी। तभी फ़र्श पर छलाँग मारते हुए येरोश्का ने बलालाइका पर अपना कमाल दिखाना शुरू किया। वह तातारी गीत गाने लगा।

"अरे दोस्त, क्यों यह सब माथापच्ची कर रहे हो! छोड़ो भी! मै गाऊँ, तुम सुनो। मर जाओगे तो ये गाने कहाँ मिलेंगे। अभी मौक़ा है बहार लूट लो!"

पहले-पहल उसने एक स्वरचित गाना शुरू किया। साथ में वह नाचता भी जा रहा था।

आह, दी दी दी दी दी दी
खोजा उसे, कहाँ था जी?
वह तो हाट और मेलों में
पिनें बेचता-फिरता ही!

पहले जब कभी वह गाया करता था, उस समय उसने अपने एक भूतपूर्व सार्जेण्ट-मेजर दोस्त से यह गाना भी सीख लिया था—

सोमवार को कितने गहरे प्रेम-सिन्धु में डूबा!
मंगल के दिन ठंडी साँसें ले लेकर मैं ऊबा।

बुध के दिन मैंने बढ़ बढ़कर अपनी प्रीति बखानी।
प्रेम-पत्र की कठिन प्रतीक्षा गुरु के दिन ही जानी।
शुक्रवार को प्रेम-पत्र का मिला ज़रा अन्दाज़ा,
तब तक निकल चुका था आशाओं का हाय! जनाज़ा।
शनि का दिन आया तो मैंने वीरोचित प्रण ठाना,
बिखरा दूँगा पल भर में जीवन का ताना-बाना।
आया जब रविवार मुक्ति की गूँजी मीठी बोली,
प्रेम-व्रेम सब झूठ, अरे जी, मारो इसको गोली।

और फिर वह गाने लगा—

अह, दी दी दी दी दी दी
खोजा उसे, कहाँ था जी?

और उसके बाद आँख मारते हुए तथा कन्धे मटकाते फिर उसने अपनी तान छेड़ी—

लूँगा चुम्बन और तुम्हें
चिपटा लूँगा छाती से,
बाँधूँगा मैं तुम्हे
रेशमी रस्सी बलखाती से।
तुम्हें पुकारूँगा मैं मीठे
स्वर मे मेरी मैना।
झूठ नही, तुम सचमुच मुझसे
प्यार करोगी, है न?

गाते गाते वह इतना उत्तेजित हो उठा कि कमरे भर में नाचने लगा। "दी दी दी" जैसे भले आदमियोंवाले गाने उसने ओलेनिन के मन-

बहलाव के लिए गाये थे। परन्तु तीन गिलास चिखीर पी चुकने के बाद उसे पुराना ज़माना याद आया और उसने असली कज्ज़ाकी और तातारी गाने शुरू कर दिये। अपना एक प्रिय गाना गाते गाते उसकी आवाज़ एकाएक लड़खड़ाई और उसने गाना बन्द कर दिया। परन्तु, अपना तितारा टुनटुनाता रहा।

"अरे, प्यारे दोस्त!" उसने कहा।

उसकी आवाज़ में कुछ अजीब नयापन आ गया था। अब ओलेनिन ने चारों तरफ़ देखा। बूढ़ा रो रहा था। उसकी आँखों में आँसू भर चुके थे और बह भी रहे थे। "मेरी जवानी के दिन! तुम कहाँ हो! अब वे मीठे मीठे दिन क्यों लौटेंगे, क्यों लौटेंगे?" रोते और सिसकते हुए वह बोला। "पियो, पीते क्यों नहीं?" बिना आँसू पोंछे हुए कान फाड़ देनेवाली आवाज़ में वह चिल्लाया।

एक तातारी गाने ने उसे विशेष रूप से द्रवित कर दिया था। उसमें शब्द कम थे मगर करुणा से ओतप्रोत थे—"आई दाई दला लाई!" येरोश्का ने इस गाने के शब्दों का अनुवाद किया—"एक नवजवान औल से अपनी भेड़ें हँकाकर पहाड़ों पर ले गया। रूसी आये और उन्होंने औल में आग लगा दी। उन्होंने आदमियों को मार डाला और स्त्रियों को गुलाम बना लिया। नवजवान पहाड़ों से उतरा। जहाँ औल था अब वहाँ सब कुछ वीरान था—उसकी माँ का पता न था, उसके भाइयों का पता न था, उसके मकान का पता न था। सिर्फ़ एक पेड़ खड़ा रो रहा था। नवजवान उसी के नीचे बैठ गया और रोने लगा। 'तेरी ही तरह मैं भी ठूँठ हो गया हूँ—बिल्कुल अकेला, बिल्कुल निरीह।' और गाने लगा—आई दाई दला लाई!" और बूढ़े ने इस करुण गान को कई बार दुहराया।

गाना समाप्त कर चुकने के बाद येरोश्का सहसा उछल पड़ा। उसने दीवाल पर टँगी बन्दूक़ उतारी, भागता भागता अहाते में गया और हवा में गोलियाँ चलाने लगा। फिर उन्हीं करुण स्वरों में उसने 'आई दाई दला लाई' शुरू कर दिया। ख़ैर, किसी प्रकार गाना समाप्त हुआ।

ओलेनिन उसके पीछे पीछे भागा और जहाँ गोलियाँ छोड़ी गई थीं वहाँ उसने आसमान की तरफ़ देखा। कार्नेट के मकान में रोशनी थी और शोरगुल सुनाई पड़ रहा था। बन्दूक़ की आवाज़ सुनकर लड़कियाँ मकान के भीतर ही भीतर भागने-दौड़ने लगीं, कभी दालान की ओर दौड़तीं, कभी खिड़कियों की ओर, कभी इधर, कभी उधर। कुछ कज़्ज़ाक तेजी से मकान के बाहर निकल आये और गुल-गपाड़ा मचाने लगे, मानो यह चिल्चपों चचा येरोश्का के गाने और उसकी बन्दूक़ की आवाज़ की प्रतिध्वनि हो।

"तुम सगाई के उत्सव में क्यों नहीं गये?" ओलेनिन ने पूछा।

"उसकी चिन्ता न करो! परवाह मत करो।" बूढ़ा बड़बड़ाया। ऐसा लगता था कि उसे वहाँ होनेवाली किसी बात पर क्रोध आ रहा था। "मुझे वे पसन्द नहीं, बिल्कुल नहीं। वे लोग, हुँह! चलो घर वापस चलें! वे अपनी बहार लूटें, हम अपनी।"

और ओलेनिन अन्दर चला आया।

"और लुकाश्का? वह तो ख़ुश है? क्या वह मुझसे मिलने नहीं आयेगा?"

"लुकाश्का! लुकाश्का क्या? वे लोग उससे झूठ बोले हैं और उन्होंने कहा है कि मैं उस लड़की को तुम्हें दिलाना चाहता हूँ," बूढ़ा कहता गया, "लेकिन क्या लड़की है? अगर हम चाहें तो वह अब भी हमारी हो सकती है। काफ़ी रुपये की ज़रूरत है और फिर वह हमारी, हमारे बाप की! मैं उसे तुम्हारे लिए तय करूँगा। मेरा विश्वास करो, ज़रूर करूँगा।"

"नहीं चचा, अगर वह मुझसे प्रेम नहीं करती तो रुपया कुछ नहीं कर सकता! अच्छा हो अगर तुम ऐसी बातें न करो!"

"वे हमें, यानी मुझे और तुम्हें, प्यार नहीं करते। हम अनाथ हैं," एकाएक चचा येरोश्का बोला और फिर चिल्लाने लगा।

बूढ़े की बात सुनकर ओलेनिन ने भी शराब चढ़ाई और इस समय रोज से अधिक पी गया। "मेरा लुकाश्का खुश है," उसने सोचा। फिर भी वह दुखी हो रहा था। उस दिन बूढ़े ने इतनी अधिक पी रखी थी कि फ़र्श पर ही लोट गया और वन्यूशा को अपनी मदद के लिए सिपाही बुलवाने पड़े। जब वे उसे घसीटकर बाहर लिये जा रहे थे तो वन्यूशा को उबकाइयाँ आ रही थीं और वह बराबर थूके जा रहा था। वह बूढ़े के इस बुरे व्यवहार से इतना क्रुद्ध था कि फ़्रेंच में गाली देना भी भूल गया।

२६

अगस्त का महीना था। पिछले कई दिनों से आसमान में एक बादल तक न दिखाई दिया था। धूप में असह्य जलन थी। इन दिनों प्रातःकाल से ही गर्म हवा चलनी आरम्भ हो जाती और रेत के टीलों और सड़कों से होकर चलनेवाली बालू की झंझाएँ पेड़, पौधों और गाँवों को मिट्टी से ढक देतीं।

घास और पेड़ों की पत्तियों पर धूल ही धूल छा गई थी। सड़कों और लवण-पंकों पर भी उसकी तहें बिछी हुई थीं और जब उनपर होकर कोई चलता तो किर्र किर्र की विचित्र आवाज़ सुनाई पड़ने लगती। तेरेक में पानी बहुत पहले ही कम हो गया था, और खाइयों में भी धीरे धीरे सूखता जा रहा था। गाँव के पासवाले पोखरे के लसलसे तटों पर मवेशी घूमते, और प्रायः सारे दिन पानी की छपाक छपाक और नहाते हुए

लड़के-लड़कियों की चीख-पुकार सुनाई देती। स्टेपी के रेत के टीले और पेड़-पौधे सूख रहे थे। मवेशी दिन में डकरते हुए खेतों में भाग जाया करते। बन-पशु दूरस्थ नरकटों के जंगलों में तथा तेरेक के पार की पहाड़ियों पर भाग गये थे। मच्छड़-मक्खियों के झुंड गाँवों और निचली भूमि में मंडराने लगे थे। पर्वत-शिखर भूरे रंग के कोहरे से आच्छादित हो गये थे। हवा झिरझिरी और हल्की हो गई थी। कहा जाता था कि अब्रेकों ने छिछली नदी पार कर ली है और वे इस ओर आने लगे हैं। हर दिन सायंकाल जब सूर्यास्त होता तो आसमान में लालिमा छा जाती। यह समय वर्ष भर का सबसे व्यस्त समय था। ग्राम निवासी खरबूज़ों के खेतों और अंगूरों के उद्यानों में आ चुके थे जिनमें प्राय: सभी जगह हरियाली थी और चारों ओर शीतल छाया। हर तरफ़ पके हुए, बड़े बड़े और काले रंग के अंगूरों के गुच्छे बेलों में से लटकते दिखाई पड़ते। अंगूरों से लदी-फँदी गाड़ियाँ चर्र-मर्र करती हुई उद्यानों से होकर धूलभरी सड़कों पर चलती दिखाई देतीं। कभी कभी कुछ गुच्छे ज़मीन पर गिर पड़ने के कारण पहियों से दब जाते और सड़कों पर अपना रस बिखेर देते। लड़के लड़कियाँ हाथों और मुँहों में अंगूर भरे अपनी माताओं के पीछे पीछे दौड़ा करते। सड़कों पर फटे-हाल मजदूर मज़बूत कंधों पर अंगूरों की बाल्टी रखे आते-जाते रहते। और कज्ज़ाक लड़कियाँ मुखों पर आँखों तक रूमाल लपेटे फलों से लदी बैलगाड़ियाँ हाँकती दिखाई पड़तीं। कभी कभी रास्ता चलते सिपाही उनसे अंगूरों की माँग करते और वे बिना गाड़ी रोके मुट्ठी मुट्ठी भर अंगूर उनके कोटों के दामन में फेंक देतीं। कहीं कहीं अंगूरों का रस भी निचोड़ा जाने लगा था। वहाँ निचुड़े हुए अंगूरों की सुगंध सारे वातावरण को सुरभित करती रहती। अहातों के ओसारों में बड़ी बड़ी नाँदों में रस निकाला जाता। नगई मजदूर अपने अपने पतलून घुटनों तक मोड़े इस कार्य में लगे रहते और उनके पैर रस से सराबोर रहते। आस-पास खड़े हुए सुअर

निचुड़े हुए अंगूरों की ताक में लगे रहते और मौक़ा मिलते ही उन्हें चर जाते। मकानों की चौरस छतों पर अंगूरों के काले-काले गुच्छे धूप में सुखाये जाने के लिए फैला दिये जाते। कौवे तथा अन्य पक्षी छतों के चारों ओर मंडराते रहते और मौक़ा मिलने पर अपनी अपनी चोंचों में गुच्छे लटकाये उड़ जाया करते।

साल भर की घोर मेहनत के कारण जो फल उगे थे अब उनका संग्रह किया जा रहा था। इस वर्ष अंगूर की फ़स्ल असाधारण रूप से अच्छी और अधिक हुई थी। अंगूरों के उद्यानों में, उनकी लताओं की छाया में, चारों ओर स्त्रियों के क़हक़हे और हँसी, तानें और गाने, हर्ष और आह्लाद की धुनें सुनाई पड़तीं और उनकी चमकदार पोशाकों की झाँकी दूर से ही दिखाई दे जाती।

ठीक दोपहर के समय मर्यान्का अपने परिवार के एक अंगूर-उद्यान म नाशपाती के पेड़ की छाया में खड़ी एक खुली गाड़ी के नीचे से अपना खाना निकाल रही थी। उसके ठीक सामने, घोड़े को ओढ़ाया जानेवाला कपड़ा बिछाये कार्नेट बैठा था (वह अभी स्कूल से लौटा था) और एक छोटे-से लोटे में से पानी उड़ेल उड़ेलकर हाथ धो रहा था। मर्यान्का का छोटा भाई पोखरे से नहाकर भागता हुआ सीधा यहीं आ गया था। वह हाँप रहा था और अपनी चौड़ी चौड़ी आस्तीनों से मुँह पोंछकर खाने की फ़िराक़ में अपनी माँ और बहन को घूर रहा था। बूढ़ी माँ आस्तीनें चढ़ाये एक नीची गोल तातारी मेज़ पर अंगूर, सुखाई हुई मछली, क्रीम और रोटी क़रीने से लगा रही थी। कार्नेट ने हाथ पोंछकर टोपी उतारी और सलीब का निशान बनाकर मेज़ पर जम गया। लड़के ने लोटा उठाया और मुँह से लगा लिया। माँ और बेटी घुटने समेटकर मेज़ पर बैठ गईं। छाया में भी असह्य गर्मी थी। सारे उद्यान में एक अरुचिकर गंध फैल रही थी और यद्यपि उद्यान में इधर-उधर लगे हुए आड़ू, नाशपाती और शहतूत के वृक्षों को झकझोरती

हुई तेज गर्म हवा बह रही थी, फिर भी वहाँ शीतलता का नामोनिशान न था। कार्नेट ने एक और सलीब बनाकर चिखीर का गिलास उठाया, जो अंगूर की पत्ती से ढका हुआ उसके ठीक पीछे रखा था, और उसे पी गया। बाद में गिलास उसने बूढ़ी को थमा दिया। वह केवल एक कुर्ता पहने था जो गले के पास खुला था और जिससे उसका गठीला सीना दिखाई पड़ रहा था। इस समय वह खुश था, और न तो उसके रुख से और न शब्दों से ही उसके उस चातुर्य का पता चलता था जिसका वह अभ्यस्त था। वह प्रसन्नचित और स्वाभाविक मुद्रा में था।

"क्या हम आज रात सायबान का अपना काम पूरा कर लेंगे?" भीगी हुई दाढ़ी पोंछते हुए कार्नेट ने पूछा।

"ज़रूर पूरा कर लेंगे," पत्नी ने उत्तर दिया, "अगर केवल मौसम बाधा न पहुँचाये। डेमकिनों ने तो अभी आधा काम भी नहीं पूरा किया," उसने कहा, "उस्तेन्का अकेली ही काम कर रही है। बेचारी थक गई होगी।"

"उनसे और क्या आशा की जाय?" बूढ़े ने गर्व से कहा।

"प्यारी मर्यान्का, यह लो, तुम भी पी लो," बूढ़ी ने गिलास लड़की की ओर बढ़ाते हुए कहा, "ईश्वर ने चाहा तो शादी की दावत के लिए हमारे पास काफ़ी पैसा हो जायेगा।"

"अभी फ़िलहाल कहाँ से हो जायेगा," भौंहें चढ़ाते हुए कार्नेट बोला। लड़की ने सिर नीचा कर लिया।

"तो हम इसकी बात भी न करें? क्यों?" बूढ़ी बोली, "बात पक्की हो चुकी है और वक़्त नजदीक आता जा रहा है।"

"दूर के पुल अभी न बाँधो," कार्नेट ने कहा, "अभी हमें इस फ़स्ल से ही निपटना है"।

"क्या तुमने लुकाश्का का नया घोड़ा देखा?" बूढ़ी ने पूछा, "दिमीत्री अन्द्रेइच ने उसे जो घोड़ा दिया था वह चला गया। लुकाश्का ने उसे दूसरे से बदल लिया।"

"नहीं, मैंने नहीं देखा। आज मैंने उसके नौकर से बात की थी," कार्नेट बोला, "और उसने बताया कि उसके मालिक को फिर एक हज़ार रूबल मिले हैं।"

"दौलत में गोते लगा रहा है और क्या," बूढ़ी बोली।

सारा परिवार खुश था, सन्तुष्ट था। काम ठीक ठीक चल रहा था। इस वर्ष अंगूर अधिक थे और अच्छे थे जिसकी उन्होंने आशा भी न की थी।

खा-पी चुकने के बाद मर्यान्का ने बैलों के सामने कुछ घास डाली, बेशमेत की तह लगाकर उसका तकिया बनाया और गाड़ी के नीचे दबी-दबाई घास पर पड़ रही। उसके सिर पर रेशम का एक रूमाल था और शरीर पर एक नीली फ्राक। फिर भी गर्मी उससे बर्दाश्त नहीं हो रही थी। उसका चेहरा तप रहा था और वह समझ न पा रही थी कि अपने पैर कहाँ रखे? उसकी आँखें नींद और थकान से भारी हो रही थीं। उसके ओठ बार बार खुल जाते और वह भारी और गहरी साँसें लेने लगती।

लगभग पन्द्रह दिन पूर्व से ही वर्ष का व्यस्त कार्य आरम्भ हो चुका था और लड़की को लगातार भारी श्रम करना पड़ रहा था। प्रातःकाल वह उठ पडती, ठंडे पानी से हाथ मुँह धोती, शाल ओढ़ती और फिर नंगे पैर मवेशियों को देखने-भालने निकल जाती। फिर जल्दी जल्दी जूते पहनती, शरीर पर बेशमेत डालती, रोटियों की पिटारी हाथ में लेती, बैलों को गाड़ी में जोतती और दिन भर के लिए उन्हें उद्यान की ओर हाँक देती। वहाँ वह अंगूर तोड़ती और पिटारियों में भर भरकर रखा करती। बीच में आराम के लिए वह एक घण्टा निकाल लेती। सायंकाल वह एक लम्बे चाबुक से बैलों को हाँकती हुई गाँव लौट जाती। इस समय उसके चेहरे पर चमक

होती, थकान के चिन्ह नहीं। मवेशियों का सानी-भूसा कर चुकने के बाद वह अपनी फ़ाक की चौड़ी आस्तीन में कुछ सूरजमुखी के बीज भरती और सड़क के एक कोने पर निकल जाती। वहाँ वह उन्हें फोड़ फोड़कर खाती हुई दूसरी लड़कियों से हँसी-मज़ाक़ कर लिया करती। धुंधलका होते ही वह घर लौट आती और अपने माता-पिता और भाई के साथ भोजन कर लेने के बाद स्वस्थ और निश्चिन्त भीतर चली जाती और अंगीठी के ऊपर की टाँड़ पर बैठकर ऊँघती हुई अपने किरायेदार की बातें सुना करती थी। और जब वह चला जाता तो कूदकर बिस्तरे पर आ धमकती और सबेरे तक खुर्राटे लेती रहती। इस प्रकार दिन बीतते गये, मास बीतते गये। सगाई के दिन के बाद से फिर उसने लुकाश्का को नहीं देखा, परन्तु शान्ति के साथ वह विवाह की बाट अवश्य जोह रही थी। वह अपने किरायेदार की बातों की अभ्यस्त हो चुकी थी और उसकी आसक्त निगाहों में डूबने-उतराने लगी थी।

३०

गर्मी कड़ाके की पड़ रही थी। गाड़ी के नीचे की थोड़ी शीतल जगह में ढेरों मच्छड़ भनभना रहे थे। फिर भी मर्यान्का अपने सिर पर रूमाल डाले मस्त सो रही थी। उसके साथ ही उसका छोटा भाई भी सोया था जो लुढ़क-पुढ़क कर उसे ठेल रहा था। एकाएक उसकी पड़ोसिन उस्तेन्का दौड़ती हुई आई और गाड़ी के नीचे लेटी हुई मर्यान्का के पास पड़ रही।

"सोती रहो, लड़कियो, सोती रहो!" गाड़ी के नीचे आराम से लेटते हुए वह बोली। "ज़रा ठहरो," उसने कहा, "ऐसे न चलेगा!" और भागती हुई गई, कुछ हरी हरी टहनियाँ तोड़ लाई, उन्हें गाड़ी के दोनों पहियों में खोंसा और उनपर अपना बेशमेत टाँग दिया।

"मुझे भी सोने दो," गाड़ी के भीतर फिर से घुसती हुई उस्तेन्का ने वहाँ लेटे हुए उस छोटे-से बच्चे से कुछ ऊँची आवाज में कहा, "क्या लड़कियों के साथ सोने के लिए कज्ज़ाक को यही जगह मिली है! भाग यहाँ से!" और जब वह गाड़ी के नीचे अपनी सहेली के साथ अकेली रह गई तो सहसा उसने उसे अपनी दोनों बांहों में भर कर उसके गालों और गले को चूमना शुरू कर दिया।

"प्यारी, प्यारी!" मधुर हँसी और मुस्कराहट की लहरों के बीच वह कहती जा रही थी।

"क्यों, तुमने यह सब 'दादा' से सीख लिया है। इतनी जल्दी," कुड़मुड़ाते हुए मर्यान्का बोली, "यह तमाशा अब बन्द भी करो!"

और दोनों इतने जोर से हँस पड़ीं कि मर्यान्का की माँ उन्हें चुप कराने के लिए वहीं से उनपर चिल्ला उठी।

"तुम्हें ईर्ष्या हो रही है? है न?" फुसफुसाते हुए उस्तेन्का ने पूछा।

"फ़िज़ूल की बात! अच्छा, अब सोने दो। तुम आई किस लिए?"

परन्तु उस्तेन्का के हाथ न रुके, "अभी तुम्हें बताऊँगी किस लिए आई हूँ, थोड़ा ठहरो!"

मर्यान्का अपनी कुहनियों पर उल्टी लेट गई और अपना रूमाल सम्हालने लगी।

"हाँ, अब बताओ क्या बात है?"

"मैं तुम्हारे किरायेदार के बारे में कुछ बातें जानती हूँ!"

"जाननेवाली कोई बात भी हो?" मर्यान्का बोली।

"तू बड़ी चुड़ैल है!" कोहनी कोंचती और हँसती हुई उस्तेन्का बोली, "बतायेगी नहीं। वह तेरे पास आता है?"

"आता है। तो इससे क्या?" मर्यान्का बोली और लजा गई।

"देखो, मैं एक सीधी-सादी लड़की हूँ। सारी बात खुले ख़ज़ाने कह देती हूँ। मुझे बनने की क्या ज़रूरत?" उस्तेन्का ने कहा और उसका खिला हुआ गुलाबी चेहरा सहसा उदास हो गया, "मैं किसी को कोई नुक़सान नहीं पहुँचती, है न? मैं उसे प्यार करती हूँ। बस उसके बारे में यही कहना है।"

"तुम्हारा मतलब 'दादा' से है?"

"हाँ।"

"लेकिन यह तो पाप है।"

"आह मर्यान्का! लड़की जब आजाद रहती है अगर उस समय उसने मौज-बहार न लूटी तो कब लूटेगी? जब मैं किसी कज्ज़ाक के पल्ले बंध जाऊँगी तो बच्चे होंगे और होंगी मेरी चिन्ताएं। क्यों, जब लुकाश्का से ब्याह कर लोगी तो मौज-मज़े की बात भी तुम्हारे दिमाग़ में न चढ़ेगी। सिर्फ़ बच्चे होंगे, सिर्फ़ काम होगा!"

"क्यों? बहुत-सी तो हैं जो ब्याह के बाद मज़े में ज़िन्दगी बिता रही हैं। क्या फ़र्क पड़ता है!" मर्यान्का ने शान्तिपूर्वक उत्तर दिया।

"बस मुझे यह बता दो कि तुम्हारे और लुकाश्का के बीच क्या क्या हो चुका है?"

"क्या क्या हो चुका है? क्या माने? उसने विवाह का प्रस्ताव रखा। पिता जी ने एक साल टाल दिया। लेकिन अब बात तय हो गई है। और वे शरद ऋतु में विवाह करने आयेंगे।"

"लेकिन उसने तुमसे कहा क्या?"

मर्यान्का मुस्करा दी।

"क्या कहेगा बेचारा? कहा कि 'मैं तुम्हें प्यार करता हूँ। मेरे साथ अंगूर के बाग़ में चलो।'"

"और तुम नहीं गईं! गई कि नहीं? और अब वहादुर कितना हो गया है। गाँव भर को उसपर गर्व है। फ़ौज में भी मज़े लूटता है। उस दिन हमारा किरका घर आया था। कितना बढ़िया घोड़ा है लुकाश्का के पास–उसने कहा था। मैं समझती हूँ वह तुमपर भी जान देता है। ख़ैर, तो और उसने क्या क्या कहा?"

"सभी बता दूँ?" हँसती हुई मर्यान्का बोली, "एक रात वह मेरी खिड़की के पास आया। कुछ शराब के नशे में था। उसने मुझसे ज़िद की कि मैं उसे अन्दर आने दूँ।"

"और तुमने नहीं आने दिया?"

"आन देती! क्या कहने! मैं जो बात एक बार कह देती हूँ फिर उसे निभाती हूं, उसपर अड़ जाती हूँ चट्टान की तरह," मर्यान्का ने गम्भीरता से उत्तर दिया।

"लेकिन वह तो बहुत अच्छा आदमी है। किसी लड़की की तरफ़ निगाह भी उठा दे तो वह इन्कार न करे।"

"ख़ैर जिसके पास जाना चाहे जाये," गर्व से मर्यान्का ने उत्तर दिया।

"तुम्हें दुख नहीं होगा?"

"होगा। परन्तु मैं कोई वदतमीज़ी नहीं बरदाश्त कर सकती। यह ग़लत बात है!"

उस्तेन्का ने सहसा अपना सिर अपनी सखी की छाती पर रख दिया, उसे कसकर पकड़ लिया और हँसते हुए झकझोर डाला। "बेवक़ूफ़ कहीं की!" एक साँस में वह कह गई, "तू खुश होना नहीं चाहती।" और मर्यान्का को गुदगुदाने लगी।

"मुझे छोड़ भी मगी!" कराह भरी हँसी हँसते हुए मर्यान्का बोली।

"इन चुड़ैलों की बात सुनो! हवा में उड़ रही हैं! अभी तक थकीं नहीं क्या!" गाड़ी पर से ऊँघती हुई बूढ़ी की आवाज़ आई।

"तुम खुश रहना नहीं चाहतीं," कुछ उठती हुई धीरे से उस्तेन्का बोली। "लेकिन तुम तक़दीरवाली हो! सभी तुम्हें कितना प्यार करते हैं। तुम कटीली हो फिर भी वे प्यार करते हैं। अगर मैं तुम्हारी जगह होती तो अब तक मैंने तुम्हारे किरायेदार का दिमाग़ फिरा दिया होता। जब तुम मेरे यहाँ आई थीं उस समय मैंने उसे अच्छी तरह देखा था। ऐसा लगता था कि तुम्हें आँखों ही आँखों में पी जायेगा। 'दादा' ने मुझे बहुत कुछ दिया है और लोग कहते हैं कि 'तुम्हारा वह' तो रूसियों में सबसे धनी है। उसका अर्दली कहता है कि उसके अपने ग़ुलाम ढेरों हैं।"

मर्यान्का उठी और एक क्षण कुछ सोचने-विचारने के बाद मुस्करा दी।

"तुम्हें मालूम है एक बार उसने मुझसे क्या कहा था?" घास का एक टुकड़ा दाँत से चबाते हुए वह बोली, "उसने कहा था, 'मैं चाहता हूँ कि लुकाश्का या तुम्हारे भाई लजुतका की तरह मैं भी कज़्ज़ाक हो जाऊँ।' उसका मतलब क्या था कुछ समझ में आया?"

"अरे उसके दिमाग़ में जो पहली बात आई होगी उसने कह मारी होगी," उस्तेन्का ने जवाब दिया, "मेरे 'वह' क्या क्या नहीं कहते! जैसे पागल हों।"

मर्यान्का ने मोड़ी हुई वेशमेत पर सिर रख दिया, बाँहें उस्तेन्का के कन्धे पर डाल दीं, और उसकी आँखें बन्द कर दीं। "आज वह अंगूर के बाग़ में आकर काम करना चाहता था। पिता जी ने भी हाँ कर दी," थोड़ी देर तक मौन रहने के बाद वह बोली। फिर सो गई।

३१

सूर्य निकल चुका था और उसकी किरणें नाशपाती के वृक्ष की (जिसकी साया में गाड़ी खड़ी हुई थी) शाखाओं और उस्तेन्का द्वारा पहियों में खोंसी हुई टहनियों में से होकर सोती हुई लड़कियों के चेहरों पर पड़ीं। मर्यान्का जग उठी और अपने मुँह पर रूमाल लपेटने लगी। उसने नाशपाती के वृक्ष के उस ओर देखा और अपने किरायेदार को पिता से बातें करते पाया। उसकी बन्दूक़ उसके कन्धे पर रखी थी। उसने उस्तेन्का को चिकोटी भरी और मुस्कराते हुए उसकी ओर इशारा किया।

"मैं कल गया था, लेकिन कुछ भी हाथ न लगा," ओलेनिन बोला। वह बेचैन-सा इधर-उधर देख रहा था। शाखाओं में से वह मर्यान्का को न देख सका।

"तुम्हें उधर, उस दिशा में जाना चाहिए। वहाँ एक अंगूर का बाग़ है जो काम में नहीं आ रहा है। कहते हैं कि वह ऊसर ज़मीन है। वहाँ हमेशा ख़रगोश मिला करते हैं," बातचीत का ढंग बदलते हुए कार्नेट बोला।

"ऐसे काम के मौक़ों पर ख़रगोश की तलाश में मारे मारे फिरना कितना अच्छा लगेगा! अरे भाई यहीं क्यों न रहो और लड़कियों के साथ काम करके हमारी मदद करो," बूढ़ी मस्ती में आकर बोली, "अरी छोकरियो, उठो, चलो काम पर जुट जाओ," वह वहीं से चिल्लाई।

मर्यान्का और उस्तेन्का गाड़ी के नीचे बैठी कानाफूसी कर रही थीं। उनकी हँसी रोके न रुक रही थी।

चूँकि इस समय तक यह बात अच्छी तरह फैल चुकी थी कि

ओलेनिन ने लुकाश्का को पचास रूबल का घोड़ा मुफ़्त दे दिया है, इसलिए उसके मेज़बानों ने उसके प्रति और भी सौजन्य प्रदर्शित करना आरम्भ कर दिया। कार्नेट यह देखकर बड़ा खुश हुआ कि उसकी पुत्री की दोस्ती ओलेनिन से बढ़ती जा रही है।

"लेकिन मुझे यह तो मालूम ही नहीं कि ये सब काम किये कैसे हैं?" ओलेनिन ने उत्तर दिया। उसने हरी शाखाओं में से उस गाड़ी के नीचे देखने का प्रयत्न नहीं किया, जहाँ उसे मर्यान्का की नीली फ़्राक और लाल रूमाल की झलक मिल गई थी।

"आओ, तुम्हें कुछ आड़ू दूँगी," बूढ़ी बोली।

"अतिथि-सत्कार कज़्ज़ाकों की पुरानी प्रथा है। मेरी बुढ़िया कुछ बेवक़ूफ़-सी है," कार्नेट ने कहा। वह अपनी पत्नी के शब्दों का अर्थ समझाने और साथ ही उन्हें शुद्ध रूप देने का प्रयत्न कर रहा था। "मैं समझता हूँ रूस में आप लोग आड़ू नहीं शायद अनन्नास का जैम या मुरब्बा ही पसन्द करते होंगे।"

"तो तुम्हारा कहना है कि खरगोश अंगूर के उस बाग़ में मिलेंगे जो इस्तेमाल में नहीं आ रहा है?" ओलेनिन ने पूछा, "मैं वहाँ जाऊँगा।" और हरी शाखाओं पर एक सरसरी नज़र डालते हुए उसने अपनी टोपी उठाई तथा अंगूर की हरी हरी लताओं में होता हुआ आँखों से ओझल हो गया।

जिस समय ओलेनिन अपने मेज़बान के बाग़ में लौटा, उस समय सूर्य बाग़ के बाड़े के पीछे डूबता हुआ दिखाई पड़ रहा था और उसकी हल्की किरणें हरी हरी पत्तियों पर पड़ रही थीं। हवा कम हो गई थी और चारों ओर ताज़गी ही ताज़गी दिखाई दे रही थी। ओलेनिन ने दूर से ही अंगूर की लताओं के बीच खड़ी हुई मर्यान्का की नीली फ़्राक देखी, और रास्ते में अंगूर चुनता चुनता उसके पास तक पहुँच गया। उसका

थका-मांदा कुत्ता आगे आगे जा रहा था और नीचे लटकते हुए अंगूर के गुच्छे तोड़ तोड़कर मुँह में रख रहा था। मर्यान्का काम में व्यस्त थी और जल्दी जल्दी बड़े गुच्छों को काट काटकर एक टोकरी में भरती जा रही थी। उसकी आस्तीनें मुड़ी हुई थीं और रूमाल खिसककर ठुड्डी के नीचे आ गया था। जिस लता को वह पकड़े थी उसे छोड़े बिना वह वहीं रुक गई और कुछ मुस्कराकर फिर अपने काम में लग गई। ओलेनिन और भी निकट आ गया। अब उसने बन्दूक पीठ पर डाल ली ताकि हाथ खाली हो जाय। "दूसरे लोग कहाँ है? ईश्वर तुम्हारी सहायता करे! अकेली हो क्या?" उसने कहना चाहा लेकिन कहा नहीं और चुपचाप अपनी टोपी कुछ ऊपर उठा दी। मर्यान्का के सामने अकेले पड़ने पर उसे कुछ उलझन-सी होने लगती, लेकिन फिर भी जैसे जान-बूझकर अपने को जलाने के लिए वह उसके पास तक चला ही आया।

"इस तरह बन्दूक डालकर तो तुम औरतों पर गोली ही चला दोगे," मर्यान्का बोली।

"नहीं, मैं उन्हें गोली से नहीं उड़ाऊँगा।"

दोनों चुप हो गये, लेकिन एक ही क्षण बाद वह फिर कहने लगी, "तुम्हें मेरी मदद करनी चाहिए।"

उसने अपना चाकू निकाला और चुपचाप गुच्छे काटने लगा। पत्तियों के नीचे हाथ डालते हुए उसने एक बड़ा-सा गुच्छा काट लिया। गुच्छे का वजन लगभग तीन पौंड था। इसके अंगूर इतने पास पास थे कि जगह न होने के कारण एक दूसरे को पिचकाए दे रहे थे। उसने गुच्छा मर्यान्का को दिखाया।

"ये सब काट लिये जायें क्या? गुच्छा बहुत कच्चा तो नहीं?"

"मुझे दीजिये।"

दोनों के हाथों ने एक दूसरे का स्पर्श किया। ओलेनिन ने उसका हाथ अपने हाथ में ले लिया और वह मुस्कराती हुई उसकी ओर देखती रही।

"क्या जल्दी ही तुम्हारी शादी होनेवाली है?"

मर्यान्का ने कोई जवाब न दिया और चुपचाप बिना मुस्कराए एक ओर घूम गई।

"तुम लुकाश्का से प्रेम करती हो?"

"आप से मतलब?"

"मैं ईर्ष्या करता हूँ।"

"ज़रूर करते होगे!"

"नहीं, सचमुच तुम बहुत सुन्दर हो!" और एकाएक उसे अपने कहे हुए शब्दों पर पश्चात्ताप हुआ। उसे ऐसा लगा कि वे उपयुक्त नहीं थे। वह कुछ लज्जित हुआ। शायद उसका मन उसके बस में न रह गया था। उसने उसके दोनों हाथ पकड़ लिये।

"मैं जैसी भी हूँ, तुम्हारे लिए नहीं हूँ। क्यों मेरा मज़ाक़ उड़ाते हो?" मर्यान्का बोली। लेकिन उसकी आँखों से पता चलता था कि वह अच्छी तरह समझ रही है कि ओलेनिन उसका मज़ाक़ नहीं उड़ा रहा है।

"मज़ाक़ उड़ाना? अगर तुम यही जानती होतीं कि मैं कैसे..."

ये शब्द भी उसे जंच नहीं रहे थे, क्योंकि जो कुछ वह अनुभव कर रहा था उसे वे ठीक ठीक व्यक्त नहीं कर पा रहे थे। फिर भी वह कहता ही गया। "मैं नहीं जानता कि मैंने तुम्हारे लिए क्या न किया होता..."

"मुझे अकेली छोड दो!" परन्तु उसका चेहरा, उसकी चमकती हुई आँखे, उसके उभरते हुए उरोज, और उसकी सुडौल जंघाएँ कुछ दूसरी ही बात कह रही थी। ओलेनिन को ऐसा लगा कि जो कुछ मैंने कहा है वह कितनी तुच्छ बात है। लेकिन वह तो इनसे परे थी। वह बहुत पहले से ही जानती थी कि मै क्या कहना चाहता हूँ। फिर भी मै उससे कहने में असमर्थ था। हाँ, वह सुनना चाहती थी कि मै उससे यह सारी बाते कैसे कहूँगा। "चूँकि मै उससे सिर्फ यही कहना चाहता हूँ कि वह क्या है क्या नही, इसलिए वह जान तो जरूर लेगी? परन्तु वह समझना नही चाहती, जवाब देना नही चाहती," उसने सोचा।

"हलो!" लताओ के पीछे से उस्तेन्का की तेज आवाज सुनाई दी और फिर उसकी मधुर हँसी।

"आइये और मेरी मदद कीजिये, दिमीत्री अन्द्रेइच। मै बिल्कुल अकेली हूँ," अंगूर की लताओ में अपना सिर डालते हुए वह बोली।

ओलेनिन ने कोई उत्तर न दिया, और न वह अपनी जगह से ही हिला।

मर्यान्का गुच्छे काटती गई परन्तु बराबर ओलेनिन की ओर देखती रही। वह कुछ कहना चाहता था, मगर रुक गया। उसने अपने कन्धे उचकाये, बन्दूक की पेटी संभाली और तेजी से बाग के बाहर निकल गया।

३२

वह दो एक बार रुका और उसे मर्यान्का तथा उस्तेन्का की गूंजती हुई हँसी सुनाई दी। दोनों ही इस समय साथ साथ किसी बात पर हँस रही थी, चीख-चिल्ला रही थी। ओलेनिन ने सारी शाम जंगल मे

शिकार खेलते खेलते बिताई। झुटपुटा होते होते वह खाली हाथ घर लौटा। जैसे ही उसने अहाता पार किया कि उसे बाहरी कमरे का दरवाज़ा खुला हुआ दिखाई दिया। उसनें वहाँ नीली फ़्राक की झलक फिर देखी। उसने ज़ोरों से वन्यूशा को आवाज़ दी ताकि दूसरों को भी मालूम हो जाय कि वह आ गया है और फिर दालान में उस जगह जाकर जम गया जहाँ हमेशा बैठा करता था। उसके मेज़बान अंगूर के बाग़ से वापस आ चुके थे और अपने घर में चले गये थे। हाँ उन्होंने ओलेनिन को ज़रूर नहीं बुलाया था। मर्यान्का दो बार फाटक से बाहर भी गई थी। एक बार झुटपुटे में तो उसे ऐसा लगा कि वह उसकी ओर देख रही है। उत्सुक नेत्रों से वह उसकी प्रत्येक गतिविधि देखता रहा परन्तु उस तक पहुँच जाने का निश्चय न कर सका। जब वह घर के भीतर चली गई तो ओलेनिन भी अहाते में इधर-उधर चहलक़दमी करने लगा। उसके कान अपने मेज़बान के घर से आती हुई प्रत्येक आवाज़ सुनने में लगे हुए थे। उसने शाम के समय मेज़बानों को बातचीत करते, खाना खाते, बिस्तर निकालते और सोने के लिए जाते हुए सुना। उसने मर्यान्का को किसी बात पर हँसते सुना और फिर धीरे धीरे सब कुछ शान्त हो गया।

कार्नेट और उसकी पत्नी थोड़ी देर तक फुसफुसाती रही और किसी के साँस लेने की आवाज़ सुनाई देती रही। ओलेनिन अपने घर वापस गया और देखा कि वन्यूशा कपड़े पहने ही सो गया है। ओलेनिन को उसपर ईर्ष्या हो रही थी। वह फिर अहाते में चहलक़दमी के लिए निकल गया। वह वहाँ किसी आशा में गया था, परन्तु न कोई आया, न कोई हिला-डुला। उसे केवल तीन व्यक्तियों की चलती हुई साँसें सुनाई दे रही थीं। वह मर्यान्का की साँस तक से परिचित हो चुका था और उसे तथा अपने धड़कते हुए हृदय को बराबर सुनता जा रहा था।

गाँव में सब कुछ शान्त था। चन्द्रमा देर से निकला था। जब उसकी चाँदनी में गहरी साँस लेते हुए पशु धीरे से उठ खड़े होते या बैठते तो उन्हें भली भाँति देखा जा सकता था। "मैं यहाँ क्या चाहता हूँ?" ओलेनिन ने क्रोध में आकर मन ही मन प्रश्न किया परन्तु फिर भी वह रात्रि की मोहकता के प्रति आँखें न बन्द कर सका। सहसा उसे लगा कि उसने अपने मेज़बान के घर का फ़र्श चरमराते हुए सुना और किसी के पैरों की आहट उसके कानों में पड़ी। वह दरवाज़े की ओर दौड़ा। आवाज़ बन्द हो चुकी थी। अब फिर वही साँसें सुनाई पड़ रही थीं। अहाते में भैंस कुड़मुड़ाई, उसने अपने पैर फटकारे, पूँछ समेटी और सूखी मटमैली ज़मीन पर धप्प से आकर कुछ गिर पड़ा। अब वह चाँदनी रात में फिर लेट गई। ओलेनिन ने सोचा, "मुझे क्या करना चाहिये?" और जाकर सो रहने का निश्चय किया। लेकिन उसने फिर आवाज़ें सुनीं और उसकी कल्पना के समक्ष चाँदनी रात में आती हुई मर्यान्का का चित्र घूम गया। वह एक बार फिर उसकी खिड़की के पास दौड़ा गया और फिर उसे पैर की चापों की आवाज़ सुनाई दी। तड़का होने से कुछ ही पहले वह उसकी खिड़की के पास फिर गया, सिटकिनी दबाई और दरवाज़े तक पहुँच गया, लेकिन इस बार उसे सचमुच मर्यान्का के पैरों की आहट सुन पड़ी। उसने सिटकिनी पकड़ी और दरवाज़ा खटखटाया। कोई चुपचाप दरवाज़े की ओर बढ़ रहा था—शायद नंगे पैर, धीरे धीरे। सिटकिनी चट्ट से बोली, दरवाज़ा चरमराया और उसकी नाक में सुगंधित कुठार और कद्दू की हल्की सुगंधि भर गई। मर्यान्का दरवाज़े के पास आती हुई दिखाई दी। उसने उसे चाँदनी रात में केवल एक क्षण के लिए ही देखा था। उसने आकर दरवाज़ा बन्द कर लिया और उल्टे पाँव लौट गई। ओलेनिन धीरे धीरे खटखटाता रहा परन्तु उसे कोई उत्तर न मिला। वह खिड़की तक

दौड़ा गया और कान लगाकर सुनने लगा। सहसा वह किसी आदमी की तेज़ आवाज़ सुनकर चौंक पड़ा।

"बहुत अच्छे!" सफ़ेद टोपी पहने हुए एक कज़्ज़ाक बोला। वह अहाता पार करके ओलेनिन के पास आ चुका था। "मैंने सब कुछ देख लिया है... बहुत अच्छे!"

ओलेनिन ने नज़ारका को पहचान लिया और चुप हो गया। उसे समझ में ही न आ रहा था कि क्या करे, क्या कहे।

"बहुत अच्छे! मैं जाऊँगा और दफ़्तरवालों से कहूँगा। और उसके बाप से भी बता दूँगा। वह एक अच्छे कार्नेट की बेटी है। किसी ऐरे-ग़ैरे के लिए नहीं।"

"तुम मुझसे क्या चाहते हो, क्यों मेरे पीछे पड़े हो?" ओलेनिन बोला।

"कुछ नहीं! जो कुछ मुझे कहना है दफ़्तर में कहूँगा।"

नज़ारका ज़ोर ज़ोर से बोल रहा था और ऐसा वह जान-बूझकर कर रहा था। उसने यह भी तुर्रा कसा, "बड़े चतुर कैडेट हो, ओ हो।"

ओलेनिन काँप गया और पीला पड़ गया। "इधर आओ। इधर!"

उसने कज़्ज़ाक का हाथ पकड़ लिया और उसे अपने घर तक खींच ले गया। "कुछ भी नहीं हुआ। उसने मुझे अन्दर आने ही नहीं दिया। और मैं भी उसे कोई नुक़सान थोड़े ही पहुँचाना चाहता था। वह तो बड़ी अच्छी लड़की है..."

"हमसे इससे कुछ मतलब नहीं..."

"फिर भी मैं तुम्हें कुछ दूँगा। ज़रा इन्तज़ार करना!"

नज़ारका कुछ न बोला। ओलेनिन दौड़ा हुआ भीतर गया और अन्दर से दस रूबल लेता आया। उसने कज़्ज़ाक को वे रूबल थमा दिये।

"बात कुछ भी नहीं हुई फिर भी दोष मेरा ही था। इसीलिए तुम्हें यह दे रहा हूँ। भगवान के लिए यह बात किसी को न मालूम हो, क्योंकि कोई भी बात नहीं हुई..."

"जियो प्यारे," हँसते हुए नज़ारका बोला और वहाँ से खिसक गया।

उस रात नज़ारका लुकाश्का के कहने से गाँव में आया था। उसे एक चोरी का घोड़ा रखने के लिए कहीं कोई जगह खोजनी थी। घर जाते समय वह इसी रास्ते से होकर गुज़रा था कि उसे किसी के पैरों की चाप सुनाई दी थी। जब वह अगले दिन लौटकर अपनी कम्पनी में आया तो उसने अपने दोस्त से डींग मारते हुए कहा कि देखो किस चालाकी से दस रूबल ऐंठ लाया हूँ।

अगले दिन प्रातःकाल ओलेनिन अपने मेज़बानों से मिला। उन्हें रात की घटना का कोई भी हाल न मालूम था। वह मर्यान्का से नहीं बोला। लेकिन जब उसने ओलेनिन को देखा तो थोड़ा हँस ज़रूर दी। अगली रात भी ओलेनिन ने बिना सोये काट दी और अहाते में इधर-उधर बेकार घूमता रहा। दूसरा दिन उसने किसी प्रकार शिकार में बिताया और शाम के समय मन बहलाने के लिए बेलेत्स्की के यहाँ चला गया। उसे स्वयं अपनी ही अनुभूतियों से डर लगा रहा था, इसलिए उसने मन ही मन निश्चय कर डाला कि अब से अपने मेज़बान के घर न जाऊंगा।

अगले दिन रात को सार्जेन्ट-मेजर ने आकर उसे जगाया। उसकी कम्पनी को तुरन्त हमला करने के लिए चल पड़ने के आदेश हुए थे।

ओलेनिन प्रसन्न था कि शीघ्र ही उसे चल देना होगा। उसने सोच लिया था कि अब फिर वह गाँव कभी न लौटेगा।

आक्रमण चार दिनों तक चलता रहा। कमांडर ओलेनिन का सम्बन्धी था। उसने ओलेनिन से मिलने की इच्छा प्रकट की और उसे प्रधान कार्यालय में सहकारियों के साथ रखने का प्रस्ताव किया, परन्तु इसे

ओलेनिन ने अस्वीकार कर दिया। उसने अनुभव किया कि वह गाँव से दूर नहीं रह सकता और इसीलिए उसने अपने वापस भेज दिये जाने का अनुरोध किया। आक्रमण में भाग लेने के कारण उसे सैनिक पदक मिला था जिसे प्राप्त करने की उसे बड़ी लालसा थी। अब वह पदक के प्रति भी उदासीन था और अपनी तरक़्क़ी के प्रति भी। तरक़्क़ी के आदेश उसे अभी तक प्राप्त नहीं हुए थे, हाँ होनेवाले ज़रूर थे।

वन्यूशा को साथ लेकर वह कम्पनी के आने के कई घण्टे पहले ही वापस घेरे में चला आया। रास्ते में कोई दुर्घटना नहीं हुई। सारी शाम उसने दालान में बैठे बैठे मर्यान्का को देखते रहने में ही बिता दी और फिर निरुद्देश्य सारी रात अहाते में चहलक़दमी करता रहा।

३३

जब वह दूसरे दिन जागा तो काफ़ी देर हो चुकी थी। उसके मेज़बान घर पर न थे। वह शिकार खेलने भी न गया। उसने एक पुस्तक उठाई और दालान में चला गया, मगर थोड़ी ही देर बाद फिर घर के भीतर पलंग पर पड़ रहा। वन्यूशा ने सोचा मालिक बीमार हैं।

शाम होते होते वह उठ गया। उसने लिखने का दृढ़ निश्चय कर लिया था और देर तक लिखता ही रहा। उसने एक पत्र लिखा परन्तु उसे डाक में नहीं डाला क्योंकि उसने समझा कि जो कुछ वह कहना चाहता है उसे कोई समझ न सकेगा। और फिर यह कोई ज़रूरी न था कि उसके अलावा दूसरे उसे समझें ही।

पत्र इस प्रकार था—

"रूस से मुझे समवेदना-पत्र मिला करते हैं। लोग डरते हैं कि मै मर जाऊँगा और इन्हीं जंगलों मे कहीं दफ़ना दिया जाऊँगा। मेरे बारे में वे कहते है 'वह रूखे स्वभाव का हो जायेगा, हर बात में ज़माने से दो क़दम पीछे रहेगा, पीना शुरू कर देगा और कौन जाने कि किसी कज्ज़ाक लड़की से ब्याह ही कर ले!' जनरल येरमोलोव की यह घोषणा निरुद्देश्य नहीं थी कि 'दस साल तक काकेशिया में काम करनेवाला कोई भी व्यक्ति या तो इतनी पीने लगता है कि मर ही जाता है या किसी दुश्चरित्रा से शादी कर लेता है।' कितनी भयानक बात है! सचमुच जब मैं काउण्टेस ब··· का पति बन सकता हूँ, कोर्ट चैम्बरलेन बन सकता हूं या अपने ज़िले के मरेशाल दे नोबलेस बन सकता हूँ और जिन्दगी के मज़े लूट सकता हूँ तो अपने को तबाह कर डालना मेरे लिए उचित नहीं। ओफ़, आप सब मुझे कितने उपेक्षणीय और दयनीय दीख पड़ते है। मुझे आप पर तरस आता है। आप नहीं जानते कि ज़िन्दगी क्या है, ज़िन्दगी का आनन्द क्या है! ज़रूरी तो यह है कि एक बार आप भी जीवन के समस्त प्राकृतिक सौन्दर्य का अनुभव करें! आप भी वही देखें जो मै देखता हूँ—हिमावृत अगम्य पर्वत शिखर, और प्रागैतिहासिक सुन्दरता से ओतप्रोत एक गरिमा-मण्डित महिला, जिसमें विश्वनियंता ने स्त्री के रूप में अपनी प्रथम रचना प्रस्तुत की होगी। यह अनुभव हो जाने के बाद ही पता चलेगा कि कौन अपने को बर्बाद कर रहा है, कौन वास्तविक या मिथ्या जीवन व्यतीत कर रहा है—आप या मैं? काश आप जान पाते कि आप अपनी भ्रान्तियों में कितने घृणित और कितने दयनीय हैं। जब मैं अपनी इस झोंपड़ी, अपने प्रेम-व्यापार और अपने वन-उपवन के स्थान पर उन सजी-सजायी बैठकों, अंगरागयुक्त कृत्रिम घुंघराले बालोंवाली उन तितलियों की कल्पना करता हूँ, जिनके ओठ तक रंगे होते हैं, जिनके अंग-प्रत्यंग कमजोर होते हैं, कुरूप होते हैं, बनावटी होते हैं

और कल्पना करता हूँ बैठकों की उन 'सभ्यतासूचक अनिवार्य बातचीतों' की जो किसी 'नाम' तक की अधिकारिणी नहीं हैं, तो मैं सहम उठता हूँ, और मेरे भीतर इन सबके प्रति विद्रोह की भावना उभर आती है। और जब मैं उन चौड़े और स्थूल मुखमण्डलवाली धनी सुन्दरियों का ध्यान करता हूँ जिनकी दृष्टि यह कहती हुई सुनाई पड़ती है कि 'ठीक है अमीर हूँ सही पर तुम मेरे पास आओ, और पास आओ'—और फिर बार बार एक ही सीट पर पहले एक तरह फिर दूसरी तरह बैठना, फुदकना, बेशर्मी के साथ जोड़-तोड़ बिठाना, बेकार की गपशप, बनना-बिगड़ना और फिर वे क़ायदे-क़ानून—किसके साथ हाथ मिलाना चाहिए, किसे देखकर केवल सिर हिलाना चाहिए, किससे सिर्फ़ बातचीत करना चाहिए (और यह सब जान-बूझकर और इस विश्वास के साथ किया जाता है कि यह सब जरूरी है), पीढ़ियों दर पीढ़ियों से लगातार ख़ून के साथ चली आती हुई उबास और थकावट... उफ़ मेरा तो दम घुटने जाता है। यदि आप लोग सिर्फ़ एक ही बात समझने और विश्वास करने की कोशिश करें और वह यह कि सत्य क्या है, सौन्दर्य क्या है तो इस समय आप जो कुछ कहते हैं या सोचते हैं और मेरे बारे में आप जो धारणाएँ निश्चित करते हैं वे सब धूल में मिल जायेंगी!

"सच्चा आनन्द क्या है—प्रकृति के साथ रहो, नेत्रों से उसका पान करो और उससे बातें करो। मैं लोगों को यह कल्पना करते सोच सकता हूँ कि 'वह एक साधारण कज़्ज़ाक औरत से विवाह कर सकता है (भगवान न करे कि ऐसा हो) और फिर सामाजिक दृष्टि से खो जा सकता है।' मैं कल्पना कर सकता हूँ कि वे मेरे बारे में पूरी ईमानदारी और सहानुभूति के साथ सोचते विचारते हैं। फिर भी मैं आपके अर्थ में सचमुच 'खो जाना' चाहता हूँ। मैं कज़्ज़ाक स्त्री से विवाह अवश्य

करना चाहता हूँ पर मुझमें वैसी हिम्मत नहीं क्योंकि वह परमानन्द की ऐसी अवस्था होगी जिसका मैं पात्र भी नहीं हूँ।

"तीन महीने पूर्व मैंने एक कज़्ज़ाक स्त्री मर्यान्का को पहले पहल देखा था। उस समय मेरे दिमाग़ में उस दुनिया के विचार और पूर्वद्वेष ताज़े थे जिसे मैं छोड़ चुका था। उस समय मैं यह सोच भी नहीं सकता था कि मैं इस स्त्री को कभी प्यार भी कर सकता हूँ। मुझे उसका सौन्दर्य देखकर प्रसन्नता होती थी, सन्तोष होता था ठीक वैसा ही जैसा यहाँ के पर्वत-शिखरों और आसमान को देखकर होता है क्योंकि वह भी इनके समान ही सुन्दर है। मैंने यह अनुभव किया कि उसके सौन्दर्य की एक झलक मेरे जीवन की आवश्यकता बन गई और मैं अपने से यह प्रश्न करने लगा कि क्या मैं उसे प्यार नहीं करता? परन्तु मुझे अपने में उस प्रेम जैसी कोई चीज़ न दिखाई दी जिसकी मैंने कल्पना की थी। मेरे प्रेम का प्रादुर्भाव एकाकीपन की व्यग्रता, अथवा विवाहाकांक्षा अथवा निष्कामता के कारण नहीं हुआ था और न वह इन्द्रियोपभोग के लिए ही था। मैं उसकी बातें सुनता रहना चाहता हूँ और यह अनुभव करता रहना चाहता हूँ कि वह मेरे बिल्कुल पास है और यदि मैं प्रसन्न न भी रहूँ तो भी कम से कम मुझे शान्ति तो मिलती है।

"एक दिन शाम की बैठक के समय जब मैं उससे मिला था और मैंने उसका स्पर्श किया था उस समय मुझे लगा था कि मेरे और उस स्त्री के बीच एक ऐसा अकाट्य बंधन है जिसे मैं तोड़ नहीं सकता, जिसके विरुद्ध कोई संघर्ष नहीं किया जा सकता। फिर भी मैंने संघर्ष किया। मैंने अपने आपसे प्रश्न किया, 'क्या किसी ऐसी स्त्री से प्यार करना सम्भव है जो कभी भी मेरे हितों को न समझ सकेगी? क्या केवल सुन्दरता के लिये किसी स्त्री को, किसी मूर्ति को, प्यार करना सम्भव है?' किन्तु मैं उससे प्रेम करने लगा था यद्यपि मुझे अभी तक अपनी अनुभूतियों पर विश्वास न था।

"उस सायंकाल के पश्चात्, जब मैंने पहले पहल उससे बातचीत की थी, हमारे सम्बन्धों में परिवर्तन हुआ था। उसके पहले वह मेरे लिए बाह्य प्रकृति की दूरस्थ अपितु गरिमामयी वस्तु थी। परन्तु उसके बाद से उसने मानव का रूप धारण कर लिया। मैं उससे मिलने लगा, उससे बातचीत करने लगा, कभी कभी उसके पिता के लिए काम करने लगा और उन लोगों के साथ सारी की सारी शामें बिताने लगा। और इस निकट के सम्पर्क में भी वह मेरी नज़रों में शुद्ध, अप्राप्य और महिमा-मण्डित ही बनी रही। मेरे प्रति उसका बर्ताव सदैव शान्त और मधुर उपेक्षा का बना रहा। कभी कभी वह मित्रवत् व्यवहार करती, परन्तु सामान्यतया उसकी प्रत्येक दृष्टि, प्रत्येक शब्द और प्रत्येक गति से इस उपेक्षा का परिचय मिलता, तिरस्कार या घृणा का नहीं। उसका व्यवहार ऐसा था कि मैं मंत्रमुग्ध रह जाता। प्रत्येक दिन अपने ओठों पर कृत्रिम मुस्कान लेकर मैं अपना पार्ट अदा करता और हृदय में कामनाओं और आकांक्षाओं का तूफ़ान लिये उससे हँसी-मज़ाक़ के लहजे में बातें करता। उसने देखा कि मै विचलित हो रहा हूँ, परन्तु फिर भी वह मुझे सदय और प्रफुल्ल दृष्टि से ही देखती। यह स्थिति भी असह्य हो उठी। मैं उसे धोखा नहीं देना चाहता था परन्तु यह बता देना चाहता था कि उसके बारे में मैं क्या समझता हूँ, क्या अनुभव करता हूँ। उस समय मैं बहुत अस्थिर और अशान्त हो गया था। हम लोग अंगूर के बाग में थे जब मैंने उससे उन शब्दों में अपना प्रेम प्रकट करना शुरू किया जिन्हें याद कर अब मुझे शर्म आती है। मुझे शर्म इसलिए आती है कि मुझे उससे इस प्रकार बात नहीं करनी चाहिए थी क्योंकि उसका स्थान इन शब्दों और उनसे व्यक्त होने वाली अनुभूतियों से कहीं ऊपर था। मैं चुप तो रह गया परन्तु उस दिन से मेरी स्थिति बड़ी असह्य हो उठी। मैं नहीं चाहता था कि अपने क्षुद्र सम्बन्ध बराबर क़ायम रखते हुए मैं स्वयं अपना

अनादर करूँ। साथ ही मैंने यह भी अनुभव कर लिया था कि मैं अभी तक उसके साथ सीधे और सरल सम्बन्ध नहीं स्थापित कर सका। निराश होकर मैंने अपने से प्रश्न किया, 'मुझे क्या करना चाहिए?' अपने मूर्खतापूर्ण स्वप्नों में कभी मैं उसे अपनी स्वामिनी और कभी पत्नी मान बैठता। परन्तु मैंने ये दोनों ही विचार छोड़ दिये। उसे विलासिनी बनाना मेरी कल्पना से परे था। यह तो उसकी हत्या हुई, हत्या। और उसे एक *अच्छी महिला*, दिमीत्री अन्द्रेयेविच ओलेनिन की पत्नी का—उस कज़्ज़ाक स्त्री की भाँति जिसने हमारे ही एक अफ़सर के साथ विवाह कर लिया है—रूप देना तो और भी बुरा है। और क्या मैं लुकाश्का की तरह का कज़्ज़ाक बन जाऊँ, घोड़े चुराया करूँ, चिख़ीर पीकर नशे में भद्दे भद्दे गीत गाया करूँ, लोगों को मौत के घाट उतारा करूँ और नशे में चूर उसकी खिड़की में से भीतर घुसकर रात भर ऐश किया करूँ बिना यह सोचे-विचारे कि मैं कौन हूँ, क्या हूँ; तब तो बात ही और है। तब हम एक दूसरे को समझ सकेंगे और शायद तब मुझे खुशी होगी।

"मैंने उस तरह का जीवन बिताने का भी प्रयत्न किया परन्तु मुझे सदा अपनी कमजोरियों और कृत्रिमता का ध्यान बना रहता। उस समय न मैं अपने को ही भूल सका न अपने विकृत विगत जीवन को ही। भविष्य तो मुझे और भी नैराश्यपूर्ण लगता है। प्रति दिन मैं दूर तक फैले हुए हिमावृत पहाड़ों और इस महिमामयी और प्रसन्नचित्त स्त्री को देखता हूँ परन्तु दुनिया में केवल मेरे लिए ही खुशी सम्भव नहीं। मैं इस स्त्री को नहीं पा सकता। सब से भयानक और सब से विचित्र बात तो यह है कि मैं अनुभव करता हूँ कि मैं उसे समझता हूँ, लेकिन वह मुझे कभी नहीं समझेगी इसलिए नहीं कि वह मुझसे हीन है; उल्टे, उसे मुझे समझना भी न चाहिए। वह सुखी है, वह प्रकृति के समान है—

समरूप, स्थिर, आत्मभरित। और मैं, एक कमज़ोर और कुरूप व्यक्ति, चाहता हूँ कि वह मेरी कुरूपता, मेरी पीड़ाएँ समझें। मैं रात रात भर नहीं सोया हूँ लेकिन उसकी खिड़की के नीचे निरुद्देश्य बैठे बैठे रातें ज़रूर बिताई हैं। मुझे क्या हो रहा था यह मैं स्वयं भी नहीं जानता।

"१८ तारीख को हमारी कम्पनी ने एक आक्रमण के लिए कूच किया और मुझे गाँव से बाहर तीन दिन बिताने पड़े। मैं दुखी था, निरुत्साह था। उस समय मुझे वहाँ के गाने, ताश, शराब के दौर, और रेजीमेंट में पुरस्कारों की बातचीत आदि भी अप्रिय लगती थी। कल मैं घर लौट आया हूँ, और मैंने उसे, अपने घर को, चचा येरोश्का को और सामने फैले हुए हिमावृत शिखरों को फिर से देखा है। मुझे हर्ष की इतनी अधिक अनुभूति हुई कि मैंने बहुत कुछ ज्ञान प्राप्त कर लिया। मैं इस स्त्री को प्यार करता हूँ और यह अनुभव करता हूँ कि एक बार सिर्फ़ एक बार मैंने अपने जीवन में सच्चा प्रेम किया है। मैं जानता हूँ कि मुझ पर क्या क्या बीत चुकी है। इस अनुभूति से अनादृत होने का भी मुझे भय नहीं। मुझे अपने प्रेम पर शर्म नहीं आती, गर्व होता है। मैं प्यार करता हूँ यह मेरा दोष नहीं। यह तो मेरी इच्छा के विरुद्ध हुआ है। मैंने आत्म-परित्याग द्वारा इस प्रेम से छुटकारा पाना चाहा था और कज्जाक लुकाश्का और मर्यान्का के प्रेम से ही खुश होने का उपक्रम किया था, परन्तु इससे मेरा प्रेम, मेरी ईर्ष्या ही भड़की। यह वह आदर्श, वह तथाकथित उदार प्रेम नहीं जिसकी मैंने बहुत पहले कल्पना की थी, यह उस प्रकार का बंधन नहीं जिसमें आप अपने ही प्रेम की प्रशंसा करते हैं और यह अनुभव करते हैं कि आपकी भावना का स्रोत स्वयं आपके भीतर है, और इसीलिए आप स्वयं ही सब कुछ करते हैं। मैंने उसका भी अनुभव किया है। वह आनन्दोपभोग की इच्छा नहीं, कुछ दूसरी ही चीज़ है। शायद उसके रूप में मैं प्रकृति से प्रेम करता हूँ

क्योंकि वह उस सबकी साकार प्रतिमा है जिसे प्रकृति का सौन्दर्य कहते हैं। फिर भी मैं स्वतः अपनी इच्छा से काम नहीं करता, कोई तात्त्विक शक्ति मेरे माध्यम से प्रेम करती है। ईश्वर की समस्त रचना, सारी की सारी प्रकृति मेरी आत्मा में इस प्रेम की सृष्टि करती है और कहती है, 'उसे प्यार करो'। और मैं अपने मस्तिष्क से नहीं अपनी कल्पना से नहीं, अपने सम्पूर्ण अस्तित्व से उसे प्यार करता हूँ। उसे प्यार करते हुए मुझे लगता है कि मैं उस परमपिता द्वारा सृजित विश्व के आनन्दरूप का एक आवश्यक अंश हूँ।

"मैं उन नवीन विश्वासों के बारे में पहले लिख चुका हूँ जिन्होंने मेरे एकाकी जीवन में प्रवेश किया था। परन्तु कोई नहीं जानता कि उन्होंने मेरे अन्तस् में जो रूप स्थिर किया वह कैसे किया और उनका अनुभव करने में मुझे कितनी प्रसन्नता हुई। मैंने अपने सामने जीवन का एक नया द्वार खुलते हुए देखा। इन विश्वासों से बढ़कर मुझे कोई भी चीज़ प्यारी न थी। और अब... अब प्रेम का पदार्पण हुआ है और इस समय न तो वे विश्वास ही रह गये हैं और न उनके लिए पश्चात्ताप ही।

"मेरे लिए यह यक़ीन करना कठिन है कि मैं इस एकांगी, निरुत्साहित और भावुक मानसिक स्थिति का मूल्यांकन कर सका था। सौन्दर्य के प्रादुर्भाव के साथ ही साथ अन्तस् में उठनेवाले द्वन्द्वों का भी समूल नाश हुआ और जो कुछ लोप हो चुका है उसके लिए मुझे अब कोई पश्चात्ताप नहीं रह गया। आत्म-परित्याग ढकोसला है, बेवक़ूफ़ी है। यह एक गर्व है, विषाद से बचने का आश्रय-स्थल और दूसरों की प्रसन्नता पर होनेवाली ईर्ष्या से मुक्ति पाने का मार्ग। 'दूसरों के लिए जियो, उपकार करो,'—क्यों?—जब मेरी आत्मा में सिर्फ़ अपने लिए प्रेम है और उससे प्रेम करने की आकांक्षा है और उसके साथ उसी का जीवन

बसर करने की उत्कंठा है। अब मुझे आनन्दोपभोग की इच्छा है लुकाश्का के लिए नहीं, दूसरों के लिए भी नहीं। मै उन दूसरों को प्यार नहीं करता। पहले ही मुझे अपने आपसे कह देना चाहिए था कि यह सब ग़लत है। मुझे इन प्रश्नों से ही अपनी प्रतारणा करनी चाहिए थी, 'उसका क्या होगा, मेरा क्या होगा, लुकाश्का का क्या होगा?' अब मुझे इन सब की कोई चिन्ता नहीं। मैं स्वतः अपनी इच्छा से नहीं रह रहा हूँ। मेरे अहम् से भी प्रबल कोई दूसरी चीज़ है जो मुझे रास्ता दिखाती है। मैं अब भी पीड़ा सहन कर रहा हूँ। पहले मैं मृत था और सिर्फ़ अब जीवित हूँ। आज मैं उसके घर जाऊँगा और अपना हृदय उसके सामने खोल दूँगा।"

३४

पत्र लिख लेने के बाद, अधिक शाम बीते ओलेनिन अपने मेज़बानों के घर गया। बूढ़ी अंगीठी के पीछे एक बेंच पर बैठी हुई रेशम के कीड़ों से धागा उतार रही थी। मर्यान्का का सिर खुला था और वह मोमबत्ती की रोशनी में बैठी सिलाई कर रही थी। ओलेनिन पर निगाह पड़ते ही वह उछल पड़ी और रूमाल लेकर अंगीठी की तरफ़ भागी।

"प्यारी मर्यान्का," माँ बोली, "थोड़ी देर हम लोगों के पास न बैठेगी क्या?"

"नहीं, मेरा सिर खुला है," उसने जवाब दिया और कूदकर अंगीठी की टाँड़ पर चढ़ गई।

ओलेनिन को केवल उसका एक घुटना और अंगीठी की टाँड़ से लटकते हुए उसके सुन्दर पैर ही दिखाई पड़ रहे थे। ओलेनिन ने बूढ़ी को चाय दी और बूढ़ी ने ओलेनिन के लिए मर्यान्का से मलाई लाने को कहा।

मर्यान्का ने एक प्लेट मलाई लाकर मेज़ पर रख दी और फिर अंगीठी पर चढ़कर बैठ गई। अब ओलेनिन को लगा कि वह उसे बराबर देखे ही जा रही है। वे पारिवारिक मामलों के विषय में बातचीत कर रहे थे। श्रीमती उलित्का को अतिथि-सत्कार में आनन्द आ रहा था। वह ओलेनिन के लिए अंगूर लाई, अंगूर से बने स्वादिष्ट पदार्थ लाई, अच्छी से अच्छी शराब लाई और उससे खाने की ज़िद करने लगी। उसके अतिथि-सत्कार में ग्राम-समाज की वह भावना प्रकट हो रही थी जो केवल उन्हीं लोगों में देखने को मिलती है जो स्वयं मेहनत करके धनोपार्जन करते और गृहस्थी चलाते हैं।

यही बूढ़ी, जिसने पहले पहल अपने रूखे व्यवहार से ओलेनिन को स्तब्ध कर दिया था, अब उसके साथ उसी मृदुता से व्यवहार करती जैसे कि अपनी पुत्री के साथ किया करती थी।

"हाँ हमें शिकवा-शिकायतें करके ईश्वर को अप्रसन्न नहीं करना है। उसकी कृपा से हमारे पास हर चीज़ है, और काफ़ी है। हमने बहुत-सी चिखीर निकाली और रख ली है। अंगूर के चार-पाँच कनस्तर बेच लेने के बाद भी हमारे पास पीने भर के लिए बहुत बच रहेगी। कहीं हमारे पास से जल्दी जाने की कोशिश न करने लगना। शादी के समय हम सब मज़े उड़ायेंगे।"

"और शादी कब होगी?" ओलेनिन ने पूछा। ऐसा लगता था कि शरीर भर का ख़ून उसके चेहरे पर चढ़ गया है। उसका हृदय ज़ोरों से धक धक कर रहा था। उसने सुना कि अंगीठी पर कोई हिल-डुल रहा है, और फिर बीजफोड़ने की आवाज़ उसके कान में पड़ी।

"तुम्हें मालूम नहीं? विवाह अगले हफ़्ते ही तो है। हमारा इन्तज़ाम पूरा है," बूढ़ी ने यह बात इतने धीरे और इतनी सुगमता से कही जैसे ओलेनिन वहाँ हो ही नहीं, "मैंने मर्यान्का के लिए

भी सारी चीज़ें तैयार कर ली हैं। हम उसका क़ायदे से विवाह करेंगे। सिर्फ़ एक ही बात है जो जरा ठीक नहीं लगती। पता चला है कि इधर पिछले कुछ दिनों से लुकाश्का की आदतें बिगड़ने लगी हैं। वह बहुत ही बिगड़ गया है। तरह तरह की तिकड़में करने लगा है। अभी उसी दिन उसकी कम्पनी का एक कज्ज़ाक आया था और उसने बताया था कि लुकाश्का नगई गया हुआ है।"

"उसे ध्यान रखना चाहिए कि कहीं वह पकड़ न जाय," ओलेनिन ने कहा।

"हाँ, यही तो मैं भी उससे कहती रही हूँ, 'बात मानो लुकाश्का, बुरी हरकतें मत अख़्तयार करो। मानती हूँ, जवान आदमी कभी कभी उमंग में आकर कुछ कर ही बैठना चाहता है, परन्तु हर चीज़ का मौक़ा होता है। मान लो तुमने किसी को पकड़ ही लिया, कुछ चुरा ही लिया या किसी अब्रेक को ही मार डाला, तो क्या होगा। तुम अच्छे आदमी हो, मैं जानती हूँ। परन्तु अब तुम्हें चाहिए कि ठीक से काम करो, जम कर बैठो, वरना तकलीफ़ उठाओगे'।"

"हाँ मैं उससे एक दो बार डिविज़न में मिला हूँ। हमेशा खुराफ़ातों में लगा रहता था। उसने दूसरा घोड़ा बेच डाला है," ओलेनिन बोला और अंगीठी की तरफ़ निगाह दौड़ाई।

दो बड़ी बड़ी काली आँखें उसकी ओर कठोरता और शत्रुता से घूर रही थीं।

वह जो कुछ कह चुका था उसके लिए उसे शर्म आई।

"इससे क्या। वह किसी का कुछ बिगाड़ता तो नहीं," मर्यान्का एकाएक कह उठी, "वह खुराफ़ात करता है तो अपने पैसे से करता है।" और अंगीठी से नीचे कूदकर भाग गई और दरवाज़ा बन्द कर लिया।

ओलेनिन की आँखें बराबर उस समय तक उसके पीछे पीछे लगी रहीं जब तक वह घर के भीतर रही। फिर उसने दरवाज़े की तरफ़ देखा और इन्तज़ार किया। श्रीमती उलित्का जो कुछ कहती जा रही थी उसका एक लफ़्ज़ भी उसके पल्ले नहीं पड़ रहा था।

कुछ क्षणों बाद कुछ लोग और आ गये—एक बूढ़ा, श्रीमती उलित्का का भाई, चचा येरोश्का और उनके पीछे पीछे मर्यान्का और उस्तेन्का।

"नमस्कार," उस्तेन्का बोली, "अभी तक छुट्टी पर है?" वह ओलेनिन की ओर मुड़ी।

"हाँ, अभी तक छुट्टी पर हूँ," उसने जवाब दिया और उसे शर्म आ गई और घबड़ाहट होने लगी। क्यों? कारण वह स्वयं न जानता था।

वह चला जाना चाहता था परन्तु नहीं जा सका। चुप रहना भी उसके लिए असम्भव लग रहा था। बूढ़े ने उसके लिए शराब माँग कर उसकी सहायता की और सब ने छककर पी। ओलेनिन ने येरोश्का के साथ, अन्य कज़्ज़ाकों के साथ और फिर येरोश्का के साथ पी; और उसने जितनी ही अधिक पी उसका दिल उतना ही भारी लगने लगा। परन्तु दोनों बूढ़े लुत्फ़ ले रहे थे। लड़कियाँ अंगीठी पर चढ़ कर बैठ गई थीं और उन लोगों की ओर देखती जा रही थीं जो शाम तक बराबर पीते ही रहे थे। ओलेनिन कुछ न बोला परन्तु उसने दूसरों से अधिक पी। कज़्ज़ाक चिल्ला रहे थे, मगर बूढ़ी ने उन्हें चिखीर न देने का फ़ैसला कर लिया था। बल्कि वह तो उनसे अपना पिण्ड छुड़ाना चाहती थी। लड़कियाँ चचा येरोश्का पर हँस रही थीं और जब सब के सब दालान में पहुँचे तो दस बज चुके थे। बूढ़ों ने उन सब को ओलेनिन के यहाँ मनोविनोद के लिए निमंत्रित किया। उस्तेन्का घर की ओर भाग

गई और येरोश्का ने बूढ़े कज्जाक को बन्यूशा के साथ कर दिया। बूढ़ी ओसारा ठीक करने चली गई। सिर्फ़ मर्यान्का ही अकेली घर में रह गई। ओलेनिन में ताज़गी आई और उसका जी खिल उठा, मानो वह अभी अभी सोकर जगा हो। उसने सभी चीज़ों पर निगाह दौड़ाई और जब बुज़ुर्ग लोग आगे बढ़ गये तो उसने मुड़कर पीछे देखा। मर्यान्का सोने का इन्तज़ाम करने जा रही थी। वह उसके पास तक गया और उसने कुछ कहना चाहा। परन्तु उसकी आवाज़ टूट गई। वह उससे हटकर, अपनी चारपाई के एक कोने में पैर लटकाकर बैठ गई और डरी हुई नज़रों से ओलेनिन की तरफ़ देखने लगी। ऐसा लग रहा था कि वह ओलेनिन से डर रही है। ओलेनिन को भी ऐसा ही लगा। उसे खेद हुआ और अपने पर शर्म भी आई। परन्तु उसे इस बात का गर्व था और खुशी भी कि उसने मर्यान्का में कम से कम भय की अनुभूति तो पैदा ही कर दी है।

"मर्यान्का!" वह बोला, "क्या तुम मुझपर कभी तरस न खाओगी? मैं तुम्हें नहीं बता सकता कि मैं तुम्हें कितना प्यार करता हूँ।"

वह थोड़ा और परे हट गई, कहने लगी, "सुनो, यह तुम नहीं तुम्हारी शराब बोल रही है... तुम मुझसे कुछ भी न पा सकोगे।"

"नहीं, यह शराब नहीं। लुकाश्का से विवाह न करो। मैं तुमसे विवाह करूँगा... मैं क्या बक रहा हूँ?" इन शब्दों के साथ ही साथ उसने विचार किया, "क्या मैं यही बात कल कह सकूँगा? हाँ, कह सकूँगा, मुझे यक़ीन है कह सकूँगा और अब मैं उसे दुहराऊँगा," अन्तस् की आवाज़ ने कहा।

"क्या तुम मुझसे विवाह करोगी?"

मर्यान्का ने उसकी ओर गम्भीर दृष्टि डाली। अब उसका भय दूर होता जा रहा था।

"मर्यान्का, मैं पागल हो जाऊँगा! मैं अपने आपे में नहीं हूँ। तुम जो कुछ कहोगी मैं करूँगा।" और इस पागलपन में उसके मुँह से स्वतः मधुर शब्दों की वर्षा होने लगी।

"आखिर क्या बकबक किये जा रहे हो?" मर्यान्का ने बात काटते हुए कहा और एकाएक उसका फैलाया हुआ हाथ पकड़ लिया। उसने हाथ को धक्का देकर हटाया तो नहीं परन्तु उसे अपनी मज़बूत और सख़्त उंगलियों से दबाये रही। "क्या भले आदमी कज़्ज़ाक लड़कियों से ब्याह करते हैं? भाग जाओ!"

"परन्तु क्या तुम करोगी? हर चीज़..."

"और हम लुकाश्का के साथ क्या करेंगे?" हँसते हुए वह बोली।

ओलेनिन ने अपना हाथ छुड़ा लिया और उसके नवल शरीर को अपनी भुजाओं में भर लिया। परन्तु वह मृगशावक की भाँति उछली और नंगे पैर दालान की तरफ़ भागी। ओलेनिन को होश आया और अपने पर क्रोध भी। उसे फिर लगा कि वह उसकी तुलना में अधिक नीच है और उसकी यह अधमता ऐसी है जिसे व्यक्त नहीं किया जा सकता। फिर भी वह जो कुछ कह चुका था उसके लिए एक क्षण के लिए भी पश्चात्ताप न करते हुए वह घर गया और बिना उन बूढ़ों पर निगाह डाले हुए, जो उसके कमरे में बैठे शराब पी रहे थे, बिस्तर पर पड़ रहा। इस बार उसे जितनी गहरी नींद आई उतनी बहुत दिनों से न आई थी।

३५

दूसरे दिन छुट्टी थी। गाँव के प्रायः सभी लोग छुट्टियोंवाले बुर्राक कपड़े पहने सड़कों पर निकल आये थे। उनके कपड़े धूप में चमचमा रहे थे। उस मौसम में पहले मौसमों से ज्यादा शराब खींची गई थी और

लोग अब सख्त मेहनत से विश्राम पा चुके थे। एक महीने में कज्ज़ाकों को अभियान-यात्रा पर जाना था। इसलिए बहुत-से परिवारों में शादी विवाह के इन्तज़ाम किये जा रहे थे।

अधिकतर लोग चौक में, कज्ज़ाक गाँव-कार्यालय के सामने, तथा उन दो दूकानों के आगे एकत्र थे जिनमें से एक में मिठाइयाँ तथा कद्दू के बीज बिकते थे और दूसरी में रूमाल तथा छपे हुए वस्त्र। कार्यालय भवन के मिट्टी के चबूतरे पर वृद्ध लोग खड़े या बैठे थे जो भूरे या काले रंग के ऐसे कोट पहने हुए थे जिनपर न तो सोने का ही काम था और न अन्य किसी प्रकार की सजावट ही। वे लोग नपे-तुले शब्दों में आपस में अनेक विषयों—फ़सल, नवयुवक, गाँव के मामले, पुराने ज़माने आदि आदि—पर बातचीत कर रहे थे और तरुण पीढ़ी के होनहारों की ओर बड़ी शान से देख रहे थे। उनके पास से होकर गुज़रते समय स्त्रियाँ और बच्चे एक क्षण के लिए रुक जाते और अपना सिर झुका देते। युवक कज्ज़ाक अपनी चाल धीमी कर देते और चलते चलते सिर से कुछ देर के लिए टोपी ऊपर उठाये रहते। और तब बूढ़े आपस की बातें बन्द कर देते। कुछ लोग इन गुज़रनेवालों पर तीक्ष्ण दृष्टि डालते, और कुछ सदय, और कुछ उत्तर में अपनी टोपी उठा देते और फिर लगा लेते।

कज्ज़ाक लड़कियों ने अभी तक अपने खोरोवोद* नृत्य आरम्भ नहीं किये थे। अपनी अपनी चमकीली बेशमेतें पहने और आँखों तक सिर को रूमालों से ढंके हुए वे टोलियों में या तो ज़मीन पर बैठी थीं या घरों के बाहर बने हुए मिट्टी के चबूतरों पर, ऐसे कि उनपर सूर्य की तिरछी

---

* खोरोवोद नृत्य में लड़कियाँ मण्डल बनाकर गाती हुई नाचती हैं—अनु०

किरणें न पड़ें। वे हँस रही थी और अपनी सुरीली आवाज़ में चटर-पटर कर रही थीं। छोटे लड़के-लड़कियाँ चौक में खेलते हुए गेंद आसमान में उछालते और फिर दौड़ते हुए चीखते-चिल्लाते। कुछ ज्यादा उम्र की लड़कियों ने पहले से ही नाच आरम्भ कर दिया था और अब वे अपनी महीन सुरीली आवाज़ में लजाते हुए गाती जा रही थीं। क्लर्क, नौकरी न करनेवाले अथवा उत्सव में घर आये हुए छोकरे सुनहले कामवाले सफ़ेद या लाल चेरकेसियन कोट पहने दो-दो या तीन-तीन की टोली में हाथ में हाथ डाले स्त्रियों या लड़कियों की एक टोली से दूसरी टोली में घूम रहे थे और उनसे हँसी-मज़ाक़ करते हुए कुछ देर के लिए कहीं रुक भी जाते थे। आरमीनियाई दुकानदार सुन्दर नीले कपड़े का सुनहले कामवाला कोट पहने अपनी दुकान के दरवाज़े पर वहाँ खड़ा था जहाँ से तह किये हुए ढेर के ढेर रूमाल दिखाई पड़ रहे थे। वह एक पूर्वीय व्यापारी की शान से खड़ा खड़ा अपने ग्राहकों की प्रतीक्षा कर रहा था। लाल दाढ़ीवाले दो नंगे पैर चेचेन, जो उत्सव देखने के लिए तेरेक के उस पार से आये हुए थे, एक दोस्त के मकान के बाहर पालथी मारे बैठे थे और अपने छोटे-छोटे हुक्के पीते हुए, ग्रामीणों को देखते ही प्रायः थूकने लगते थे या कभी उनसे अपनी भारी आवाज़ में कुछ बातचीत कर लेते थे। कभी कभी कोई सिपाही भी अपना पुराना ओवरकोट पहने इन हँसमुख और अच्छे अच्छे कपड़े पहने हुए लोगों की टोली में से होकर निकल जाता था। इधर-उधर उन कज़्ज़ाकों के गाने भी कान में पड़ जाया करते थे जो शराब पीकर मस्ती में समय काट रहे थे। सभी घरों में ताले पड़े हुए थे, सारी दालानें पिछले दिन ही साफ़ की जा चुकी थीं। बूढ़ी औरतें भी सड़क पर निकल आई थीं। सारी की सारी सड़क कद्दू या खरबूज़ों के बीजों से सजाई गई थी। हवा गर्म और शान्त थी, आसमान साफ़ था

श्रौर उसका रंग गहरा हो चला था। छतों के उस पार हल्के सफ़ेद रंग के पर्वत-शिखर, जो इस समय बिल्कुल नज़दीक दिखाई दे रहे थे, अस्ताचलगामी सूर्य की अरुणिमा से रक्ताभ हो रहे थे। कभी कभी नदी के उस ओर से गोले-बारी की आवाज़ सुनाई दे जाती परन्तु गाँव के ऊपर तो छुट्टियों की मौज-बहार की मिली हुई आवाज़ें ही तैर रही थीं।

मर्यान्का की झलक पा जाने के लिए ओलेनिन सारी सुबह अहाते में चहलक़दमी करता रहा। और, मर्यान्का बढ़िया से बढ़िया कपड़े पहने छमछम करती बाहर निकल गई, पहले तो प्रार्थना के लिए गिरजे में गई और फिर मिट्टी के चबूतरे पर आकर लड़कियों के साथ उनकी एक टोली में शामिल हो गई। कभी वह बहज बीज फोड़ती और कभी अपनी सहेलियों के साथ घर की ओर भाग जाती, और प्रत्येक बार ओलेनिन उसे देखता और उसे लगता कि उसकी आँखों में चमक है, दया है। दूसरों के सामने उससे खुलकर बातचीत करने में ओलेनिन को झिझक होती। वह चाहता था कि अपनी वह बात कह डाले जिसका आरम्भ वह पिछली रात को कर चुका था, और फिर मर्यान्का उसे अपना स्पष्ट और निश्चित उत्तर दे। कल शाम की ही तरह उसने फिर प्रतीक्षा की परन्तु उपयुक्त अवसर हाथ न लगा। अब उसे अनुभव हो रहा था कि वह इस अनिश्चित अवस्था में अधिक नहीं रह सकता। वह फिर सड़क पर निकल गई। ओलेनिन भी एक क्षण तक प्रतीक्षा कर चुकने के पश्चात् बाहर चल दिया और बिना यह जाने हुए कि कहाँ जा रहा है उसके पीछे लग गया। वह उस कोने से होकर गुज़रा जहाँ वह अपनी चमकदार नीली बेशमेत पहने बैठी थी। उसने अपने पीछे लड़कियों की दिल कचोटनेवाली परिहासात्मक हँसी सुनी।

बेलेत्स्की का मकान चौक से दिखाई पड़ रहा था। जब ओलेनिन वहाँ से होकर गुज़रा तो उसे बेलेत्स्की की आवाज़ सुनाई दी

"अन्दर आ जाओ" और वह भीतर घुस गया। कुछ बातचीत कर चुकने के बाद दोनों खिड़की के पास बैठ गये। थोड़ी ही देर में नई बेशमेत पहने चचा येरोश्का भी आ गया और आकर उनके पास ही फ़र्श पर जम गया।

"वहाँ, वह देखो चुलबुलियों की टोली है," मुस्कराते हुए बेलेत्स्की बोला और कोने में बैठी हुई एक टोली की तरफ़ अपनी सिगरट से संकेत करने लगा, "मेरी भी वहीं है। उसे देख रहे हो? लाल कपड़ों में जो नई बेशमेत पहने है। तुम लोग खोरोवोद क्यों नहीं शुरू कर देतीं?" खिड़की में से बाहर झाँकते हुए वह चिल्लाया। "थोड़ा ठहरो। जब अंधेरा हो जायेगा तब हम भी चलेंगे। तब हम उन्हें उस्तेन्का के यहाँ बुलायेंगे और उनके लिए बालडांस का आयोजन करेंगे!"

"और मैं उस्तेन्का के यहाँ पहुँच जाऊँगा। वहाँ मर्यान्का भी होगी क्या?" ओलेनिन बोला।

"हाँ होगी। जरूर आना," जरा भी आश्चर्य किये बिना बेलेत्स्की ने कहा, "मगर क्या यह तस्वीर की तरह आकर्षक नहीं?" उसने रंग-बिरंगी टोली की ओर संकेत करते हुए पूछा।

"हाँ, बहुत!" उपेक्षा का भाव दिखलाते हुए ओलेनिन ने स्वीकार किया। उसने कहा, "इस प्रकार के उत्सवों से मुझे यह आश्चर्य होता है कि ये सब लोग एकाएक सन्तुष्ट और प्रसन्न कैसे दीखने लगते हैं। मसलन, आज ही, केवल इसीलिए कि आज पन्द्रह तारीख़ है, हर चीज़ में खुशी है, बहार है। आँखें और चेहरे, आवाजें और चालें और वस्त्र, हवा और धूप सभी मस्ती में हैं। लेकिन रूस में हमारे यहाँ ऐसे उत्सव नहीं होते।"

"हाँ," बेलेत्स्की बोला। उसे यह छींटाकशी पसन्द नहीं आई, "और तुम मेरे बूढ़े दोस्त, तुम क्यों नहीं पी रहे हो?" येरोश्का की तरफ़ घूमते हुए उसने कहा।

येरोश्का ने ओलेनिन को आँख मारी और बेलेत्स्की की ओर इशारा किया। "ओह, तुम्हारा यह कुनक, बड़ा मस्त-मौला है," वह बोला।

बेलेत्स्की ने अपना गिलास उठाया।

"अल्लाह बिरदी!" गिलास खाली करते हुए उसने कहा। ('अल्लाह बिरदी'—'ईश्वर ने दिया' इन सामान्य शब्दों को काकेशियाई साथ साथ शराब पीते समय प्रथानुसार कहा करते हैं।)

"साऊ बुल" ("तुम्हारे स्वास्थ्य की कामना में") येरोश्का ने मुस्कराते हुए उत्तर दिया और गिलास खाली कर दिया।

"तुम उसे उत्सव कह सकते हो!" ओलेनिन की ओर मुड़ते तथा खिड़की के बाहर देखते हुए येरोश्का ने कहा, "यह कैसा उत्सव है? तुमने लोगों को पिछले सालों में आनन्द मनाते हुए देखा होगा! औरतें अपने सुनहले कामवाले सराफ़ान* पहने हुए निकला करती थीं। उनके गलों में सोने की मुद्राओं के दो दो हार लटका करते थे, सिरों पर सोने के कामवाले शिरोवस्त्र रहते थे और जब वे चलती थीं तो उनके वस्त्रों से सन्न सन्न की आवाज़ होती थी।

"हर स्त्री राजकुमारी लगती थी। कभी कभी वे झुंडों में निकलतीं, एक साथ गाने गाती हुई सारे वातावरण को गुँजा दिया करतीं और रात रात भर आनन्द मनाया करतीं। और कज़्ज़ाक शराब का पूरा का पूरा कनस्तर ज़मीन में लुढ़का लाते, और फिर सुबह होने तक उनके दौर पर दौर चला करते। कभी कभी वे हाथ में हाथ डाले गाँव भर का चक्कर लगाया करते और जिसे भी पकड़ पाते अपने साथ ले लेते। और फिर घर

---

* एक प्रकार की पोशाक जो ब्लाउज पर पहनी जाती थी।

घर की खाक छानते । कभी कभी लगातार तीन तीन दिनों तक आनन्द मनाया करते । मुझे याद है कि जब पिता जी घर लौटते तो उनका चेहरा लाल होता, सिर पर टोपी न होती और हर चीज़ खोकर आया करते। वे आकर बस पड़ रहते। और माता जी जानती थीं कि ऐसे में क्या करना चाहिए। वे उनके लिए थोड़ी खटाई और चिख़ीर लातीं और जब वे होश में आ जाते तो उनकी टोपी ढूंढ़ने के लिए सारे गाँव का चक्कर लगातीं। और तब वे लगातार दो दिन तक डटकर सोते। उस समय के लोग ऐसे होते थे! लेकिन अब! अब की बात कुछ न पूछो!"

"और क्या सराफ़ान पहने हुई लड़कियाँ अकेले अकेले आनन्द मनाया करती थीं?" बेलेत्स्की ने पूछा।

"अकेले मनाने की नौबत कब आती थी! कभी कभी घोड़ों पर चढ़कर, या पैदल, कज़्ज़ाक लोग आया करते और कहते 'हम खोरोवोद तोड़कर बढ़ेंगे' और बीच से होकर निकल जाते। तब लड़कियाँ सोंटा उठातीं और पिल पड़तीं। ओवेतिद पर कोई नौजवान घोड़ा दौड़ाता आता और वे उसपर भी जुट पड़तीं। लेकिन वह ज़बरदस्ती घुस पड़ता और अपनी प्रियतमा को उठाकर घोड़े पर बिठाता और हवा से बातें करने लगता। और वह उसे कितना प्यार करता था। क्या कहने! उन दिनों की लड़कियां क्या थीं, अच्छी-ख़ासी रानियां थीं, रानियां!"

३६

ठीक उसी समय दो व्यक्ति घोड़ों पर चौक की ओर आते हुए दिखाई दिये—एक था नज़ारका और दूसरा लुकाश्का। लुकाश्का अपने हृष्ट-पुष्ट घोड़े पर एक ओर झुका बैठा था। घोड़ा सिर हिलाता-डुलाता तथा चिकने अयालों को लहराता दुलकी चाल से दौड़ रहा था। कन्धे पर

बन्दूक़ लटकाये, कमर में पिस्तौल खोंसे तथा ज़ीन के पीछे मुड़े हुए लबादे को देखकर कोई भी कह सकता था कि लुकाश्का न तो किसी शान्त स्थान से आ रहा है और न कहीं पास-पड़ोस से ही। जिस निराले ढंग से वह घोड़े पर झुका बैठा था, जिस निश्चिन्त प्रकार से वह उसे एड़ और चाबुक लगा रहा था, जिस प्रकार वह अपनी काली काली अर्ध-निमीलित आँखों से चारों ओर देख रहा था, उस सब से पता चलता था कि उसमें युवकों जैसा आत्म-विश्वास है, युवकों जैसा बल है। उसकी इधर-उधर देखती हुई आँखें मानो कह रही थीं "क्या तुमने इतना अच्छा युवक देखा है?" शानदार घोड़ा, चाँदी का साज़-सामान, ज़ीन, हथियार और उसपर बैठा हुआ स्वयं ख़ूबसूरत कज़्ज़ाक चौक में खड़े प्रत्येक व्यक्ति के आकर्षण का केन्द्र हो रहा था। दुबला-पतला और छोटे क़द का नज़ारका कुछ अच्छी पोशाक में न था। जब लुकाश्का गाँव के बड़े-बूढ़ों के पास से होकर गुज़रता तो एक क्षण के लिए ठहरता और भड़ के सफ़ेद घुंघराले बालोंवाली अपनी टोपी सिर पर से ऊपर उठा देता।

"क्या अबकी बहुत-से नगई घोड़े चुराये हैं?" एक दुबले-पतले बूढ़े ने उन्हें घूरते हुए प्रश्न किया।

"बाबा, क्या आपने गिने हैं जो पूछ रहे हैं?" एक ओर मुड़ते हुए लुकाश्का ने जवाब दिया।

"यह सब ठीक है परन्तु तुम इस छोकरे को अपने साथ मत रखो," बूढ़ा बड़बड़ाया। उसकी भृकुटियाँ और भी अधिक तन गई थीं।

"शैतान का बच्चा, सब कुछ जानता है," लुकाश्का ने मन ही मन कहा और उसके चेहरे पर घबड़ाहट के चिन्ह दिखाई पड़ने लगे। परन्तु तभी उसने एक कोने में बहुत-सी कज़्ज़ाक लड़कियाँ खड़ी देखीं और घोड़ा उनकी तरफ़ मोड़ दिया।

"नमस्ते, छोकरियो!" सहसा घोड़ा रोकते हुए तेज़ गूंजती हुई

आवाज़ में वह बोला, "अरी चुड़ैलो, मेरे बिना ही तुम सब बूढ़ी हो गईं," और वह हँस पड़ा।

"नमस्ते, लुकाश्का, नमस्ते!" लड़कियों ने अपनी सुरीली आवाज़ में उत्तर दिया। "क्या बहुत-सा रुपया लाये हो? लड़कियों के लिए कुछ मिठाइयाँ ख़रीद दो न!.. ज्यादा दिनों के लिए आये हो क्या? सच बात तो यह है कि तुम्हें देखे बहुत जमाना हो गया..."

"नज़ारका और मैं रात भर के लिए इधर खिसक आये हैं," अपना चाबुक उठाते और सीधे लड़कियों की ओर घोड़ा बढ़ाते हुए लुकाश्का ने जवाब दिया।

"क्यों, मर्यान्का तो तुमको भूल ही गई," कोहनी से मर्यान्का को कोंचते और सुरीली आवाज़ में क़हक़हा लगाते हुए उस्तेन्का बोली।

मर्यान्का घोड़े से हटकर एक ओर खड़ी हो गई और पीछे सिर डालते हुए अपनी बड़ी बड़ी चमकीली आँखों से कज़्ज़ाक को देखने लगी।

"ठीक तो है तुम बहुत दिनों से यहाँ नहीं दिखाई पड़े। अरे, घोड़े के टापों के नीचे हमें पीसे क्यों डाल रहे हो?" वह बोली और मुड़ गई।

लुकाश्का खास तौर से खुश दिखाई पड़ रहा था। उसका चेहरा प्रसन्नता से खिला जा रहा था, परन्तु उसपर धृष्टता के लक्षण दिखाई पड़ रहे थे। मर्यान्का के तीखे उत्तर को सुनकर उसकी भौंहों में बल पड़ गये।

"घोड़े पर चढ़ आओ। मैं तुम्हें पहाड़ों पर ले चलूँगा, मेरी छबीली!" जैसे अपनी उदासी दूर करते हुए वह सहसा बोल उठा। मर्यान्का की ओर झुकते हुए उसने उसके कान में कहा, "मैं तुम्हें चूमूँगा। ओह! कैसे चूमूँगा!.."

दोनों की आँखें चार हुईं। मर्यान्का का चेहरा लाल हो गया और वह एक क़दम पीछे हट गई।

"तुम तो मुझे कुचल ही डालोगे," वह बोली और सिर झुकाते हुए अपने उन सुन्दर पैरों की तरफ़ देखने लगी जिनमें वह कसे हुए हल्के नीले रंग के ऊंचे मोज़े और चाँदनी के कामवाली लाल रंग की चप्पलें पहने थी।

लुकाश्का उस्तेन्का की ओर बढ़ा और मर्यान्का उस स्त्री की बग़ल में बैठ गई जिसकी गोद में एक बच्चा था। बच्चे ने अपने छोटे और भरे-पूरे हाथ फैलाकर मुद्राओं का हार पकड़ लिया जो मर्यान्का की नीली बेशमेत पर लटक रहा था। मर्यान्का बच्चे की ओर झुकी और लुकाश्का को तिरछी नज़रों से देखने लगी। लुकाश्का अपने कोट के नीचे से अपनी काली बेशमेत की जेब में से मिठाइयों तथा बीजों का एक बंडल निकाल रहा था।

"यह लो तुम सब को देता हूँ," उस्तेन्का को बंडल पकड़ाते और मर्यान्का की ओर मुस्कराते हुए उसने कहा।

मर्यान्का के चेहरे पर घबड़ाहट के लक्षण प्रकट हो रहे थे। ऐसा लगता था कि उसकी सुन्दर आँखों के सामने कुहरा छा गया हो। वह अपना रूमाल खींचकर ओठों तक ले आई और अपना सिर उस सुन्दर बच्चे पर, जो अभी तक उसका मुद्राओं का हार पकड़े हुए था, झुकाकर उसे चूमने लगी। बच्चे ने अपने छोटे छोटे हाथ उसकी उठी हुई छाती में ठेल दिये और अपना पोपला मुँह फैलाकर चीख़ने लगा।

"तू तो बच्चे का गला ही घोंट देगी!" बच्चे की माँ ने उसे हटाते हुए कहा और बेशमेत खोलकर उसे दूध पिलाने लगी। "चल हट और जाकर अपने छोकरे का मान-मनौअल कर।"

"मैं अभी जाऊँगा, घोड़ा बाँधूँगा और फिर नज़ारका को साथ लेकर लौट आऊँगा, तब रात भर छनेगी," लुकाश्का बोला। घोड़े को चाबुक से छूकर वह लड़कियों को छोड़कर आगे बढ़ गया और एक गली में मुड़कर नज़ारका के साथ उन मकानों तक पहुँच गया जो पास पास बने हुए थे।

"लो, हम पहुँच गये! जल्दी करो और शीघ्र वापस आ जाओ!" एक मकान के सामने घोड़े से उतरते हुए लुकाश्का ने अपने साथी से कहा और घोड़ा अपने मकान के फाटक में ले गया।

"हलो, स्तेप्का?" वह अपनी गूँगी बहन से बोला जो दूसरों की भाँति अच्छे अच्छे कपड़े पहने घोड़ा पकड़ने चली आ रही थी। लुकाश्का ने इशारों से उसे बताया कि वह घोड़े को चारे के पास ले जाय लेकिन उसे खोले नहीं।

गूंगी ने भनभनाहट जैसी कुछ आवाज़ की, जो वह प्रायः किया करती थी, और घोड़े की तरफ़ इशारा करते हुए उसकी नाक चूम ली। इसका मतलब था कि वह घोड़े को प्यार करती है और घोड़ा बहुत सुन्दर है।

"क्या हाल है माँ? शायद तुम अभी तक बाहर भी नहीं गई?" लुकाश्का ने पुकारा और बन्दूक़ थामते हुए दालान की सीढ़ियाँ चढ़ने लगा। बूढ़ी माँ ने दरवाज़ा खोला। "अरे तुम! मैंने तो कभी सोचा भी न था कि तुम आओगे। मुझे आशा भी न थी," बूढ़ी बोली, "क्यों! किरका ने तो कहा था कि तुम नहीं आओगे।"

"माँ थोड़ी चिख़ीर तो लाओ, नज़ारका आ रहा है। हम सब मिल कर उत्सव मनायेंगे।"

"हाँ, हाँ, लुकाश्का! अभी लाई!" बूढ़ी कहने लगी, "आज तो औरतें भी आनन्द मना रही हैं। मैं समझती हूँ हमारी गूँगी भी किसी से पीछे नहीं है।"

माँ ने चाभियाँ लीं और जल्दी जल्दी चिख़ीर लेने चल दी।

घोड़ा बाँध चुकने तथा कन्धे से बन्दूक़ उतारने के बाद नज़ारका लुकाश्का के घर लौटा, और भीतर चला गया।

७

"तुम्हारे स्वास्थ्य की कामना करते हुए!" माँ के हाथ से चिख़ीर भरा प्याला लेते तथा उसे अपने झुके हुए सिर तक उठाते हुए लुकाश्का बोला।

"यह ख़राब बात है!" नजारका ने कहा, "चचा बुर्लाक ने जो कुछ कहा तुमने सुना? 'क्या तुमने बहुत-से घोड़े चुराये हैं?' लगता है उसे मालूम है।"

"पुराना खुर्राट है!" तुरन्त लुकाश्का ने उत्तर दिया, "लेकिन इससे क्या!" सिर हिलाते हुए उसने कहा, "इस समय तक वे नदी के उस पार चले गये होंगे। जाओ और तलाश कर लो।"

"फिर भी हरकत तो बेजा है।"

"क्या बेजा हरकत है? कल उसे थोड़ी-सी चिख़ीर पिला देना और फिर सब ठीक। आओ अब जशन मनाएँ। पियो!" लुकाश्का चचा येरोश्का के लहजे में बोला, "हम सड़कों पर जाकर छोकरियों के साथ आनन्द मनायेंगे। तुम जाओ और थोड़ा शहद ले आओ। या ठहरो, हम अपनी गूँगी को ही भेज देंगे। हम लोग सुबह तक ऐसा ही जशन मनायेंगे।"

नज़ारका मुस्करा रहा था। "क्या यहाँ हमें देर तक रुकना है?" उसने पूछा।

"इसके पहले कि हम जशन मनायें तुम दौड़कर थोड़ी वोदका (शराब) तो ले आओ! पैसा यह रहा।"

नज़ारका सिर झुकाकर यामका के यहाँ से वोदका लाने दौड़ गया।

शिकारी चिड़ियों की भाँति चचा येरोश्का और येरगुशोव ने भी सूँघ लिया था कि जशन कहाँ मनाया जा रहा है। एक के बाद एक दोनों आ धमके। दोनों धुत्त थे।

"आधी बाल्टी चिख़ीर और," दोनों की आवभगत के जवाब में लुकाश्का माँ को सम्बोधित करके चिल्लाया।

"अच्छा अब बता तूने उन्हें कहाँ चुरा रखा है! शैतान कहीं का!" चचा बोला, "तू अच्छा लड़का है। मैं तुझे चाहता हूँ।"

"सच, चचा..." हँसते हुए लुकाश्का ने जवाब दिया। "कैडेटों से मिठाइयाँ ले लेकर उन्हें सुन्दरियों को देते हो... बड़े घिसे हुए हो..."

"यह ठीक नहीं, ठीक नहीं!.. ओह मार्का!" और बूढ़ा हँसते हँसते लोट-पोट हो गया, "और वह बदमाश कैसा घिघिया रहा था, कहता था 'जाकर मेरा इन्तज़ाम कर देना।' उसने मुझे एक बन्दूक़ देने का भी वादा किया था। लेकिन मैं नहीं लूँगा। मैंने सब ठीक कर लिया है। मुझे बस तुमपर तरस आता है। हाँ, तो बताओ तुम कहाँ कहाँ रहे?" और बूढ़े ने तातारी बोलना शुरू कर दी।

लुकाश्का ने तड़ तड़ जवाब दिया। येरगुशोव, जो अधिक तातारी नहीं जानता था, कभी कभी एक दो शब्द रूसी में कह देता था।

"मैं कहता हूँ कि उसने घोड़े खिसका दिये हैं। मैं अच्छी तरह जानता हूँ," वह बोला।

"गिरेई तथा मैं साथ साथ चले।" (कज़्ज़ाक समझ रहा था कि गिरेई-ख़ाँ को गिरेई कहना उसकी बहादुरी का सूचक था।) "नदी के ठीक पार वह बराबर यही शेख़ी मारता रहा कि वह सारा स्टेपी जानता है और ठीक ठीक रास्ता दिखा सकता है। और हम लोग घोड़ों पर सवार चलते गये, चलते गये और मेरा गिरेई रास्ता भूल गया और इधर-उधर चक्कर काटने लगा, उसे गाँव का रास्ता न मिला। हम लोग बहुत अधिक दाहिने चले गये होंगे। हम बराबर आधी रात तक घूमते फिरे, आख़िर जब हमने कुत्तों का भौंकना सुना तो जान में जान आई।"

"बेवक़ूफ़ो!" चचा येरोश्का ने कहना शुरू किया, "अरे हम भी स्टेपी

में रास्ता भूला करते थे। कौन नहीं भूलता? लेकिन मैं तो किसी टीले पर चढ़ जाता था और भेड़ियों की भाँति इस तरह चिल्लाया करता था!" उसने अपने हाथ मुँह पर रखे और भेड़ियों जैसी तेज़ बोली बोलने लगा। "फ़ौरन कुत्ते जवाब देंगे... हाँ तो आगे क्या हुआ—तुमने उन्हें ढूंढ़ा?"

"हमने जल्दी ही उन्हें खदेड़ दिया! नजारका को तो कुछ नगई औरतों ने पकड़ ही लिया था।"

"पकड़ लिया था?" नज़ारका ने आहत होकर कहा। वह अभी अभी आकर खड़ा ही हुआ था।

"हम फिर आगे बढ़े और फिर गिरेई रास्ता भूल गया और हम लोगों को रेत के टीलों के पास ले आया। हम समझ रहे थे कि हम तेरेक की तरफ़ बढ़ रहे हैं लेकिन हम तो ठीक उसकी उल्टी दिशा में जा रहे थे!"

"तुम्हें तारे देखकर रास्ता ढूंढ़ना था," येरोश्का बोला।

"यही तो मैं भी कहता हूँ," येरगुशोव बीच में ही बोल, पड़ा।

"हाँ ठीक कहते हो। जब चारों ओर घोर अन्धकार हो तो देखने से फ़ायदा भी क्या। मैंने सारे प्रयत्न किये और आखिर एक घोड़ी को लगाम लगाई और अपना घोड़ा छोड़ दिया यह सोचकर कि वह हमें ठीक रास्ते ले चलेगा। और तुम क्या समझते हो कि फिर क्या हुआ! वह एक दो बार जमीन की ओर देखकर हिनहिनाया और फिर तेज़ी से दौड़ता हुआ हमें सीधा गाँव ले आया। और यह तो कहो ऐसा भाग्य से ही हुआ क्योंकि इस समय सुबह होनेवाली थी। उन्हें जंगल में छिपा देने का हमें मुश्किल से ही समय मिल सका था। नगीम नदी के पार आ गया था और उन्हे ले गया था।"

येरगुशोव ने अपना सिर हिलाया, "यही तो मैं भी कहता हूँ। बड़े होशियार हो। क्या तुम्हें उसकी ज़्यादा क़ीमत मिली ?"

"जो मिला वह यह रहा," कहकर उसने अपनी जेब खनखना दी।

इसी समय लुकाश्का की माँ कमरे में आ गई और उसकी बात आधी ही रह गई।

"पियो !" वह चिल्लाया।

"हाँ, मैं और गिरचिक एक बार बहुत रात बीते चले थे, घोड़ों पर..." येरोश्का ने अपनी दास्तान छेड़ दी।

"बन्द भी करो ! इसके ख़तम होने की नौबत भी आयेगी ?" लुकाश्का बोला, "मैं जा रहा हूँ।" और प्याला पी चुकने और पेटी बाँध लेने के बाद वह बाहर निकल गया।

३८

जब लुकाश्का सड़क पर निकला उस समय अंधेरा हो चुका था। शरदकालीन रात्रि शान्त और स्वच्छ थी। चौक के एक ओर उगे हुए लम्बे और घने चिनार वृक्षों के पीछे से सुनहला चाँद, अपनी सम्पूर्ण ज्योत्स्ना लेकर उदय हो रहा था। धुआँ घरों की चिमनियों से उठ उठकर गाँव में फैल रहा था और कुहरे से एकाकार होकर लुप्त होता जा रहा था। इधर-उधर खिड़कियों में से प्रकाश झाँकता दिखाई पड़ रहा था और हवा में किज़्याक, अंगूर के गूदों और कुहरे की गंध फैल रही थी। गाँव के घरों से हँसी-मज़ाक़, गानों और बीजे फोड़े जाने की आवाज़ें सड़क पर आने-जानेवालों के कानों में पड़ रही थीं, परन्तु वे दिन की अपेक्षा इस समय अधिक स्पष्ट थीं। घरों के चारों ओर सफ़ेद सफ़ेद रूमालों और टोपियों की कतारें झलक दे रही थीं।

चौकवाली दूकान का दरवाज़ा खुला था और प्रकाश में जगमगा रहा था। उसके सामने कज़्ज़ाक और लड़कियों के श्याम गौर शरीर अंधेरे में दिखाई पड़ रहे थे। उनके सुरीले गाने, उनके क़हक़हे और उनकी बातें दूर से ही कानों में पड़ रही थीं। हाथ में हाथ डाले लड़कियों के मण्डल धूल भरे चौक में चक्राकार घूम रहे थे। सब से साधारण-सी लगनेवाली एक दुबली-पतली लड़की ने एक राग अलापा—

वे आये, वे दोनों आये।
दूर दिशा से—गहरे वन से;
हरे-भरे शीतल उपवन से,
वे दोनों, दो वीर युवक
अविवाहित, सुन्दर, मन-रंजन से।
चलते चलते ठहर गये
एकाकीपन का भार उठाये।
वे आये, वे दोनों आये।
आई तभी एक सुकुमारी;
जैसे काम-कुंज की क्यारी,
बोली—"केवल एक युवक की
बन सकती हूँ प्रेम-दुलारी।"
दोनों ने उसको देखा
कुछ आपस में उलझे-मुस्काये।
वे आये, वे दोनों आये।
सुन्दर युवक बढ़ा कुछ पहले;
हँसी रेशमी, बाल सुनहले,
आया सुकुमारी के उजले

हाथों को हाथों में वह ले।
सभी साथियों को उसने ये
घूम घूमकर वचन सुनाये,
"हम आये, हम दोनों आये।
सुनो साथियो! मेरे प्रियवर!
क्या तुमने अपने जीवन भर
इतनी सुन्दर सुकुमारी से
परिचय का पाया है अवसर?
जिसने मेरी प्रिय पत्नी बन
सुख के ये सब साज सजाये!"
वे आये, वे दोनों आये।

बूढ़ी स्त्रियाँ खड़ी गाने सुन रही थीं। छोटे छोटे लड़के-लड़कियाँ एक दूसरे के पीछे भाग रहे थे, और युवक चलती-फिरती पुतलियों जैसी सुन्दरियों की ताक-झाँक में लगे थे। कभी कभी तो घेरा तोड़कर वे उसमें घुस भी जाते थे। दरवाज़े के अंधेरी तरफ़ अपने अपने चेरकेसियन कोट और भेड़ की खाल की टोपियाँ पहने बेलेत्स्की और ओलेनिन खड़े खड़े कज्ज़ाकों की कथन-शैली से भिन्न, धीरे धीरे बातें कर रहे थे। और शायद यह जान रहे थे कि लोगों का ध्यान उनकी ओर आकृष्ट हो रहा है।

लाल बेशमेत पहने छोटी उस्तेन्का और एक नई बेशमेत तथा फ़्राक में मर्यान्का, हाथ में हाथ डाले, दूसरी लड़कियों के साथ मण्डल बनाकर घूम रही थीं। ओलेनिन और बेलेत्स्की इस मसले पर बातचीत कर रहे थे कि उस्तेन्का और मर्यान्का को उस मण्डल से कैसे छीना जाय। बेलेत्स्की सोच रहा था कि ओलेनिन सिर्फ़ अपना मन-बहलाव चाहता है; जब

कि ओलेनिन अपने भाग्य के फ़ैसले का इन्तज़ार कर रहा था। वह किसी प्रकार मर्यान्का से उस दिन अकेले मिलकर सब कुछ साफ़ साफ़ कह देना और उससे यह पूछ लेना चाहता था कि वह उसकी पत्नी हो सकती है या नहीं और होगी या नहीं। यद्यपि इस प्रश्न का पहले ही नकारात्मक उत्तर मिल चुका था फिर भी उसे आशा थी कि जब वह उससे अपनी व्यथाएँ कहेगा तो वह उन्हें समझेगी।

"तुमने मुझसे पहले क्यों नहीं बताया?" बेलेत्स्की बोला, "उस्तेन्का से मैं सब कुछ ठीक करवा देता। विचित्र आदमी हो!.."

"अब क्या किया जाय!.. शीघ्र ही किसी दिन मैं तुम्हें इसके बारे में सब कुछ बताऊँगा। ईश्वर के लिए कुछ ऐसा करो कि वह उस्तेन्का के यहाँ आ जाय।"

"ठीक है। यह आसानी से हो सकता है! मर्यान्का, तुम 'किसी सुन्दर मुखवाले युवक की' होना चाहती हो या लुकाश्का की?" मर्यान्का को सम्बोधित करते हुए बेलेत्स्की बोला। परन्तु जब उसे कोई उत्तर न मिला तो उसने उस्तेन्का के पास जाकर उससे मर्यान्का को अपने साथ घर लाने का अनुरोध किया। मुश्किल से उसने अपनी बात पूरी की होगी कि मण्डल के नेता ने दूसरा गाना शुरू कर दिया और लड़कियाँ घेरे में एक दूसरे को खींचने लगीं। वे गा रही थीं–

उपवन के दूसरे छोर से
  युवक यहाँ आया, इस ओर;
नगर पार कर, इसी मार्ग से,
  आया वह आनन्द-विभोर।
आते ही संकेत किया,
  दाहने हाथ से पहली बार,

और दूसरी बार उठाया,
  हैट रेशमी फ़ीतेदार।
जब कि तीसरी बार यहाँ
  आया तो था बिलकुल चुपचाप,
किन्तु नया-सा दीख रहा था,
  उसका सारा कार्य-कलाप।
"मिलने की बस, रही कामना,
  हो जाये कुछ तुमसे बात,
क्यों न घूमने आती हो तुम,
  इस उपवन में सायं-प्रात?
अब से आया करो—कहो
  आओगी? ऊपर करो निगाह,
अच्छा, यही कहो, क्या मेरे लिए
  हृदय में है कुछ चाह?
कहता हूँ, पछताओगी तुम,
  आगे मुझे करोगी याद;
मैंने प्रेम-प्रसाद न पाया
  तो होगा फिर तुम्हें विषाद!
मैं तो ऐसा प्रेम करूँगा,
  जो चलकर बन जाय विवाह,
मेरे बिना, इन्ही आँखों से,
  कहीं न निकले अश्रु-प्रवाह!"
इसका उत्तर मन में तो था,
  पर न खुला वाणी का द्वार,
मैं इनकार न कर पाई, हाँ,

ज़रा न कर पाई इनकार।
मैं उपवन में गई घूमने
करने प्रिय से मधुर मिलाप,
आँखें चार हुई, शरमाई
और झुका सिर अपने-आप।
कुछ ऐसा संयोग हुआ,
सिर झुकते ही गिर पड़ा रूमाल,
प्रिय ने देखा, उसे उठाया
और उठाकर हुए निहाल।
बोले–"प्रिये! स्वच्छ हाथों में
ले लो इसे, करो स्वीकार,
कह दो–एक बार ही मैंने
तुमसे पाया है कुछ प्यार!
कुछ भी नहीं जानता हूँ मैं,
क्या दूँगा तुमको उपहार।
डरता हूँ तुम अपने हाथों
कहीं न कर दो अस्वीकार।
किन्तु सोचता हूँ मैं अब प्रिय!
ठीक तरह से मन में जाँच,
भेंट करूँगा एक शाल,
बदले में लूँगा चुम्बन पाँच।"

लुकाश्का और नज़ारका घेरे में घुस गये और लड़कियों के बीच मटरगश्ती करने लगे। लुकाश्का भी हाथों को झुलाता हुआ गाने लगा। "तुम लोगों में से एक मेरे पास भी आओ न!" वह बोला। लड़कियों ने मर्यान्का

को गुदगुदाया परन्तु वह जाने को राज़ी न हुई। अब हँसी, चुम्बन, चपत और फुसफुसाहट के स्वर भी गाने में अपना योग दे रहे थे।

जब लुकाश्का ओलेनिन के पास से होकर गुज़रा तो उसने उसे देख कर दोस्तों की तरह सिर हिलाया।

"दिमीत्री अन्द्रेइच इधर आकर देखो!" वह बोला।

"अच्छा," ओलेनिन ने रुखाई से जवाब दिया।

बेलेत्स्की झुका और उस्तेन्का के कान म कुछ कहने लगा। उसे उत्तर देने का समय नहीं था। जब वह चक्र में फिर घूमती हुई आई तो उसने कहा –

"ठीक है हम आयेंगी।"

"और मर्यान्का भी?"

ओलेनिन मर्यान्का की तरफ़ बढ़ा, "आना ज़रूर, चाहे एक ही मिनट के लिए। मुझे तुमसे कुछ कहना है।"

"अगर दूसरी लड़कियाँ आयेंगी, तो आऊँगी।"

"क्या तुम मेरे प्रश्न का जवाब दोगी?" उसकी ओर झुकते हुए ओलेनिन बोला, "इस समय तुम खुश दीख रही हो।" मर्यान्का उसके पास से हटकर दूसरी ओर चली गई। वह भी उसके पीछे चला आया। "दोगी न?"

"कौनसा प्रश्न?"

"वही जो उस दिन पूछा था," झुकते हुए उसके कान में ओलेनिन ने कहा, "मुझसे विवाह करोगी?"

मर्यान्का ने एक क्षण सोचा, "बताऊँगी," उसने कहा, "आज रात बताऊँगी।" और रात के अंधेरे में उसकी बड़ी बड़ी आँखें उसे सदय दृष्टि से देखने लगीं।

ओलेनिन फिर उसके पीछ लगा। उसके निकट रहने में उसे आनन्द की अनुभूति हो रही थी।

परन्तु लुकाश्का ने बिना गाना बन्द किये हुए ही एकाएक उसे मज़बूती से पकड़ा और घेरे के बीच लाकर खड़ा कर दिया। ओलेनिन सिर्फ़ इतना ही कह पाया था कि "उस्तेन्का के यहाँ आना" और फिर अपने साथी के पास चला गया। गाना समाप्त हुआ। लुकाश्का ने अपने ओठ पोंछे, मर्यान्का ने भी पोंछे और दोनों ने एक दूसरे का चुम्बन किया।

"नहीं, नहीं, पाँच चुम्बन!" लुकाश्का बोला। अब नाच-गाने की जगह बातचीत, हँसी-क़हक़हों और भाग-दौड़ ने ले ली थी। लुकाश्का ने लड़कियों को मिठाइयाँ बाँटनी शुरू कीं। ऐसा लगता था कि वह ज़्यादा पी गया है। "ये सब के लिए हैं।" गर्व, परिहासात्मक करुणा और आत्म-प्रशंसा के साथ वह बोला, "लेकिन जो सिपाहियों के पीछे जाना चाहे वह इस घेरे से निकल जाय!" ओलेनिन पर क्रोधपूर्ण दृष्टि डालते हुए उसने कहा।

लड़कियों ने उससे मिठाइयाँ छीन लीं और हँसती हुई आपस में झगड़ने लगीं। बेलेत्स्की और ओलेनिन एक तरफ़ हट गये।

लुकाश्का को मानो अपनी उदारता पर शर्म आ रही थी। उसने अपनी टोपी उतारी और आस्तीन से माथा पोंछता हुआ मर्यान्का और उस्तेन्का के पास आकर कहने लगा। "अच्छा, यही कहो—क्या मेरे लिए हृदय में है कुछ चाह?" उसने उस गाने के शब्द दोहराये, जिसे लोग अभी गा चुके थे, और मर्यान्का की तरफ़ घूमकर उसने क्रोध से वे शब्द फिर दुहराये, "क्या मेरे लिए हृदय में है कुछ चाह?.. जो चलकर बन जाय विवाह, मेरे बिना, इन्हीं आँखों से, कहीं न निकले अश्रु-प्रवाह!" उस्तेन्का और मर्यान्का दोनों का एक साथ आलिंगन करते हुए लुकाश्का ने कहा। उस्तेन्का छूटकर अलग हो गई, और हाथ घुमाते हुए उसने लुकाश्का की पीठ पर एक ऐसा घूँसा जड़ा कि खुद उसी के हाथ में चोट आ गई।

"क्या नाच का दूसरा दौर चलाने की मरज़ी है?" उसने पूछा।

"दूसरी लड़कियाँ चाहें तो चलायें," उस्तेन्का ने जवाव दिया, "लेकिन मैं घर जा रही हूँ और मर्यान्का भी।"

मर्यान्का की कमर में हाथ डाले डाले लुकाश्का उसे भीड़ से हटाकर एक मकान के अँधेरे कोने की तरफ़ ले गया।

"मत जाओ, मर्यान्का, मत जाओ," उसने कहा, "हम आख़िरी बार जशन मनायेंगे। फिर घर जाना और मैं भी तुम्हारे पास आऊँगा!"

"घर जाकर क्या करूँ? छुट्टियाँ आनन्द मनाने के लिए हैं। मैं उस्तेन्का के यहाँ जा रही हूँ," मर्यान्का बोली।

"तुम्हें मालूम है कि मैं इतने पर भी तुमसे विवाह करूँगा!"

"अच्छा, अच्छा," मर्यान्का बोली, "जब वक़्त आयेगा तो देखा जायेगा।"

"तो तुम जा रही हो," लुकाश्का ने कर्कशता के साथ कहा और उसे अपने पास खींचते हुए चूम लिया।

"बन्द भी करो यह सब। मुझे जाने दो।" उसके हाथों से अपने को छुड़ाती हुई मर्यान्का एक तरफ़ हट गई।

"अरी छोकरी, याद रखना इसका नतीजा ख़राब होगा," उसे फटकारते हुए लुकाश्का बोला और खड़ा खड़ा सिर हिलाता रहा, "मेरे बिना, इन्हीं आँखों से, कहीं न निकले अश्रु-प्रवाह!" और उसके पास से हटते हुए उसने दूसरी लड़कियों से कहना शुरू किया, "आओ दूसरा गाना हो!"

लुकाश्का ने जो कुछ भी कहा था उससे मर्यान्का डर गई और घबड़ा गई।

वह रुकी "काहे का नतीजा ख़राब होगा?"

"उसी का!"

"किसका?"

"इसका कि उस सिपाही-मेहमान के साथ मौज उड़ाओ और मेरी चिन्ता न करो!"

"जब तक मैं चाहूँगी तब तक चिन्ता करूँगी। न तुम मेरे बाप हो न माँ। आखिर मुझसे चाहते क्या हो? कह तो दिया जिसे मैं चाहूँगी, उसकी चिन्ता करूँगी!"

"खैर ठीक है..." लुकाश्का बोला,. "मगर फिर याद रखना!" वह दुकान की तरफ़ बढ़ा, "अरी छोकरियो रुक क्यों गई? नाचे जाओ। नज़ारका थोड़ी चिखीर और लाओ!"

"क्या वे आयगी?" बेलेत्स्की को सम्बोधित करते हुए ओलेनिन ने पूछा। "वे चली आयगी," बेलेत्स्की ने जवाब दिया, "आओ न, हमें 'बाल' की तैयारी करनी है।"

३९

जब ओलेनिन मर्यान्का और उस्तेन्का के पीछे पीछे बेलेत्स्की के मकान से निकला, उस समय काफ़ी रात हो चुकी थी। उसे सामने की अँधेरी गली में जाती हुई मर्यान्का के सफ़ेद रूमाल की झलक दिखाई पड़ रही थी। स्वर्णिम चाँद स्टेपी की ओर अस्त हो रहा था। रुपहला कोहरा समस्त गाँव पर छाया हुआ था। सब कुछ शान्त था। कहीं रोशनी नहीं थी और सिवा युवतियों के पैरों की चापों के और कहीं कुछ न सुनाई पड़ता था। ओलेनिन का हृदय तेज़ी से धड़कने लगा। रात्रि की नम हवा ने उसके सन्तप्त चेहरे पर शीतलता बिखेर दी। उसने असीम आकाश की ओर देखा और फिर उस मकान को देखने के लिए पीछे मुड़ा जहाँ से वह अभी अभी निकला था। बत्ती बुझ चुकी थी। एक बार फिर उसने अंधेरे म से दिखाई देती हुई लड़कियों की परछाई देखी। सफ़ेद रूमाल कोहरे में अदृश्य हो

चुका था। इस समय वह इतना प्रसन्न था कि उसे अकेले रहने में डर लग रहा था। वह दालान से बाहर कूदा और लड़कियों के पीछे दौड़ा।

"जाने भी दो, कोई देख ले तो ..." उस्तेन्का ने कहा।

"परवाह नहीं।"

ओलेनिन दौड़कर मर्यान्का के पास गया और उसे अपनी भुजाओं में भर लिया। मर्यान्का ने छुड़ाने की कोई कोशिश न की।

"तुमने काफ़ी चुम्बन तो कर लिये?" उस्तेन्का ने कहा, "विवाह कर लो और तब चाहे जितना चूमना। लेकिन अभी तुम्हें ठहरना होगा।"

"नमस्ते, मर्यान्का, कल मैं तुम्हारे पिता से मिलने आऊँगा और उनसे बात कर लूँगा। तुम कुछ मत कहना।"

"मैं क्यों कहूँगी?" मर्यान्का बोली।

दोनों लड़कियों ने दौड़ना शुरू कर दिया। ओलेनिन अकेला जा रहा था और जो कुछ हो चुका था उसपर सोचता जा रहा था। वह पूरी शाम उसके साथ अंगीठी के पास एक कोने में अकेले बैठा रहा। उस्तेन्का एक क्षण के लिए भी घर के बाहर न गई परन्तु सारे समय दूसरी लड़कियों और बेलेत्स्की के साथ मटरगश्ती करती रही। ओलेनिन मर्यान्का के साथ बराबर कानाफूसी करता रहा।

"क्या तुम मुझसे विवाह करोगी?" उसने पूछा था।

"तुम मुझे धोखा दोगे और छोड़ दोगे," उसने ख़ुशी ख़ुशी उत्तर दिया था।

"परन्तु क्या तुम मुझे प्यार करती हो? ईश्वर के लिए सच सच बताना!"

"क्यों प्यार न करूँ? तुम कोई काने-कुतरे हो क्या," हँसते हुए मर्यान्का ने उत्तर दिया था और उसके हाथों को अपने सख़्त हाथों से दबा लिया था। "कैसे सफ़ेद सफ़ेद हाथ हैं तुम्हारे — मक्खन जैसे," वह बोली थी।

"मैं सच सच मे पूछ रहा हूँ। बताओ मुझसे ब्याह करोगी?"

"क्यों नहीं, यदि मेरे पिता जी मुझे तुम्हें दे दें तो।"

"तो फिर इतनी बात याद रखना कि अगर तुमने मुझे धोखा दिया तो मैं पागल हो जाऊँगा। कल मैं तुम्हारे माँ-बाप से बात करूँगा और उनके सामने विवाह का प्रस्ताव रखूँगा।"

सहसा मर्यान्का हँस पड़ी।

"क्या बात है?"

"वड़ी विचित्र बात है!"

"नही, सच कहता हूँ। मै एक अंगूर का बाग़ और मकान खरीदूँगा, और कज़्ज़ाकों में अपना नाम लिखा लूँगा।"

"मगर फिर यह याद रहे कि तुम्हें दूसरी लड़कियों का पीछा नहीं करना होगा। इस मामले में मैं बड़ी सख़्त हूँ।"

ओलेनिन इन्हीं सब बातों को दुहराता हुआ खिल उठता। उनकी स्मृति कभी उसके लिए पीड़ा का कारण सिद्ध होती और कभी इतनी प्रसन्नता का कि उसकी साँस तक रुक जाती। पीड़ा का कारण यह था कि जितनी भी देर तक वह उसके पास बातें करती रही उसी तरह शान्त बैठी रही जैसी कि हमेशा रहती थी। वह नई परिस्थितियों से ज़रा भी उत्तेजित हुई हो ऐसा नहीं लग रहा था। ऐसा प्रतीत होता कि वह उसका विश्वास नहीं कर रही है और न उसे भविष्य की ही कोई चिन्ता है। उसे लगा कि वह उसे प्यार तो करती है, परन्तु यह प्यार क्षणिक है। शायद आगे चलकर वह उससे कोई सम्बन्ध भी न रखे। वह खुश इसलिए था कि उसकी बात उसे सच लगती थी और उसने उसकी बन जाने की सहमति दे दी थी।

"हाँ," उसने सोचा, "जब वह बिल्कुल मेरी हो जायेगी तब हम एक दूसरे को समझेंगे। ऐसा प्रेम शब्दों से नहीं प्रकट किया जा सकता।

इसके लिए तो जीवन, बल्कि सारे जीवन, की जरूरत है। कल सब कुछ ठीक हो जायेगा। मैं अब इस प्रकार नहीं रह सकता। कल मैं उसके पिता, बेलेत्स्की और गाँव भर से सब कुछ कह दूँगा।"

लुकाश्का पूरी दो रातें जाग चुकने के बाद शराब के नशे में अब इतना चूर हो गया था कि जिन्दगी में पहली बार उसके पैर उसका साथ नहीं दे रहे थे और यही कारण था कि वह घर न जाकर यामका के यहाँ ही पड़ रहा।

४०

अगले दिन ओलेनिन रोज से तड़के उठा और उसे जो कुछ भी करना था उसकी उसने अच्छी तरह कल्पना कर ली। उसे याद आ रहे थे वे चुम्बन जो मर्यान्का ने उसपर अंकित किये थे और वे शब्द जो उसने उसके हाथों को अपने हाथ में लेते हुए कहे थे "कितने सफ़ेद है तुम्हारे हाथ।"

वह उछल पड़ा और उसने तुरन्त अपने मेज़बानों के घर जाने तथा यह कहने की ठान ली कि वे मर्यान्का के साथ मेरे विवाह की स्वीकृति दे दें। सूर्योदय नहीं हुआ था फिर भी सड़क पर असाधारण चहल-पहल थी। लोग पैदल या घोड़ों पर आ जा रहे थे और आपस में बातें कर रहे थे। उसने अपना चेरकेसियन कोट पहना और जल्दी जल्दी दालान के बाहर निकला गया। उसके मेज़बान अभी तक सोकर नहीं उठे थे। पांच कज़्ज़ाक घोड़ों पर जा रहे थे और ज़ोर ज़ोर से बातें कर रहे थ। सबसे सामने की ओर चौड़ी पीठवाले अपने कबर्दा घोड़े पर चढ़ा हुआ लुकाश्का था। सभी कज़्ज़ाक एक ही साथ बोल रहे थे, चिल्ला रहे थे। इसलिए वे क्या कह रहे थे यह समझ पाना प्रायः असम्भव था।

"उस ऊपरवाले खम्भे तक जाओ," एक चिल्लाया।

"घोडे पर जीन कसो और जल्दी जल्दी हमारे पीछे चले आओ," दूसरा बोला।

"दूसरे फाटक से नजदीक पडेगा।"

"तुम लोग क्या बकबक कर रहे हो," लुकाश्का चिल्लाया, "बेशक हमे बीचवाले फाटक मे से जाना चाहिए।"

"हाँ, उधर से पास पडेगा," एक कज्जाक बोला। वह धूल से भरा हुआ पसीने से तर-बतर, एक घोडे पर बैठा था। घोडा बुरी तरह हाँफ रहा था।

पिछली रात अधिक पी जाने के कारण लुकाश्का का चेहरा लाल और सूजा हुआ था और टोपी पीछे हटकर चाँद पर आ गई थी। वह इतने अधिकार से बोल रहा था जैसे कोई अफसर हो।

"क्या बात है? तुम लोग कहाँ जा रहे हो?" कज्जाको का ध्यान मुश्किल से अपनी ओर आकृष्ट करते हुए ओलेनिन बोला।

"हम लोग अब्रेको को पकडने निकले है। वे टीलो मे छिपे हुए है। हम भी अभी ही जा रहे है परन्तु हमारे पास काफी जवान नही है।"

और कज्जाक बराबर चिल्लाते रहे। जैसे जैसे वे सडक पर बढते गये अधिक से अधिक कज्जाक उनके साथ शामिल होते गय। ओलेनिन को लगा कि इस समय पीठ दिखाना मुनासिब न होगा। और फिर, उसने यह भी सोच रखा था कि वह शीघ्र ही वापस आ जायगा। उसने कपडे पहने, बन्दूक भरी, घोडे पर कूदकर बैठा – जिसे वन्यूशा ने साज-सामान लगाकर बहुत कुछ ठीक कर रखा था – और गाँव के फाटकों के पास कज्जाको के साथ मिल गया। कज्जाक घोडो से उतर चुके थे और एक लकड़ी के प्याले में चिखीर भरकर, जिसे वे साथ साथ लाये थे, उसे चारो तरफ घुमाने और बाँटने और अभियान की सफलता की कामना मे पीने लगे थे। उन्ही मे से एक

छैल-छबीला कार्नेट भी था जो इत्तिफ़ाक से गाँव में आया हुआ था। वह नौ कज़्ज़ाकों की एक टोली का नेतृत्व कर रहा था। सभी कज़्ज़ाक मामूली सिपाही थे और यद्यपि कार्नेट को हुक्म देने का अधिकार था फिर भी वास्तविकता यह थी कि वे सिर्फ़ लुकाश्का की ही आज्ञा मान रहे थे।

ओलेनिन पर उन्होंने ज़रा भी ध्यान न दिया और जब वे घोड़ों पर बैठकर चल दिये तो वह यह दरयाफ़्त करने के लिये कार्नेट के पास गया कि आख़िर यह सब हो क्या रहा है। कार्नेट सामान्यत: सौम्य स्वभाव का था। उसका ओलेनिन के साथ व्यवहार भी बड़ा मृदु था। लेकिन अब वह भी बड़े घमण्ड से उसके साथ सलूक करता था। बड़ी मुश्किल से ओलेनिन की समझ में आ पाया कि जिन स्काउटों को अब्रेकों की तलाश में भेजा गया था उनसे उनका मोर्चा गाँव से लगभग छ मील दूर हुआ था। ये अब्रेक एक गड्ढे में घुसकर उनपर गोलियाँ बरसाने लगे थे और उन्होंने अपने इस इरादे की घोषणा की थी कि वे हथियार न डालेंगे। जो कारपोरल दो कज़्ज़ाकों के साथ स्काउटों का काम कर रहा था वह अब्रेकों की निगरानी के लिए रह गया था और उसने एक को मदद लेने के लिए भेजा था।

सूर्योदय हो रहा था। गाँव के बाहर चारों ओर लगभग तीन मील तक का इलाक़ा ऊसर और सुनसान स्टेपी था। हाँ, इधर-उधर मवेशियों के खुरों के चिन्ह अवश्य दिखाई पड़ जाते। कहीं कहीं घास की हरियाली या छोटे छोटे नरकटों की झाड़ी और हल्की पगडंडियाँ भी नज़र आ जातीं। दूर क्षितिज के पास नगई जाति के ख़ानाबदोशों के शिविर भी दीख पड़ते। वहाँ छाया का नामोनिशान न था और सारी जगह मनहूसियत छाई हुई थी। स्टेपी में सूर्योदय तथा सूर्यास्त हमेशा लाली बिखेरते हुए दृष्टिगत होते। जब हवा चलती तो बालू एक स्थान से उड़ उड़कर दूसरे स्थानों पर टीलों के रूप में इकट्ठा हो जाती। जब वातावरण शान्त रहता है, जैसा कि उस दिन प्रातःकाल था, तो चारों ओर सन्नाटा रहता

है और किसी प्रकार की कोई आवाज़ नहीं सुनाई पड़ती। उस दिन प्रातः काल स्टेपी के चारों ओर शान्ति थी यद्यपि सूर्य निकल चुका था। वातावरण में वीरानी और नरमी थी। कोई हलचल न थी; केवल घोड़ों की हिनहिनाहट या टापों की आवाज़ सुनाई दे जाती और वह भी शीघ्र ही विलीन हो जाती। आदमी घोड़ों पर मौन चल रहे थे। कज़्ज़ाक प्रायः अपने हथियार इस ढंग से लेकर चलता है कि किसी प्रकार की कोई भी झनझनाहट न हो। हथियारों का झनझना जाना कज़्ज़ाक के लिए बेइज़्ज़ती की बात समझी जाती है। गाँव से दो कज़्ज़ाक और आकर उसी टोली में शामिल हो गये। उन्होंने भी दो चार बातें कीं और फिर साथ हो लिये। लुकाश्का का घोड़ा लड़खड़ाया अथवा शायद उसका पैर घास में उलझा और वह बेचैन हो उठा। यह कज़्ज़ाकों में अपशकुन समझा जाता है। और इस समय तो इसका विशेष महत्व था। दूसरे लोगों ने इधर-उधर देखा और तब वे एक ओर घूम गये। उन्होंने यह देखने का प्रयत्न नहीं किया कि क्या हो गया है। लुकाश्का ने लगाम खींची, तेवरियाँ चढ़ाई, दाँत पीसे और चाबुक अपने सिर के ऊपर घुमाया। उसका कबर्दा घोड़ा, यह न जानते हुए कि पहले कौनसा पैर आगे बढ़ाया जाय, कभी इधर पैर रखता, कभी उधर और ऐसा लगता मानो हवा में उड़ने ही वाला है। लुकाश्का ने उसे फिर एड़ लगाई और फिर चाबुक फटकारा। उसने दो तीन बार यही किया। घोड़ा दाँत दिखाते तथा पूँछ फैलाते हुए, दूसरों से कुछ दूरी पर, अपने पिछले पैरों पर हिनहिनाकर खड़ा हो गया।

"कितना सुन्दर घोड़ा है!" कार्नेट ने नज़र लगाई।

"घोड़ा क्या है, शेर है," एक बूढ़े कज़्ज़ाक ने कहा।

कज़्ज़ाक बढ़ते गये, कभी धीरे धीरे, कभी दुलकी चाल से और कभी तेज़। घोड़ों के टापों की ये आवाज़ें उस शान्त वातावरण को भंग कर रही थीं।

लगभग आठ मील तक स्टेपी में चल लेने के पश्चात् उन्हें केवल एक नगई तम्बू दिखाई दिया जो किसी गाड़ी में रखा हुआ उनसे लगभग एक मील की दूरी पर आगे बढ़ रहा था। एक नगई परिवार स्टेपी के एक भाग से दूसरे भाग को जा रहा था। इसके बाद उन्हें फटे-पुराने कपड़े पहने दो नगई स्त्रियाँ पीठ पर टोकरी लिए मिलीं जो स्टेपी में घूमनेवाले जानवरों का गोबर बटोरती फिर रही थीं। कार्नेट उनकी भाषा अच्छी तरह न जानता था। उसने उनसे कुछ पूछने का प्रयत्न किया परन्तु उन्होंने उसकी बात न समझी और भयभीत एक दूसरे को देखने लगीं।

लुकाश्का उन दोनों के पास तक गया, घोड़ा रोका और विनम्रता से उनका अभिवादन किया। अब स्त्रियों की जान में जान आई और वे उससे उसी प्रकार खुलकर बातचीत करने लगीं जैसे अपने भाई से करती हैं।

"एई, एई कोप अब्रेक!" उन्होंने उस ओर इशारा करते हुए कहा जिधर कज़्ज़ाक जा रहे थे। ओलेनिन समझ गया कि वे कह रही हैं कि वहाँ पर "बहुत से अब्रेक हैं।"

ओलेनिन ने इस प्रकार का मोर्चा स्वयं कभी न देखा था। हाँ, चचा येरोश्का से उसके बारे में सुना ज़रूर था। अब ओलेनिन को उसे देखने की भी इच्छा हुई।

वह चाहता था कि कज़्ज़ाक उसे पीछे ही न छोड़ दें। उसने कज़्ज़ाकों पर प्रशंसात्मक दृष्टि डाली और उनकी बातें बड़े ध्यान से सुनता रहा ताकि खुद भी अपने विचार प्रकट कर सके। यद्यपि वह अपने साथ एक तलवार और भरी हुई बन्दूक़ लेता आया था तथापि जब उसने देखा कि कज़्ज़ाक उससे कन्नी काट रहे हैं तो उसने मोर्चे में कोई भी भाग न लेने का निश्चय किया, क्योंकि वह समझता था कि अपने दस्ते में उसने अपने शौर्य का काफ़ी परिचय दे दिया है। दूसरी बात यह थी कि इस समय वह

बहुत प्रसन्न था। सहसा दूर से गोली की आवाज़ सुनाई दी। कार्नेट उत्तेजित हो उठा और कज़्ज़ाकों को हुक्म देने लगा कि किस तरह से आपस में बट कर और किस दिशा से कैसे हमला या बचाव किया जाय। परन्तु ऐसा लग रहा था कि कज़्ज़ाक उसका हुक्म मानने को तैयार न थे। वे देख रहे थे कि लुकाश्का क्या कहता है, कौनसा रुख़ अपनाता है। सारी आँखें लुकाश्का ही पर लगी थीं। लुकाश्का के चेहरे पर गम्भीरता थी और घबड़ाहट के कोई भी लक्षण न थे। उसने घोड़े को एड़ लगाई और उसे दौड़ा दिया। दूसरे लोग पीछे रह गये। उसकी घूरती हुई आँखें सामने लगी थीं।

"वह रहा एक घुड़सवार," घोड़े को लगाम लगाते और दूसरों के साथ होते हुए लुकाश्का बोला।

ओलेनिन ने ध्यान से देखा, परन्तु किसी को देख न सका।

कज़्ज़ाकों ने दो घुड़सवारों को पहचाना और चुपके चुपके उनकी तरफ़ बढ़ गये।

"वे अब्रेक हैं क्या?" ओलेनिन ने पूछा। कज़्ज़ाकों ने इस प्रश्न का कोई उत्तर न दिया। यह प्रश्न उन्हें बड़ा, बेतुका लग रहा था। अगर अब्रेक घोड़ों पर सवार होकर तेरेक के इस पार आ गये हैं तो बड़े गधे हैं।

"वह जो हाथ हिलाता हुआ दिखाई पड़ रहा है हमारा मित्र रोदका होगा।" उन दो घुड़सवारों की ओर, जो अब साफ़ दिखाई पड़ने लगे थे, इशारा करते हुए लुकाश्का बोला, "देखो, वह इस ओर ही आ रहा है।"

कुछ मिनटों बाद यह स्पष्ट हो गया कि दोनों घुड़सवार कज़्ज़ाक स्काउट हैं और कोई नहीं। कारपोरल घोड़े पर सवार लुकाश्का के पास चला आ रहा था।

"क्या वे लोग दूर होंगे?" लुकाश्का बस इतना ही कह पाया था।

इसी समय लगभग तीस क़दम की दूरी से आती हुई गोली की आवाज़ उन्हें सुनाई दी। कारपोरल मुस्करा दिया।

"वह हमारा गुरका है जो दुश्मनों को निशाना बना रहा है," गोली की दिशा में सिर हिलाते हुए वह बोला।

कुछ क़दम चल लेने के पश्चात् उन्होंने रेत के एक टीले के पीछे गुरका को बैठे देखा। वह अपनी बन्दूक़ भर रहा था। समय बिताने की गरज़ से वह उन अब्रेकों पर जवाबी गोलियाँ चला रहा था जो एक दूसरे टीले के पीछे छिपे थे। उस दिशा से एक गोली सनसनाती हुई आई और निकल गई। कार्नेट पीला पड़ गया और घबड़ा गया। लुकाश्का उतर पड़ा, घोड़े की लगाम एक कज़्ज़ाक को पकड़ाई और सीधा गुरका के पास चला गया। ओलेनिन भी उतर पड़ा और झुका झुका लुकाश्का के पीछे चल दिया। मुश्किल से वे गुरका के पास तक पहुँचे होंगे कि दो गोलियाँ उनके सिर पर से होती हुई निकल गईं। लुकाश्का हँसता हुआ ओलेनिन को देखता रहा और थोड़ा झुक गया। "संभलकर रहना, वरना वे तुम्हें मार डालेंगे, दिमीत्री अन्द्रेइच," उसने कहा, "अच्छा हो तुम चले जाओ। यह जगह तुम्हारे लिए नहीं है।"

परन्तु ओलेनिन ने अब्रेकों को देखने का निश्चय कर लिया था। टीले के पीछे से उसे लगभग दो सौ क़दम पर टोपियाँ और बन्दूक़ें दिखाई पड़ीं। सहसा कुछ धुआँ उठा और फिर एक गोली निकल गई। अब्रेक एक टीले के नीचे दलदली भूमि में छिपे हुए थे। ओलेनिन का सारा ध्यान उनके छिपने के स्थान पर केन्द्रित हो गया। वास्तविकता यह थी कि वह स्थान

शेष स्टेपी की भाँति ही था, परन्तु चूँकि वहाँ अब्रेक जमे थे अतएव वह बाक़ी स्टेपी से अलग और एक खास तरह का लग रहा था। ओलेनिन को लगा कि वह स्थान अब्रेकों के छिपने के लिए एक मुनासिब स्थान है। लुकाश्का लौटकर अपने घोड़े के पास चला आया और ओलेनिन भी उसके पीछे पीछे हो लिया।

"हमें भूसे की एक गाड़ी का इन्तज़ाम करना चाहिए," लुकाश्का बोला, "वरना वे हम सब को मार डालेंगे। वहाँ, उस टीले के पीछे, भूसे से लदी हुई एक नगई गाड़ी है।" कार्नेट ने उसकी बात सुनी और कारपोरल ने अपनी सहमति दे दी। भूसे की गाड़ी लाई गई और कज्ज़ाक, उसके पीछे छिपे उसे ठेलकर आगे बढ़ाने लगे। ओलेनिन एक टीले पर चढ़ गया जहाँ से वह सब कुछ देख सकता था। गाड़ी आगे बढ़ती गई और सब के सब कज्ज़ाक उसके पीछे दुबक गये। कज्ज़ाक बढ़ रहे थे परन्तु चेचेन (वहाँ कुल नौ चेचेन थे) घुटने से घुटना मिलाये एक पंक्ति में बैठे थे। उन्होंने कोई गोली नहीं चलाई।

सब कुछ शान्त था। सहसा चेचेनों की तरफ़ से एक करुण गीत सुनाई दिया जो चचा येरोश्का के 'आई-दाई-दला-लाई' की धुन पर था। चेचेनों ने जान लिया था कि अब वे ज़िन्दा न बचेंगे और इसलिए कि कहीं मैदान से भाग खड़े होने की उनकी इच्छा प्रबल न हो उठे उन्होंने एक दूसरे के घुटनों को अपनी पेटियों से फँसा लिया था और निशाना साधे हुए अपना मरसिया पढ़ रहे थे।

गाड़ी के पीछे पीछे चलते हुए कज्ज़ाक आगे बढ़ते गये। अब ओलेनिन को लग रहा था कि गोलाबारी किसी भी समय आरम्भ हो सकती है। अब्रेकों की तरफ़ से सुनाई पड़नेवाले एक करुण गान से वातावरण की शान्ति भंग हो रही थी। सहसा गाना बन्द हो गया और एक तीखी आवाज़ सुनाई पड़ने लगी। एक गोली आकर गाड़ी

के सामनेवाले भाग से टकराई, और चेचेन चिंचियाने लगे। अब गोलियों का जवाब गोलियों से दिया जाने लगा और वे आकर गाड़ी से टकराने लगीं। कज्ज़ाकों ने गोलियाँ नहीं चलाई। वे दुश्मनों से सिर्फ़ पाँच क़दम दूर रह गये थे।

एक क्षण और बीता और सहसा कज्ज़ाक गाड़ी के बाहर निकल कर दोनों ओर से दुश्मनों पर टूट पड़े। आगे आगे लुकाश्का था। ओलेनिन ने कुछ गोलियों की आवाज़ें सुनीं और फिर उसे चीखें और चिल्लाहटें सुनाई दीं। उसे लगा कि उसने धुआँ भी देखा है और ख़ून भी। घोड़ा छोड़कर और बिना इस बात पर ध्यान दिये हुए कि वह कितना बड़ा ख़तरा उठा रहा है, ओलेनिन कज्ज़ाकों की ओर भागा। भय ने उसे अन्धा बना दिया था। उसे कुछ पता न चला। हाँ, उसने यह ज़रूर समझ लिया कि सब कुछ ख़त्म हो चुका है। लुकाश्का, जो पीला पड़ रहा था, हाथों में एक घायल चेचेन को पकड़े हुए चिल्ला रहा था "इसे मत मारो, इसे मत मारो। मैं इसे ज़िन्दा ले जाऊँगा!" यह चेचेन वही था जो अपने भाई की—लुकाश्का द्वारा उसके मारे जाने के बाद—लाश लेने आया था। लुकाश्का उसके हाथ बाँध रहा था। सहसा चेचेन ने अपने को छुड़ा लिया और अपना रिवाल्वर चला दिया। लुकाश्का गिर पड़ा। उसके पेट से ख़ून की धार बह निकली। वह रूसी और तातारी में गालियाँ देते हुए फिर उठा और फिर गिरा। उसके कपड़ों और शरीर पर ख़ून अधिक, और अधिक उभरता आ रहा था। कुछ कज्ज़ाक दौड़कर उसके पास तक गये और उसकी पेटी ढीली करने लगे। नज़ारका सहायता पहुँचाने के पहले कुछ समय तक इधर-उधर करता रहा। वह तलवार म्यान में रख रहा था परन्तु वह उसमें सीधी जा न रही थी। तलवार ख़ून से सनी थी।

लाल लाल बालों तथा ऐंठी हुई मूछोंवाले चेचेन मारे जा चुके थे और उन्हें टुकड़े टुकड़े किया जा चुका था। केवल एक ही जिन्दा बचा था, वह जिसने लुकाश्का पर गोली चलाई थी। मगर वह भी बुरी तरह घायल हो चुका था। घायल बाज की तरह, खून से लथपथ (खून उसकी दाहिनी आँख के नीचे के घाव से बह रहा था), पीतमुख और निराश वह दाँत पीसता हुआ खूनी आँखों से इधर-उधर देख रहा था। उसके हाथ में कटार थी और वह अभी तक उससे अपनी रक्षा करने की बात सोच रहा था। कार्नेट उसके पास तक गया। ऐसा लगता था कि वह सिर्फ उसके पास से होकर गुज़र भर जाना चाहता है। परन्तु सहसा बड़ी तेज़ी के साथ उसने घूमकर चेचेन पर गोली चला दी। गोली कनपटी पार कर गई। चेचेन ने उठने की कोशिश की पर व्यर्थ और वह वहीं ढेर हो गया।

कज्जाकों की साँसें ज़ोर ज़ोर से चल रही थीं। वे लाशों को खींच-खाँच रहे थे, उनके हथियार बटोर रहे थे। लाल बालवाला हर चेचेन मर्द था और हर एक का अपना अलग अलग व्यक्तित्व था। लुकाश्का को लोग गाड़ी तक ले गये। वह रूसी और तातारी में गालियाँ दिये जा रहा था।

"नहीं, तुम नहीं, मैं अपने ही हाथों से उसका गला घोटूँगा। आना सेनी।" वह चिल्लाया, मगर शीघ्र ही इतना कमज़ोर हो गया कि चिल्ला भी न सका।

ओलेनिन घर वापस आ गया। शाम को उसने सुना कि लुकाश्का मरणासन्न है पर नदी पार के एक तातार ने वादा किया है कि जड़ी-बूटियों की सहायता से वह उसे अच्छा कर देगा।

लाशें गाँव के दफ़्तर में लाई गई। स्त्रियाँ और बच्चे उनके चारों ओर खड़े हुए उन्हें देख रहे थे।

जब ओलेनिन लौटा उस समय अँधेरा हो रहा था। जो कुछ भी उसने देखा था उसने उसे हतबुद्धि बना दिया। परन्तु रात के समय पिछली शाम की स्मृतियाँ उसके मस्तिष्क में फिर ताज़ी होने लगीं। उसने खिड़की के बाहर देखा। मर्यान्का इधर-उधर दौड़ रही थी, कभी घर से निकलकर ओसारे में जाती कभी ओसारे से घर में। वह अपनी चीज़ें उठाने-धरने में लगी थी। उसकी माँ अंगूर के बाग में थी और पिता दफ़्तर में। ओलेनिन मर्यान्का के काम समाप्त कर लेने तक की प्रतीक्षा न कर सका और उससे मिलने चल दिया। वह घर में थी और उसकी पीठ ओलेनिन के सामने थी। ओलेनिन ने सोचा उसे लज्जा आ रही होगी।

"मर्यान्का," वह बोला, "मर्यान्का! क्या मैं आ सकता हूँ?"

सहसा वह घूमी। उसके मुँह पर उदासी छायी हुई थी, परन्तु आँखों में आँसू न दिख रहे थे। इस उदासी के बावजूद उसका चेहरा दमक रहा था। उसकी दृष्टि में एक मौन मर्यादा थी।

"मर्यान्का, मैं आ गया," ओलेनिन ने कहा।

"मुझे अकेली रहने दो!" वह बोली। उसके चेहरे पर कोई परिवर्तन नहीं हुआ, किन्तु गालों पर झर झर आँसू बरस गए।

"तुम रो क्यों रही हो? बात क्या है?"

"बात क्या है?" उसने रूखी आवाज़ में वे शब्द दुहरा दिये, "हमारे कज़्ज़ाक मारे गये हैं। यही बात है!"

"लुकाश्का?" ओलेनिन ने पूछा।

"भाग जाओ! क्या चाहते हो?"

"मर्यान्का!" उसके पास आते हुए ओलेनिन बोला।

"तुम मुझसे कभी कुछ न पा सकोगे!"

"ऐसी बात न कहो, मर्यान्का," ओलेनिन बोला।

"चले जाओ। मैं तुमसे तंग आ गई हूँ।" अपना पैर जमाती हुई

वह चिल्लाई और तीखी दृष्टि से देखती हुई उसकी ओर बढ़ने लगी। उसकी नज़रों से घृणा, तिरस्कार और क्रोध की ऐसी चिनगारियाँ निकल रही थीं कि ओलेनिन ने समझ लिया कि अब उसकी सारी आशाएँ टूट चुकी हैं। उसने इस औरत के बारे में पहले-पहल जो कुछ सोचा था वही ठीक था, केवल वही ठीक था। उसकी यह पूर्व-धारणा ठीक निकली कि वह उसे कभी पा न सकेगा। वह उसके लिए अगम्य है, अप्राप्य है।

ओलेनिन बिना कुछ कहे उसके घर से बाहर हो गया।

४२

घर लौट आने के बाद, प्रायः दो घण्टे तक, ओलेनिन बिना हिले-डुले अपने बिस्तर पर पड़ा रहा। फिर वह अपनी कम्पनी के कमाण्डर के पास गया और प्रधान कार्यालय में काम करने के लिए उससे छुट्टी माँगी। किसी से भी विदा लिये बिना, और वन्यूशा को किराया अदा करने के लिए मालिक मकान के पास भेजकर, उसने उस क़िले में जाने की तैयारी की जहाँ उसका रेजीमेंट पड़ा था। उसे विदा देने के समय अकेला चचा येरोश्का ही वहाँ था। दोनों ने शराब का प्याला पिया—दूसरा, फिर तीसरा। उसके दरवाज़े पर एक त्रोइका-गाड़ी खड़ी थी, वैसी ही जिसपर बैठकर वह मास्को से चला था। परन्तु इस समय ओलेनिन अपने-आप से कोई बात न कर रहा था जैसी कि उसने तब की थी, और अपने मन को यह कहकर भी न समझा रहा था कि यहाँ के बारे में उसने जो जो सोच रखा था, जो जो किया था वह "वैसी बात न थी!" अब उसने नये जीवन की कोई बात न सोची। वह मर्यान्का को हमेशा से अधिक प्यार करता था और अच्छी तरह जानता था कि वह उसे कभी प्यार न कर सकेगी।

"अच्छा मेरे छोटे दोस्त, विदा," चचा येरोश्का कहता जा रहा था, "अब जब तुम अभियान पर जा ही रहे हो तो बुद्धि से काम लेना और मेरी इन बातों पर ध्यान रखना—ये एक बूढ़े की बातें हैं। जब तुम्हें आक्रमण या इसी तरह के किसी काम के लिए जाना पड़े (तुम्हें मालूम है कि मैं एक पुराना खुर्राट हूँ और मैंने अपनी ज़िन्दगी में ऐसी बहुत-सी वारदातें देखी हैं) और तुम्हारे दुश्मन तुमपर गोलियाँ बरसायें तो भीड़ में मत घुसना, वहाँ मत जाना जहाँ ढेरों आदमी हों। लेकिन तुम लोग करते क्या हो? जब डर लगता है तो भीड़ की भीड़ बटोर लेते हो। समझते हो लोग जितने ही ज़्यादा होंगे ख़तरा उतना ही कम होगा। मगर भाई यही तो ख़राबी की जड़ है। लोग गोली हमेशा भीड़ पर ही बरसाते हैं। मैं हमेशा दूसरों से अलग अलग, अकेला, रहता था और मैं कभी घायल नहीं हुआ। ऐसी कौनसी चीज़ है जो मैंने अपनी ज़िन्दगी में देखी न हो?"

"मगर तुम्हारे तो पीठ में गोली लगी है," वन्यूशा बोला। वह कमरा ख़ाली कर रहा था।

"यह कज़्ज़ाकों की बेवक़ूफ़ी से," येरोश्का ने उत्तर दिया।

"कज़्ज़ाकों की? कैसे?" ओलेनिन ने पूछा।

"बस ऐसे ही। हम लोग पी रहे थे। एक कज़्ज़ाक वान्का सित्किन को ज़्यादा चढ़ गई होगी और उसने मुझी को अपनी पिस्तौल का निशाना बना दिया, धाँय।"

"और क्या तुम्हें चोट भी लगी?" ओलेनिन ने पूछा, "वन्यूशा जल्दी काम ख़त्म करो और तैयार हो जाओ," उसने कहा।

"जल्दी काहे की! अब इसके बारे में पूरी बात तो सुन लो... जब उसने गोली चलाई तो उससे मेरी हड्डी नहीं टूटी। वह केवल थोड़ी-सी घुस भर गई। इसलिए मैंने तुरन्त कहा 'भाई तुमने तो मुझे मार ही डाला। यह क्या किया? मगर मैं तुम्हें नहीं छोड़ूँगा। अब

तुम्हें मुझे एक बाल्टी शराब पिलानी होगी, यही तुम्हारी सज़ा है।' "

"मगर क्या तुम्हें चोट लगी?" ओलेनिन ने फिर पूछा। वह इस दास्तान पर कोई ध्यान न दे रहा था।

"मुझे बात ख़त्म करने दो। उसने बाल्टी भर शराब दी और हमने पी, लेकिन ख़ून निकलता ही गया। कमरे भर में ख़ून ही ख़ून हो गया। और बुर्लाक कहने लगा 'जान से हाथ धो बैठेगा। उसे मीठी शराब की बोतल दो नहीं तो तुमपर मुक़दमा चलेगा!' और फिर और शराब आई और हमने और पी और पी..."

"ठीक है, मगर क्या तुम्हें चोट गहरी लगी थी?" ओलेनिन ने एक बार फिर पूछा ।

"चोट जरूर लगी थी! बात न काटो। मुझे यह पसन्द नहीं। मुझे अपनी बात पूरी कर लेने दो। हम सवेरे तक पीते ही गये, ख़ूब पी और नाक तक चढ़ाकर मैं तो अंगीठी की टाँड़ पर ही सो गया। जब सुबह जागा तो बदन सीधा नहीं हो रहा था।"

"दर्द बहुत था क्या?" ओलेनिन बोला। वह सोच रहा था कि आख़िर अब उसे अपने प्रश्न का उत्तर मिलेगा।

"क्या मैंने तुमसे यह कहा कि मुझे दर्द हुआ था? मैंने यह नहीं कहा कि मुझे दर्द हुआ। लेकिन हाँ, न मैं चल-फिर सकता था, न सीधा खड़ा ही हो सकता था।"

"और तब घाव ठीक हो गया?" ओलेनिन बोला। वह इतना उदास था कि हँस भी न सका।

"अच्छा तो हो गया। मगर गोली अभी भी अपनी जगह पर है। छूकर देखो।" और अपनी क़मीज़ उठाकर उसने अपनी हट्टी-कट्टी पीठ दिखाई जहाँ एक हड्डी के पास गोली टटोलकर देखी जा सकती थी।

"यह देखो कैसी लुढ़कती-पुढ़कती है," वह गोली से ऐसा मजाक़ कर रहा था जैसे खिलौने से खेल रहा हो। "छूकर देखो। अब वह पीठ पर आ गई।"

"और लुकाश्का, क्या वह ठीक हो जायेगा?" ओलेनिन ने पूछा।

"ईश्वर जाने! यहाँ कोई डाक्टर भी तो नहीं। वे किसी को बुलाने गये हैं।"

"डाक्टर मिलेगा कहाँ? ग्रोजनाया में?" ओलेनिन ने पूछा।

"नहीं दोस्त, नहीं! अगर मैं जार होता तो मैंने तुम्हारे सारे रूसी डाक्टरों को न जाने कब की फाँसी दे दी होती। वे एक ही चीज़ जानते हैं—काट-छाँट, चीर-फाड़। हमारा एक कज़्ज़ाक दोस्त है—बक्लाशेव। अब वह सचमुच का आदमी भी नहीं रह गया। उन्होंने उसका पैर ही काट डाला। इससे जाहिर है कि सारे डाक्टर गधे हैं। अब बक्लाशेव किस मर्ज़ की दवा रह गया है? नहीं, मेरे दोस्त। पहाड़ों में अब भी उस्ताद डाक्टर हैं। मेरा एक दोस्त था गिरचिक। अभियान में उसके एक गोली लगी, ठीक यहाँ छाती में। तुम्हारे डाक्टरों ने तो जवाब ही दे दिया, लेकिन पहाड़ों से एक आया और उसने उसे ठीक कर दिया। मेरे दोस्त, वे समझते हैं कि जड़ी-बूटी क्या है!"

"ख़ैर, यह ख़ुराफ़ात बन्द करो," ओलेनिन बोला, "मैं प्रधान कार्यालय से डाक्टर भेज दूँगा।"

"फ़िज़ूल!" बूढ़ा व्यंग्य से बोला, "गधे हो तुम, बेवक़ूफ़! तुम डाक्टर भेजोगे। अगर तुम्हारे डाक्टर ही लोगों को अच्छा करने लगते तो कज़्ज़ाक और चेचेन उन्हीं के पास इलाज कराने न जाते। मगर होता क्या है? ख़ुद तुम्हारे ही अफ़सर और कर्नल पहाड़ों से डाक्टर बुलाते हैं। तुम्हारे डाक्टर धोखेबाज़ हैं, सिर्फ़ धोखेबाज़।"

ओलेनिन ने कोई उत्तर न दिया। वह केवल एक ही बात से सहमत था – जिस दुनिया में वह रहता था और जहाँ रहने जा रहा था वह सभी धोखा है, चारों तरफ़ धोखा ही धोखा और कुछ नहीं।

"लुकाश्का की हालत कैसी है? तुम उसे देखने गये या नहीं?" उसने पूछा।

"वह ऐसे पड़ा है मानो मुर्दा हो। न खाता है, न पीता। सिर्फ़ शराब पीता है। जब तक पीता है तब तक ठीक है। अगर कहीं मर गया तो मुझे बड़ा दुख होगा। बहादुर लड़का है – मेरी ही तरह बहादुर। मैं भी एक बार ऐसे ही मर रहा था। बूढ़ी स्त्रियाँ रो धो रही थीं। ऐसा लगता था कि सिर में भट्ठी जल रही हो। उन्होंने मुझे पवित्र प्रतिमा के नीचे रख भी दिया था और मैं वहाँ पड़ा रहा, और मेरे ठीक ऊपर, अंगीठी पर छोटे छोटे ढोलकिये नगाड़े बजा रहे थे। मैं उनपर चिल्लाया और उन्होंने नगाड़ों की आवाज़ और तेज़ कर दी।" (बूढ़ा हँस पड़ा।) "औरतों ने हमारे पादरी को बुलाया। वे मुझे दफ़नाने की तैयारी कर रहे थे। वे कह रहे थे – 'इसने काफ़िरों का साथ किया है, औरतों के साथ खुराफ़ातें की हैं, लोगों को मौत के घाट उतारा है, कभी व्रत-उपवास नहीं किये और हमेशा बलालाइका ही बजाता रहा। अपने पापों को स्वीकार करो,' उन्होंने कहा। इसलिए मैं अपने जुर्मों का इकबाल करने लगा। 'मैंने पाप किये हैं।' मैंने कहा। जो कुछ भी पादरी कहता उसके उत्तर में मैं कहता था, 'मैंने पाप किये हैं।' उसने मुझसे बलालाइका के बारे में पूछना शुरू किया। 'कहाँ है यह अपवित्र वस्तु?' उसने पूछा, 'उसे मुझे दिखाओ और नष्ट कर डालो।' 'लेकिन वह तो अब मेरे पास नहीं है,' मैंने कहा। मैंने उसे घर में एक जाल में छिपा दिया था। मैं जानता था कि वे कभी भी उसका पता न लगा सकेंगे। इसलिए उन्होंने

मुझे छोड़ दिया। लेकिन मुझे वह फिर मिल गई और फिर मैंने उसे खूब बजाया—हाँ तो मैं क्या कह रहा था?" उसने शुरू किया, "मेरी बात मानो और दूसरों से अलग रहो, वरना मुफ़्त में जान से हाथ धोना होगा। मुझे तुमसे हमदर्दी है। यह ठीक बात है। तुम पियक्कड़ हो इसलिए मैं तुम्हें प्यार करता हूँ। तुम्हारे जैसे लोग टीलों पर चढ़ना पसन्द करते हैं। यहाँ एक रूसी रहता था। उसे टीले पसन्द थे। वह हमेशा उनपर चढ़ने जाया करता था। वह उन्हें 'टेकड़ी' या ऐसे ही किसी विचित्र नाम से पुकारता था। जब कभी वह कोई टीला देखता तो उसपर चढ़ जाता। एक बार वह वहाँ घोड़े पर गया और सबसे ऊँची चोटी पर चढ़ गया। वह बड़ा खुश था। परन्तु ठीक उसी समय एक चेचेन ने उसे गोली का निशाना बना दिया और उसे मार डाला। ओफ़ ये चेचेन भी कितने बड़े निशानेबाज़ हैं। कुछ तो मुझसे भी अच्छा निशाना साधते हैं। जब कोई आदमी इस तरह से व्यर्थ मारा जाता है तो न जाने क्यों मुझे अच्छा नहीं लगता। कभी कभी तुम्हारे सिपाहियों को देखकर मुझे ताज्जुब होता था। जिधर देखो बवकूफ़ी ही बेवकूफ़ी। विचित्र दशा में घूमा-फिरा करते हैं, कोटों पर लाल लाल कालर लगा है तो लगा ही हुआ है कुछ फ़िकर नहीं। फिर क्यों न दूसरे लोग उन्हें निशाना बनाय। एक मारा जाता है, तो उसे ढकेल-ढकाल कर अलग फेंक दिया जाता है और दूसरा उसकी जगह जम जाता है। क्या बेवकूफ़ी है।" सिर हिलाते हुए बूढ़ा बोला, "क्यों न अलग अलग हो जाओ और एक एक करके जाओ। फिर तुम्हें कौन निशाना बनायेगा! हाँ यह बातें ज़रूर याद रखना।"

"अच्छा, धन्यवाद, नमस्ते, चचा। ईश्वर ने चाहा तो फिर मिलेंगे," उठकर गलियारे तक आते हुए ओलेनिन बोला। बूढ़ा फ़र्श पर ही बैठा रहा, उठा तक नहीं।

"इसी तरह नमस्ते की जाती है? बेवक़ूफ़, बेवक़ूफ़!" उसने कहना शुरू किया, "अरे प्यारे, लोगों को क्या हो गया है! हम साथ साथ रहे हैं, साथ साथ उठे-बैठे हैं और पूरे साल भर तक। और अब एक सीधी-सादी 'नमस्ते' और चल दिये। बस। मैं तुम्हें प्यार करता हूँ और मुझे तुमपर तरस आता है। तुम अकेले हो, बिल्कुल अकेले, तुम्हें कोई भी प्यार नहीं करता। कभी कभी तो तुम्हारा ध्यान आ-जाने के कारण मुझे नींद भी नहीं आती। मुझे तुम्हारे जाने का दुख है। गीत में कहा गया है—

बिरादर! चूर है दिल ग़म की इन लगती-सी ठेसों में,
बहुत मुश्किल बिताना जिन्दगी अपनी बिदेसों में।
और यही तुम्हारे साथ भी है।"

"हाँ जी, अच्छा नमस्ते," ओलेनिन फिर बोला।

बूढ़ा उठा और अपना हाथ फैला दिया। ओलेनिन ने उसे दबाया और जाने के लिए मुड़ गया।

"ज़रा इधर," और बूढ़े ने ओलेनिन का सिर अपने दोनों हाथों से पकड़ लिया और अपनी भीगी मूछों तथा ओठों से उसे तीन बार चूमा और सिसक सिसककर कहने लगा—

"मैं तुम्हें प्यार करता हूँ! नमस्ते, मेरे दोस्त, नमस्ते।"

ओलेनिन गाड़ी में बैठ गया।

"ओफ़ ऐसे ही चले जा रहे हो? मुझे कुछ तो दिये जाओ कि तुम्हें याद करता रहूँ। एक बन्दूक़ ही सही! तुम्हें दो की क्या ज़रूरत?" बूढ़ा बोला। वह सिसक सिसककर रो रहा था।

ओलेनिन ने बन्दूक़ दे दी। . .

"कितनी चीज़ें तो तुम इस बूढ़े को दे चुके, मगर इसे सन्तोष ही नहीं होता। पुराना भिखारी है। सभी ऐसे ही औला-मौला होते हैं"

वन्यूशा ने कहा और अपने ओवरकोट में सिकुड़कर अपनी जगह बैठने लगा।

"बकवास बन्द कर, सुअर का बच्चा!" हँसता हुआ बूढ़ा बोला। "कैसा बिच्छू है, बदमाश!"

मर्यान्का ओसारे से निकली, उसने गाड़ी पर एक सरसरी नजर डाली, सिर झुकाया और घर की ओर चल दी।

"ला फ़िल!" आँख मारते हुए वन्यूशा बोला और बेवकूफ़ों जैसा हँसने लगा।

"गाड़ी हाँको!" ओलेनिन गुस्से से चिल्ला उठा।

"नमस्ते, मेरे दोस्त, नमस्ते। मैं तुम्हें कभी न भूलूँगा, कभी न भूलूँगा!" येरोश्का की तेज़ आवाज़ सुनाई दी।

ओलेनिन ने पीछे मुड़कर देखा। चचा येरोश्का मर्यान्का से बातें कर रहा था, शायद अपने ही बारे में। और न तो उस बूढ़े ने ही ओलेनिन की ओर देखा और न मर्यान्का ने ही।

१८५२ – १८६२